भाषाऽमृततरङ्गिणी ॥

जिसमें

अनेक प्रकारके रमणीय दृष्टान्तों के द्वारा भाषाकी प्रधानता बर्णन की गई हैं

जिसको

श्री महाराजाधिराज श्रीराठौर वंशावतंस श्रीबलवंत सिंह राजाकी आज्ञानुसार गुर्जरस्थ विप्र नागर रत्नरामात्मज कवि टीकारामजीने अत्यन्त परिश्रमसे भाषा काव्यानुरागियों के उपकारार्थरची रतलामनिवासी श्रीमहन्त रामाजी चतुरदासजी के द्वारा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

दिसम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीबार ६००

इस यन्त्रालय में जो काव्य की पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखतेहैं

काव्य ॥

*

नानार्थनवसंग्रहावली ॥

पंडित मातादीन कृत जिसमें नानार्थोंका संग्रहहै (१) मंगलावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीतनाटक (४) ज्ञानशिक्षावली (५) रसधारिणी (६) तिथिबोध (७) [illegible] पिंगल प्रकार बहुत सुगमहैं कि वृद्ध और बालक भी पढ़ सक्तेहैं ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलासकी तरहपर श्रीकृष्णलीला जन्मसे वैकुण्ठगमन पर्यन्त वर्णितहै यह काव्यालंकार युक्त बहुतही सुन्दर पुस्तकहै ॥

छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमें मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरुस्थापन रीति और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित हुएहैं ॥

रसचन्द्रोदय, व रसवृष्टि ॥

उदयनाथजी व शिवनाथ रचित इसमें सब प्रकारों के नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित हैं छापाटैप ॥

रसराज ॥

मतिरामजी कवि रचित जिसमें अति मनोहरता से काव्यालंकार, संयुक्त नायका भेदका वर्णनहै ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दोंमें नायकाभेद की पूरी बातें लिखीहैं ॥

[illegible]सई सटीक बिहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायका भेद का वर्णन सात सौ दोहोंमें है और दोहेके भावार्थ के सवैये और कवित्त भी हैं ॥

भाषाऽमृततरंगिणी की भूमिका॥

हज़ार हज़ार दण्डवत् उस सच्चिदानन्द रघुनन्द व सीताजी के चरण कमलोंको कि तरह तरहके रामचरित्र प्रकटकिये व महाराजा गोस्वामी तुलसीदासजी ललित छन्दबन्द में रच सम्पूर्ण देवता व ऋषि मुनि सन्त महंत महात्मा हरिभक्तकेलिये आनंदस्वरूपी अमृत दरशाय इस संसार सागरको मोक्षकामार्गदिखाया चुनांच तुलसीदासकी बाणी राजामहाराजा पठनकरतेहैं एक समय लक्ष्मीवंत, धर्म्मपाल, दयावंत, ज्ञानवान्, धर्म्ममूर्ति धर्म्मधारी, धर्म्मइष्ट, श्रीवंत महाराजाधिराज महाराजाजीश्री १०८ श्री-बलवंतसिंहजी साहब बहादुर वालिये रतलाम, ग्रन्थबोनेकापाठ करतेथे उस वक्त पण्डितोंने अर्जकी कि आप देवबाणीपढ़ें मनुष्यबाणीको त्यागें उसी वक्त महाराजाने कावटीकाराम को आज्ञादी आज्ञापातेही झट ग्रंथ भाषाऽमृततरंगिणी नामबनाके नजरकियो यह ग्रंथ वहीहै अब यहग्रंथ महाराणी श्रीवन्त, महाराजाधिराज महाराणी श्रीमाजीसाहब श्री १०८ श्रीससोदणीजी साहबने मुझे कृपाकरके छपवानेको बख्शा सम्बत् १९४५ सन् १८८८ के सालमें अब मैंने मुन्शी नवलकिशोरजी लखनऊ को छापनेका हक्कदिया॥

द: महन्तश्रीरामाजीचतुरदास
रतलामनिवासी—

भाषाऽमृततरङ्गिणीका सूचीपत्र ।

इति भाषाऽमृततरङ्गिणीकासूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

भाषाऽमृततरङ्गिणी ॥

श्रीमैथिलीमानसमरालोजयति ॥ दोहा ॥ शारद नारदशेषशिव सनकादिकसुरसंत । भजतयजतभरि भायतेजयतिज्ञानकोकंत १ ॥ सवैया ॥ रंजनहैंऋषि राजनकोभवभंजनगंजनकोशापकामी । पूरणापारब्र ह्मोपरमेशदयालयदासनकोअनुगामी ॥ सिद्धकियेगुरु सिद्धनकोसुप्रसिद्धसनिद्धधरोधुवधामी । तीनहुंलोक त्रिकालभयोनसियावरसोंवरदूसरस्वामी २ ॥ अथ सुभाषाऽमृततरंगिणीप्रारंभः ॥ तत्रादौग्रन्थानिर्विघ्न परिपूर्णार्थंमंगलमा चरामी ॥ सवैया ॥ आयनसेउरऔरअफंदअनेक उपासन केअवरेखे । रोषभयोबिनतोयत्रिकालसुटीकमधारि भ्रम्योबहुवेखे ॥ तापनतोमततासातदयोदलदानवमानवदे वअपेखे । श्रीरघुवीरसमर्थसदाहितकारयभयोपदपंकज पेखे ३ ॥ सोरठा ॥ बुधिबलविगतबसेरअंबकोबिनअघवरअ गम । टीकमकोदुकटेरकरुणाकरकोजैकरराख४ ॥दोहा॥ इहिविधिरघुबरवरविनय करिकछुमनवचकाय ॥ अब

अवननर किये सघन सिलिकंत १९ बलवंत को पारसविदित भनत कितेक बिमूल। सीकसटीकस ते अधिक करतन बिदुस कबूल २० तातेअस अनुचितउकति उरआवतनहिंएक। पृथिपतिअरु पारसन मधि अंतरदृसतअनेक २१ करसेघरसे वहकरत अय अर्जुन अनुरूप। वरसेदरसेते बिपुल बिबिधबित्त वरभूप २२ पारस परकाटणरसिअय करहिकनक कियरुक। महिपति मन बचक्रम सहत बरतत बित्त अनेक२३ श्रवणनते पारस सुनत दृग कहुंदरसत नाहिं। जाहिर नृप नाहर जगत छुवत उपल नहिं छाहिं २४ करत सुपारस कनक अय प्रति पारस नहिं होय। इनकिये आप समान तिहि करैन सरबरि कोय २५ पारस प्रकट पषान मय परम पीन पवि रूप। कोमल कलित कृपाय तन बिमल बिसद बरभूप २६ पारस पाथरसम पृथिप बरणत बिना बिबेक। हियकी आँखिन हेरिये अंतर दृसत अनेक २७ याते मेरेउर उकति उठी और इक आय। सो सुनियो सब श्रवणदै सुकबिनके समुदाय २८ महिपति पर्बत मलयते प्रकट्यो प्रबल पटीर। सहकत महिमंडलमहद सौरभ सुयश समीर२९ आक ढाकसे अधनि नर उनकिय आप समान। बल्लभ लागत बिस्व कहँ बरणत बिपुल बखान ३० सुजन सँयोगी सुमति सब सीतल सुख सरसंत। दहत गहत नहिं चहत चित पामर प्राबित पंत ३१ रहे रंक कोचित कुटिल बिसुखबंसके भार। फबै फैलकी फा-

सफिट हैहियहर्ष्य असार ३२ पीड़ित नृपति पतंग जिमि लिपटत आय असाप। भीतर कारन शरीर तिहिं हरत हियेको ताप ३३ याते पवन प्रकट भयो नृपति बलवंत। चंदन रूप अचिन्त्य चय सौरभ सुयश अनंत३४॥ कवित्त॥ भागीरथ वंशको वतंसउग्रभागिनको हंससोंहमेश नीरक्षीरको निवरहै। दीरघदतारन कतारन सतारनमे जाकेदान भानआगे अमित अथेरहै॥ टीकम ददंत बलवंत बाज विक्रमको विग्रकि विलोके वैरिवृन्दन वटेरहै। मागर सहूरनके नागर निधान नर और भूमिपालामंजुमालामें सुमेरहै ३५ वारिदते बीसगुनें वरषे विशेष वित्त पंडित पपीहहिय हर्ष्य हुलसातके। चिंतामणिहते चारु चौगुणी सुपूरे चाह हेरहेर हरषै हमाऊ हहरातके॥ टीकम भनंत भूमि बलवन्नरेंद्र नाह तुल्यता न पावैताकु त्रिदशानगातके। पारसकी पांतकेन पंकज प्रभातकेहैं जाकेपानि पल्लव प्रतीप पारिजातके ३६ रतिरतलाम अभिराम धाम धामनमें टीकारामउदैभयो आनंदको इंदुहै। पर्वतको प्यारोपूत वीर बलवंत बाघ सौर महिपाल मौलि मालव महिंदुहै॥ सूछकीमरोरनमें कंपतकरोर करूर धौंसकी धुकारधीय धजतधरिंदुहै। भूरता सखत पर पुख्त परिनालिका में तख्त विराजै राज वखत बलिंदुहै ३७ वारणाकीचिंता और भाटनको भूरिभय भिक्षुककीभूख माह समताअजानकी। द्विजनकीदीनताईपीनताई पामरकी ग्लानता गुमान दाप दोषी

दरज़ानकी ॥ खोटनकी खूबी औशबूबी सुद्र सचित्त कीगारफलकी राहीबातबहिन कज़ानकी। पर्वतकोपूत पाटबैठत पलायगई शत्रुनकोसम्पति औ विपतिप्रज़ान की३८॥ दोहा ॥ भूरिप्रजाके भागते बिलसतनृपबलवंत। जिहि यशज्योति उदोतते दीपत दशहुंदिगंत ३९ शर गागत साता सुखद भाविक भ्रातभूर। रचो बिधाता रुचिर रुचि दाताज्ञाता शूर ४० करणा रीतिरहि कर्ण मुनिविक्रमकोक्रमलीन। बलिजैयेबलवंतकोभोजभोज जिमिदीन ४१ करणा भोजके विरहते अगणित हुते अनाथ। भेंटतही बलवंत नृप सबकबि किये सनाथ४२ करण भोज बिक्रम धर्यो दीपक सुयश सँजोय। राख्यो श्री बलवंत नृप जबजान्यो गुलहोय ४३ चारु चतुर चहुं दिशनके कबिकोविद सदसंत। विपुलवि-त्तचित चारुदे बहुसंचे बलवंत ४४ अवलोक्यो नहिं आजलौं ऐसो अपर अमीर। जिहके द्वार जुटीरहै बहुभिक्षुककी भीर ४५ कालपायके तालते तोयफिरै बिनतोय। पैभिक्षुक जिहि भौनते रीतोरह्यो न को-य ४६ हीर चीर हाटक हरम पावत परम अमोल। गत तृष्णा गौरव भरे कबिकुल करत किलोल ४७ सेवो देवीसिंह सद प्रभु पितृव्य प्रवीन। नीति निपुण सज्जन सुमति ध्रुवधर धर्म धुरीन ४८ जोटा जगपति जिष्णुजिमिप्रीतिपरस्परहोय। रस शृँगार पटुप्रेमसनु धरेआय तन दोय ४९ स्वामिधर्म शुभ चिंत चित्त मन क्रम वचन बिचार। सकल समर्प्यो शीश तिहिं राज

काजको भार ५० गुणागार दातारतर रम्यरूप रिझवार। अति उदार शृंगार सर श्री बलवंत भुवार ५१ आन अमरकी आगना उरउपासना लीन। सियवर पयांम सुजानसर मन मरीपको मीन ५२ मनसा वाचा कर्मणा सुरति सुमनी सदीव। सीयराम घनश्यामको पृथिपति मनो पपीव ५३ ॥ कुंडलिया ॥ ओज उजागर अमल उर नय नागर नरनाह। सागर सुमति महूर को आगर उरमि अथाह॥ आगर उरमि अथाहबाहु बल बलवँतहूंके। ओपत उदित उदार नहिंन अमनृ-पति काहूंके॥ रसिक उपासक रुचिर रामसिय रहि तरजागर। दीपत दशहुं दिगंत जासुके ओज उजागर५४ ऐसोसन नहिं अपरको उन्नत उदित उदार। वर्तमान वर्तत विदित भूतल भूरि भुवार॥ भूतलभूरि भुवारभर्गा भासत निजभूपर। बलवँत बखत विलंदतेजतपतिनके ऊपर॥ दिन दिन दीपत द्विगुण दिगन दशअर्क उदै से। राजखान सुलतान रईसनको नहिंऐसो ५५ जल निधि जनपद सुयश शशि बढत वारिच्यय ओज। डुवत अपरमन डुशाला बलवँत सुमन सरोज॥ बलवँत सुमन सरोज उदित उलसतरहै ऊपर। महकत महि-मा महद धाम धामन ध्रुवध्रुपर॥ भ्रमत भिक्षुकन भौर मौज मकरंद सकल निधि। जाहिर ज्योति जहान जासुको जनपद जलनिधि५६॥ दोहा॥ हेरिहेरि निजहर्यहद अवनिप देत अनंत। बाँटतही मनबाढिचलै चित बाहिर बलवंत ५७ थकेलेल कवि लोकपै बांटत थके

न बाहु। चितवत जब याचक चमू चहै चौगुणी चाहु ५८ प्रकट्यो पर्बत सिंहसों विदित सिंह बलवंत। दरिद द्विरद कवि कुलनके दारण किये दुरंत ५९ दरिद द्विरद देखत दलैं सोइ सतसिंह सुनेर। पर्वतविनप्रकटै पुरन सोकि होय शमशेर ६० प्रकटै पर्बत सिंहते सोई सत्य शार्दूल। अपरसिंह सबअज्ञ उर विदितबदत भुवि भूल ६१ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ परहरि पर्वतसिंह प्रकटहै आनते। पुरपत्तन गृहग्राम खलक खलखानते॥ सकल नकल शार्दूल हेरि हम हँसतहैं। हरिहां तिनते कवि के दरिद द्विरदनहिं नशतहैं ६२ सोरठा॥ दलै द्विरद दुख देख सिंह सबलहै सत्य सोइ। मरैन सकहु मेख वृथा सिंह वाकहँ बदत ६३ ॥ दोहा॥ बहुगुण गण बलवंत सधि आरज हूभात अनेक। सो सब वर्णन करन को बसना रसना एक ६४ तातै किंचितमैं कहे निरखे जे निज नैन। स्थाली तंदुल न्यायते अवलोकहु मतिऐन ६५ कोउकहै नृपके गुणकहै कहेन अवगुण काहिं। अवगुण गुण दोउ होतहैं निखिल नृपतिके माहिं ६६ तातै अवगुण तीव्रतर परकट कहूं पुकार। सुनियोहो दुर्जन सकल हितयुत देयहुंकार ६७ बहुलघु गुण बलवंत में तीव्र सुअवगुण तीन। विलग विलग बरणत विबुध परकट सुनौ प्रवीन ६८ लोभीवड यश लेनको असंतोषि अधचैन। भूखोही मन भूपको दिपत दान द्विज देन ६९ ॥ कवित्त॥ आगम निगमहूके अंग अवलोके आप साहित्त संगीत

प्रौढ पंतिन पढंतके । पारावार प्राकृत को पेखि पढे फारसीको आरसीसे आंघकिये अरबी अनंतके ॥ हेर अंगरेजी फेर काव्यको करन लाग्यो बरणा विचित्र भाँति भाँतिन भनंतके । कोयभो कलान कोपै थोय घनो घोखिबेको हीसे हद हौसनासँतोय वलवंतके ७०
दोहा ॥ जैसीको तैसी कहे कवि कुल करैन कान । विद्यमान वलवंत वर अरजी दई उठान ७१ नृपवर तामें गुणा निकर तरतीवरचय दोय । ध्रुव यशकीन्हो वर धवल तदपि न तनक सँतोय ७२ ॥ सवैया ॥ गोविंदके लीन्हो सकोल सबै यश जाहिर भूतलभोज धरोसो । तैसहिंतो सतसासन को तपतीवरतेजतें हालहरोसो ॥ कंतहो रत्नवती वलवंत सुटीकास तोहुंन तोहिं संतोसो। भूतल भूरि भुवालन में भटलोभी ललाम लख्यो नहिं तोसो ७३ ॥ दोहा ॥ लेतलेत कवि लोगके भरे भवन भंडार । भल्योन सनतउ भूपको वखशात वित्त विसार ७४ भूतल भूरि भुवाल भट चितवत अकनि अचेत । वलवंतकी वखशोश सुनि दाँत अँगुरिया देत ७५ विदितउदय वलवंतके दिनकर दान समीप । दिपत आन नृपदान द्युति दीप दीप प्रति दीप ७६ निपट अनोखो नृपतिन खलक मध्य खलुख्यात । जागत सोवत स्वप्न जिहिं वखशनही की वात ७७ पलवीततते पाख सम घटिका वरय गिनंत । युगसम जानत यामकहँ विन वखशेवलवंत ७८ बड़लोभी वलयंततव अजब अनोखी चाय। छाजत अपरसितीपयश लेपराभुविकेन्याय ७९

हियो न दिल मधि रहत हुत देखोहो दरभांत। नि-
रखि निरखि नित नृप निकर दाबत अँगुरीदंत ८०
बसत धाम नृपनिकरके रावर प्रकट प्रताप। तरजत
नाहिन तनक तिहिं अवलोकत हो आप ८१ इहिवि-
धि अमित उदाहने विदित दिये बहुबेर। पै अंगीकृत
जिहिं कियो तिहिंनृप तजो न फेर ८२ मेटो गुण महि
पाल मधि पद्यो प्रबल परिपूर। तातें अवगुण तीनहूं
भये महद गुण भूर ८३ संकोरण सहिलेतपै विगत
न्यायको वित्त।धरपति नीति निधान ध्रुव चह्यो न सप-
नो चित्त ८४ श्री क्षितिपतिकी छांहरत कवि कुल
करत किलोल। प्रतिजन पदके पुंज जुरि निवसत नित्त
अलोल ८५ तिहिं कवि टीकारामसों कीन्हो सत्य
सनेह। सुहृद कहेको विरद लखि दये धराधन गेह ८६
सादर कुटुम बुलाय सब अरपयो हर्म्य विशाल। सुख
पूरब निवसत सदा परम करत प्रतिपाल ८७ कृपाकल्प
तरु केतरे मुहिं राख्यो महिपाल। विठमन व्यापी
फेर वह जगत व्यथाकी ज्वाल ८८ सुहृद कहेके विरद
को निपट निभायो तात। अवगुण भरे असित तिहिं
तनक तके नहिं तात ८९ अपनायो अवनींद्र मुहिं तब
ते मन बचकाय। पांडुवधूके पट यथा अनुकंपा अधि
काय ९० गरुवो इकबलवंत गुण पुहुमी प्रकट प्रकास।
दावन लाये जाहि कहँ दावन लाये तास ९१ ॥ दोहा ॥
सुनि बलवंत नरेशके विपुल कृपाके बोल। कविको-
विद टीकम कहै बिको न कौडिन मोल९२धर्म धुरंधर

धीर दृढ धरपति वलवँत धन्य। मनसा वाचा कर्मणा सियवर अनुग अनन्य ९३ विमल सुयश नलवंत वर खलक सध्य खलु ख्यात। सुनियो अब मज्जन सकल बनी सकादिनवात ९४ कविपंडित मंडित मुदित सुमति सभासद भूप। सहज विराजे सुभट सह चरचा चली अनूप ९५ उदित उमँग आनंद उर अविपति बोले आप। करहु परस्पर प्रश्नकलु उत्तर थापउ थाप ९६ शुभ साहित्य सँगीत अरु अमित धर्म अवदात। निगमागम निरमात चली विनयपत्रिका वात ९७ तवबोले नरनाह तहँ उरकरि अमित विचार। विनय पत्रिका सों विदित नहिं न ग्रन्थ निरधार ९८ विनय बढ़े अविनय कढ़े चढ़े चौगुनी चाह। चढ़े सुघनरति रामपद विनय पत्रिकामांह ९९ प्रकटपटावत प्रेरिके परमारथ के पंथ। वैआवजन को विनयसों शुनाद नहूसरग्रंथ १००

चांद्रायणवृत्तं ॥ संसृति सागर सुलभ सुकल्प वहित्रिका। सिय रघुवर चयचरित चारुकी चित्रिका॥ नानाग्रंथ नखिल छहूंकी छत्रिका। हरिहां श्री तुलसी कृत कलित विनयवर पत्रिका १०१ ॥ दोहा ॥ सत इत उत चितवे सुचित कहैं तोहिं सुन सांच। राघव रिझयो चहहितौ विनयपत्रिका वांच १०२ मतवारेसे मतकिते लोलुपचाहतलांच। परमारथ पेख्योचहै विनयपत्रिका वांच १०३ अधिक प्रशंसा असकरी अधिपति युत अनुराग। सुनत सुखर तरउरमनो पड़ी पलीतैंआग १०४ भूरभदेशी सो तहां विप्र वदेशी एक। मन मच्छरता

मानके बोल्यो बिनाविवेक १०५ ॥ विप्रउवाच ॥ परम प्रशंसायोग जग सुर बाणी मदस्वच्छ। नरकृत नीच गिरा गदित ताहि गिनत हमतुच्छ१०६ ॥ सोरठा ॥ नर सु गिरा अतिनीच भनकसुनै कहुं भूलिके। स्रवै श्रवण केबीच तप्त धातु तरणी तनय १०७ कटुक बचन सुनि कान दुस्सह लगेदयाल उर। नरपति नीतिनिधान विप्र विचारि कह्योन कछु १०८ ॥ दोहा ॥ महिपति कीन विचार मन खलनर तनवसि ख्यात। नर गिरकीनिंदा करै वदत बचन व्याघात १०९ कवि कोविद वंदित विपुल सभासकल आसीन। तिहिं सुनाय सतभाय तब निगदित नृपति प्रबीन ११० क्रूर कृतघ्नी मूढमति हरि ते बिमुख बिचार। मच्छर माते मत्तपर उरधरि अति उपकार १११ ॥ रोलावृत्तं ॥ श्रीसियवर यशजटित तोम तुलसीकी बानी। सकल श्रुतिनको सार सदा शिव सुमति बखानी ॥ श्रीहनुमत की साख जपत योगी जन जाही। तिहिं निंदत मति तुच्छ करैजा कसकत नाहीं ॥ तनमन बचन बिचारि पढै याकोजन कोई। अनायास अवधेश अंघ्रि अंबुज रतिहोई ११२ ॥ कवित्त॥ सारश्रुति सर्बकीअखर आँज लेयहूकी तारहूकी तत्त्व सो महेश मन मानीहै। ऊखन पियूखन मयूखन ते मीठीमंजु पारखी प्रसिद्ध सिद्ध ओक उर आनीहै॥ रूप्य रघुराज गुण मुक्ताको चुनन हारी सारा सारशो- धिबेको बिरद बिज्ञानीहै। पंडित प्रमानी छहूं छ- त्रसीनछानीक्षिति संतसुखदानी तत्त्वतुलसीको बानी

है ११३॥ दोहा ॥ श्रीतुलसी बाणीसरस तुलसीकर उर हेत । तुलसीभव पायो विप्रनि तुलसीसुमनिनिकेत ११४ कवित्त ॥ दयाकरणा निवाहकौ दाकरणा करनश्रीपुरणा प्रकाशकरै हीके हृदहाल सें । सद्गुरुकी सारासार शोधकप्रज्ञानसीर सोदक सज्ञानसीर रसकी रसालसें ॥ खोवै खलुखारदिव्य देवरिसाकूका हार दीकस वहा- यदेत वीकस निसालसें । मिथ्यानहिं सानाभई खलक खुलासा खूब भक्तनकी भाषा रसराखा कलिकाल सें ११५ भाजिजातीभक्तिश्री पलायजाते प्रेमपुंजछाय जाती जड़ता जरूर जिवजालसें । सझात न सारासार अवनी अशेषहूसें विगत विवेक वीजहोते हियहाल सें ॥ सालबाल बासहूसें बीकस घुनांकहोते पापके प्र- ताप पुहमपैलती पताल सें । सुरतरु पापका अभिला- षा पूरणाखिलेको भक्तनकी भाषा रसराखा कलिका लसें ११६ ॥ दोहा ॥ जगजीवन जड़जानिकै सरलसुबानी स्वच्छ । प्राकृतप्रभुप्रेरीप्रकट तिहिंनिंदतमतितुच्छ ११७ उरउपकार बिचारिकै करत प्रकटत अपकार । लपै सुधा विषकर सकल असरवल निखिल निकार ११८ रघुवर आयसुते रची लछमन लोचन लज्ञ । तिहिं निंदत लिक तुच्छतर उरकतसत नहिंअज्ञ ११९ भाषा भूतल भानुसम भर्गरस्यो भरिभूर । अवलोकैं नहुलूकसम कु- टिल काहूं केकूर १२० प्रभुप्रेरी पालीपितर भरातभक्त जनभूर । फुनिपामरपरहरहिंतौ जारजलखौजरूर १२१ भाषाभगवत जननकी जेनहिंकरत कबूल । परीपरैगी

परतऋब तनमन ताकेभूल १२२ भक्त भगिनत भगवत सुयश निंदतते नरनीच। भासन सहैं समूह शठ विषम नरकके बीच १२३ ॥ अथकविवचन ॥ इष्टअवज्ञा अकनि उर सहिनसके नरनाह। भाषेबचन बिचारिवर सु-पक्षति सीख सजाह १२४ तऊसँतोषभयोन तब मोतन हेर महीप॥ सपदि बुलायो मैन ते उमगत आयसमी-प १२५ बोलेबिपुल दयार्द्रनृप मोतेसरल सुभाय। भक्त भगिनत हरिसुयशको निंदासुनी नजाय १२६ ताते तन मन लायतुम असकछु करहु अरंभ। तजैंसुनत जिहि तुच्छनर दुर्मति दारुणदंभ १२७ बिरचहुबिमल बिचार बर अर्थ आनि अनुकूल। जाहिपढे खलमल उडें मच्छर रहैंनमूल १२८ सुनतजाहि सो जन्यसें उरउम गहिआवेश। भगिजायँ भाषानकी निंदा करन निशेष १२९ बिमलबेष लखिठगकहैं भजनीको बकध्यान। सोगुण तजि औगुण गहें जाको हृदयमलान१३०ताते असकछु रचहुरुचि बिमलगिराकेबीच। जातेभगवत सुयशको निंदाकरैंन नीच १३१ क्रूरकृतघ्नी मूढमति लोभी लोल लबार। मच्छरमाते सत्तपर कहु कीजै उपकार १३२ बोलेबिमल बिचारिनृप मोप्रतिपुनि करिप्यार। भाषा अमृततरंगिणी बिरचहु रुचिर बिचार १३३ कुटिहैंखल छलक्षुद्रता मिटिहैमनसुमलीन। ताकारण चितचायके रचनारचौ नबीन १३४ केतेकु टिल कपूतखल सुनिभाषा खुनसाय। तेनर कलमषको तजैं अमृत तरंगिणी न्हाय १३५ खलभाषाकी भनक

मुनि तनमन तापतग्राम । ज्योंप्रावृट घनघोरते जरिहै अर्कजवास १३६ ज्योंआदित्यउदैभयेसुखीहोत संसार। उरउलूक अकुलायके पीडित पंचपसार १३७ सजि नखशिख सुंदर वदनि मिलैमुदित चितचाह । अवलोकत उरआपते जरै जनानो नाह १३८ दरशावत आदरशकेउ होरिसकल हरषाहिं। पैनिरखतनिजदोषते नरनकटो खुनसाहिं १३९ भाषाकी सुनिके भनक जरैमच्छरी जोर। चितवतज्यों चाहत न चित चारुचांदनी चोर १४० कौसक्ततर्मा कुटिलमति सुनिभाषा खुनसांय । जैसे अनसंग्राहिनको शुभखरया न सुहाय १४१ सोरठा ॥ रसिकन राचेयोजि खलपंडित यातेविमुख । लदेअहंकृतजोजि जयेनअचवन कारिसकैं १४२ ॥ दोहा ॥ अमृततरंगिणि पायके पीनसपीर विहाय। पुनिभाषा आमोदबुद विलसहिं सुखदसुभाय १४३ इहिविधि आयसुपायके महदहृदय मुदमान। टीकाराम तरंगिणी वरणानलगो बखान १४४ तरलतपै त्रयतापते मदमच्छर के घाम। तिनहित अमृततरंगिणी विरचत टीकाराम १४५ सुनि सुनि सकल प्रशंसहीं सज्जनके समुदाय । लोलुपके उर लायसीलागतपरे पलाय १४६ अमृततरंगिणि सुनतपुनिखलनाये खुनसाय । केतुरूपधरि सेतु को कीन्हेंकुटिल उपाय १४७ ॥ सोरठा ॥ अहो अज्ञ की भल कबलौंसुमति सराहिये। होतकहूं निर्मूल सेतु रचेतेंसरितहू १४८ विपुलकष्ट करिवाल शिखताको सेतूरची। परीफेट तिहिंकाल ढहीवहीकितहूगई १४९

तववादीतिर्यकभयेकीन्हीकुमतिअनंत। मिलेसहायक समप्रकृत केते असदअसंत १५० अवरोधन अपगा निमित किये यतन बहुकूर। रोंकेते रसबढतहै नदिया नेहजरूर १५१ जिमि रोंक्यो तिमि तिमिबढ्यो प्रकट तरंगिणि पूर। अवरोधनि सेतू अखिल भई भंग भक भूर १५२ दिनदिन दूनोबढत लखि अमृत तरंगिणि अंभ। हहरि हहरि हुमसंत भयो खल उर अधिक अचंभ १५३॥

इतिश्रीमन्निखिलमहिपमंडलमुकुटमणेःश्रीराठौरवंशावतंसस्यश्री बलवंतसिंहनृपतेःसमाश्रितेनआज्ञापालकेनकविटीकारामे णाकृतायांभाषाऽमृततरंगिण्यांग्रंथावतरणिकाभूपवं शावलीवर्णनंनामप्रथमस्तरंगः १॥

दोहा॥ प्रथमोत्तुंग तरंग यह उर उमंग अनुसार। कहिकहिहौं अनुबंध अब सज्जन लेहु सुधार १ अथव्रज भाषादृढी कर्णार्थैअनुबंधचतुष्टयवर्णनम्॥ दोहा॥ अधिकारी संबंध अरु विषय प्रयोजन चारु। अमृततरंगिणि में अमल चहुँअनुबंध विहारु २॥ अथाधिकारीलक्षण॥ सवैया॥ ज्ञानको भानुउदै उरमेरु विवेकके नैनन सेन निहारी। मच्छरके ज्वरकीजड़ता बिनकूर कृतघ्नहूर अवारी॥ होय स्वच्छंद छुट्योछलते छितिखोट कोआदकोशीश ते डारी। नम्रभयो विचरै वसुधातो सुधासरिता रसको अधिकारी ३॥ टीका॥ प्रथमतो ज्ञानकाभानु उर आकाशमें उदयहोय जातेअज्ञान अंधेरोमिटै दूसरे विवेक के नेत्रहोयँ जाते प्रेमपंथ निहारते सुधा सरिता समीप

पहुंचै तीसरे मच्छर ज्वर रहितहोय चौथे करताको
हड़क्यावल व्यापोहोय पांचैं कृतघ्नताको अवार न उम-
ग्योहोय जासों अपस्मार रोगकहे हैं छटे छल छिद्रको
विगारते छुट्यो अरु खोटको पोटको गोगते परोक्ष
के स्वच्छंद ते स्वाधीन सावकाश भयो होय
जासुनम्र होयवेको अवसर पायके भाषाऽमृततरंगिणी
के रस स्वाद को अधिकारी जानिये ॥ दोहा ॥ यह
अधिकारी असल उरविगत विकारी अंग । कृष्णासरित
के सुरसकी विलसत तरल तरंग ५ ॥ अथसंबंधरोलाछंद ॥
भाषाही कोभणित भर्यो गिरा जननें बायो । सतत्रेता
द्वापरहु युगन चहुंते चलिआयो ॥ यहसंबंध असंद
सदा सुनियो हो भाई। कलिमें केवल प्रबल परम प्रा-
कृत प्रभुताई ॥ परमारथ के पुंज परम पूरे अभि-
लाषा । जग जाहिर यहलोक सुधारत सर्वस भाषा ॥
संप्रदाय शुभचार पुंज पंथन समुदायो । परमप्रवर
प्रीत्यर्थ भक्त भाषा यशगायो ॥ तबतहँ कुटिल कितेक
मानिमच्छर सतराना । तित तितप्राकृत पक्षकियोप्रभु
प्रकट प्रधाना ॥ नामदेव निजभक्त संत नारायण दासा ।
नरसी नागर भक्त सकल को सुयश प्रकाशा ॥ सुनि
नाभाको सुपद पंढरी पति हित हेर्यो । देपंडित को
पीठ मुदित मन मंदिरफेर्यो ॥ पुरुष सूक्तको पाठसुनत
नाहिंन अनुरागे । सधनाको पद सुन्यो सर्वरी में पड़
भागे ॥ रूप्यो बनारस बाद विपुल खल अरु रयदा-
सा । तजि श्रुति को समुदाय सुन्यो जनपै पदभासा ॥

मैंता नरसी भक्तविदित जूनागढ़वासी । तिनप्रतिरोपी रांड़ मूढ़ मिलके संन्यासी ॥ द्विज भाषापद भणितदई दामोदर माला । देवगिराको दर्प दल्यो देखत तिहि काला ॥ ताते तीनहुंकाल युगन चहुंते चलि आयो । यह संबंध सदैव समझि द्विज टीकम गायो ॥ यह सुनिके संबंध वदत वादी मन माया । द्वापर कृत त्रेतासु सुनी श्रवणन नहिं भाया ॥ तौ भाषाको भूल सृजो संबंध अनारी । बिना मूलते विदित सकल शाखा विस्तारी ॥ तातेहिय मधि हेरि अबै उत्तर द्रुत दीजै । नातर भाषा भणित भ्रष्ट यह हमन पतीजै ॥ तद्वांउत्तर ॥ हे विवेक वारिधी आपने फरमाईके सतयुग त्रेता द्वापर इन युगत्रयमें तौ भाषामात्रको नामभुनिबेमें आयो नहीं सो ऐसे बिनबिचारे बोलबोलनो आपको उचित नहींहै जो हियेकी विदाभईतौ लिलार कीसातौ निहार देखौ तुमने कही कै युग त्रयमें भाषामात्रको नामसुनिबे में आयो नहीं तौकहौजी श्रीमद्भागवतके एकादश स्कंधकेसत्ताईसवें अध्यायमें श्रीभगवद्वचन श्रीउद्धवप्रति पूजाप्रकरण केअंतमें क्योंकह्योहै ॥ श्लोक ॥ स्तवैरुच्चावचैस्तोत्रैः पौराणैः प्राकृतैरपि । स्तुत्वाप्रसीदभगवन्नितिवंदेतदंडवत् ॥ टीका ॥ हे उद्धव मेरी पूजांत समयमें उच्चकही ऊंचेस्वर अवचकही नीचे मधुरस्वरसों पुराणोद्भव विबुध वाणी करिकै अथवा प्राकृत मनुष्य वाणी करिकैस्तवनकर कहै कि हेप्रभो प्रसीदनाम प्रसन्नहोहु ऐसे कहिकै दंडवत करैतौ मैंपरम प्रसन्न होतहूं ऐसे

श्रीमुखको वचनहै तव तुम विनाप्रमाण मिथ्या वचन कैसेकहोहो कै युगचयमें प्राकृत वाणिको गोतमात्र नहीं थो आछे विचारिकै हियकी आँखिन ते हेरि देखौतौ श्रीकृष्णने तो ऐसेफरमाईहै कै संस्कृतै प्राकृतै रपि कहो संस्कृत स्तवन मैं माधारण प्रसन्नहोतहूं ये तौ साधारण वचनहै अरु प्राकृत प्रणाव प्रियतर वि-शेष कै सलीप तौ ओपपद भयोहै कैजो निश्चयात्म कसं प्रवतें याते विचार देखिये कै प्रिय प्राकृत स्तवन तेतौ अवश्य मेव प्रभु प्रसन्न होयहीं हैं अर्थात प्रभुको प्राकृत विशेष सुखसुखमें जान्योजायो यहां तुमकहो कै कैप्राकृत पेक्षा संस्कृत प्रियहै तवतौ संस्कृत पदपै लै धखोहै सो ये भूलकैमतविचारो प्रथमपश्चातको का रणतौ यहहैकै यामें कैमुति कन्याय सूचित कियोहै कैमुतिकन्याय को लक्षण कहाकहै यस्यनाम सेवका-र्थं करोति तदाध: स्वयमेव करोति तिकि मुत्तवक्तव्यं कैजाकोनासखों कार्यहोवेहै तौवोस्वत:करै यामेंकाक-हनो सोयहांकैमुतिकन्याय सूचितकियोहै व्यासजीने कैसंस्कृतै: प्राकृतैरपि:कै प्रभु संस्कृत वाणीतेही प्रस-न्न होयहैं तव परम प्यारी प्राकृत भाषाते प्रसन्न होय यामें काकहनो याते तौ भुवांकहो यहीहैऐसे फरमाई है असहमार तौ संस्कृत प्राकृत दोऊ समान नेत्रकोना ईप्रियहैं कदाचित तुमकहौगे कै दोऊसमानहैं तौ प्रा-कृतपक्षकी खेंच सिवाय क्योंकरौहो सो यह भूलिकै जिन बिचारो यापैतौ ईश्वर आज्ञाऐसेईहै किसतयुग

त्रेता द्वापरमें संस्कृतही मुख्यहुती अरु याहीते प्रभुकी प्रसन्नताहुती ऐसे कलिकालमें प्राकृतहीकी प्रधानताहै अरु याहीद्वारा प्रभुकी प्रसन्नताहै तबतौ ठौरठौर करना केवलकृपा बोड़ाना आदि अनेक भक्तनकी भाषा पै रीझिके प्रभुने पक्ष कियो अरु संस्कृताभिमानीको मान मर्दन कियोहै अरु या श्लोकमेंभी यही सूचनाहै किसंस्कृतैःप्राकृतैरपि संस्कृतपद प्रथम याकेलिये कह्यो है कि प्रथमपश्चातकी सूचना मिसिलयकै प्रथम युग त्रयमें संस्कृतते मेरीप्रसन्नताथी ऐसे अगाडीकलिकाल में याते विशेष भक्तनकी प्राकृत भाषापै प्रसन्नता होय गी ऐसे भावी सूचना करीहै याकेलियेप्राकृतपद पाछे कह्योहैक्योंकियुगत्रयकी अपेक्षातेकलिपश्चातगिन्यो जायहै अरुग्रन्थभी पहिले बन्योहै याते कलिपश्चात गिन्योहैपरंतुकलिहै परमदुष्ट अंगदकीनाई भाषाचार णभटसोंटूटैनहीं याकोतौ परम विकटभट भाषासरीखो विजयकरै अरु प्रभु प्रसन्न करिकै मोक्षमौजलहै याकी प्रतीति पहिले निमित्त संस्कृताभिमानी के मानमर्दन ठौर ठौरपै किये अरु भाषाचारे भक्तन को पक्ष प्रतिपालन कियोहै कलिकालमेंसो आगे विस्तारसों कहैं गे याते विचार देखिये और युगमें भाषा बीजरूप सूक्ष्महुती अरु कलिकालमेंतौ ईश्वर आज्ञाते भाषाहीकी ध्वजाउडैहै अरु कलिके परार्ध में संस्कृत सूक्ष्म बीजभूतरहैगो याको भलीभांतिते विचारदेखिये अनेक ग्रंथ भाषामें ह्वै गये अरु सूधोमार्ग समझिकै अंगरेज

लोग अनेकसतके कठिनग्रंथको सरलभाषा में बनाये अरु बनातेजायहैं यातेवृथाभिमान तजिकेयाकोईश्वर आज्ञासानोक्योंकि अगरेजलोगोंमेंभी ईश्वरांगमर्मोभ्र- यो जो भाषा सुखेसार्वपे अति प्रसन्न हैं परंतु युगत्रयमें भगवत आज्ञाते संस्कृतमुख्यथा भाषागौ न यौ कालमें भाषा मुख्यहै अरुतुम कहौ कि युगत्रयमें भाषानिर्मूल थीसो तुम्हारो कहनो सर्वथा अप्रमाणहै जो युगत्रयमें भाषा न होती तौ व्यासजीसंस्कृतैःप्राकृतैरपि ऐसोपद न लिखते और संक्षेप शारीरकमें हू लिख्योहै कि ॥ श्लोक ॥ संपूर्णाजगदेकनंदनवनंसर्वेपिकल्पद्रुमाः । गंगा वारिसमस्तवारिनिवहाः पुण्याःसमस्ताःक्रियाः ॥ वाचःप्राकृतसंस्कृतंश्रुतिशिरोवाराणसीमेदिनी । सर्वेहृ ष्यानिरस्तब्रह्मविषयेदृष्टेपरब्रह्मणि १ ॥ वार्त्ता ॥ कहौ जो तुमने कही कियुगत्रयमें प्राकृत भाषाथीहीनहींसो जो न होती तौ ठौरठौर प्राचीन ग्रंथमें क्यों लिखी है परंतु भाषासदैवहै तब लिखेहैं याते तुम्हारो वितंडा वादवृथाहै अरु हमारे अनुबंधको संबंध सदासत्यहै और संबंधकीसत्यसाक्षी औरभी सुनलीजै किश्रीनाभा जीने भक्तमालमें लिखीहैकि ॥ छप्पै ॥ चारयुगनमें चतु र्भुज भक्तगिराशांचीकरन । दारूमैंतरवारसारमयरची रु वनको ॥ देवाहितसित केशप्रतिज्ञा राखीजिनको । कमधुजकेकपिचार चितापर काठजुल्याये ॥ जेसल केयुधमाहिं अश्वचढिआपुन धाये । घृतसह सहिंसीचौ गुणी श्रीधरसंगशायक धरन ॥ चारयुगनमें चतुर्भुज

भक्तगिरासांचीकरन है ॥ वार्ता ॥ नारायण चारिहु युगमें भक्तबाणी सत्यकरे हैं तब अर्थात भाषा संबंध सत्यहै ॥ तहांबादीबचन ॥ तुमने चारिहुयुग में भक्तगिरा प्रभुसत्यकरीहैं यापै भक्तमालकी साक्षी दई सो सतयुग त्रेता द्वापर तीनकी तौ प्रमाणहै क्योंकि सतयुग में स्वायंभूमन्वादिभक्तके मुखसों बाणी कढी कि आप हमारे पुत्रहोहु तब उनकी बाणी सत्य करबे को आप अजन्माहोतसंते जन्मे अरु उनकीबाणी सत्यकरी अरु त्रेतामेंप्रह्लादादि भक्तके मुखतेंनिकसी कि प्रभूस्तंभमें हैं सोस्तंभमेंतेप्रकट अरु बचन सत्यकियो और द्वापर में द्रौपदी के मुखते करुणा बचन कढ्यो कि हेद्वारकाधीश लाजकी जहाज डूबै है आप सेकरन धार होते तबप्रभू निकटस्थहोतसंते भक्तगिरा सत्यकरणार्थे द्वारकाहेइकै सपदिपधारे अरु लज्जाराखी ऐसे तीनयुगमें भक्तगिरा सांचीकरी जाकी श्रुति स्मृति साक्षी दे हैं परंतु इनमें कलिके भक्तकोअडंगा सर्बथा अप्रमाणहै क्योंकि कलिमें तौ भक्त पुराणादिक में नास्तिक हैं देखो अध्यात्मरामायण में ब्रह्माजीकोबचन श्रीनारद प्रति है कि ॥ श्लोक ॥ प्राप्तेकलियुगेघोरे नराःपुण्य विवर्जितः ॥ दुराचाररतःसर्वे सत्यवार्त्तापराङ्मुखः १ ऐसे अनेकग्रंथ साक्षी देहैं कि कलि में दुष्टप्रजा होयगी भक्तमात्रकोबीज न रहैगो तबतुम्हारोसंबंध अर्थात मिथ्याभयो ॥ तहांउत्तर ॥ हेसद्विवेकी ऐसोबिनाबिचार को प्रश्न का फरमावोहो कि कलियुग में भक्त की

नास्ती है आछे विचारि देखौतौ कलियुग में भक्त की बाहुल्यताहै ऐसी युगत्रय में गतांगभी नहींभई अरु कलिमें तौ सहस्रावधी भक्त शिरोमणि भये हैं तहांप्रश्न ॥ ऐसी दंतकथा कपोल कल्पित हम नहीं प्रमाणमानैं जैसेकलिमेंभक्तनास्तीकी हमनेसाक्षी दीन्ही तैसे सद्ग्रंथकीसाखी तुम भक्तआस्तिककी सुनावो तब प्रमाणकरैं ॥ तहांउत्तर ॥ तुम साक्षीकोकहीहौ सोठीक है परंतु साक्षीतौ परोक्षपदार्थकी चाहिये प्रत्यक्ष को साक्षीकहाहोतकंकणअवलोकिवेकोआदर्श की नाईं देखौनरसीजीके मायराकेवस्त्र श्रीडाकोरजी मुखपर मीरावाईकेचीरको चिह्न नामदेवको मंदिर फिरयो औररंगनाथको मस्तकनम्र डाकोरनाथ रामदासजीके साथेविराजे साखीगोपाल वृन्दावनसोंकुड़दे पधारयो सोविराजेहैं राधारमणशालग्रामते प्रकटे सो वृन्दावन में विद्यमान करमाको खींच छप्पन भोग प्रत्यक्ष श्री जगन्नाथजी अरोगे ऐसेसहस्रावधी चिह्न प्रत्यक्षहैं या को प्रमाणकाहेको चाहिये ॥ तहांप्रश्नवादीवचन ॥ प्रत्यक्ष है तो तुमसारिखेकोहै हमतौ बिना व्यासवचन कलि के भक्तको प्रमाण तीनकालमें नहींमानैं अरुकलिमें भक्तहोयँयापै निश्चयकहूं साखहैइनहीं याते तुम्हारो कलिके भक्तको संबंध अर्थात व्यर्थहै ॥ तहांउत्तर ॥ हे विवेकवारिधीकलिमेंतौ एकरजकबिना सर्वन्याती में सहस्रावधी भक्त भगवत परायण भये हैं जिनके चिह्न विद्यमानहैं और श्रीनाभाजीने श्रीभक्तमालमें लिखाहै

कि॥ औरयुगनतेकमलनयन कलियुगबहुतकृपाकरी॥ बीचदियेरघुनाथभक्त सँगठगियालागे। निर्जन बनमें जाय बिप्र बधकियो अभागे॥ बीचदिये सो कहां राम कहि नारिपुकारी। आये शारंगपाणि शोकते सपदि उधारी॥ दुष्टदलनकरिदर्पसहबिप्रप्राणसंज्ञाधरी॥ चारिउयुगतेचतुर्भुज कलियुग बहुत कृपाकरी॥ वार्त्ता॥ ऐसेभक्तमालकी साक्षीहै अरु केशवदासजीकोमस्तक छिदेपै श्रीजानकीजीवनने गिरधराय सजीवनकिये सो शीघ्रतामें गिरधर बीच कंठ कूपमें शिखारहगई जातेकेशवलटेरिया कहाये जिनकोयश जगविख्यात है ऐसे अनेकभक्तके चिह्न बिख्यातहैं तव तुम कलिमें भक्तकी नास्ती कैसेकहोहो॥ तहांवादीबचन॥ तुमतुच्छ तरंगिणीके संबंध सत्यकरिबेकोकलिमें भक्तआस्तिक ठहरायबेनिमित्तभक्तमालकी साक्षीदेहो सोहमकदापि प्रमाणनमानें क्योंकि साक्षीतो अर्वाकरही परंतु नर सोमीरामाधवदासादि जा समय में बिद्यमान हुते तब भी हमसारिखे सुज्ञनेनहीं प्रमाण किये तौ अब बिना वचनव्यास तुच्छ साक्षीकी प्रतीति कोकरै अरु सद ग्रन्थनकी साक्षीहैइनहीं तब सहजै संबंध वृथा भयो क्योंकि कलिमें तौ भक्तकीनास्तीहै॥ तहांउत्तर॥ आप कहौकि कलिमें भक्तकी आस्तिक को वचनकहूं हैइ नहीं तौ कहो जो श्रीमद्भागवत के एकादशस्कंध में जनकप्रति करजाँजन योगेश्वर ने युगधर्म कहे तहां कलियुगके भक्तकोपरम आधिक्यता क्योंकही॥ श्लोक॥

कृतादिषुनराराजन्कलौविक्रान्तसंभवं ।कलौखलुभवि ष्यंतिनारायणपरायणाः ॥ टीका ॥ सत्ययुगादि युगत्रय केमनुष्य जो हैं सो कलियुगमें जन्म धारण करवेकी अतिइच्छा राखैहैं क्योंकि कलिकालमें तौ खलु इति निश्चय करिकै साक्षात नारायणपरायण भक्त शिरो मणि अनेक भक्त उत्पन्न होयँगे तहां कहांजो कलि के भक्तको शिरोमणि क्यों कहैं कही शिरोमणि याते कहे कि युगत्रयमें प्रभुअवतार प्रत्यक्ष हुतेसो उन- के विद्यमान काम क्रोधादि शत्रुनको पराजय करिकै सालोक्यादि मोक्षमौज वरतेथे सो मालिक विद्यमान नहोतेतो शूरसावंतलडैमरै अरु कदाचित्कायरहेवोभी शूरनके संघट्टनमें मारमार करै पै पलाय नहीं क्योंकि मालिकविद्यमान है याते सो स्वामीके सन्मुख शूर समर सरकरैं अरु कायरभी कतल होजायँ तथापि विवेकी लोग तारीफ नहीं करैं ॥ दोहा ॥ स्वामी के सन्मुखसदा कायरपकडैं धीर ॥ जोंटीकमभाजन सजल द्रवै न आगिकथीर १ याते अरुमालिक न होतेस्वा- मि धर्मधारिकै संग्राम सरकरैं अरु लव न उजालै उन लोगन की प्रशंसा शत्रुन के मुखसों सुनी है सो सांची स्तुतिवहीहै कि शत्रुनकेमुखोद्गतहोवे ॥ दोहा ॥ साधु सारहै सो सती यती योधिताज्ञान । रज्जव सांचे शूर को वैरीकरैंबखान ॥ वार्ता ॥ सो बिन मालिक समर विजय करने सारिखी करनीतो कलिकालके भक्तन की है देखो कलिकाल में भगवान दृष्टिगोचर नहीं हैं

अरु सुने हैं कि दुःसमय देखिके कृष्णा भगवान धाम सिधारगयेहैं तथापि बिनमालिक निषाद के द्रोणागुरु की नाई प्रतिमारूपी स्थापन करि के और युग के भट भक्तते अनंत गुणो शम दमादि सहाय बिना मालिकके परोक्ष कामादि कटक को सरकै है ज्ञाते नारायण परायण कहे और त्रेतायुग में सीताहरण भयो वा समय में अनेक भक्तहुते सो शोच कस्यो करैं परंतु कोहूते कछु भयोनाहीं अरु कलियुग को भक्त दासभूप सीताहरण की कथा सुनिकै अकेलो अश्वारूढ होयके मारमारकर तो समुद्र में जायधँस्यो तब वाकी सचाई पै रीझिकै सानुज सियासह रघुराज पुष्पकारूढ होइकै आय मिले अरु वैरीको विध्वंस सुनायो अरु फेरल्याये राजा को यह दक्षिणदेश में विख्यातहै और द्वापरमें गोपीजेहैं तेसबसंतकी चूडामणि कहावैहैं परंतु उलूखल बंधन समय निजनिज भवनते रसरी लाइदई अरु कृष्णा बंधनकोकौतुकदेखैकरीं अरु कलियुगकी रतिवंतीबाई ऊखल बंधनकी कथामात्र सुनि कै परम विह्वल ह्वै गई अरु बोली कि हाय हायरी यशोदा कसाइन मेरे नित्य नवनीत प्रिय बालमुकुंदके कोटिकंदर्पलावण्य कोमल कलेवर में कठोर बंधनकैसे सहनभयो होयगो ऐसेकछुगद्गदाक्षर कहिकै परमप्रतप्ततनुते प्राणप्रयाण करगई अब गोपीको अरुयाबाईकोकितनोअंतरहैयातेभक्तशिरोमणि औरमीराबाई तुकाराम कबीरादि अनेक भक्त

कलियुगमें पंचभूतात्मक की देह मद्दवर्तमान प्रभुकी सायुज्यताकोप्राप्तभये ऐसेयुगत्रयमें भयेहोयतौ बताश्रो अस्अंतरनिष्ट राजाकी रानीनेकहीकि आजअर्धरात्रि समय तुम्हारेमुखतेनिद्रामें रामनामनिकस्यो ऐसेवचन सुनतेही राजाबोल्योकि जेरेमुखते रामतौनिकसिगयो अबबिना रामनामकी देहरखनो धिक्कारहै अबकौनके आधारजीऊंगो ऐसेकहिकै हंसउडिगयो रानीने परम पश्चात्तापकियोऔरसत्ययुगमें श्रीगंगाजीके निमित्तको तो परिश्रमकियो भगीरथादिने तबपितर पवित्र करसार्थपधारीं अरुकलिके मीराभक्तके घर वैठे गंगासम्मुखआई स्वतपवित्रहोयवेको और युगत्रयके भक्ततौ शापादण्डादिधौकुत्ते सनकादि नारदअष्टावक्रअगस्त दुर्वासादि अरुकलिके भक्ततो कैसेशील सागरभये कि जिन्होंने जगतके अनेक अपराधसहेपै काहूको शाप दियोहोयतौ बताबो देखोकुबाजीने पदत्राणसहीतुका रामनेसांटेकीमारसहीजयदेवजूकेकरपदछेदडारेताको द्वेष न विचारयो अरुउनकी सेवाकरवाई दरवेश ने मस्तकफूटवेको दुःखनमान्यो खाज फूटवेकीकरुणा करी परंतुशापनदीन्हो क्योंकिक्रोधावेश होयतबशाप देवैं सोतौ निर्मूल तब शाप कौन देवे और युगत्रय के भक्तने तौ विवेक विभा करके तेजकरके कामक्रोधादतारिका छिपायदयेसो तेजअस्तभयो कि ताराचम कैसो शापदेवेई देवे अरु कलिके भक्तनने तौ कामादिशत्रु निर्मूलकियेहैं निर्मूलको हृदयमेंरावै नाहिर

नानिकासें क्योंकि येतोकेवल गुणग्राहीहैं सोगुणलिये दोहा॥कामभिलावै रामते जोकइजानेराख। यामेंकाबि राकाकहै शुकदेवबोलेसाख १ क्रोधबढ़ावेबोधको जोकोइजानेरोध। लोभबढ़ावै शोभको उरआछेअव रोध २ ऐसेकामादि षट्भटके गुणलीन्हे अरु हृदय में राख बाहिर प्रकटायबेकी रीतिकोही निर्मूल कियो ऐसेऊहूं युगत्रयकेभक्तकेचरित्र होंयतौबतावो कलिके भक्तकोतौ अनेकरीतितें अधिकाईहैदेखोपंढरीनाथने श्रीमुखतें फुरमाईकि मैंने द्वापरमें सेतु रचनाकरी सो कालांतरमेंभंगहोजायगी अरुतुकारामतुम्हारीकविता रूपी संसार सागरकी सेतुसदा अभंगहै ऐसे कहांलों गिनावें परंतुकलिकालमेंतौ सहस्रावधी भक्त नारायण परायणभयेहैं अरुसमग्रकै अलौकिक चरित्रहै तबतौ करभांजन योगेश्वरद्वारा भगवत बचन लिख्योहै कि कलौखलुभविस्यंतिनारायणपरायणाः यातेभक्तशि रोमणिकहे औरकलिकालके भक्तने भगवत आज्ञाजा निकै भाषाकाव्य की बाहुल्यता बिशेषणा बरणीहै ताते हमारो अनुबंध संबंध अर्थात दृढभयो॥ दोहा॥ सुनिवादी संबंध दृढ उर में भये अचेत। रहे मौनधरि तौनतहँ बन्योन उत्तरदेत॥

इतिश्रीमन्निखिलमहिपमुकुटमणेःश्रीराठौरवंशावतंसस्यश्रीमत् बलवंतसिंहभूपतेसमाश्रितेनआज्ञापालकेनश्रीरत्नरामा त्मजेनसाहाजापुरस्थकविटोकारामेणःकृतायां भाषाऽमृततरंगिण्यांअनुबंधसंबंधवर्णनं नामद्वितीयस्तरंगः २॥

दोहा॥ अधिकारीकेगुणाकहे अरुसंबंधवमदेव। अब वरविषय वखानहूं जिमि योजत उरदेव २॥ गेयामृतं॥ जप तप व्रत मख दान धर्म धारत जगजेते। प्रभुप्रीत्यर्थ समग्र समर्पत सम्मति तेते॥ जाते प्रभुपद प्रेमपुष्ट जो जिहिं विधि होई। विषयविदित वरवर्ण्य सुधासरिता मधिसोई॥ और विषय जगविदित विपुल विष तुल्य अनेका। हरि पदपद्म प्रसिद्ध प्रेमवर विषय सुएका॥

टीका॥ जगत में अनेक विषय हैं परंतु सर्व विषतुल्य समझिकै वर्ण आश्रम विद्या वित्त रूप वल सर्वको अभिमान तजिकै जप तप व्रत मख दान धर्म समग्र परमेश्वरप्रीत्यर्थे समर्पणकरिकै प्रभुपादारविंदमेंप्रेमपरिपुष्टकरनो यही विषय सर्वोपरि समझनो सोई याग्रंथको वरविषयहै अरु यापै और विवेकी लोगको साक्षीहै॥ आर्याछंद॥ व्यसनानिसंतिवहूनि व्यसनद्वैमेवकेवलं व्यसनं विद्याभ्यसनं व्यसनं अथवारघुराजपादसेवनं व्यसनं १॥ दोहा॥ अधिकारी संबंधशुभ वरणयो विषय वहोरि। परम प्रयोजनको प्रकटनिगदत निपुण निहोरि॥ चौपाई॥ अमृत तरंगिणि अमल प्रयोजन। गदित मुदित धियधारत जोजन॥ प्रभुआयसु परिपालन काजा। सुधासरितको सृजत समाजा॥ श्रीअनुशासन सकल सुनावन। प्रकटत परम प्रयोजन पावन॥ निजमुखते नारायण भाखी। विविधभांति सद्ग्रंथन साखी॥ देवगिरा मधि समगुणगावत। तेयुगत्रय शुभ सुखद सुहावत॥ कलि केवल प्राकृतते रीझो। अपर

अडंबर को नपतीजो ॥ पटुप्राकृत प्रिय मेरे यशको । बरणत विदुष बिमलनवरसको ॥ सो मेरा शुभआयसु धारी । तिहिंप्रिय लखितसमकल सुधारी ॥ सन्यासी सुरगिर पढ़ि माषे । नरसी प्रिय प्राकृत अभिलाषे ॥ दोहा ॥ नरसीकी सरसीकरी निपट बढ़ायेनूर । पुहप माल परकटदई परी दुष्ट मुख धूर ॥ रोला ॥ बिदित बनारस बीचरची तुलसी रामायन । बिदितभई बर बिदुष बिबुधबाणी मधिगायन ॥ पुनि मम आयसुपा- य ताहि हरजूहर आनी । गोचर रह्योन ग्रन्थतबै तु- लसीअनुमानी ॥ सर्बस तजि हरि सुयश लेन तस्कर कोआयो । बीसबिसे बिख्यात यहैबिश्वेश चुरायो ॥ रोलाछंद ॥ याते रघुबर चरितबिश्वनायकते लैहों । नातर अशन सहित अबै तन को तजिदैहों ॥ अस करि अचल विचार सत्य संकल्प सुनायो । तब शिवशंकर सपदि स्वप्न सुंदर दरशायो ॥ श्रीशिवउवाच ॥ हंस बंस अवतंस दई आयसु असमोको । सो वृत्तांत समग्र सुनाऊं सदमति तोको ॥ ताको सावध होय सत्य श्रवणन सुनलीजै । पुनिमोपै कछु कृपा कोप चाहै सोकीजै ॥ वार्ता ॥ यहछप्पैशिवजीने गोसाईंजी केकरपै लिखदियोसा मीराबाईके कंकणसहँ दोऊ सपनाके उघड़ये ॥ चौपाई ॥ भोभोआदि कबी अवता रा । भो रघुपति प्रिय परम उदारा ॥ तुम सतयुगशत कोटि रमायन । विबुध गिराकरि सुंदर गायन ॥ सो युगयुग जन गनकी तारक । अब कलिकाल कपटको

कारक ॥ जासधि परकटपाप प्रधाना । मनुजभये मत्र दनुज समाना ॥ दीन मलीन हीन हतभागी । हैय द्वारि जरैउर आगी ॥ ऐसेग्रधम उद्धरन काजा । भाषा प्राकृत प्रबलइलाजा ॥ यातेरामरजायसुराखी । भाषा भणित भूरियश भाखी ॥ तत्र तुलसी श्रवक्रप्रतिगाईं । भाषा विबुध आदरत नाईं ॥ जोप्रबंध पंडित नहिंमानैं । सोअसवाद वालकवि ठानैं ॥ यहमुनि विश्वनाथ वरभाखी । सत्यसत्य कारयोपति साखी ॥ भाषाभणित भूमि विस्तरह्नी । मुनिमुनि श्रवणा भूरिभव तरह्नी ॥ इहिते विमुख विमुख रघुपतिते । विमुख भयोविचर हि सुभगतिते ॥ दोहा ॥ यहकलि काल कराल महि औरन असल इलाज । तुलसी कृत भाषा भणित संसृति सिंधु जहाज ॥ छप्पै ॥ कृतभव सिंधु निकंप तरंगनिविवाक तरणितव । त्रेताउमड्यो मोहफेन तहं वालमीक प्लव ॥ द्वापर तरल तरंगविषम भवपरत भ्रमरगत । बहुधा भूरिप्रकार व्याससुनि वचन उद्धरत ॥ घोर भयानक कलि कलुष शतसहस्र लहरैंधरहि । श्री तुलसिदास वाणी विमल वरजहाज चढ़ि जन तरहि ॥ सोरठा विश्वनाथ वरदान राम रजायसु तेदये । सोभव अंतरध्यान जनतुलसी जाग्रत भये ॥ विस्मय विविध विशाल पुनिप्रभुकी प्रभुता समुझि । दीनानाथ दयाल भली विचारी भावते १० यह कलिकाल कराल मुग्धमंदमनसामनुज । पूणाकरी प्रतिपालप्राकृतमुगम प्रचारि प्रभु ॥ टीका ॥ देखो कलिकाल की

प्रजाको आयुष्य ऐश्वर्यभाग्य भलाई भर्ग बुद्धि विवेक सर्वसत्ता हीन समझिके याहीकी भाषा प्राकृत परम प्रसिद्ध प्रयासविन प्राप्तपेखिके प्रभूनेयाही के पठनते पर्ण प्रसन्नता प्राधान्य प्रकटकरी अहोजनपै जगदीश कृपा जैसे दुष्काल देखिके प्रजापालनार्थ पूरेंद्र पूर्ण कृपा पूर्वक सर्व प्रजाको अनुशासन सुनावै कि राजा केकरबिना तुम्हारो उत्पन्नकिये। तुम भोगकरौ अरु राजके शुभ चिंतक बनेरहो जौलौं दुष्काल रहैतौलौं फेर सुकाल भयेपै करलेवेंगे ऐसे कलिकाल कराल रहै तौलौं मनुष्यनको अल्पायुषी अल्प बुद्धी अध्ययन बिना अधोगति अवलोकन करकै इनहिंकी भाषामें तरणोपाय अरुआपकी प्रसन्नता फुरमाई क्योंकिआ-प आपकी भाषामें संगपायके अनायासते ज्ञानहोयहै फेर सुरनर असुर पशुपक्षी कोईहोहु ऐसेमनुष्यमनुष्य-भाषामें अनायासते समझैंगे सोकल्याण तौसारा सार पाप पुण्य समझिकै सारग्राहीहोयजामेंहै अरुप्रभूको भजैअरुगुण गावै यामेंहै कछुसंस्कृत प्राकृत द्वारा नहीं ऐसेसमझिकै कलिकालमें याहीसरलभाषामें त-रणोपाय अरुआपकी प्रसन्नताकी आज्ञा दीन्हीहै अ हो दिनेन्द्रनंदनकी दयालुतापै दृष्टि दीजिये॥ सोरठा॥ इहिविधि आयसुपाय रामरजायसुराखिशिर । अव-धपुरी प्रतिआय विरच्यो राम चरित्रवर ११॥ वार्ता॥ फेर बिप्राकृत प्रतीतिनिमित्त गोसाईंजीने दोहाकह्यो हैकि॥ दोहा॥ सपनेहु सांचेहु मोहिंपर जोहरगौरि प-

साव । जोफुर होयकु जोकछेउ भाषाभंगात प्रभाव १२ ॥ वार्त्ता ॥ यहदोहाकहतेहैं कौशलेंद करुणा यतनके उर अरविन्द में आविर्भाव भयो अरुहातेहैं गोसाईंजी की गद्गदगिरा भई अरुरोमांचहोयहृदयमें भाषाभागीरथीको ओघउमग्यो वाके अमितानंदमें फरमाई कि ॥ चौपाई ॥ जेप्राकृत कविपरम सयाने । भाषाजिनहरि चरित बखाने ॥ भयेजे अहहिं होयँगेआगे । प्रणवौं सकल कपट छलत्यागे ॥ त्रिकालनंबंधहै ॥ वार्त्ता ॥ यहांकोई कुतर्क करैकि कलिकालमें संस्कृतरामचरित्र वर्णनकरन हारेसहस्रावधी कविभये हैं उनको तो गोसाईंजीने समभिकै साधारण नमस्कार कियो है कि कलिके कविनकरौं परणामा । जिन बरणे रघुपतिगुणग्रामा ॥ ऐसेसाधारण नमनकियो अरुभाषाकविजेहैं तिनको परम सयाने कहिकैकपटछल छांडिकै परमप्रेमयुतवंदनकियो गोसाईंजी ऐसेसमर्थवाल्मीकावतारहोयकै ऐसी अनुचित वातक्यों करी ॥ तहांउत्तर ॥ देखो विधाता व्यास बाल्मीकादि अनेककवि आगेते आये आपकी प्रज्ञाप्रमाणौं भगवत चरित्र देवगिरा में गायन करतेआये उनकी परिपाटी देखदेखके कलिकेकविननेभी देववाणीमें भगवत चरित्र गायनकिये क्योंकि महाजनो येनगत स्यपंथा ऐसे कहीहै सोइनने भी देवगिरामें गुणगायेक्योंकि जगतको आरब्ध जोहै किपंचौमिलिकै कीजैकाज । तौहारजीतनहिंआवैलाज ॥ ऐसेअंधपरंपरा परजाली पेखकै कविके कविनने

भगवतआज्ञा भूलिके वोवीणा गिरामें गोविंद गुणगाये निजश्रेयार्थे याते सयाने समझिके इनको गुसाईंजीने साधारण नमनकीन्हाहै अरु कलिके प्राकृत कवितो कैसेपरमप्रवीणपुण्यशीलहैं कि जिन्होंने संस्कृताभिमानकी परनालो परित्याग करके भगवतके अंतःकरणकीआज्ञासमझिके प्रभुप्रसन्नार्थपरमपुनीत प्राकृत गिरामें गुणगण गायन कीन्हो ताते गुसाईंजीने परम सयानेकहे अरु भगवतकीआज्ञानुसार चरित्र निहारिकै कलि के प्राकृत कवि को प्राणातिप्रियतर पेखिकैसांचेमनतें छलछांडिकै नमनकीन्होहै ॥ तहांवादी वचन ॥ गुसाईंजी को तौ सहृतजनके मुखते महा भक्त शिरोमणि सुनेहैं अरु येतौ संस्कृतवालेकालके कविनको छलछमते वंदे अरु प्राकृतकविनको छल छांडि कैवंदनाकीन्ही सोछलछद्मभरेभी कहूंभक्तभयेहैं ॥ तहां उत्तर ॥ तुमअपनी दोषदृष्टीते गुसाईंजीपै छलछद्मको दोषधरोहै सो तीनकाल में स्पर्श न होयगो क्योंकि श्रीगुसाईंजीतौ प्रथमही पुकारकरिके निर्दोष भयेहैं ॥ चौपाई ॥ जसकछु बुधिविवेकबलमेरे । तसकहिहौं उर हरिकेप्रेरे ॥ वार्ता ॥ अर्थात इनवचनके कहनेहारे कोशलकिशोर अंतर्यामी जानेगये गुसाईं जीकी तरफ भेदाभेदको दूषणधरो सो सर्वथा अप्रमाणहै गुसाईंजी ने तौ विश्वेश्वरकी आज्ञा ते ग्रन्थारंभ कीन्हो अरु श्रीजानकोजीवनते योजना कीन्हो जारीतिके वर्णाचारणकीन्हे हैं अरुतुम कहोगे कि गुसाईंजीके हृदय

में श्रीसीताकांत प्रेरकहते तौ उनको तौ कलिकालके संस्कृतकवि अरु प्राकृत कवि दोऊ समान चाहियें तबवंदनामें भेदाभेद क्यों कियो॥ समाधान ॥ सतयुगमें वेद त्रेतामेंशास्त्र द्वापरमें पुराण ऐसे कलिमें भाषा की आज्ञाहै सो कितनेक सत्पात्र कवि तौ संस्कृताभिमान तजि २ के भाषामें गुणगायन करने लगगये ताते प्रभु आज्ञापालक अनुकूल भये अरु कितेक सारेअहंकारके संस्कृत में गुणगायन कस्योकरैं परंतु आज्ञा पै दृष्टि दीन्हीनहीं ताते आज्ञाभंगकर्त्ता प्रभुते प्रतिकूल ठहरे सोअनुकूल अरु प्रतिकूल बराबर कैसे होउसकैं ताते भेदाभेद विचारिकै प्रभुने कियोहै और देखो माधव दासजी व्यासावतार कबीरजी शुकावतार सूरसागर उद्धवअवतार नानकजीजनकावतार रामदासहनुमाना-वतार नाभाजी ब्रह्मावतार शंकराचारजी शिवावतार रामानुजजी शेषावतारज्ञानदेव विष्णु अवतार नित्या-नंद कृष्णचैतन रामकृष्ण अवतार मीरागोपी अवतार नरसीजी सुचकंद अवतार ऐसेदेवतारूपी सर्व कलि-कालमें अवतार लैकै भाषा बनाय प्रवर्त्तन करीहै ऐसे अनेक वैष्णव भयेहैं जिन्होंने कलि अवलोकिकै भा-षा चरित्र वर्णन कियेहैं सोये कहासंस्कृत नहींवनाय सकते थे परंतु संस्कृतकी आज्ञानहीं तबभाषामें गुण गाये तबतौ परम सयाने कहे अरुछल छांडिकै बंदना कीन्हीहै कलिके प्राकृत कविको यह सिद्धांत और ऐसेही गुसाईंजीने भगवत आज्ञा भूलिकै संस्कृत राम

चरित्र कीन्होथो परंतु निजजन जानि कै विश्वनाथने वह ग्रन्थ हरलीन्हो अरु भाषा वर्णनकी आज्ञादई सो अयोध्यामें आयकै भाषा रामचरित्रको प्रारंभ कियो अरुकहीकि ॥ चौपाई ॥ शंभुप्रसाद सुमतिहिय हुलसी। रामचरित मानस कवितुलसी ॥ सोइसहेश मोपरअनुकूला। करौंकथामुद मंगलमूला ॥ दोहा ॥ इहि विधि रामचरित्र रच्य वररायो तुलसीदास। पुनिगहि ग्रन्थ बनारसहि कीन्होप्रथम प्रकास १५ ॥ रोलावृत्त ॥ श्रीमद्रामचरित्र कियो तुलसी तितपूरन। पुनि करि प्रथम विचार बनारस विचरे तूरन ॥ विश्वनाथ प्रति विदित करौंयह सद्य समर्पण। जोपैपरै प्रमाण तवै तनमनह्वै तरपण ॥ असमनकरतविचार त्रिदश तरनी तटआये। तितसंवत्सरसभाविदुष वृन्दन दरशाये ॥ भयो परस्पर नमन असित आदर द्विज कीनो। जानीलाये ललित रामयशरचित नवीनो ॥ सादरलियो समग्रहु मसिहेरनमतिहुलसी। शिवइच्छा लखिसवल समर्प्यो सत्वरतुलसी ॥ बाँचनलागे विप्र हुलेहिय हर्षहुल्लासा। पेखत प्राकृत वरणाकरन लागेउपहासा ॥ नाकसिकोरत सकल परस्पर नेक निहार्‍यो। मन मच्छर धरि सहदग्रन्थ गंगा मधिडार्‍यो ॥ चौपाई ॥ तव तुलसीहरि इच्छा मानी। हानि गलानि न कछुउरआनी ॥ जन तुलसी रघुवररँग राते। भली बुरीमानी नहिंताते ॥ इतकविचार अवशि उरकीन्हो। प्रथम ग्रन्थ हरिक्यों हरिलीन्हो ॥ त्र्यंवक तीनकालके ज्ञाता। चहीं सुचित्त

किमि अनुचित बाता॥ दीन्हो इतक उराहन तुल-सी। पुनि सियवर सुमिरयो मति हुलसी॥ त्रिंशबीते दक्षिण उत्तरायण। सुरसरि प्रकट करी रामायण॥ जिहप्रकारप्रकट्यो गुरुग्रन्था। मज्जनमुनीश्वरणगम पंथा॥ वाराणसी विबुध वरवृन्दा। सभा सकल मिलि करैं अनंदा॥ प्रति संवत्सर में इकबारा। नूतन ग्रन्थ करन निर्धारा॥ दोहा॥ टीकादीपन काव्यकल विर-चैंनिपुण नवीन। तिनलखि उचित सुधारदैं पंडितप-रमप्रवीन॥ विबुध बनारसके करैं जाको ग्रन्थ प्रमान। सो प्रकटै पुहुमी परम जाहिर होय जहान॥ इहि कारण कोविद कलित देवनदीके तीर। सुंदर जुस्यो समाजसद महाबुद्धि वरधीर॥ इहिविधि विबुधविनोद युत विविध विचारत स्यंग। इतै अतक्रित चानचक प्रकट कियो कारयांग॥ छाप छला कंकण कलित लीन्हो ललित पवित्र। मनो मृणालसनाल सह विक-स्योवारि विचित्र॥ पुस्तक परकट ताहिपर सुन्दर परम पवित्र। विमल विधाता सों विशद राजत रामचरित्र॥ नमोनमः जयजय जगत जनवाणी विदित वदन्त। किधौं रामयश वारिवर काढ्यो कोल को दन्त॥ सोरठा॥ जानी जनसमुदाय प्रकट कियो कोउ अपरमत॥ सुरसरि भई सहाय असकहि अवलोकन लगे॥ चौपाई॥ कोउ अस्तुतिकर कर कोउ आरति। कोउ पुटपांजलि भाषत भारति॥ कोउ उचरतगिरि अमलउतंगा। कोउकह जय जगतारणिगंगा॥ कोउ

घंटाधुनि कोउ करताला। कोउ नृत्यत कोउ नमत निराला॥ कोउ द्विज दुग्धधार अभिषेषै। कोउ सुपठितपटुपाठ विशेषै॥ सोरठा॥ भये प्रकट जिमि भोर कुक्कुट चट कल रव करत। किधौं मेघलखि घोर इहिविधि उमगत अखिल उर॥ दोहा॥ सविनय कर गहि द्विजसकल पुनि पुस्तकपधराय। कौतुकको बहुतकजुरे जनगणकेसमुदाय॥ सोरठा॥ चितवत रामचरित्र उरअचरजअतिशय भयो। भाषाभणित विचित्र शिरधारयो धीवर समुझि॥ जब जान्यो जनभेद उर अचरज अतिशय भयो। मनो विधाताबेद हयग्रीवजिमि उद्धरयो॥ दोहा॥ पुनि द्विज तुलसी तेतुरत कीन्हीविनय बखान। काण्डकाण्डप्रति श्लोकद्वै धरिये कृपानिधान। तबतुलसीबर विनय सुनि सकल बिदुष सनमान। धरे श्लोक सोपान प्रति गीर्बाण निरवान॥ टीका॥ गुसाईंजीने गीर्बाणश्लोकत्तो पंडितनकी प्रार्थना ते धरे हैं अरु प्रथम मंगलाचरण तो यहांसो है कि॥ जो सुमिरत सिधिहोय गणनायक करिवर बदन॥ बार्ता॥ याहीते तो राम चरित्रमें गणपति को मंगलाचरण दो बेर है याको विचार कीजिये फेर काशीके कोविदसबने रामचरित्र परम पूज्य जानिके प्रमाण कियो यह आश्चर्य सुनिसुनि के देशदेशमें प्रतिमागई तबतो अल्पकाल में सर्वत्र प्रवर्तन भयोहै॥ दोहा॥ काशीके कोविद सकल कीन्हो परमप्रमान। पुनि प्रकटयो पुहुमी सकल

हरि इच्छा बलवान ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ कोउ जन यहि कलिकाल में मोहिं रिझायो चाय । तौ सत सत पुनि सत कहौ ममगुण प्राकृत गाय ॥ चौपाई ॥ ऐसेयी सुखतेफुरमाई । जित तित कलिमेंकरोमहाई ॥ सोरठा ॥ यह कलिकाल कराल भगवत आयसु भव समुझि । सृजे सावरी जाल ग्रन्थ शास्त्र के हानमहि ॥ टीका ॥ देखो कलिकालमें गीर्वाण ग्रन्थ निस्सत्व समझि के भगवत आज्ञाते शिवजीने सावरी ग्रन्थ प्राकृत प्रकट किये सो सद्य फलै है हाल प्रत्यक्ष को प्रमाण कहा और देखो शिवजी सर्वशास्त्रके वेत्ता होतसंते गीर्वाण वाणी अरु मनुष्यवाणीकी योग्य अयोग्यता तजि के भगवत आज्ञापालनार्थ कलिकाल में भाषा प्रमाण करी याते शिवजी की कछु निन्दा न भई है याते महदजनकी आज्ञामें योग्य अयोग्य न विचारनो बड़े लोगन की तो आज्ञापालनकरनोही श्रेयकारक है ॥ यापैदृष्टांत ॥ देखो जमदग्नि ऋषिने निज पुत्रनको आज्ञादई कि तुम माता को वध करो परन्तु उन पुत्रनने अयोग्य आज्ञा जानिके मातावध न कियो उनपुत्रनके प्राणकी हानिभई अरु पिताकी आज्ञा भंगकर्त्ता कुपात्रकहाये फेर परशुराम को आज्ञादई कि तैं बन्धु सहवर्त्तमान अपनी माता को मारडाल कही तथास्तु कहिके मातासहवर्त्तमान बन्धुनके मस्तक छेदिडारे तब ऋषि परशुराम प्रति प्रसन्न होइकैकही बरंब्रूहि तब याचना करी कि ये सर्व सजीव होंय पूर्व वध

स्मरण बिना तब तथास्तु कहिकै जीवित किये यामें इतने गुण भये प्रथमतो पिता प्रसन्न भये दूसरे पितु आज्ञापालक सुपुत्र कहाये तीसरे पितावध को पातक न लग्यो क्योंकि आज्ञाभंग ते मारे को पाप लगैहै रामचन्द्रिका में भरतप्रति रामचन्द्र बचन॥

दोहा॥ राजा को अरु तात को बचन न मेटै कोय। जोमेटै तो भरतरे मारेको फलहोय॥ वार्ता॥याते पिता बध ते बचे चौथे मात भ्रात अरु आत्मघात ते उबरे इतने गुणभये क्योंकि परशुरामजी अनुचित आज्ञा जानिके नहींपालन करते तौ ऋषितौ कोपातुरभयेथे सो परशुराम सहवर्त्तमान भस्म करदेते परन्तु पीछे बरमांगिकै सजीवन को न करतो याते समर्थ की तौ आज्ञापालनही श्रेयदाताहै याते कलिकालमें भगवत आज्ञापालनार्थ भगवतयश भाषा में पठनश्रवणकरनो उचित है और दिग्विजयी पण्डित काशीवालेपण्डित के कहेते पुरुषोत्तमपुर में माधवदासजीसों आयभिक्यो अरु बोल्यो कि हमसों शास्त्रार्थ करो तबमाधव दासजी अंजलिपुट जोरिकै बिनयकरी महाराज आप तौसंस्कृतसागर के पैरबेवाले तरलतिमंगलहौ अरु मैं तौ भाषारूपीतुच्छ तलाईकोमंडूकहूं सो आपसों कहा चर्चाकरूं तबपंडित बोले इहांतौ हारजीतकी बातहै सो चर्चा तौ जरूरकरनीपडैगी तबमाधवदासजी बोले मैंतौबिना चर्चाही हारचुका तबपंडित बोले कि जीत हारमानचुका तौ पांचपंडितकी साक्षीसों पराभवपत्र

लिखदेतबलिखदियो कि श्रीमान दिग्विजयी पंडित-
राजते माधवदासने सभासदमें पराभवपाई फेरकाशीमें
सर्वपंडितबुलायकैं पत्रबँचायो वामेंसबयो विपरीतसमा-
चार निकसे कि उन महामूर्ख पंडित मानीने श्रीमान
विवेक वारिधि श्रीमाधवदासजी सों प्रणापूर्वक चर्चा
करवेमें पराभवपाईहै॥ कवित्त॥ आयो आसमानभासमान
के डरायवे को क्षुद्रसो खद्योतखल खंडको बतायते।
माधव उमाधव सो पंडित प्रवीनप्रौढ़ जाकेयश गुत्थ
जगन्नाथ चितचायते॥ फीकोभयोफीटोपस्यो फूटेमनो
चारचक्षुहास्यो हैं हरामखोर हहह हरायते। गौरवगवां
यखिसियायकैखराबभयो मूढमतिमंदअंधपापी पंडि-
तायते १॥ सोरठा॥ पत्रीपढ़त प्रमानविद्गमें बिटुर्यविलोकि
कै॥ भक्तभीर भगवान प्रकट पलेटीमाखिमन॥ दोहा॥
भयोभूरि उपहासलखिवुनस्योखल विकराल। लोचन
लाल करालकरि तमकि उठ्यो ततकाल॥ वार्ता॥
प्रथम पंडितजी साक्षीयाहूतेविपरीतहो वासों राक्षस
होतेभये॥ गीतायां॥ संभावितस्यचाकीर्ति मरणादति
रिच्यते॥ चौपाई॥ यद्यपि जगदारुण दुखनाना। सबते
कठिन जाति अपमाना॥ वार्ता॥ फिर कोपातुरह्वै कै
शिष्यमंडलसहवर्त्तमान माधवदासजीपैजायकै बोल्यो
रेधूर्त्त शिरोमणि तैंनेबिपरीत पत्रलिखके हमारीहँसी
कराई परंतु अबकहांजायगो। तब माधवदासजीसाष्टांग
नमनकरिबोलेमहाराज मैंने तो कछुकपटनकियो क-
होतौफेर पत्रलिखदेऊं तबपंडितबोले तेरे धूर्तकेपत्रको

प्रमाण कौनकरै हमतो प्रणापूर्वकराजाके रूबरूचर्चा करैंगे जामें जाकीपराभवहोय वाको कारामुख करि गर्धभारूढ करनो तबमाधव बोले मैं स्नानकरि आऊं फेरचर्चाकरैंगे ऐसेकहके पिंडछुडायो तथापिदोशिष्य संगदीन्हेउनतेकही देखना भागनहींजाय फेरजगदीश माधवको रूपधारि पंडितसों आयके बोले स्नान फेर करैंगे पहिले चर्चाहोजाय तब पंडितबोले राजसभा में चलतबगये वहां प्रथम प्रतिज्ञा करि कैं रासभ मँगाय ठाढोकियो फेरचर्चासमय सर्वसत्ता हरलई सोचंचुवद ह्वैगई तातेपंडितते कछुभीउत्तरनबन्यो तबसर्वशिष्य देखतेहीरहे अरुपंडितको कारामुख करिकैं खरारूढ कियो अरु सर्व गलिनमें फेर्यो इतने पै माधव दासजी को स्नानकरायके पंडितके शिष्यलातेथे उनके सन्मुख पंडित खरारूढभये मिल्यो वासों माधवदासजीबोले कि मैं हाजिर होताहीतोथो इतने में आप स्वयंसिद्ध गधेचढवे की तैयारी क्यों करी यह सुनके गधापरते कूदके पंडित माधवदासजी के चरणपर मस्तक धर दीन्हो अरुपरमगद्गदकंठहोइकैं दीनबाणीबोल्यो हे करुणाणव त्राहित्राहि अपराध क्षमाकरिये तबमाधव दासजीने काहूतेबूझी मेरोकाअपराध भयो सो पंडित ऐसी दीनता दिखावैहै तब वानेबीत्ते बर्तमान माधवजी सों सूचित कियो तबजानी कि श्रीजगदीश ने भासा भाषावाले मूर्ख को पक्ष कियो अरु पंडितनेभी सर्व अहंकार तज के प्राकृतभाषा आदरी प्रभुआज्ञाजान

कै अरु माधव दासजीको शिष्यभयो अरु बहुधा भाषामें पढ़वनायो। माधवजूकी परिपाटीदेखदेख के जहां कोईकहै कि माधवजीने केवल भाषाही बनाईहै यह तुमने कैसेजानी कहो भक्तमाल में नाभाजीने कहो है कि॥ छप्पै॥ विनय व्यासमनु प्रकट ह्वै जगको हित माधव कियो।पहिले वेदविभाग कथित पुराणाष्ट्यादश।। भारतादि भागवत उद्धर्यो हरिहर हरियश॥ अवशेषावेमवग्रन्थ सुगम भाषाविस्तार्यो। लीला जय जयजयति गाय भवपार उतार्यो॥ जगन्नाथ इष्ट वैराग सीमकरुणारसभीजो हियो। विनयव्यासमनु प्रकटह्वै जग को हितमाधवकियो॥ वार्ता॥ वेदव्यासजू भगवत आज्ञापरिपालनार्थ माधवरूप धरिकै केवल भाषा में भगवतयशगायोहै यामें कछु संदेहनहीं और शुकदेवजूकबीररूप ह्वैकै भगवतआज्ञापालनार्थ भाषाप्रतिपादनकरी नाभाजीने भक्तमाल में लिखीहैकि॥ छप्पै॥ हिंदू तुरुक प्रमाण रमैनी शब्दीसाखी। पक्षपातनहिं कियो सबहिके हितकीभाखी॥कि मैं शुकावताहोय के भाषा कैसे बरणूं यहहठ तजिकै सबके कल्याण को भाषा बनाई भगवत आज्ञा भलीभांति विचारिकै और इनकेअन्य कोई संस्कृत में देखे सुने नहीं याते अवश्य प्रतीत आवैहै भाषा केवलकरी तापै पद्मनाथ पंडित प्रतिपक्षी बनिकै खंडन करिवे आयोथो वाको भगवत ने निपट निरादर कीन्हो तब सचेत होइकै कबीरके शरणागतभयो अरु भाषापठन करिकै भग-

वतआज्ञा पालनकरी और सबनाके भाषापदपै प्रसन्न भये अरु पंडितको संस्कृतस्तवन प्रमाण न कियो ऐसे कहांलौं गिनाऊं परंतु जिनजिन भक्तने भगवतआज्ञा ते भाषा आदरकियो उन भक्तनको भगवान निजाज्ञा-नुसारी समझिके कालमें ठौरठौर सहाय कीन्हीहै सो संस्कृताभिमानीको मान मर्दनकरिके और जो कोई सज्जनहोयँते पक्षपाततजिके परमेश्वरकी प्राकृत पठन पैप्रीतिकी परिपुष्टता बिचार देखियो कितनी बड़ीहै देखोजैमिनि भारतआदिदैके अनेकग्रन्थ अधूरे खंडित हैं परंतु प्रभुने एकभी पूर्णकियोहोय तौ बताओ अरु सूरसागरको लक्ष प्राकृतपदको संकल्पहुतो जामें अ-सी हजारपदभये अरुधाम पधारिबेकोसमयआयगयो तब प्राकृत यश परमप्रिय जानिके बीसहजार स्वतः श्रीकृष्णने सूरश्याम की छाप दै बनाय कै रात्रि में स्वहस्तसों ग्रन्थपै लिखदीन्हे फेर सूरदासजी लखनसौ-मानिराखिके गद्गदगिरा ते कही हाय २ कोटिकं-दर्प लावण्यनिधि प्राणप्यारे श्यामसुंदर सुकुमारको परम परिश्रमभयो होयगो मेरे संकल्प सिध्यर्थ परंतु अहोप्रभु की भक्तवात्सल्यता धन्य धन्य धन्य ऐसे प्रशंसा करत करत धाम पधारिगये अरु सर्वसंत देखि देखिके जय जय ध्वनि करतभये याते कालिमें प्रथमतौ प्राकृतकाव्य प्रभुको परमप्रिय जान्योगयो दूसरे भगवत भक्त संकल्प सदासत्य करैहैं यहबात पुष्ट भई तीसरे कालिमें भाषामें गुणगायबेकीआज्ञा प्रसिद्ध

भई तामें कितेक भगवतमहिमा भक्तिके प्रतकैकरे हैं कि श्रीकृष्णने पद बनायबे को परिश्रम कियो ताते सूरको आयुष्यको न बढायदई सो वेई बनावते तो सूर को अखंडनाम रहता क्योंकि कृष्णतो कर्तुमकर्तु अन्यथा कर्तु समर्थहते ॥ तहांउत्तर ॥ जो सूरको आयुष् बढायके ग्रन्थसमाप्त करावते तो सूरसागरको महिमा इतनी विश्व विदित न होती अरुतुमभी नहीं जानते कि भगवतको आज्ञावाणी कलि में वेदवाणी ते भी परमप्रियहे याकेलिये स्वतःपद बनाये हैं अरुतुम कहो हो कि सूरस्वतःग्रन्थ समाप्त करते तो अखंडनाम रह-ते सो इनपदमें कहानाम निकारि डार्योहे इन में तो प्रथम सूर अरु पाछे श्याम पद धर्यो है जामें सूरके नामकी सहस्रगुणी शोभा भईहे अरु प्रभु की भक्तवा-त्सल्यता तो देखिये किप्रथमसूर अरु पाछे श्याम पद धर्योहै जैसे प्रथमनर अरु पाछे नारायण ऐसे सीता राम राधाकृष्ण लक्ष्मीनारायणादि अनेक नाम में प्र-थमभक्तकेनामहैं यामेंप्रभुकोभक्तप्रिय प्रणजान्योगयो है ॥ तहांप्रश्न ॥ तुम सूरपद प्राकृत परमतुच्छ ताको वेद वाणीतुल्य बिना बिचारे कहोहो सो सर्वथा अप्रमाण है क्योंकि वेद तो श्रीहयग्रीव नारायण के सुषुप्ति के श्वासोश्वासहैं सो इनके समान प्राकृत सूरपद कैसे होयँगे ॥ तहांउत्तर ॥ वेद हयग्रीव कला अवतारके सुषु-प्तिके श्वासोश्वास सहजकेहैं ताको वेदो नारायणः साक्षात् ऐसे कहेहैं तौकहोजो श्रीमद्भागवत में कही है

कि ॥ अन्येचांशकलाःप्रोक्ताः कृष्णस्तुभगवान्स्वयं ॥ वार्ता ॥ सोस्वयंब्रह्म जो श्रीकृष्ण जिन्हेंने कायिक वाचिक मानसिक एकाग्र होइकै परम उत्साह सों प्रीतिपूर्वक सूरसागरकी समाप्तिके लिये पदरचना करीहै वहप्राकृतभाषावेदवाणीते परमपूजनीयहोयहै यामेंका कहनो क्योंकि जैसे निद्रामें बरड़े बातें जाग्रत वचनकी प्रतीति विशेष हैं ॥ तहांप्रश्न ॥ बौद्धावतार साक्षातभगवत्स्वरूपहुतो तथापियज्ञ श्रुतिकी निंदाकरी ताते महदापराध मानिकै काहूने मुखावलोकन न कियो अरुद्वारमूंदिदीन्हो गयाजी में देखौवेदकीमह-त्वतातो इतनी बड़ीहै ॥ तहांउत्तर ॥ प्रभुकी इच्छा असुर विनाशकी भई परंतुउनहेंको श्रुतिपथ प्रवर्त्त देखे तब कैसेबिनाशैं तब बौद्ध कला अवतार होइकै यज्ञ श्रुति की निंदा करिकै असुरको नास्तिक मार्ग में लगायकै नाशकीन्हो अरु आपही ने आज्ञादई कि मैंने वेद निंदा कीन्ही याते मेरो दर्शन मतकरो तब आज्ञा प्रमाण द्वारमूंददीन्होहै परंतु यह दृष्टांत भाषा कथनत्वपै नहींघटैहै क्योंकि भाषामें कछुवेद निंदानहीं भाषामें तो श्रुतिको सारांश वर्णन कियोहै नाना-पुराण निगमागम संपूर्ण श्रुतिको सार निचोरि कै लियोहै अरु षोड़शकला पूर्णब्रह्म श्रीकृष्णकरणाक-र्णा समर्थ जिन्हेंने रुचिपूर्वक रचना कीन्ही सरस्व की सो प्राकृत तो श्रुतिते सदासिवाय मानिकै शीर्ष धारणो श्रेयकारी है यह सिद्धांत जानो ॥ वादीवचन ॥

तब वादी बोले कि श्रीकृष्णके कीन्हे बीस हजार पद को भलेही श्रुतिके सिवाय मानो परन्तु इन श्लोकन के समान आनभक्तभाषा तौकदापि न होवेगी॥ तहांउत्तर॥ देखो नरसी में नामकीमालामें भगवत बचन है कि प्राण थकीसने वैष्णव वाला ॥ और रामचरित्र में विभीषण बचन हनुमान प्रति है कि ॥ चौपाई ॥ मेरेमन प्रभु अस विश्वासा। रामते अधिक रामके दासा ॥ यातें ॥ और भक्तमाल में लिखीहै कि श्रीमुख पूजामंती की अपनाते अधि-कीकही यहां पक्षपात तजिकै खत्र विचार लीजिये भगवतने श्रीमुखते कहीहै कि मोको मेरे प्राणापेक्षा वैष्णव परमप्रिय हैं तब कैमुत्तिकन्यायते वैष्णवनकी प्राकृतवाणी प्रिय जानीगई अर्थात प्रभुको प्रियहोय सोई अंगीकृत करनो श्रेयकारक है अथवा ऐसे समझिये भगवत ने कही कि मोको प्राणते प्यारो वैष्णवहै तो विचार लीजै प्राणतो श्वासोश्वासको कहै हैं तो श्वासोश्वास तो प्रभुके वेद हैं अर्थात वेदवाणीते प्रभुको वैष्णवकी वाणी प्रियहै वैष्णववाणी कलि में कहा प्राकृत भाषा जोप्रभुको वेदतेभी वल्लभहै अर्थात अंगीकार करनी जो नकरैं सोविमुखठहरै है॥ तहांप्रश्न॥ तुम नरसी तुलसी भक्तमाल की साक्षी देते हो सो ठीकहै परंतु भाषाकी साक्षी हम तीनकालमें प्रमाण नकरैं कोई संस्कृतग्रन्थकीसाक्षीदेवो तबहम मानकरें-गे ॥ तहांउत्तर ॥ तुम नरसीजीकी माला अरु भक्तमाल की साक्षी न मानौ हौ परंतु नरसीजी क्या भगवतनेम

मेरा कोन्होताको चिरहाल विद्यमानहै अरु भक्तमाल के हजारों परचे प्रत्यक्षहैं ताको प्रमाण कहा तब बादी बोले प्रत्यक्षहै तो तुम सरीखे कोहै हमतो प्रमाण न मानैं क्योंकि बादी भद्रं नपश्यति॥ हमतो साक्षी संस्कृत कोप्रमाण करैंगे॥ तहांउत्तर ॥ एकादश श्रीमद्भगवत् वचन उद्धवप्रति ॥ श्लोक ॥ नतथामेप्रियतमो आत्मयोनिर्न शंकरः। नचसंकर्षणोनश्री नैवात्माचयथाभवान् १९ औरदशयेंस्कंधमें दुर्वासाप्रतिभगवद्वाक्यहै ॥ श्लोक ॥ साधवोहृदयंमह्यं साधुनांहृदयंत्वहं। मदन्यत्तेनजानंतिनाहंतेभ्यो मनागपि॥ टीका॥ साधूजन मेरो हृदयहैं अरुमैं साधुन को हृदयहों मेरे उपरांत वे कछु न जानै हैं अरु उनते अन्य मैं न जानोहों ऐसे परस्पर अन्योन्याश्रयहै और ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ श्लोक ॥ भक्तसंगेभ्रमत्येव छायेव सततं हरिः। चक्रेणारक्षितोभक्तो भक्त्याभक्तजनप्रियः॥ अर्थ॥ भगवत भक्तनके संग छाया की नाईंभ्रमै हैं अरु चक्र करिकै रक्षा करैहैं क्योंकि भक्ति करिकै भक्तहैं प्रियजाको॥ दोहा॥ चुंबक प्रतिमा चतुर्भुज लोह भक्तको भाय। कै उठ संगचलै स्वतःकैवह लेयमिलाय१ साखी गोपाल रणछोड रंगनाथादिसंगचले मीरा कबीर तुकारामादिको मिलायलिये ॥ आदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ येमेभक्तजनाःपार्थनमेभक्ताश्चतेजनाः। मद्भक्तानांचयेभक्ता स्तेमेभक्ततमामताः २१ ॥ अर्थ॥ जे केवल मेरे भक्त हैं अरु मेरे भक्तके भक्तनहींहैं वे मेरे भक्तनहींहैं अरु जे मेरे भक्तनके भक्तहैं वेतौमेरे भक्ततम

कितेअत्यंत प्राणात प्रियतर परमवल्लभहैं ऐसेश्रीमुख को वचनहै तव अर्थात भगवतवाणी जो वेदहैं ताते वै- ष्णववाणी परमप्रिय जानीगई अथवा निजवाणीश्री कृष्णने वीसहजार पदवनायेहैं ताते भक्तवाणी सूर के किये अमीतहजारपद वेपरमप्रिय अर्थातभये परमेश्वर को औरहू दूसरो दृष्टांतसुनो देखोसर्ववेदके शिरोमणि उपनिषदहैं सो दक्षिणमें तुकारामजीके भाषा अभंग जाको तुकोपनिषद वडेवडेशास्त्री सर्वकहैहैं तुकाराम की सेतुअभंगहे भवसागरको रामसेतु भंगहोयगो ऐसे श्री पंढरीनाथ को वचनहै अर्थात भक्तकी प्राकृत वाणी वेदवाणी का शिरोभाग श्री हरिने मानकरी जो न मानैंगे वे भगवतते विमुखभये याते कलिकालमें तो भाषाही पढ़िवे की आज्ञाहे अरु भाषाही पै प्रभु प्रसन्नहैं तवतौ वीसहजारपद स्वतःवनाय कै सूरसागर संपूर्ण कियो है ऐसेकहूं संस्कृत ग्रन्थमें स्वतःश्रीकृष्ण ने कलिकालमें लिखेहोयँ तौ वताओ॥ तववादीवचन॥ संस्कृत में कहा नहीं लिख्योहै देखो गीतगोविंदमें मान समयमें श्रीकृष्णने लिख्योहै॥ स्मरगरलखंडनं समशिरसिमंडनंदेहिपदपल्लवमुदारं॥ वार्ता॥ कहा यह पदस्वतः श्रीकृष्णने लिख्योहैकि नहीं॥ तहांउत्तर॥यही एकपदके भरोसे का भूलोहै यहपदतौ प्रभुने भाषाकी रीति देखके लिख्योहै तहांवादी बोले कि गीतगो- विंदतौ शुद्ध संस्कृत मेंहै यामें भाषा रीतिको लेखोहै कहा॥ तहांउत्तर॥ श्लोकन के चारि चरणमें एकरे

अंतानुप्रास लावने यहरीति प्राकृत कीहै सोगीत-
गोविंद में अंत्यानुप्रास निभायेहैं यहभाषा रीति श्री-
कृष्णने निज आज्ञानुसार पेखिकै प्रियलागी तातेएक
चरण लिखदीन्हें। अरु सबग्रन्थ प्राकृत पेखले तौ
प्रसन्न होयकै सूरपदकीनाईं सिवाय लिखते औरया
गीतगोविंदकी प्रशंसा सुनिकै पुरुषोत्तम पुरी के
राजाने दूसरो गीतगोविंद बनायकै पंडितन को आज्ञा
दई किय गीतगोविंद को जयदेवजी के गीतगोविंद
जो पढ़िकै प्रवर्तनकरो तब पंडितबोले जयदेवस्वामी
के गीतगोविंद पै तौ श्रीकृष्णने स्वहस्ताक्षर लिखे हैं
ताते परम पूजनीक प्रतिष्ठित भयो है ऐसे आपभी
यापै भगवतहस्ताक्षरकरावो तबवैसो प्रवर्तन होयगो
तबराजाने दोऊग्रन्थ जगदीश के सन्मुख धरिकै पट
लगायदये फेर जगन्नाथजीने राजाकेग्रन्थ पैदेख्योसो
निजआज्ञा प्रमाण प्राकृत रचना तौनहीं सोनहींपरंतु
प्राकृत रीति के अंतानुप्रास मात्र नहीं केवल संस्कृत
शब्द देखके निजाज्ञाविमुख रचनाजानिकैफेंकदीन्हें
सो मंदिर में पत्रउड़त फिरैं अरु जयदेवकृत हृदय सों
लगाय लीन्हें। फेर पंडितन को बुलायकै प्रातःकाल
समय पटखोल देखे तौ जयदेवकृत हृदय लगाये रहैं
अरुराजा कृतकैपत्र फाड़कै फेंकदिये सोमंदिरमें उड़त
डोलैं यहअपमानदेखिकै राजाने खिसियायकैविचार
कीन्हें। अब देशदेश में अपकीर्ति होयगी ताते मरनो
सलाहहै क्योंकि॥ दोहा॥ मच्छ और उत्तम पुरुषदोऊ

एक समान। जलजाता जीवनकी पानी जौलौं प्रान २२
श्लोक॥ संसारितस्यचाकीर्ति संरक्षादीनरिरच्यते ॥ वार्ता॥
ऐसे विचारिकै समुद्र में डूबैगयो तहां आकाशवाणी
भई राजा क्यों वृथाडूबै ॥ तबराजाबोल्यो ॥ जयदेवजीने
आपके गुणगाये अरुमैंने कागारौ दईयो सो मेरो जगत
में उपहास करायो जो आरअक्षर लिखदेनेमें दिवाला
पड़तोथो तौभीपड़लदेतो परंतु तुमतौ मेरेप्राण के गाहक
हौ सो लीजिये ऐसेअति आतुर वचन कहिकै छातीभर
गई तब फेरवाणी भई कि गीतगोविंद कीप्रतिष्ठा को
तौ तेरो काव्य कदापि नहींपावैगो परंतु याकेद्वादश
सर्गहैं सो सर्गसर्गप्रति तेरेग्रन्थके द्वादशश्लोक लिखदे
सो उन्हींकेसंग लोक तौ काव्याथ जगतमें प्रवर्तेंगे अरु
वृथा आत्मघाती जिनहूजे तब राजाने आज्ञामानिकै
सर्गसर्ग प्रति द्वादश श्लोक स्वीकृत ग्रन्थके लिखाय
दयेसो अद्यापि प्रवर्तैं हैं अरुजैसे गीतगोविंदकीनाईं अंता-
नुप्रास मिलायकै प्राकृतकाव्यकी परिपाटी रखतौ तौ
गीतगोविंद सोंपरस प्रतिष्ठित होयकै सर्वग्रन्थ प्रवर्तन
होतो प्रभुआज्ञाते क्योंकि कलिकाल में तौ प्रभुकी
प्रसन्नता अरु तरबो नामसंकीर्तन ही तोहीहै याकोअक-
लकी ऐनक लगायकै भलीभांति विचार देखिये और
एक बेर कृष्णदास जीको पदरचना करतदेखि कै
सूरदासजीबोले हमारे सूरसागरकी छायाआवै ऐसा
पद बनाओ तब कृष्णदासजीबोले कल सुनावैंगे ऐसे
कहदई परंतु पदरचना करनलगे तबजोजो लीलावि-

चारै चामें सूरपदकी छायाआवै परंतु अपूर्व लीला नजरमेंनआई तब कृष्णदासजीने मनमें बिचारि भगवत के धाममें आधेचोरधस्योजाने सबलीला रत्नटकटोर टकटोरके बटोरलीन्हें अबकैसीकरों नईउक्ति कहांते लाऊं तब कलम धरिके परम चिंतातुर भयेसंते निद्रा वश्यभये उपरांत श्रीकृष्णचंद्र आपकी अलौकिक लीलाके पांचपद बनायकै इनहींके पत्रपै लिखगये फेरजाग्रत भयेपै नवीनपद निहारिके बारंबारनेत्रहृदय लगायकै प्रभुकी अनंतलीला जानी उपरांत सूरदास-जीको बतायेतब रवंजनभयो अरुबोले यह रचना तो प्राणप्यारे कीहै फेर परस्पर प्रसन्नभये अरु परम उत्सव कीन्हें। ऐसे कैयोबेर प्रभुने बनाये हैं याते कलि काल में भगवत को भाषा परमप्रिय जानीगई और मदनमोहन सूरने वृन्दावन में पद बनायो वहपद वही रात्रिमें वही घड़ी साधुरूप धरिके द्वारका में रणछोड़ जीके मंदिर में प्रभुने गायो अरु सत संगी को परम प्रशंसा करिके सिखायो लिखालिख दियो यामें मुनि ऐसी जानो कि प्रभुको कलिकाल में भक्तन की भाषा परमप्रिय है और श्रीरणछोड़ के मंदिर में सैकड़ों पंडित मंत्र पुष्पांजलि समय श्रुति धुनि कर रहेथे इतेकपै अलूचारण ने आयकै भाषा छन्द पढ़्यो सोसुनिकै प्रभुने हुंकारा देकै सत्कार कियो तब सर्व पंडित तूष्णी होय कै सादर भाषा छंद सुन्यो और स्वामी हरिदासजीके प्राकृत पदपै प्रसन्नहोयके रसिक

छापदई ऐसेकहांलों गिनावैं परंतु हजारा भक्तकीभाषा
पै प्रसन्नभये अरु भाषाहीको पक्ष करिकै भाषाही की
आज्ञादईहै भगवतने कलिकाल में याते भगवत सन्मुख
भयो चाहैतोतौ सर्वसंस्कृताभिमान तजिकै आज्ञापालन
करैं अरुप्रभुको प्रसन्न करिकै अनकूलरहै यहीकर्तव्य
ता मुख्यहै याको पक्षपात तजिकै भलीभांति विचार
देखिये क्योंकि जप तप यज्ञ योग यम नेम व्रत दान
धर्म क्रिया कर्म स्नान संध्या पठन पाठन सर्व कृत्यके
आद्यावसान समय संकल्प तौ ऐसो उच्चारण करैहैं कि
अमुककर्म श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं महंकरिष्ये देखोजो
जप तपादि जे जे सुकृत सुकर्म करैहैं ते ते सर्व परमे-
श्वरकी प्रसन्नताके लिये करैहैं सो प्रसन्नता तौ कलि-
कालमें प्राकृत में गुणगायेतेहै वोप्राकृत को परित्याग
करिकै प्रभुते पराङ्मुखहोयके पंडित कहाये चाहैं वा
पंडिताई में धूरि माधवदासजी के प्रत्यक्ष की नाई
याते जोकोई आपकोश्रेयइच्छै अरु प्रभु प्रसन्नकियो
चाहै सो तौ भाषा भद्रकारिणी अंगीकार करिकै
भगवत आज्ञा प्रतिपालनकरै यह सिद्धांतहै अरु यही
अमृततरंगिणी के अनुबंध चतुष्टयको परम प्रयोजन
जानिलीजै ॥

इतिश्रीराठौरवंशावतंसश्रीमत्बलवंतसिंहनृपतेआज्ञापालकेन
गुर्जरस्थश्रीरत्नरामात्मजकविटीकारामेणकृतायां
भाषाऽमृततरंगिण्यांअनुबंधचतुष्टयवर्णनं
नामतृतीयस्तरंगः ३ ॥

दोहा॥ श्रीरघुबरको नायशिर उरधरिअमितउमंग। संतनहोहु सहायतौ बरणौ तूर्यतरंग १ परम प्रयोजन श्रवणधुनि उठोअज्ञ उरअंच। मिथ्रीजो सुंदमिष्टपै रुचैनरासभ्रंच २ मनमच्छर अतिमानिकै मोतनरहे निहार। निर्दयनिठुरनिरांकुशो बोलेविगत विचार ३ चौपाई॥ अक्षर चारिजोड़ जड़ज्ञासन। बदत बदनते हार अनुशासन॥ कहुताको कब आयसुदीन्हो। तातेतुच्छ तरंगिणिकीन्ही॥ इहिविधि विगतबोधके आछर। बोले विषमसमानिमन माछर॥ इमि अनखाय अखिल सुहिंबूझो। तबताको उत्तरनहिंसूझो५॥ दोहा॥ बन्योन बरणिविचारबल अध्वर अगम अनंत। अतिआतुर अकुलायउर तब सुमिरचो सियकंत ६ शुभउत्तर सूझोनहीं थकोथोर मतिमोर। रुचैतोरचना कीजिये कौशल-राजकिशोर ७ तबनिज विरद विचारि त्वर प्रकट बतायेपंथ। उरप्रेरकभो आयतब गदितभयो गुरुग्रंथ८ रोलाबृत्तं॥ उरप्रेरक अवधेश कृपाकरिकै उरआये। तत्क्षण तन मन बचन अमित उत्तर दरशाये॥ तबकरजोर नि-हारकही बादीप्रति ठीकम बदत बचन तुमविदित सत्य मैं ध्रुवकारधीकमई विदुष विवेक अनेक सकहु नाहिंन मोसें। प्राकृत परमपुनीत और संस्कृत इनदोमें॥ पैप्रभु आयसुदई तरंगिणी भाषाकीजै। मैंवारी करिप्रीति रीतिताकी सुनलीजै १० घटघट प्रकट रमेश रामअंतर गतिज्ञाता। सूत्रधार सम सकल चराचर निकर नियाता॥ संचितदिव्य तंतु ताहिहरि हेरिहलावैं। तिहि अनुगत

जियपुंज पुत्तलक भाववताबैं११प्रेरक प्रकट परेश परम पूरण पुरुषोत्तम । उरआलय ममआय गिरा यह उम गत उत्तम ॥ इहिविधि उरआयतन उमांग आयसु अनु मानी । सोसादरधरिशीश तरंगिणि टीकमठानी १२ दोहा ॥ इहि प्रकारआयसु अखिल उरआछे अवरेख। पुनि परकट प्रभुतन प्रथप दलवंत बदन विशेष १३ वार्ता॥अंतरयामीने उरआयतन आयकु प्ररणाकीन्हीं अरु अनेक उक्तिवताई यह तो साधारण आज्ञा सम झिये। अरु विशेष आज्ञा परमेश्वरकी प्रकट विभूति रूप श्रीमनराजराजेंद्र बलवंतबहादुरके बदन वारिजते भई सो नराणांच नराधिप येसोश्रीमुखको वचनहै तातें ईश्वर आज्ञा जानीगई और भाषावारे भक्तको ठौरठौर सहायकरी याते प्रतीतिप्रसिद्ध भईहै॥ रोलाछंद॥ कलि युगमें कल्यान कारणीके वलभाषा । धारतते धीमंत अमितपूरैं अभिलाषा ॥ स्वारथ सुधरत सकलहोयतनहिं हरगिलहानी । अरु परमारथ सिद्धि सफलकर प्राकृत वानी१४जिन जिन युत अभिमानग्रंथ भाषानहिंमानी। तिनकी इत उत अमित भई दोऊ दिशिहानी ॥ इहिपै आगमनिगम विबुधके वचन घनेरे । अरु अनुभवकरि कहत युक्ति जिहिंविधिप्रभुप्रेरे १५॥दोहा॥ श्रुति स्मृतिन की साखदे आरज अनुभव आन । युक्तिकहत जिय जांचिजग पंडितकरहु प्रमान १६ ॥ वार्ता ॥ कलिकाल में भाषाविना अन्वय व्यतिरेक करिकै स्वार्थपरमार्थ दोऊकी सिद्धिधुवांक न होवै ॥ पुनअन्वयव्यतिरेककेलक्षण ॥

जाचीजकेभयेते जोकृत्य होयसो अन्वय ॥ यत्सत्वेयत्सत्व मन्वयः ॥ अरुजाचीजबिन जोकृत्यअवश्य न होय सोव्य-तिरेक ॥ यदसत्वेयदसत्वंव्यतिरेकः ॥ ऐसे प्राकृत भाषाहीते तौ कलिकाल में प्रपंच परमार्थ दोऊसिद्धहोंय यहअ-न्वय अरु या बिना अनेक संस्कृतादि उपायकरौ परंतु सिद्धिनहोय यहव्यतिरेक तहांदोउन को ॥ उदाहरण ॥ कोऊ आपसरीखे केवल संस्कृताभिमानी एकदेशी पुरुष सकुटुंबतीर्थचलेसो तहांप्रपंचपालनार्थआटादाल घीगुड बेसन लेबेको बजारमेंगये अरु बनियां सोंकही रेउरुजा धोधूमस्यपिष्टं चनकचूर्णं आज्जं इक्षुसारंच सूपमानय॥तबबनियां औरबारमें तौ कछुसमझा नहीं अरुअंतके असर समझिके एकसूर्प लायधर्यो वाको देखके कोपातुर भये अरु बोले ॥ रेरे मन्दमते मया किंकथितं तद विज्ञाय इदंसूर्पं किमर्थ मानीतं ॥ ऐसे कोपा विष्ट होयकै कपालपोटै अरु रुपैया बतावें सो लोगयात्राजुडी परंतु समझें नहीं ताते साहित्य न मिलै तब दूसरी दुकान पर जाय झगडे ऐसे ठौरठौर कलह करतेडोले परंतु छतैद्रव्य भाषाबिनाप्रपंचनहीं सिद्धभयो यह व्यतिरेक फेर कोईप्राकृतवेत्ता दुभास्यो मिल्यो वाने समझायो कि या अभिमान पर पथरा पटकौ अरु भाषा बोलौ तबप्रपंच सिद्ध होयगो तब बोले कि अपमितस्थाने लंघनंकृतं परंतु शूद्री भाषायां नवदामि तब दुभास्यो बोल्यो कि भलेही कपालकूटिके कुलाहल करत डोलो बजार में परंतु भलो तौ भाषाते

होयगो परंतु दयालागि वानेवाली वगाकृते माहित्य दिवाय दीन्हें। भाषा में समभ्ताय्कै ॥ यहम्व्ययककाबे ॥ ऐसेही सराफी बजाजी दलाली कंगाली कारीगरी मजूरी कथा कीर्तनादि राजकाजादि जितेक प्रपंच संबंधीकार्य अरुपरमार्थ संबंधीकथा कीर्तनादि करयहैं परन्तु प्राकृत देशभाषाबिना एकभी नमुधरैहैं या बात को भलीभांति विचार देखिये अरुजो हमारे कहनेपै नप्रतीत आवैतो केवल संस्कृताभिमानी होयकेपरीक्षा करलीजै ऐसेकोऊ आप मारिखे केवल संस्कृताभिमानीकोगुरू विनचढावके कुवांमें पडगयो सोतौरोहुतौ परंतुकहालेंतौ सोथकिगयो अरु महागीतने सतायो तबशिष्य ने पांथिस्थको पुकारो॥ अहोजना: शीघ्र मागम्यतां ममगुरु: कूपेपतित: हाहाकष्टंकष्टं रज्जुमानीयवहिर्निःसारयत ॥ वार्ता ॥ ऐसे हाहा करिकै शोर करैपरंतुकोइ समभ्कै तबतौ दौडै लोगजानैं बावरो बकै है ऐसे तौ गीताखातखात संध्याभईतबगुरुजीनेप्राणांत जानिकै संस्कृताभिमान तजिकै शिष्यसोंकहीरेशिष्य प्राकृतभाषायां तिक्रोथंकुरु निजप्रण परित्यज्य ऐसे कहीतब शिष्यने प्राणरक्षणी प्राकृत में टेर दीन्हीरे भाई दौडियो मेरेगुरु कुवांमेंपडेहैं वेगधाइयो ऐसेपुकारे तबलोगोंने दौडिके निकासे तब जानी कि प्राणरक्षिणी प्राकृत बिना प्रपंच को एकहू कामसिद्ध न होवै ऐसेअवश्य जानिकै संस्कृताभिमान तजिकै प्राकृत गुरुकरी अरु संस्कृत को नाम गीतादेनी धस्यो है

अरुजो नहींप्रतीत होय तौ हालकूपमें पड़ देखो अरु
संस्कृता भिमानते शोरपढाय देखो फेर गोता खायकै
नहीं सांचझूठकी परीक्षा तौलेदेखौ तबबोले हमैं डूब
मरनोई कबूलहै पैभाषातो नहींबोलैंतबकही भलेभले
गोताखायो करो और कोई केवल संस्कृताभिमानी
को ज्वरबाधा भईथी सो स्वतःवेदको ग्रन्थ बिचरवाने
लगे वामें औषधि लिखीदेखी कि कंटकारीको क्वाथ
लेवै तौ ज्वरबाधा न रहै तब काहूते बूझी कंटकारी
का कहावै तब कही काहूवैदसों बूझौ हमैं खबरनहीं
तब बोले वैद तौ भाषापढ़ैहैं उनमूर्खसेका बूझैं ऐसेअहं-
कार करिकै आपही निरुक्ती करलीन्ही कंटकस्य
अरी कंटकारी कहापगरखी परंतुचर्महै वाकोक्वाथ
कैसेलेऊं फेर बिचारकियो रोगीपुरुष पतित पंगतिमें
गिनेजायहैं सो पतितानां पातकं किं तौ भी धर्मशास्त्र
देख्यो वामेंलिखी ॥ श्लोक ॥ योरयायोऽयंनद्रष्टव्यं महा
दुःखाग्निपीडितैः । रक्षणीयप्रयत्नेन नृदेहोदेवदुर्लभः ॥
याते देह संरक्षा निमित्त लेनो सोपगरखी को क्वाथ
करिकै लेनेलगे इतेकपै कोईकंठालपा आय गयोवाने
पूछी यहकौनको क्वाथलेवोहौ कही कंटकारीको तब
वहबोल्यो कंटकारीनामतौ भूरीगणीकोहै यहकालेत
हौ तब उठिकै कंठालपाको साष्टांग नमनकीन्हो अरु
बोलेकि तुम भाग्यते भले पधारे नहींतो या संस्कृता-
भिमानने जन्मभ्रष्ट कियो थो ऐसे पश्चात्ताप करिकै
संस्कृताभिमान तज्यो अरु ऐसेही काहू पंडितने गुरु-

स्थापदको निरुक्ति करिकै उपहास करायोथो सो जैसे घरके मरजायँ त्यों साथे हाथदैके सोचते थे तब भाषावारेने समझायो गुदस्थागये मालको नामहै इतनोभी नहींजानो तबपंडित राजीहै बोले हमनेमहा-संस्कृतेक पकडीथी कि भाषा सुनतेही कानन में अंगुली देतेथे तबकहीअब काकपकडो अरु भाषासुनो संस्कृत की टेक तजिकै तब कही तथास्तु आजते गुरुकरी याते अहंता तजिकै भलीभांतिते विचारि देखिये भाषाबिना यहलोक परलोक उभयता भ्रष्टहोयहै याते प्राकृत पठन अवश्यमेव करनो सलाहहै यह सिद्धांत

तहांप्रश्न॥ तुमनेकही कि प्राकृतभाषा बिना प्रपंचपरमार्थ दोउनकी सिद्धि न होवे है जामें प्रपंच सिद्धि न होवे सोतौ हमने प्रमाणकरी परंतु तुम परमार्थमें प्राकृतको अडंगो लगावोहौ यहबात तीनकालमें नहीं मानेंगे परलोक सुधारनेमें प्राकृतबिना कौनबात अटकैहै सोकहो

तहांउत्तर॥ प्रथमतौ तुम प्राकृतको कुछ पदार्थही नहीं मानतेथे अरुअब प्राकृत बिना प्रपंचको बिगड़नो तौ कबूलकियोहै तौपरा प्राकृतबिनापरमार्थ बिगड़ै यामें का अचरजहै प्रथमतौ यहलोक परलोक बिंबप्रति-बिंबरूपोहैकि जाको बिंबबिगड़यो तौ प्रतिबिंबध्रुवांक बिगड़चुको यामें संदेह करनो सोई मूर्खता है क्योंकि जिनको दर्शन इतहै उनको दर्शनउत ऐसे श्रुति स्मृति संत महंत सभी कहैहैं याते परलोकहु बिगड़ि चुको क्योंकि भगवत आज्ञा भंगकर्त्ताकोभी कहूं परलोकसुख-

रते सुनये। देखयोहै और पक्षपात तजिकै तुमहींविचा-
रिहेरो देखो प्रथमगुरुजी कूपमें पडे उनको दूसरेसाहि-
त्यलेवेगये उनको तीसरे कंटकारी क्वाथ लेवेवारे को
चौथे गुदस्था निरुक्ति वारेको जो प्राकृत भाषावारे
परम गुरु नमिलते अरु भाषा अंगीकार नकरते तौ
गुरुजीतौ अकालमौत मरिकैं नर्कगामी होते अर्थात
प्राकृत बिना परलोक भ्रष्ट भयोइयो और साहित्य
खरीदनहारको भाषावारो गुरुनमिलतो तौ याकाभी
नवनती अरु संकल्प वृथाहोतो ताकेपापते नर्कगामी
होते क्योंकि॥नानृतात्पातकंपरं॥ याते अवश्य परलोक
विगडतो तीसरे ब्राह्मणहोयकैं कंटकारी क्वाथलेतेतो
अधोगति जाते भाषागुरुके बोधबिना याते परलोक
अर्थात बिगडतो चौथे गुदस्थाको अर्थ भाषावारो न
बतावतो तौफेरभी वैसी निरुक्ति करिकैं कभीआत्म-
घात करते तबअर्थात परलोक बिगडतो ऐसे कहांलों
कहैं परंतु प्राकृत भाषाबिना अनेक उभय लोक भ्रष्ट
भयेसे हुगेहैं अरु औरभी क्रत्य विचारि देखिये पर-
लोकार्थ कथावार्त्ता यज्ञयाजक शांतिपुष्टि हरेककाम
होइ परंतु संस्कृत पढिकै भाषामें अर्थ नसमझावै तौ
काहूको बोधनहोय क्योंकि बोधकरतातौ भाषाहै या
बिना बोधही न होय तब परलोक अर्थात बिगडै
तत्रांप्रश्न॥ भाषामें अर्थतौ कलिकालमें मूर्ख प्रजाभई
याते करनेलगेहैं और तीनयुगमें तौ पाठ मंत्रसंहितो
करतेथे भाषाको कछु कारणही नहींथा भाषातौ

कलिकालमें प्रवर्तनभईहै ॥ तहांउत्तर ॥ आपने अबकही ऐसी प्रथम केतेतौ इतनो क्याती पचोनहोतो क्योंकि प्राकृतभाषा युगत्रयमें सूक्ष्महुतौ अरु इतनो विस्तार तौ भगवत इच्छाते कलिकालमें भयोहै ऐसे तो हम प्रथमतेही कहेहैं तव इतनो विवाद क्योंकियो ॥ तबवादी बचन ॥ वादतो याकेलिये भयोहैकि तुम मनुष्यमात्रके उभयलोक की सिद्धि भाषाद्वारा वताओहै ताते या वातमें प्रमाण नहीं भाषातौ मर्खनके लिये है अरु हमसारिखे पंडित को भाषाको कुछ प्रयोजन नहीं हमारेतौ उभयलोककी सिद्धि संस्कृतद्वाराहै ॥ तहांउत्तर ॥ यापै सैकड़ा उदाहरणतौ देते आयेहैं जामें कौनकौन ने भाषा विना प्रपंच परमार्थ सुधारलीन्होहै सोतुमहूं सुधारिलेवोगे याकोनेक अकिलकी आंखउघाडिकै नीकीभांति निहारियेक्योंकि मुख्य तो उभयलोक को सुधरनो विगड़नोईश्वराधीनहै सोवा प्रभुकोभाषा परत्व आज्ञाहै वाकोतौ प्रथमही उल्लंघन कियो अरु विमुखभये तव परलोक यहलोक सुधारिवे वारो कोहै अर्थात विगड़ चुके ॥ तववादीबोले ॥ कि विगड़ै तो भलेई विगड़ो हमें नरक पड़नोही कबूलहै परंतु भाषाकोतौ नहीं अंगीकृतकरैं ॥ तहांउत्तरएचतुरांचकांध ॥ भाषाको अंग अंगमें उपकार व्याप्तहोयरह्यो । यापैतौ दृष्टिदी जिये केवल कृतघ्नो जिन होवै भाषा तौ संस्कृता-दिशास्त्र मात्रकी संरक्षकहै कौनरीतितै कि प्रथमतौ ओंनमसीधंआदि क ख ग घ इत्यादिवर्णअरुकनमात्र

आगे पीछे ह्रस्व दीर्घ सर्वभाषा में समझावै तब वर्ण
बोधहोय उपरांत सार्वनिकादि सर्व अंग व्याकरण के
भाषामेंप्रथम समझावै तब उत्पत्ति होय फेरशास्त्र पु-
राणादि जेजे ग्रन्थ प्रथमपढावै तबभाषा में अर्थ बार-
बार कहैतबध्यानमें आवै जैसेवस्त्रको प्रथम फिटकड़ी
कोपुटदेवै तबरंग चढै ऐसेप्रथम भाषा में समझावै तब
अन्वय व्यतिरेक करिकै सर्वशास्त्र मात्रको बोधहोय
भाषाविना अनेक उपायतै पचिमरौपरंतु बोध निश्चय
करि न होय ३ सबयाके उपकार देखोप्रथमतौ भाषा
विनासंस्कृतको बीजही मिटजाय नमानौतौ भाषा में
मतसमझावोतौसंस्कृतआवैहीनहींअर्थातभाषातेसंस्कृ-
तकीरक्षा होवैहै दूसरेयाही द्वारा बोधहोय जैसे सवर्णे
दीर्घः यहसूत्र शिष्य सोंकहो परंतु कदापि बोधनहो-
यतब सवर्णस्य सवर्णे परेसहदीर्घो भवति ऐसेव्याख्या
करके कहै परंतु बोध तौ न होयगो अरुयाही सूत्रको
उभय लोक सुधारन हारी प्राकृत भाषामें समझावैकि
सवर्णको सवर्ण परभये संते सहनाम दोनों मिलिकैं
दीर्घहोय ऐसेसमझावै तब झट ध्यानमें आय जायअरु
भाषामें नसमझावै तौ संस्कृतको मूलही मिटि जाय
अर्थात संस्कृत भाषाके आश्रय प्रवर्तेहै ऐसीपरम
संस्कृत रक्षणी सद्गुरु सदृश भाषाभागीरथीको उप-
कार विसारिकैउलटी निन्दा करैहैं अहो कृतघ्नी की
कृतघ्नता तौ देखिये यातेपरम गुरु भाषा जानी गई
तीसरे प्रपंच अरु परमार्थकी सुधारिबे वारीचौथेभगं-

वत आज्ञा ऐसेअनेक प्रकारके उपकार भाषाके भूलि
कैंकृतघ्नी कीनाई निंदाकरनी परम अयोग्यहै क्योंकि
भाषाविना संस्कृत कोतो बोधमात्र न होवै अरु भाषा
पढ़िवेमें संस्कृतको कछु प्रयोजन मात्रनहीं अरु सरल
सुधीविना परिश्रम पढ़ीजाय अरुसंस्कृतते सहस्रगुणी
बोधकर्त्री परम सुहृद जेसंस्कृतके प्रत्युपकारकीइच्छा
नराखै ऐसी सद्गुरु समान परम कल्याण कारणी
भाषाकी निंदाकरत कृतघ्नीको करेजा कसकै नहीं
परम आश्चर्यकी वातहै॥ तहांप्रश्न॥ तुमने कहीकि
भाषाहीते प्रपंच परमार्थ सिद्धहोयहैं अरुयाही पै
प्रभुकी प्रसन्नताहैतौ कहो जो भाषानाम अकेली नर-
वाणीके तौहैई नहीं देखो संस्कृतको देवभाषा कहैहैं
सोयाते प्रपंचपरमार्थसिद्धहोतोहोयगो अरुयाहीपैप्रभु
की प्रसन्नता होयगीतौ परमेश्वरके मनकी कौनजानै
तहांउत्तरवार्त्ता॥भाईयहतौ ऐसेभईजैसेकोईनेसर्व रामायण
सुने उपरांत वक्ता प्रतिविनयकीन्ही मोकोआपने भिन्न
भिन्न समझाके कृतार्थ कियो तव वक्तावोले औरभी
संशय होयतौ वूझिये तव श्रोतावोल्यो आपके मुखते
श्रवणकियेपै संदेहकाहेको रहो परंतु यदिकिंचित दो
ठिकाने संदेहहै एकतौ आपने फुरमाई कि जानकी जी
को हरणभयो सो तौ समझ्यो परंतु पीछे स्त्रीरूप
भयोकि हरणकी देह वनीरही एकतौ यह संदेहहै
दूसरे रामचन्द्र अरुरावण इनदोउनमेंते राक्षस कौनहै
यह संदेहहै तववक्ताने कपाल कूटकैकही भाई सीता

जीतै प्रभुतननभई परंतु हरणारूपपशु देहतौतेरोहै अरु रामरावण दोऊ राक्षसनहीं राक्षस रूपमेंहूं सो तासेपशु आगेमूंड पचायो ऐसेकहिकै पत्राफ्फारिकै वनकोउठि गये। सो ऐसेही प्रारब्धको प्रेरयोहमारो तुम्हारो संघट घट्योहै॥ दोहा॥ नरहोवैं जो नींदबश। वाकोलेयजगाय॥ पैघोरे जड़ जानिकै। तासों कहाबसाय १ वार्ता॥ यापै काहू कविको बचनहै किहारमानलीजै पैनबाद कोजै कूरनते सर्वस्वदीजै पै न परबशपरिये॥ दोहा॥ सर्वभारो सेंगा समभिये। जोसमभतहैऐन॥ अैनममेंसमभैनतौ। तिहिदरशैयेसैन १ सैननते समभैनतौ। तिहिंप्रतिबदिये बैन॥ बैननतेसमभैनशठ। तिहितेलैननदैन॥ सोरठा॥ रस तजिरोपैरार। हित अनहितहैनहिय॥ हमसांनत हैं हार। निपट कपट कृतनरनते॥ दोहा॥ दीन्हें अमित उदाहरण। तुच्छ बकतनहिंतौन॥ स्वादकहा तिहिबाद में। रहौमूंदि मुखमौन १ बदैबितुंडाबादबच। कुटिल कजाकोकूर॥ पड़त कूपकर दीपतिहिं। त्याग आग जिमिदूर १ बादीबचन॥ भाषावारेको यहीतौटंटाखोटोहै कि जब कछूभी उत्तरनसूझै तब शोयंकोपेन पूरयब भला कहोजो हमने कही कि संस्कृतको भी गीर्वाण भाषा कहैहैं याते भाषा कितनी प्रकारकी हैं यासें कहाअनुचित प्रश्नकियो सो कोपकरिकै उत्तर नहीं देते॥ उत्तर॥ तुमकछु समभिकै प्रश्नकरौतब तौ उत्तर दें तुमने पूछाकि भाषाकितनी प्रकारकीसो भाषा तौ शरीर शरीरप्रति अनेक प्रकारकी हैं परंतु जगत सें

जाहिरातोयह प्रकार कहैहैं ॥ दोहा ॥ गुरमेंनिसुरमागधी असुरपिशाचीजान ॥ फणिपति अरुब्रज मानुषी येषट् प्रकट बखान १ यह प्रकार भाषाकही पंतिवपु कहोअपार॥ सबमधिमरम गिराम्मणी निरखिकियो निरवार ॥ प्रश्न॥ यहतोठीक परंतु भाषानाम काहूपैते निश्चयभयो सोबतावो ॥ तदाउत्तरदोहा ॥ प्रथम पराप श्यंतिपुनि तीयमध्यमामान॥चरणाकपमोवैखरी भाषा ताहिबखान॥ प्रश्नभाषानामवैखरीबाणीकोनिश्चयकियोयामेंकछुप्राकृतहिकोभाषाकहनोयहनेमतोंहैहीनहीं तो देवताकीवैखरी वाणीजो संस्कृतसो याहीकोभाषा क्योंनहींकहो परंतुमनेतोएकमानुषीवैखरीकोहीनाम भाषाठहराय राख्योहैसो यहदुराग्रहक्यों नहीं छांडदेहो ॥ तदाउत्तर॥ जैसेजलज नामतो मछरी मेंभुक कछु वासेंभुललौकामकरादि मात्रजलतेजनमेंतिनकोजलज संज्ञाहै परंतुयोगरूढीकरिकैजलजशब्दमें कमलकोही वोधहोयगो ऐसेंभाषातो सुरनर नागादि अनेक प्रकार कीहैं परंतु भाषानामलेते मनुष्य वाणीकोहीबोधहोवैगो यातेभाषा शब्दकोरूढी मनुष्यवाणीमेंही प्रवर्तहै यातेयाको परंपरातेभाषानाम विख्यातहै और याके गुणकरिकैभी भाषा नामपड्योहै गुण कहाकि यामें गुप्तार्थ होवै सो प्रकट भाषैहै जातेभाषा बालवृद्ध सभी को समझपडै याते भाषाकहै हैं जैसे वेदके अर्थ समझिबेको भाष्यबनाये ऐसे संस्कृत समझिबे को भाष्य कहे भाषा प्रवर्तन करीहै सो भाषा पढैगो तन सारा-

सारको संग्रह त्याग राखैगो समझे बिना हरेक कामको सिद्धि न होवैहै ॥ दोहा ॥ काबुल बसिकै बनिकइक बोलत अटपटि बानि॥ आबआब करिमरि गयो प्रकट सिरहने पानि १ ॥ वार्ता ॥ देखो समझे बिना सिरहने जल होतसंते आब आब पुकारते मरि गयो परंतु जलप्राप्तभयोनहीं ऐसे कलिकालके अल्पायुषी आलसी जीव संस्कृत पढ़िबेपै परिश्रम करैंगे नहीं तब कुमढ़ता के योगसों सारासार के बिचार बिना सुधानरकको मार्ग गहैंगे याते इन जीवनके तरणोपाय निमित्त परमेश्वर ने परम दयालु होके भाषा निर्माणकरीहै याते भगवतआज्ञा पालनार्थ या जीव को भाषा अध्ययन करनो परम उचित है यह सिद्धांत समझियो और कलिमें देवभाषापै प्रभु प्रसन्न होते तौ दिगविजयी को खरारूढ न करते अरु नरसी मीरा सधनाने कबदेवभाषा गाईथी सो मालदई अरु सदन पधारे सो विश्व विख्यातहै अरु गुसाईं जी की देवगिरा क्यों हरलई अरु प्र त प्रकट कियेइतनी बड़ी बातको भूलिके कुतर्क करतेहो सो अयोग्य है ॥ दोहा ॥ शुद्धसुधासी सीखको कालकूट सीलेक॥ कछु खुनसायरसायके बोलेबिगत बिवेक १ वार्ता ॥ तुमकहो कि जीवनके उद्धार निमित्त भगवत ने भाषा प्रकट करीहै यह मिथ्या है भगवत तौ शुद्ध संस्कृत के स्थापन करिबेवारे हैं अरु भाषाको अफंडतो कलिकालमें जीवनके भरमायबेको माधव

दास तुलसीदास हरिदास नंददासादि अनेक दासभये हैं उन्होंने भाषाको पाखंड प्रवर्तन कियाहै सो दासन की बनाईहै तबतौ भाषाको शूद्र वाणी कहैंहैं क्योंकि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनोंको तौ शर्मा वर्मा गुप्त संज्ञाहै अरु शूद्रको दासकहैंहैं क्योंकि चारनके उत्पत्ति स्थान भिन्न भिन्नहैं सोई कहतहैं ॥ श्लोक ॥ चन्द्र शूचां॥ मुखतोब्राह्मणोजातो बाहुभ्यांक्षत्रियस्तथा॥ ऊरुभ्यांवैश्यसंजात:पद्भ्यांशूद्रकएवच ॥ वार्ता ॥ शूद्रसर्वांग नीच चरणते भयेहैं ताते दासपदवी को प्राप्तभये हैं अरु प्रथम कहे जे माधव तुलसी आदि देके भाषा के आचार्य इनहूंकी भी दास पदवीहै शूद्रकी नाई तहां कहोकि तुलसीदासादि प्रथम कहे वेतो ब्राह्मण हुते कहो ब्राह्मणतौ हुते परंतु शूद्रवाणी महानीच भाषा वर्णनकरी याते शूद्रप्राय ह्वैगये ब्रह्मत्वरह्यो नहीं जाहीते तौ चरणोद्भव दासनकी शूद्रवाणी श्रवण करनो उचित नहीं है ॥ उत्तर ॥ भो विशालबुद्धे तुम प्रभु चरणारविंद के आश्रयीको नीच मानोहो यह बाततौ सर्वथा विपरीत बोलोहो क्योंकि चरणते उत्पन्न भई जोगंगा जाको शिवादिकने मस्तक पै धरी और चरणको सर्वोपरि समझिके लक्ष्मीजी आश्रय भईं और अहल्यादि जनने चरणरज याचना करी ऐसेकहांलों गिनाऊं परंतु सहस्रावधि भक्तभयेहैं जिनने चरण रजकी याचना करी अरु चरणाश्रय मांग्यो परंतु मुखरज अरु मुखाश्रय काहूने याच्यो होय तौ

बताओ और जहां वर्णन सुन्यो तहां ऐसेसुन्योहै कि विष्णो:पदंनिर्भयं अरु चिन्ताको हरण चतुर्भुज जू के चरणहैं ऐसे वचनतो जहां तहां सुन्योहै परंतु ऐसे तौनहीं सुना कि विष्णो:मुखंनिर्भयं १ ऐसेजेजे जन उद्धरे ते चरणाश्रयते उद्धरेहैं कछु मुखाश्रय ते नाहीं और देखौ मुख नासिकादि सर्व इन्द्रीके देवता तौ अश्विनीकुमार सूर्य इन्द्र अग्नि वरुणादि और और किये अरु चरण इन्द्रीके देवता साक्षात श्री महा विष्णुभये और जो नमन करै अरु धोयपीवै सोचरणोदक पीवैहै अरु चरणन को नमैहै मुखको कोई नमैभी नहीं अरुमुख धोयके पीवैभी नहीं देखोसाधु ब्राह्मण के चरण धोयके पीवैहै परंतु मुख धोयकै पिया होय तो बतावो मुखोदकते तोउलटी अपवित्रता मानैहैं ऐसे सर्वश्रेय कारक शिवादि भक्तके हृदयमें वसिबेवारे अरु लक्ष्मीजीने लालन किये ऐसे चरणारविंद अंकुशादि चतुर्विंशति चिह्नसहवर्तमान तिनके आश्रित जे दासभक्त संतनके शिरोमणि तिनको तुम शूद्र सदृश कहौहौ यामेंकछु शंकाभी उपजैहै दासभक्त तौसाक्षात भगवतकारूपहैं तब वादी बोलेकि भगवत रूप तुम्हारे कहेते नहीं होयहैं यापै सत ग्रन्थ की साक्षी सुनावो तब प्रतीतिकरैं ॥ ब्रह्मावाक्यनारदप्रतिस्कंदपुराणमें ॥ श्लोक ॥ भगवानेवभूतानांसर्वत्रकृपयाहरि: रक्षणायचरैल्लोकान्भक्तरूपेणनारद॥ अर्थ ॥ब्रह्माकहैहैंकि हे नारदभगवान सर्वप्राणीपै कृपाकरिकै रक्षाकोभक्त

रूपते विचरैहैं प्रभुके दासत्व विना तौ ब्राह्मणश्रंत्य-
ज-तुल्य गिनो जायहै याते दासभक्ति तो अवश्यकारि
चाहिये तहां वादी बोले कि ब्राह्मण को दासत्व
निषेध परत्व तो श्रुतिस्मृतिनके सहस्राविध वचनहैं
अरु तुम कहोहो कि ब्राह्मणको दासभक्ति अवश्यमेव
करनी यह वचन हम कदापि नहीं प्रमाण करैं यापै
संस्कृत साक्षी सुनावो तब मान करैं ॥ तदांउत्तर ॥ रेबु-
द्धिमान् प्रज्ञाचक्षुमो देख ब्राह्मणको दासत्व वर्जनीक
तौहै परंतु क्षत्री वैश्य अरु शूद्र इन तीनकोहै अरु भग-
वतके दासत्व विनातौ अंत्यज सों भी नीच ठहरैहैतब
बोले कि यापै सद्ग्रन्थकी साक्षीकहो तब प्रमाणकरैं
तहां कहोकि भागवतके सप्तमस्कंधमेंदेखोकहालिख्यो
है॥ श्लोक ॥ विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंद
विमुखात्श्वपचंवरिष्ठं मन्येतदर्पितमनोवचनेहितार्थं
प्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः १ ॥ टीका ॥ द्विषटनाम
द्वादश गुण करिकै संयुक्त अरु भगवच्चरणारविंद
ते विमुखहैतौ ऐसे ब्राह्मणते श्वपच श्रेष्ठजानिये द्वादश
गुणके नाम शम दम तप शौच संतोष क्षांति आर्यव
ज्ञान दया अच्युतात्म सत्य ऐसे द्वादश गुणकरि
संयुक्त परम विद्वान् होतसंते भगवत चरणारविंदकी
दासत्वता ते विमुख होय तौ वाते चांडालश्रेष्ठ जानना
और नारद पंचरात्रिमें वचनहै कि तेषांदासस्यदासोहं
देखो दासभक्ति अनुचित होती तौ नारदजी काहेको
लिखते क्योंकि भक्तिके दो प्रकारहैं एकतौ पंचधा

अरु नवधा पंचधा नाम शृंगार वात्सल्य दासत्वसख्य-त्व शांतत्व इनपंचमें दासत्व मुख्यहै अरु नवधानाम श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन वंदन दासत्व सख्यत्व आत्मनिवेदन देखो यामें भी दासत्व मुख्यहैं क्योंकि दासत्व बिना तौ चतुर्धा अष्टधा रहि जायहैं सो ऐसे बचन कहूं सुन्यो देख्यो नहीं कि ब्राह्मणने दासभक्ति छोड़िके चतुर्धा अष्टधाकरनी याते ब्राह्मण को प्रभुकी दासत्वता अवश्य करनी चाहिये ॥ प्रश्न॥ तुम अनेक युक्ति लायलायके भागवतकी अरु नारद पंचरात्रिकी साक्षी दे हौ परंतु हम तौ प्रमाण नहींकरैं याते साक्षीतौ श्रुतिकी चाहिये तब प्रतीत होय तहां अथर्वणवेदेनउक्तं ॥ श्लोक ॥ दासभूताःस्वतःसर्वे ह्यात्मनः परमात्मनः ॥ नान्यथालक्षणंतेषां बन्धेमोक्षेचसत्तम १ इतिश्रुतेः ॥ टीका ॥ आत्मा जो जीवहै सो स्वतःस्वभावतेंही परमात्माको दास भूतहै बन्ध अरु मोक्ष दोऊ दशामें यहजीवको लक्षणहै अरु यही श्रुतिको अर्थ लैके श्रीरामानुजस्वामीने भाष्यमें लिख्योहै कि शेषत्वेसति ज्ञातित्वं जीवत्वं ऐसा लक्षणकिया है ॥ प्रश्न ॥ तुमने कही कि ब्राह्मण को दासभक्ति करनी तब ठौरठौर वचन है कि विष्णुःस्वयं ब्राह्मणः अरु भगवद्वचन है कि अविद्योवासविद्योवाब्राह्मणोमामकीतनु ॥ अर्थ॥ भगवान कहैं कि ब्राह्मण विद्यावान होय अथवा अविद्यावानहोय वहमेरो शरीरहै॥ श्लोक॥ अपटःकपटीहिमसंदर्त्तिचः प्रथितःपशुरन्यकलत्ररतः॥ द्विजराज

भवत्सदृशोनहरो नहरिर्नहरिर्नहरिर्नहरिः १ ॥ अर्थ ॥
भो द्विजराज नामब्राह्मणा आपकेसेहो कि आपसरीखे
हरनाम महादेवभी नहीं क्योंकि वे वस्त्रकरके रहित
हैं फेर केसेहोकि आपसरीखे हरिनाम विष्णुभीनहीं
क्योंकि वे कपटीहैं फेर कैसेहोकि आपसरीखे सूर्यभी
नहीं क्योंकि वे शीतकालमें तेज करके मंद होजायहैं
फेर कैसेहोकि आपसरीखे हरिनाम सिंहभीनहीं क्यों
कि वह पशु शरीरहै फेर कैसे हो कि आप सरीखा
हरिनाम इन्द्रभीनहीं क्योंकि वह परस्त्रीसें लम्पटहै
श्लोक ॥ विपद्घनध्वांतसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकाम
कामधेनवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनातुमांब्राह्मणा
पादरेणवः ॥ अर्थ ॥ विपदजो आपदा सोईहैसघन अंध-
कार ताके विनाशिवे को सहस्रसूर्य समानहै और
मनोवांछित अर्थ सिद्धकरिवे निमित्त कामधेनु समान
है अरु अपार जो संसार समुद्र ताको पार होयवेको
सेतुतुल्यहै ऐसी जो ब्राह्मणकी चरणरज तेहितु मोको
पवित्रकरो ॥ १ वार्ता ॥ कहोजी ब्राह्मणकी चरणरज
तो भगवत स्वतःइच्छैहै तवतो कहेकि ॥ श्लोक ॥ विप्र
प्रसादाद्धरणीधरोहं विप्रप्रसादात्कमलावरोहं ॥ विप्र
प्रसादादजयाजयोहं विप्रप्रसादान्ममरामनाम १
अर्थ ॥ भगवान कहेहैं कि ब्राह्मणकी कृपाते मैं धरणी-
धरहूं अरु उनकेही अनुग्रहते मैं लक्ष्मीपतिहूं अरुउन
हीकी अनुकंपाते अजया जो माया ताको जितयवारहूं
हूं और ब्राह्मणही की कृपाते मेरो रामनामहै २

भागवतके तृतीय स्कंधमें॥ श्लोक॥ येषांबिभर्म्यहमखंडविकुंठयो गमायाविभूतिरमलांघ्रिरजःकिरीटैः विप्रास्तुकोनवि षहेतयदर्हणांभः सद्यःपुनातिसहचंद्रललामलोकान् १ अर्थ॥ तृतीयस्कंधमें सनकादिकप्रति श्रीभगवद्वाक्य है कि हे सनकादिक मैं अखंड ऐश्वर्ययुक्त हौं अरु मेरेचरण को जल शिवादिकके लोकको पवित्र करैहै ऐसोहौं तथापि जिन ब्राह्मणोंकी निर्मलचरणरजको किरीट करिकै धारौंहौं॥ वार्ता॥ कहोजी भगवततौ ऐसेब्राह्मण को दासभयो चाहैहैं तब ब्राह्मण दासत्व कौनकोकरै ब्रह्मण्यदेव तौ नामहै भगवतको ब्रह्मण्यदेवको अर्थ कहा कहीब्राह्मणहैंइष्टदेवजाके तौ अबकहौ ब्राह्मण कौनको दासत्वकरै॥ उत्तर॥ भोबुद्धिमान ब्राह्मणपूज्य है तौ प्रभुकी मरजीसोंहोय परंतुयह अपनेमनते पूज्य मानैतौ सूधो कुंभीपाकको मार्गलेवे यामें संदेह नहीं याते दासबन्योरहै तब पारपड़े जैसे विष्णु शिवको परम पूज्यमानैहैं परंतु शिवजीतौ चरणोदक मस्तकपै धारण करिकै दासानुदास बनेरहेहैं तब नेह निबहैहै ऐसे ब्राह्मणको भगवतभलेही पूज्यमानें परंतु ब्राह्मण तौ दास बन्योरहै तब भलोहोय जैसे श्वशुरको जामात परमप्रियहै अरु सबजनसों कहैहैकि ये हमारे जामात हैं परंतु जामात अपने मुख सों श्वशुर सों कहै कि मैं तेरी बेटी को खसम ऐसे एकही बार मुखते जमाई कहै तौ परम शत्रुकी नाई देखिवे लगजाय यह प्रत्यक्ष को प्रमाण काहेको जो प्रतीत नहींआवे तौ

यही रीतिते श्वशुर मे वतलाय देखो फेरकैसे कि नेह निवहैहै याते ब्राह्मण को और पूज्य भलेई मानें परंतु ब्राह्मण तो प्रभुको अनन्य दासानुदास बन्योरहै तव उभय लोक सुधरैं देखो व्यासजीने कहाहै कि
दोहा ॥ व्यास वड़ाई छांड़िकै हरि चरणन में लोर। एकभक्त रयदास पै वारों ब्रह्म हिज कोट१मारयौसूरत रामकी सुन मज्जन दैकान ॥ भट पंडित लटकत रहे वेश्याचढ़ी विमान २ ॥ वार्ता ॥ क्योंकि भगवान गर्वअ-हारीहैं जैसे देवता अमृतअहारी असुर आमिष अहारी सर्प पवनाहारी मनुष्य अन्नाहारी ऐसे रघुवर गर्वा-हारीहैं तवतौ शवरीको चरण रजसों पंपासरको सलिल सुधरायकै दंडक वनवासी हिजनको गर्वगंजन कियोहै देखो गुसाईं जीने विनयमें कहीहैकि-रघुवर रावरी यह रीति॥ विरद हेत पुनीत परिहरि पांवरन परप्रीति ॥ दोहा ॥ प्रभुताई में रहतहैं प्रभुताई ते दूर । प्रभुताईमें रहतहैं प्रभुताई ते दूर १ तुलसी श्रीप्रह्लाद केबालक चढ़ेविमान । संडामर्क तरे नहीं वीचपड़्यो अभिमान २ दास होय विश्वास धरि भये राम पद लीन । जातन को अभिमान करि वूड़े कोटि कुलीन ३ तन धन यौवन रूप बल विद्या सुत अधिकार । आठहु मद को रदकरै तव पावै करतार४॥ वार्ता ॥ याही वि-चार करिकै तौ भक्त लोगनको अहंकार युक्त जानिकै सोहंपद रद करिकै दासोहंकहाये अरु तुम कहोहौ कि दास संज्ञा तौ चरणन ते भये उन शूद्रनको है याते

ब्राह्मणको दासाभिधान नहीं अंगीकार करनो ऐसे बिना बिचारे कहा बोलोहो देखो औरकी तो कौन गिनती परंतु शिव ब्रह्मादिकसे दासानुदास होयके भगवतच्चरणारविंदकी धूरकी इच्छाकरैहैं तबब्राह्मण को तो दास भक्ति अवश्यकरनो चाहिये तबवादी बोलेकि हम ऐसी बनाई बात को तो नहींमानैं यापै कोई प्राचीन साक्षी बतावो शिव ब्रह्माने धूरि याचना कबकरी ॥ तहांउत्तर ॥ वृन्दावनशतक में ब्रह्मदेवको बचनहै ॥ दोहा ॥ शिव विधि उद्धव सनकको यहआशारहचित्त । गुल्म लताह्वै शिर धरैं वृन्दाबन रज नित्त १ ब्रज रजको तरसत सदा चतुरानन त्रिपुरारि । सोये ब्रज की बरबधू डारत बगर बुहारि १ ॥ प्रश्न ॥ दास भक्तकी भाषा को तो हम शूद्र वाणी मानैहैं अरु याहीपै वादरुप्योहै जापै नंददास की साक्षीदई सो सर्वथा अप्रमाणहै क्योंकि ऐसे बचन हैं कि॥ श्लोक ॥ श्रुतिस्मृतिउभोनेत्रेविप्राणांपरिकीर्तितः एकेनविकलो काणो द्वाभ्यामंधप्रकीर्तितः१॥ अर्थ ॥ श्रुतिजो वेद स्मृति जो मन्वादिकन की धर्मशास्त्र ये दोनों ब्राह्मणों के नेत्रकहेहैं जो एककरके रहितहोय सो काणोकहावै अरु दोनों करके रहितहोय सो अंध कहावै वार्ता ॥ स्मृति श्रुतिकी साक्षी बिना तो एक अंधतुल्य है ॥ तहांउत्तर ॥ आदिपुराणेब्रह्मावाक्यंनारदप्रति ॥श्लोक॥ षष्टि वर्षसहस्राणिमयातप्तंतपःपुरा नंदगोपव्रजस्त्रीणांपाद रेणूपलब्धयेतथापिनमयाप्राप्तातासांवैपादरेणवः॥ अर्थ॥

ब्रह्माजी कहैहैंकि हेनारद मैंनेपहिले साठि हजारवर्ष पर्यंत तपकियो नंदगोपके ब्रजमें निवास करन हारी स्त्रियांतिनकी चरणरजकी प्राप्तीकेलिये तथापि वह दुर्लभरजनमिली ॥श्रीभागवतेदशमस्कंधेब्रह्मावचन॥श्लोक॥ तद्भरिभाग्यमिहजन्मकिमप्यटव्यां यद्गोकुलेपिकतमांघ्रिरजोभिषेकं यज्जीवतंतुनिखिलंभगवान्मुकुंदस्त्वद्यापि यत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव॥ टीका ॥देखो ब्रह्माजी आपने भाग्यतेब्रजरजस्पर्शकरिवेवारेको भाग्यवडोमानैहैं अरु औरको तो कहाचली परंतुस्वतःश्रुतिब्रजकीरजढूंढैहै क्योंकि श्रुतिमृग्यमेव ऐसेकह्योहै ताको विचारदेखिये तत्रांप्रश्न॥ तुमने नंददासजीके वचन सत्यकरणार्थ भागवतकी साक्षीदई अरु आदिपुराणकी साक्षीदई परंतु व्यासवचनं क्वचित्प्रमाणं ऐसेकहैहैं जामें भागवततो केवल वैष्णवमत परत्वग्रंथहै याते हमको प्रतीतिकम आवैहैयातेसाक्षीतो श्रुतिकीचाहिये अथवावाल्मीकिकी क्योंकि ये आदि कविहैं याते॥तत्रांउत्तर॥ऋग्वेदमें कहाहैकि ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवतिइतिश्रुतेःकिंतेब्रह्मसदृशो भवतीत्यर्थ ब्रह्मको जो जाननेवाले पुरुषहैं वे ब्रह्महो होतहैंएवोयंस्यैवधारणोइत्यादिकोमात एवच्चयंअवधारणोविशिष्टाद्वैतमते॥ वार्ता ॥याकोप्रमाणतो करोगे कही याको प्रमाणतो सत्य परंतु यहतो ऐसेभई कि पृच्छन प्रश्नंविस्मार्थ अरु कहे कि अहोतिनिर्मलंगगनं जैसे पेटतो पिराय अरुसेंकै मस्तक जैसे पाडाको दर्द अरु पखालको डामचढावै ऐसे हमारे प्रश्नको उत्तरसूझो

नहीं तब भलतीको भलती श्रुतिपठदई सोप्रश्नकोउत्तर ऐसेनहीं होवैहे ॥ तहांउत्तर ॥ हेसद्विवेकारांव आपने हमारे उत्तरको निरादर बिना बिचारे किया परंतु याकी ध्वनिपै दृष्टि नहीं दीन्हीं जाते यह तोऐसेभई कि ॥ श्लोक ॥ विपुलहृदाब्जयोगयेकाव्येखिद्यतिजडो नपूर्वेस्वे कुप्यतिकंचुकिकारंप्रायःशुठकस्तनोनारी १ वार्ता ॥ ऐसे आपने बिना बिचारे उपहास कियो देखो हमने श्रुति कही ताको अभिप्राय यहहे कि ब्रह्म के वेत्ताब्रह्मके समान होवेहैं तबतो ब्रह्मजो श्रीराम अरु श्रीकृष्ण तिनको जानिकै नंददासजी तुलसीदासजी भगवत सारूप्य ह्वैचुके अर्थात नंददास जीके बचन भगवत समान जानिये ॥ तहांप्रश्न ॥ राम कृष्णादिक की तौ भगवत संज्ञा हे कछु ब्रह्मसंज्ञानहीं याते तुम्हा- रो उत्तर मिथ्याभयो ॥ तहांउत्तर ॥ भोबुद्धिमानतुम कहो हो कि राम कृष्णादिककी ब्रह्मसंज्ञा नहींहे तौ शिवजीने अध्यात्म रामायण में क्यों लिख्योहे कि रामंविद्धिपरंब्रह्मसच्चिदानंदमद्वयं १ अरु रामउपनिषद में लिख्योहे कि रामोब्रह्मैवशाश्वतं ऐसेही गोपीचंदन उपनिषदमें लिखोहै कि श्रीकृष्णस्स्वयंपरंब्रह्म गोपिका श्रुतयोभवन् १ ऐसे ठौर ठौर बचनहे याते रामकृष्णहैं सोई परब्रह्मजानिये अरु इनते भिन्न बतावैंतेमृगतृष्णा के जलज्यों जानिये ॥ मधुसूदनस्वामीउक्त ॥ श्लोक ॥ वंशी विभूषितकरान्नवनीरदाभात पीतांबरादरुणबिंबफला धरोष्ठात पूर्णेन्दुसुंदरमुखादरविंदनेत्रात कृष्णात्परंकिम

पितत्त्वमहंनजाने १ ॥अर्थ॥मधुसूदनस्वामीकहैहैंकि भग-
वान् श्रीकृष्णउपरांत पूर्णब्रह्म परमतत्त्वमें कुछभीनहीं
जानैहैं वे श्रीकृष्णचंद्र कैसे हैंकि वंशीकरके भूषित
नाम शोभितहैं करनाम हस्त जिनके अरु नवीन जो
नीरद नाममेघ तासरीखो सुंदरशरीरको श्यामहै वर्ण
जिनको अरु परम पवित्र पीतवर्णहैं अंवरनाम वस्त्र
जिनके अरु अरुण नाम लाल ऐसे जो विंवफल तिन
सरीखे ओष्ठनाम ओठहैं जिनके अरु पूर्णेन्दुनाम पूर्ण
चंद्र सरीखोहै मुखारविंद मनोहर जिनको अरु अर-
विंदनाम कमल सरीखे प्रफुल्लितहैं नेत्रजिनके ऐसेजेश्री
कृष्णचंद्र भगवान् उनके उपरांत पूर्णब्रह्म परमतत्त्व में
कुछभीनहीं जानें हैं १॥ अन्यद्रामस्यापि ॥ कोदंडमंडित
करात्सजलांबुदाभात् पूर्णप्रभाकर मुखादरविंदनेत्रात्
सौमित्रिसेवितपदाब्जयुगाद्रमेशा द्रामात्परंकिमपितत्त्व
महंनजाने १ ॥ टीका॥ मधुसूदन स्वामी कहेहैं कि भग-
वान् श्रीरामचंद्र उपरांत मैं कुछभी पूर्णब्रह्म परम
तत्त्व नहींजानें हैं वे रामचंद्र कैसेहैं कि कोदंड जो
धनुष ताकरिकै मंडितहैं करनाम हस्तकमल जिन्हों
के अरु सजलनाम जलसहित जो श्यामवर्ण मेघ ता
सरीखोहै आभानाम कांति जिनकी अरु परिपूर्णजो
प्रभाकर नाम सूर्य ता सरीखोहै मुखारविंद जिनको
अरु अरविंद नाम कमल सरीखे हैं नेत्र जिन्हों के
अरु सौमित्रि जो लक्ष्मण ताकरिकै सेवितहैं चरण
युगल जिन्हेंाके अरु रमा जो सीता ताकेईश नामपति

ऐसेजे श्रीराम तिनते उपरांत पूर्णब्रह्म परमतत्त्व में कछुभी नहीं जानैं हैं ॥ वार्ता ॥ देखो रामकृष्णके उपरांत परमतत्त्व काहूने नहीं जान्योहै अर्थात परब्रह्म स्वयं सिद्धयेई हैं तब इनके वेत्ता जो श्रीनंददासजी गोस्वामी तुलसीदासजी माधवदासजी आदि देकै जेदासाभिधानवालेभक्त सो इनके समान भये तब इनकीभाषा जेहैंते आपही ते श्रुति तुल्य प्रमाण भई यहतो प्रथम कोश्रुतिके अर्थको सिद्धांत भयो अबआपने कहीथी कि आदिकवि वाल्मीकि जीको साक्षी सुनावो तब दास भक्त अरु दासवाणीको प्रमाण करें सो या प्रश्न में तो आपकी बुद्धि बाहुल्यता प्रकट होयहै क्योंकि जिन वाल्मीकि जीकी संस्कृत साक्षी सुना चाहो वे वाल्मीकि जीतो भगवत आज्ञाते कलिकालके कुटिल जीवके तरणोपाय निमित्त गोस्वामी श्रीतुलसीदासाभिधान धरायकै भाषाहीके आचार्य भयेहैं तबतो श्री नाभा स्वामीने लिखीहैकि कलि कुटिल जीवनिस्तार हितबालमीकि तुलसी भये ॥ अन्यच्च ॥ दोहा ॥ सीरध्वज भये नानक शुकदेव भये कबीर॥बालमीकि तुलसीभये ऊधव सूर शरीर ॥ वार्ता ॥ ऐसे ठौर ठौर वचनहैं ताको विस्मरण करिकै उनको साक्षी सुनी चाहो या ते आपकी बुद्धिकी प्रशंसा कहांलौं करें याते तुमते तो हार माननोही श्रेष्ठहै॥तत्रप्रश्न॥तुमने कही है कि श्रीबालमीकिजी तुलसीरूपह्वैकै भाषा वर्णन करी है यह बनाईहुई दंतकथा सर्व कपोलकल्पितहै याते हम

को तौ सर्वथा प्रमाण नहीं आवै यापै कोई प्राचीन ग्रन्थकी साखी सुनावो तब प्रतीतिहोय ॥ तत्रांउत्तर ॥ हे स्थूलबुद्धे विश्वनाथ ने काशीमें प्रकट पुकारिके गुसाईं जीको आदि कविको संबोधन दैके रामचरित्र बनवायो है या प्रत्यक्षपै प्रमाण चाहौहौ यामें काकु शंकाभी आवैहै॥ प्रश्न ॥ शिवजीने रामचरित्र बनवायो तुलसीदासजीको आदि कवि वाल्मीकि अवतार जानिकै ऐसे लोक कहैहैं परंतु हमतौ प्राचीनग्रन्थकी साखी विना प्रमाण नहीं करैं ॥ तत्रांउत्तर ॥ वशिष्ठसंहितामें अरुंधतीप्रतिवशिष्ठवचनं ॥ श्लोक ॥ वाल्मीकस्तुलसीदासः कलौदेविभविष्यति ॥ रामचंद्रकथामाध्वि भाषारूपां करिष्यति १ ॥ टीका ॥ वशिष्ठजी कहैहैं किहेअरुंधती देवी वाल्मीकि आदि कवि जोहैं सो कलियुगमें तुलसीदासजी होयँगे अरु हे साध्वीनाम पतिव्रता रामचंद्रजीकी कथा भाषारूप वर्णन करैंगे १॥ वार्ता ॥देखो विष्णु अरु वैष्णव इनदोऊकी वाणीमें विवेकीलोगभेद नहीं जानैहैं क्योंकि भेदाभेद करते महापातकको अधिकारी होयहैं तहां वादी बोले कि विष्णु और वैष्णव दोउनकी संस्कृतवाणीमेंतौ समानता कदापि धरिजाय परंतु प्राकृतभाषा कोतौ समानकालत्रयमें नहीं मानें तत्रांउत्तर ॥ श्लोक ॥ नाटकेनउक्तं ॥ संस्कृतंस्वर्गिणांभाषाशब्दशास्त्रेषुनिश्चिता प्राकृतंतद्भवतत्तुल्यंदेश्यादिकमनेकधा १ ॥ अर्थ ॥ संस्कृत स्वर्गकी भाषा प्राकृत मनुष्य भाषा परंतु हैं दोऊ समान तीनयुगमें कलियुगमें भाषा

तुल्यहै ऐसे शब्द शास्त्रमें निश्चय कियोहै तथापि भाषाको प्रताप कछुक विशेष दृष्टि पडैहै काहेते कि भाषामें अर्थ साधनिका सीखे बिना संस्कृतमें कदापि वंचु प्रवेश न होवै अरुभाषावाले कोसंस्कृत बिनाकछु अटकैनहीं याते भाषा तौ संस्कृतके बोध करायबेको परम गुरुतुल्यहै ताको निषेध करिवेमें तुम्हारो उर कैसे उमगैहै याको भली भांतिते विचारि देखिये तबवादीबोले॥ तुम कोटि कोटि क्लिष्ट कल्पना करिकै असंस्कृत भाषाकी बहुधा बडाई करौ परंतु विबुध वैषरी बराबरतौ तीनकालमें नहीं तुलैगी क्योंकियापै भर्तृहरिको वचनहै॥ श्लोक॥ केयूरानविभूषयंतिपुरुषंहारानचंद्रोज्ज्वला।नस्नानंनविलेपनंनकुसुमंनालंकृता मूर्द्धजाः वाण्येकासमलंकरोतिपुरुषंयासंस्कृताधार्यते क्षीयंतेखलुभूषणानिसततंवाग्भूषणं भूषणं १॥ टीका॥ कियापुरुष को केयूर जे भुजबंधते भूषित नामशोभित नहींकरैहै अरु चंद्रसरीखो उज्ज्वल हार सोभीसुशोभित नहींकरैहै अरु स्नान अरु चंदनादिक लेपनहू सुशोभित नहीं करैहै अरु कुसुम जो फूल सोभी सुशोभित नहीं करैहै अरु सुधारे हुये मूर्द्धज जो केश वेहू सुशोभित नहींकरैहैं केवल वाणी जो सरस्वती सोही सुशोभित करैहै जो बाणी संस्कार करिकै सहित धारीगई है सो सुशोभित करै है और सर्व भूषणान को क्षयहोवै है बाणीरूप भूषणहै सोही सांचोभूषणहै या पुरुषको॥ वार्त्ता॥ याते बिलोकिये

विबुधवैखरीकी विचित्रता गोमंकहूं प्राकृतप्रशंसा सुनी है ॥ तद्वांउत्तर ॥ भो स्थूलबुद्धे तुम भाषाको बिनासमझे असंस्कृत कहो हो सो सर्वथा अप्रमाणहै क्योंकि याये तो भाषा व्याकरणही आगे लिखेंगे याते भाषाको परम संस्कारी वैषरी समझिये अरु तुम देववैषरी जानिकै अहंकार करतेहो तो सर्व मिथ्याहै क्योंकि वैषरीवाणीतो श्रेष्ठहै वाको जानिये जामें भगवतगुण संयुक्तहोय फेर सुरवाणीहै अथवा नरवाणीहोय सोई सोमभिंवुमें वैषरी वाणीके प्रकरणमें लिख्योहै कि श्लोक ॥ रामतेनामनोयस्सावैषरीकीर्तिताकोविदस्यापि चद्वैषरी यौवनारंभशोभाभरासुंदरी पातिव्रत्यंविनाका ननेकोदरी १ ॥ टीका ॥ हेराम जामें तुम्हारो परम पवित्रनाम नहीं सो वैषरी सर्वशास्त्र सम्पन्नको शुद्ध संस्कृतहै तथापि वैकृते निश्चय करिकै षरी नामखर वाणीतुल्यजानिये ॥ तद्वांदृष्टांत॥ जैसेरूपलावण्य लीला कीस्थली ऐसी सुंदरी अरु पतिव्रतकरिकै रहितहै तो वह सुंदरी काननवनकी चोरगुफासी जानिये ॥ तदुक्तं श्रीभागवतेप्रथमस्कन्धेव्यासप्रतिश्रीनारदवचनं ॥ श्लोक ॥ नयद्व चश्चित्रपदंहरेर्यशोजगत्पवित्रंप्रगृणीतकर्हिचित तद्वा यसंतीर्थमुशंतिमानसा नयत्रहंसानिरमंत्युशिक्क्षया टीका ॥ जो काव्य महामंजुल मनोहर जमकजटितानुप्रासश्लेष कोमलावृत्ति सहवर्तमान विमल विचित्र सुन्दर संस्कृतहै अरु जगतपवित्र कर्त्ता जगदीश्वरको यशजामें नहीहै तो वा काव्यको कोविदकलाधर

कबिजन काकतीर्थवत कहै हैं काकतीर्थकहे मलमूत्र के डारिबेको घूर महामलीन कल्मषको कोषफेरवह कैसोहैकि कलिके कुटिलकूर कामी कुत्सित कल्मषी काकको क्रीडास्थल जहां भगवतजन रसिकराज हंस शिरोमणि भूलकेभी भ्रमण नहीं करै हैं ॥ श्लोक ॥ तद्वाग्विसर्गोजनताघ विप्लवो यस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्ध वत्यपि नामान्यनंतस्ययशोंकितानियच्छ्रृण्वंतिगायंति गृणांतिसाधवः॥ टीका॥ जोकाव्य छंदरस अलंकारादि कविताईके अंग करिकै अबद्धहै अरु श्रीमद्भगवतयश बिशदांकितहै वा बाणीको बिसर्जन जनयूथके अघ ओघकोबिनाशकर्त्ताजानिये अरुवही बाणीको भूरि भगवतजन परमप्रिय जानिकै सादरश्रवण गायनग्रहण निरंतर करैहैं अर्थातयटप्रकारमेंकोईभाषा होय परंतु प्रशंसातौ भगवतगुण संयुक्तकीहै॥ दोहा॥ हरि हीरा को पट्टपट अथवा कंबल माहि। लायग्रन्थ बिक्रय करै मोल उभयसम ताहि १॥ वार्त्ता॥ बज्रमणि हीरा को कोनखापके कपड़ामें अथवा कंबलकी कंथामेंते खोलिकै बिक्रयकरौ परंतु मोलसमान होवैहै ऐसेहरि गुण हीराको संस्कृत प्राकृत इच्छा आवै जामें गायन करौ परंतुआदर तौ भगवतगुणको होवैहै १॥ दोहा॥ विष्णुवषट्कारादिरट अथवा गोबिंदगाय। उभयएक फलहोतहै अशनकनकदलमाय॥ वार्त्ता॥ विष्णुविष्णु वषट्कार ऐसेसंस्कृत श्लोककरिकै भजनकरौ अथवा गोबिंद गोबिंद भजो परंतुदोऊ को फलसमान होवैहै

जैसे सुवर्णथालमें भोजनकरौ अथवा पत्रावलीमें जेंवे। परंतु तृप्ति दोऊकी समानहै ऐसे संस्कृतहो अथवा प्राकृतहो परंतु भगवत्गुणाको फलसमानहोवैहै॥दोहा॥ पारस परसि लोहा विविध बहै सुगुण लखि हेम॥ त्यों नरअरु गिरबाण गिर हरिगुण युतवर्णितेम ९ टीका॥ लोहसैकी तरवार अरु दोटकेकी दराती पारस परसेपै विवेकी सवकोमोलसों आदरैहै ऐसे संस्कृत प्राकृ-तादि हरेकभायाहोय परंतु प्रभुगुण परसेपै पंडितलोग पूजनीक सारैहै अरुकोई सचकरता ते भेदाभेदकरै तो वह सदा मूर्खकी मंडलीमें गिन्योजाय याते भूलिकै भेद न राखिये॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजराठौरवंशावतंसश्रीबलवंतसिंहभूपालाज्ञा
कविटीकारामकृतायांभाषाऽमृततरंगिण्यांभग
वद्गुणादामाभिधानादिदृढ़ीकरणं
नामचतुर्थस्तरंगः ४॥

दोहा॥ सुरनरगिरासमानसुनि खलबोलेखुनसाय। उरउलकरया असहकी बाढी वियस वलाय॥ पर संपतिको पेखिकै दुष्टजरै विनआग। तुलसीवाके भागते गई भलाईभाग॥ जाकेजियमें जरतहै राग द्वेयकी आग। ताके तीनहु विफलहैं ज्ञान भक्ति वैराग॥ सरस सुधाकर सुखदको रखैन राहू रेख। यों नरभायाको लिपट दुष्टसकैं नहिंदेख॥वार्ता॥ तुमने भाया भगवत्गुण संयुक्तहवै कै संस्कृत समान ठहराई यामें कौन अधिकाई भई भगवत्गुण संयुक्ततौ म्लेच्छ पिशाची

वाणीभी मान्य होयहै जैसे पारस परसेपै ऊंच नीच सर्वलोह सुवर्णसमानहोवै परंतु बिनापारसपरसेतौ तरवार सोई तरवार अरु तुच्छदराती सो दराती ऐसे भगवत गुणयुक्त तौ सर्वभाषा सराहिबे योग्य होवैहै परंतु भगवतगुण बिनातौ संस्कृतकी समान भाषा कोई भी कालत्रयमें नहींहोवैगी याते भगवतयश बिना संस्कृत प्राकृत दोउनमें कौन श्रेष्ठहै सो कहौ ॥ तहांउत्तरदोहा ॥ भाषा विविध प्रकारकी बपु अनुसार बखान। उत्तम मध्यम अधम अध समझत सुघर सुजान १ ॥ वार्ता ॥ सुर, नर, असुर, नाग, नग, गंधर्व, पशु, पक्षी, पिशाच ऐसेअनेक प्रकार उत्तम मध्यम अधम अधमाधम जैसो जैसोजा जाको शरीर तैसीतैसी भाषाहू बहुधाप्रकार विचक्षण बिचार लेहैं ॥ तहांप्रश्न ॥ तुमने शरीरानुसार उत्तम मध्यम अधमाधम भाषाबताई कि जाको शरीर श्रेष्ठ वाकी बाणी श्रेष्ठ तो कहौजी सर्व शिरोमणि शरीर तौ देवताकोहै याते देवबाणी जो संस्कृत सो सर्वशिरोमणि ठहर चुकी अरु नरदेह तौ नाशवान् मलमूत्रभरी नरक की निधान नीचहै तब नर की प्राकृत भाषातौ अर्थात निरंतरनीच तुम्हारेही कहने ते ह्वैचुकी ॥ तहांउत्तर ॥ गरुड़जीनेभुशुंडजीसोंपूछीरामचरित्रमें चौपाई ॥ प्रथमहिं कहो नाथ मतिधीरा। सबते दुर्लभ कौन शरीरा ॥ नरतन समनहिं कौनिहु देही। सर्व सुरासुर याचत जेही ॥ नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान बिराग भक्ति सुखदेनी १ ॥ दोहा ॥ बिबुध सदा

वांछितरहैं अहोधन्य नरदेह। तिहिप्रतापते प्रकट हम पाये सुरपुर गेह॥ वार्ता॥ देखिये देवताकी कृतज्ञता कि जो स्वर्गसदन प्राप्तभये मंते नरदेहको उपकार विस्मरणानभये क्योंकि जहांजहां देवताके वचनदेखेसुनेतहां तहां नरदेहकी परमप्रशंसा करीहै अरुयहकैसो कृतघ्नो है कि या नरदेहमें वसिके प्रपंच परमार्थ अनेक सुख को अनुभव करैहै वाही नरदेहकी वाणी सहवर्तमान निंदा करिवेपै कमरवांधिके खड़ोभयोहै देखो कृतज्ञ कृतघ्नो को इतनो अंतर है परंतु हियाफूट इतनो तौ विचारै कि मैं यदिकिंचितदेवभाषापढिकै नरभाषाको निंदापै खडोभयोहूं परंतु वे देवतातौ नरदेह भाषाकोही अभिलाषैहैं तातै मैं कौनके भरोसे निंदाकरूं देखो मूर्खकी मूर्खताई कि जो इतनोभी नहीं विचारैहै कि दोहा॥ सुधापान विवुधाकरैं अपसरसंग अलाप। स्वर्ग सदन दुखकदन शुभ पै नरतन परताप॥ टीका॥ देखो देवताकहैहैं किहमकोस्वर्गसरीखो तो सदनसुखदायक प्राप्तभयो है अरु दिव्यदेह अप्सरासंग अमृतपान महा मधुरस्वरश्रवण विचरिवो विमानारूढ इनसर्वसुखको कारण नरदेहहै याते प्रभुते यही प्रार्थनाहै कि सर्व शिरोमणि परमपदार्थ ऐसो नरतन फेरभी दयाकरिके वरवशैतौकर्मभूमिमें सत्कर्मकरिकै और भी उत्कृष्ट पदको प्राप्तहोवैं ऐसे नरदेहको निरंतरदेवताइच्छाकरैं हैंसोबिवेकीलोगविचारिलेहैं किनरदेहकी इच्छानहीं करैहैं इच्छातो केवल नरकी प्राकृतभाषाकोहै क्योंकि

भाषाबिना तौ मूकतन पशुतुल्य गिन्योजायहै तातेदेह
की इच्छा नाहीं इच्छा मनुष्यबाणीकीहै याते देवता
मात्रतौ मनुष्यकी प्राकृत भाषाकी प्राप्तिकेलिये निरं-
तर तरसतेही रहेहैं अरु भगवतते हाहा खातहैं अरु
कितनेक चतुराबकांध उन देवनकीबाणी जो संस्कृत
तामें यदि किंचित चंचुबोरिके देवनको दुर्लभ परंपदा-
र्थ ऐसीजो प्राकृतभाषा ताकी निंदाकरै हैं अबयाकी
महामूर्खता कहांलों बर्णनकरें॥ दोहा॥ सुरकी भाषा
संसकृत नरकी प्राकृत नाम। कारण नूतन निलंपको
गिरासहितगुणग्राम १॥ वार्ता॥ नरदेहकीप्रशंसा॥ सुर,नर,
नाग, सिद्ध,चारण,कुणप, किन्नर,इंद्र,चंद्र, दशौदिग-
पालादिदेहधारी मात्रकरैहैं अरुप्राप्तिकोइच्छैहैंसोसर्व
शिरोमणि प्राकृत भाषाकेलिये इच्छा करैहैं अर्थात
दुर्लभता भाषाकी जानीगई भाषाबिना मूकतनकोको
इच्छैइच्छातौ भाषाकीहै अर्थात संस्कृतभाषामात्रको
कारण नरभाषा जानीगई अरु कारणकी निंदाकरै
तबतौ परमेश्वरकी निंदाकरैहै दुष्ट अथवा आपके
माता पिताकी निंदाकरैहै क्योंकि माता पिताभी देह
के कारणहैं ताते भाषानिंदक की तरफ कृतघ्नता पुष्ट
भईहै अरु बर्णसंकरत्व जाहिरहुई तातेभाषाकी निंदा
भूलि के न करनी चाहिये क्योंकि जा संस्कृत के
अभिमानते पंडिताईकी ठसक राखैहैं वाको कारण
तौ प्राकृत नरभाषाहै तब निंदा कौनकीकरै नरभाषा
ते तौ नरदेहकी दुर्लभता संत महंत ग्रंथ गावैहैं देखो

गुसाईंजीने कहीहैकि ॥ दोहा ॥ तुलसी सौसर पाइयो मनुष जनम सरदार ॥ तरसैं अजहूं देवता तू जिनकरै खवार ॥ मनुषा तनमें मौजका आया औसर जाय। वार वार या जीवसों कहत बजाय बजाय ॥ मनुषातन की मौजमें है कर लीजै मन्न। रे रञ्जन परलोकको सुमिरण सुकृत धन्न ॥ देवदनुज दिगपालदश प्रेतपितर गंधर्व। नरनारायण देहको मनक्रम वंछतसर्व ॥ याते वृथानखोइये यहनरदेह रतन्न। जाते मनवांछितमिलै ऐसो दीरघधन्न ॥ वेरवेर नरतननहीं सुनरे लोनहराम। ताते चेतन चेतिकै साधशीघ्र निजकाम ॥ जो बालक भूषणदियो लियेवेर भरगोद। नरतन रतन गवांयकै मूरखमानत मोद ॥ कबिरा सोयेकापरयो करजागनको कौल। इकइक श्वासाजातहै तीनलोकको मोल ॥ भरत खंड नरदेहको परोपाय मतिमंद। भ्रमै श्वपचसोंलोभ लगि तजिकै सुकृतसुछंद ॥ वार्ता ॥ जैसे बनारसादिपुरमें सूर्यग्रहणपर्व पायकैमनुष्यनकी द्विधागतिहोतहै द्विधा गति कहा कितनेक उत्तमसंस्कारी लोगरहेते तो महा दुर्लभ स्थलकी पर्वणी जानिकै एकांतउत्तम गंगातटपै स्थितह्वैकै भगवतभजनस्मरण दानधर्मकरिबेलगे और कितनेकपामर पतित चांडालादि मारेतृष्णाकेबगल में झोलीगहिकै ग्रहणको दान गंगाको स्नान धर्मकरो महाराज ऐसे भाषतेडोले शोरडारतेसंते यहतौ दृष्टांत है अब सिद्धांत सुनिये परम उत्तमस्थल देवनकोदुर्लभ ऐसो जो भरतखंड काशीरूप जामें नरदेहको पर्वणी

पायकै नरनको द्विधागतिभईहै कितनेक सुकर्मी पुराय शील तौ परम देवनको दुर्लभ नरदेह प्राप्तभईहै जाको चंद्रचकोर ज्यों देखिदेखिके परमआनंदमानिकै अहनिश यहीकी प्रशंसा करिकै प्रभुको परम उपकार मानै औरनरवाणीको सर्वशिरोमणि समझिकै याही में भगवत भजन सुमिरण परोपकारादि कृत्यकरिकै परलोक सुधारैहैं अरु कितनेक कुटिल कुकर्मी जे हैं ते प्रपंचकीनाई तीव्रतृष्णा भरेनर देहको परम उपकार भूलिकै याहीको प्राकृतबाणी की निरंतर निंदा को शोर डारते डोलैं सोई मनो भीख मांगै हैं देखो गोसाईंजीने विनयपत्रिकामेंकही है कि । हरितुमबहुत अनुग्रहकीन्हो । साधनधामविबुध दुर्लभतन मोहिंकृपा करि दीन्हो १ ॥ दोहा ॥ कबिरासोवेका परयो करजागनकीचौंप । येदमहीरालालहै गिन गिन हरिको सौंप १ ॥ माणिकदासजी कृत दोहा ॥ रतन दियेत्ते ना मिलै आयूलवपलश्वास । सो आयू सब मूढने किये विषय में नास १ आयू लव करि होतहै सावधान निरबंध । ताआयूकरि कूरने कियो आतमदृढ बंध २ ॥ वार्ता ॥ देखो वेद शास्त्र पुराण ग्रन्थ पंथ सन्त देव पितर आदि दैकै जैसी नर देह की प्रशंसा अरु श्वासो श्वासकी परम दुर्लभता बरणै हैं तैसी देव आदि दैकै काहूके देहकी प्रशंसा सुनी देखीनहीं क्योंकि सर्वदेह अरु सर्व साधन को धाम तो नरतन है अरु जो देवता को तन सुकर्म साध्यहोतो तो खट्वांग राजा देवलोक

प्राप्तभयेपै पीछे मनुष्यलोक आयवेको काहूको परि-श्रम करतो देवतनभल्यो यो वाहीते स्वर्ग में इय सुभार लेतो परन्तु नरतन्नविना है यकारक दूसरो तन प्रभूने निसणाहो नहींकियो अर्थात नरदेह सर्वशिरोमणि सर्वतनको कारण जानीगई सो यहां विवेकी लोग विचारले हैं कि या नरदेहकी प्रशंसा अरु दुर्लभता नहींहै यह तो केवल याकी प्राकृत भाषाकी बड़ाई है क्योंकि नर देहपाये अरु वाणीविना मूकभये वानर देहतो पशु तुल्यहै ताते सर्वशिरोमणिसर्वको कारण भूत परमपदार्थ प्राकृत भाषाहै यह सिद्धान्त ॥ दोहा ॥ विरचित विधि वपुमालमधि नरतन समझ सुमेर ॥ वृथागवांवन बावरे सुन तुलसीकी टेर ॥ वार्ता ॥ जैसे माला फेरनहारेको सुमेरु आवे तब समाप्तिहोवै है ऐसे चौरासीलक्ष माला फेरेते अति विह्वलहोय तब समाप्ति समय नरतनसुमेरु आवैहै ताशिरोमणितन को वृथानखोइये तुलसीकी टेर सुनिकै देखो नरदेहकी प्रशंसातो देहधारीमात्र करैहैं सोसर्वप्रशंसा याकी वाणीतेहै वाणी विना मूकतन कौन कामको याते परम दुर्लभता प्राकृतभाषाकीहै ताको कितनेक मूर्ख शिरोमणि निंदैहैं ॥ तहांप्रश्न ॥ दोहा ॥ झूठा झगड़ा झगड़ि कै देत सुतनको साख । पै स्याने मानैं नहीं लोलुप बातैं लाख ॥ वार्ता ॥ जैसे काहू झूठा झगड़ा करिकै सच्चे होयबेको अपने पुत्रनकोगवाह बुलावै परंतु बुद्धिमान अदालती कदापि प्रमाण न करै तैसे

तुमने प्राकृतभाषाकी परम उत्कर्षता बतायबे निमित्त महा मलिन मलमूत्रते भरो निपट निकाम नरदेहकी मिथ्याविबिध बड़ाई कीन्ही अरु यापै सबे होनको भाषाबिरभदेगी जनलको जोसाखदईसो हमप्राकृतको प्रमाणतीन कालमें नहीं मानें यापै साक्षीतौ संस्कृत की चाहिये क्योंकि देवता तेज पुंजको तन पायकै मलिन नाशवान् नरदेहको किस निमित्त इच्छाकरें यह प्रश्न ॥ तहांउत्तर ॥ हे बिदग्धबिवेकार्णव आपऐसे अनुचित बचन कहा उचारोहौ कि प्राकृतको प्रमाण नहींकरें प्राकृत देहकी प्रशंसातौ सुर नर नागादि देह धारी मात्र नर तनकी स्तुति करैहैं देखो भागवत के एकादश स्कंधमें उद्धवप्रति भगवद्वाक्यहै ॥ श्लोक ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभंप्लवंसुकल्पंगुरुकर्णधारं। मयानुकूलेननभस्वतेरितंपुमान्भवाब्धिंनतरेत्सआत्महा॥टीका॥ यह पुरुष नरदेह नौकापायकै संसार सागर नतरै सो आत्महा कहे ते आत्मघाती कहावैहैं नरदेह कैसी है प्रथमतौ आद्यहै अरु सुलभनाम सुंदर पदार्थको प्राप्त करताहै सुदुर्लभ नाम परम दुर्लभहै अरु सुकल्प नाम तरणोपायमें सुंदर दृढहै अरु सद्गुरु केवटहै तापै प्रभु कृपा पवन अनुकूल प्रेरित भयोहै याते परम दुर्लभ समय पायकै अवश्य भवसमुद्र तरनो उचितहै तदुक्तं गरुड़ पुराणे भगवद्वचनं ॥ श्लोक ॥ गायंतिदेवाःकिल गीतकानि धन्यास्तुयेभारतभूमिभागे। स्वर्गापवर्गास्य फलार्जनायभवंतिभूयःपुरुषाःसुरत्वात् १ ॥ टीका ॥

भरतखंडकी भूमिविषे जे नरहैं ते धन्यहैं ऐसे निरुत्त्र-
र्षालसक्त करिके देवतागायनकरैहैं देखो नरदेह कैसी
हैकि स्वर्गसुख अरु अपवर्गनाम मोक्षलोजाके आश्रय
रहैहैं ॥ श्लोक ॥ भूर्लोकःसर्वलोकानांदुर्लभःसर्वजंतुभिः
मानुष्यंतत्रभतानांभुक्तिमुक्त्यालयंशुभं १ ॥ टीका ॥
भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्गलोक महर्लोक जनलोक तप
लोक सत्यलोक इन सप्तलोकनमें भूर्लोक प्राप्तहोनो
परम दुर्लभहै तामेंभी सर्वभुक्तिमुक्तिको भंडार ऐसोजो
नरदेह है सो तो या प्राणीको अत्यन्त परम दुर्लभहै
ऐसे वारंवार देवता पुकार करै हैं ॥ तदुक्तं प्रबोध सुधाकरे
आर्याछंद ॥ आयुः क्षणलव मात्रं नलभ्यते हेमकोटिभिः
क्वापितच्चेतगच्छतिसर्वं ततःपराकाधिकाहानिः॥टीका ॥
अहोनर देह दुलभता देखो देखो कोटि कोटि कुवर्ण
देते मनुष्य तनकी क्षणलव श्वासमात्र आयुय नहीं प्राप्त
होवहै ऐसी असूल्य महा महर्ग परम पदार्थ आयुय
सर्वथा बीती जायहै याउपरांत और हानि कहाहो-
वैहै देखोनरदेहकी दुर्लभता ठौरठौर सहस्रावधि ग्रन्थ
में गावैहैं ऐसेविबुध तनकी वडाई कहुंदेखी सुनीहोय
तो बतावो ॥ दोहा ॥ यहनर तन नरवानिको विबुध
चहत करिप्रीति। खलतामें बसि ताहिको निंदतयह
विपरीति १ ॥ टीका ॥ नरतन कैसोहै कि वरनाम श्रेष्ठ
है फेरकैसोहै कि परम प्रबोध करिबे वारी सरलसु-
धासीहै बाणी जाकी ताकोसुरगण सदासर्वदा इच्छा
करतेही रहैहैं क्योंकि हमें विबुध वपु प्राप्त भयोहै सो

तिठकेवल नर नारायणी देहके प्रतापते मिल्योहै यातेहमारो परम पूज्य प्राकृत भाषावारो नरदेहहै ऐसे स्वर्गमें बसिके देवता अद्यापि अपरमित उपकार मानैहैंदेखिये देवताकोकृतज्ञता अरुकितेक कूरकुटिल कैसे कृतघ्नीहैं कि यानरदेहमें बसिकै याहीकोभाषा सह वर्तमान निंदाकरैहैं याके उपकार को भूलिकै जैसे चमगादर जामुखते खाय वाहीते बिष्टाकरै दुष्ट जीव ऐसेही जामुखते भाषा बोलैंहैं अरुजाही भाषा के प्रतापते संस्कृत प्राप्तभयो अरुवाही मुखते निंदा रूप बिष्टाकरैहैं परंतु इतनी नहीं बिचारैं कि मैं जा प्राकृत भाषाको निंदाकरूंहूं वा भाषाको स्थल तो मेराही मुखहै परंतु वृन्दके बचन हैं कि ॥ दोहा ॥ भले बुरे दोऊसदा चिरंजीव संसार। यातेगुण अरु दोषको जान्योजाय बिचार ॥ सुरबाणी पढि सासुरा निंदत नृगिर अकाज। सोसुर नृगिर प्रशंसहीं लखैं न मूरख राज ॥ टीका ॥ सासुरा नाम खल विदग्धकोहै सो किंचित देवबाणी पढिकै सर्व शिरोमणि नर भाषा को निंदैहैं अरु सुर समूहजेहैं तेतो प्राकृतको परम पूज्यसी पेखिकै निरंतर प्रशंसा करैहैं देखो इतनी बडी बात भूलमें गवांई याते मूर्खराज कह्योहै कृतज्ञ अरु कृतघ्नीको इतनो अंतरहै तापै देवीदास कृत ॥ कवित्त ॥ बडेनके सीशपैते तनकतिनूकालत ताहीमेसदा जातें बांधें बडी प्रीतिके पने। सावधान भयेहु जे मलौ सु भूलैनाहिं प्राण वाके काजदेत ऐसेमुखसों सने ॥ देवी

दास अवगुनो छुलककी सुदनाई कौन भांति कीजै हाथ संद उनके गने । प्रान कुर्बान कारप्रीति प्रतिपालेकोऊ तौहू खल तिनुकाको किनुका कियेगने ९ वार्ता ॥ ऐसेखल उपकार नमानें नरतनको ॥ दोहा ॥ दुरपावतहैं सिंहको छलैं उभ्भकतो चाल । जंबुक फूल्यो परगुरुस पैरसिंहकी खाल ॥ आनवृक्षको रसको सुरतरु छेदत मूल । जिहिपर बैठो ताहिको करै करू निरमूल ॥ टीका ॥ जैसे कोई बागके वृक्ष रक्षणा को भूलिकै बागुरके काज कल्पवृक्ष काटैहै परंतु इतनी नहींजानै कि यहतौ सर्व वृक्षकी इच्छा पूर्ण करिबे वारोहै यह बात भूलिकै छेदैहै सोभी जाशाखापै बैठो वाहीको विनाशैहै याकी मूर्खता देखिये ऐसे संस्कृत उपवनकी सहाय निमित्त पारिजात प्राकृतको पाड़ो चाहैहै मूर्खयाके गुण जाने विना क्योंकि प्राकृत तौ कलिकालमें धर्म अर्थ काम मोक्ष पर्यंतको दाताहै भगवत आज्ञाते अरु याकी जन्मांधता तौ देखिये कि जा प्राकृत शरीरके आभ्यंतरहिकै वाहीको विनाशकियो चाहैहै बाणीरूपीफल पत्रवह वर्तमान अहोयाकी अज्ञानता क्योंकि प्राकृत मनुष्य वाणी वपु सर्ववाणीवपु को कारणहै देववाणी वपु सहवर्तमानको ॥ तत्रप्रश्न ॥ तुमने नरदेह अरु नरवाणी देवतादि सर्व शरीरवाणी सह वर्तमानको कारण बताई सोहमतीनकालमें प्रमाण नहींकरें क्योंकि सर्व शरीर अरु सर्व वाणीको कारणतौ देवताकी देह अरु देववाणीहै ॥ तत्रोत्तर ॥

भागवतके तृतीय स्कंधमें कह्योहै ॥ श्लोक ॥ येऽभ्यर्थितामपि चनोनृगतिंप्रपन्ना ज्ञानंचतत्त्वविषयंसहधर्मयत्र। नाराधनंभगवतोवितरंत्यमुष्यसंमोहितावितयावतमायया ते १॥ टीका ॥ देवन प्रति ब्रह्मदेवने कही कि जोनर देहकीअपनी इच्छाकरैहैं तादेहको पायके जेनर अपनी वाणीते भगवतको आराधन नहींकरैहैं वे श्रीहरि की माया करिके मोहित ह्वैरहेहैं ॥ दोहा ॥ देवदनुज नगनागखग प्रेतपितर परियंत। सबको सिरजनहार वर नरतन निपुण बदंत ॥ वार्ता ॥ देखो देव आदिदैके पिशाच प्रेततन पर्य्यंतको कारण नरदेहहै जामेंदेव तनको कारणतो प्रथम निश्चय करतेही आयेहैं अब पितर प्रेततनको कारण दृढकरैहैं देखोहाथी घोड़ा बैल गधा मरिकेभी कहूं भूत प्रेत खबीस भयेहैं ऐसेही गाय भैंस घोड़ी गधी मरिके भूतनी चुडैलनी भईसुनी देखीनहीं औरऐसेही पशुआदि तनतजिके कोऊ पितर लोक नहींपहुंच्यो अर्थात सर्वदेहको कारण नरतन जान्योगयो तबसर्व भाषाको कारण प्राकृत नरभाषा तौ ध्रुवांक निश्चय ह्वैचुकी यातेनर तनतौ सर्वतन को द्वारभूतहै देखो जा जा तनमें प्रवेश होवैहै सोयाही द्वारते होवैहै ॥ दोहा ॥ पुण्य प्रबलते देवतन पाप प्रबल तननीच। पुण्यपाप समप्रकट तौ वसैमनुज तनबीच १ वार्ता ॥ देखोवेदमें प्रथम पुरुषसूक्त गायो जामें सहस्रशीर्षाः पुरुषाः ॥ टीका ॥ ऐसेप्रथम प्रभुको पुरुषरूपहै जासों पुराण पुरुषकहैहैं वापुरुषते प्रकटी जोप्रकृति

प्रकृतिते महत्तत्त्व अरु महत्तत्त्वने त्रिविध अहंकार, तामें सात्विकी अहंकारते पश्चात देवताभयेहैं अनन्तरात सत्यहैकि असत्यतुमहीं करमावो कहीयहतौ सत्य तब कही कि यह सत्यहै तौ देवतान की देहको कारण पुरुषदेह निश्चय करेंगुकी तबतौ भागवतमें लिख्योहैकि नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं अबकहो जो यहां सुरदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं ऐसेक्योंनहीं लिख्यो कहुव्यासजी अवतार होयके सर्ववेत्ता नहुते परंतुसर्व देहसावको कारण मुकुटमणि नरदेहहै नरनारायणाि देह दुर्लभहै सुरनारायणाि नहीं इन्द्र चन्द्र विद्याधर गुह्यकदेह नारायणाि नहीं सुनी असतुमकहो तौकहो दैत्य नारायणाि नहीं वेदसहापुरुष तेचरणारविंद पौरुषी वाणी ब्रह्मापति हुई आदि तप तप तत्र्याको वाणीतौ शिरोमणि होयही होय यासें संदेहकहा अर्थात देवता अरु देवभाषा जोसंस्कृत तासे पुरुष भाषा पंचांप्रया प्रथम प्रभुने उत्पन्नकरी अर्थात संस्कृतते प्राकृत आद्यसर्व भाषाको कारणभई और देखो जहां तहांलिख्योहै कि नरंचैव नरोत्तमं तहां सुरंचैव सुरोत्तमं क्योंनहीं लिख्यो सहस्रनामनेपुरुषायणमस्तते ॥ वार्ता ॥ कछुलिखबेवारे समझते नहींथे परंतु सर्वदेहसावको कारण सर्वदेहमें आद्यसर्व सर्वोपरि नरतनहै तबअर्थात नरवाणीको सर्व शिरोमणि सर्व वाणीको कारण जानिके कलिकालमें अध्ययन करनी भगवत आज्ञाते अरुयाते बिमुखने परमेश्वर ते विमुख जानिगे तब तौ

भाषाके प्रतिपक्षीको भगवतने जहां तहां दंडदीन्हो है याको भली भांति बिचार लीजिये ॥ प्रश्न ॥ तुमने नर देहकी प्रशंसाकरी सोतौठीकहै क्योंकि नरदेहकी बड़ाई तौ श्रुति स्मृति आदिदेके अनेकग्रंथ करैहैं परंतु तुमने तौ प्राकृत भाषाको पक्ष पकड्योहै सो याकी प्रशंसाको प्रमाण हमनहींकरैं यापै बचन बतावो तब प्रमाणकरैं ॥ तहांउत्तर ॥ दोहा ॥ आम्र प्रशंसाअधिकसो सकल फलनकीजान। योंनर तन परशंसते बरबाणी पहिचान १ जैसे कि काहूनेकही कि यहआम्र महा मिष्टहै तहां विवेकी बिचारलेहैं कि याकेफल महा मिष्टहोंयगे कछुकाष्ठत्वचा जड़नहीं जाते वृक्षकी बड़ाई करैहै ऐसेही काहूने कहीकि यहबेर सुंदरहै कि यह जांबुश्रेष्ठहै तहां बुद्धिमान बिचारलेहैं कि यह प्रशंसा सबयाके फलकी करैहै कछु शाखा मूलकी नहीं निष्काम फलके तरुतर कोइनजाय ऐसेजहां नर देह प्रशंसासुनै तहां बिबेकी बिचारलेहैं कि यह प्रशंसा याकी बाणीकीहै क्योंकि बाणी बिनामूक मनुष्य कातौ पशु सदृश गिनेहैं याते नरदेहकी बड़ाई नहीं बड़ाईतौ याकी भाषाकी जानियो और प्रथमभी यही निश्चय कियोहै कि भाषा श्रेष्ठ नेष्ट बपु अनुसार समझनी तौ अर्थात सबभाषामें शिरोमणि कारण प्राकृत भाषा नरनकी निश्चयभई याते सर्व शास्त्रकी संरक्षिणी सद्गुरु समक्षके सत्कारपूर्वक अध्ययन करनो क्योंकि प्राकृतभाषा विना ज्ञान भक्ति वैराग्यकी प्राप्ति

नहोवैहै जाते और भागवत आज्ञा सर्वोपरि समझ
मान्यकरनी ॥

दोहा ॥ दशम स्कंधनके नंद पद वंदनकरि युतप्रीति ।
संतमहत्तते सब कही पंचम लहर पुनीत ॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजराठौरवंशावतंसश्रीमानसिंहभूपालाज्ञा
कविटीकायांभाषामृततरंगिण्यांनर
देहदुर्लभत्वनाशात्सर्वोपरिभजनादर्शन
नामपंचमस्तरंगः ५ ॥

सोरठा ॥ ततसमतत्वग्रथित विशेष सुनिभाषाको भूरि य
श । पावसप्रकटतप्रेम जरैजवासा जरसहित १ ॥ टीका ॥
भाषाको बहुधा यशग्रथनकरिकेभागवत जननको भूरि
आनंदउमग्यो अरु कुटिलनके करेजे में विचित्र व्यथा
व्यापतभई जैसे पावसको पेखि के सर्व वनस्पति हरित
होवैहैंअरुजवासा जरसहित जरिजायहै यारीतिते जर
प्रश्न ॥ तुम ज्ञान भक्ति वैरागादि सर्व सद्गुणकी प्राप्ति
भाषाद्वारा बतावो हो तो कहोजी सत त्रेता द्वापरमेंतो
भाषाको बहुधा प्रचारहुतोही नहीं भाषा तो कलि-
युगमें प्रवर्त्तन भईहै तो कहा भाषा विना युगत्रयमें
ज्ञान भक्ति वैराग्य की नास्तिकहुती ॥ तहांउत्तर ॥ वार्ता ॥
हे नीतिनिधान मैंतो आपसों कितनो वेर कहचुकाहों
कि भाषा कलिकालमें कल्याणकारी विशेष है तो
फेर आप सत त्रेताको दृष्टांत देके विपरीत वाद क्यों
बढावो हो याते चारि युगकी चर्य्या अरु चारोंको
तरणोपाय प्रभुने भिन्न भिन्न बतायके भिन्न भिन्न

आज्ञादई है ॥ अथ चतुर्युगचर्य्या ॥ कवित्त ॥ बिप्रको बरण तहां श्रुतिको शरण शुद्ध तारण तरण वपु बामन बखानिये। ध्यान ध्रुव धारण स्वधर्मचारपांय युद्ध सकको प्रवेश पाप देशपै पलानिये ॥ सत्रालाख बीस आठ सहस प्रमाणजाको मानुष मर्य्याद लाख सम्बत समानिये। सतोगुण शुद्ध श्रद्धा सहित सुजान सृष्टि सज्जन समूह सत्य सतयुग प्रमानिये ॥ १ ॥ टीका ॥ सतयुग ब्राह्मण वर्ण वेदमात्र अध्ययन ते उद्धार और शास्त्र नहींथे वेदते विमुख जो हरि ते विमुख भगवत अवतार बावन परशुराम कपिल दत्तात्रेय यहभी ब्राह्मणरूप कर्त्तव्य ध्यानमात्र धर्म चतुष्पाद सत्य दया तप शौच इति पाप पुण्य सकको प्रवर्तन सर्वदेशपर त्रयवरण सकपंगति सम्बत्सरसतयुग आयुष १७२८००० मनुष्यायु १००००० शुद्ध सतोगुणमयप्रजा ॥ अथत्रेताचरण ॥ कवित्त ॥ क्षत्री के बरण युग जानिके जनेश राम राम सुखधाम आप आगम उपायो है। सत रज साने मान सबको बतायो मार्ग सककरै पाप ताको ताप पुरछायोहै॥ बारालक्ष छानबे हजारको बिहारजाको मानुष मर्य्याद आयु अयुत बतायो है। घटघट हंसको प्रताप दशमांश घट्यो त्रेतामें त्रिपादरूप धर्मधरा छायो है॥ टीका ॥ त्रेतायुग क्षत्रीवर्ण तहां भगवतावतार दशरथात्मज रामचन्द्र क्षितिपाल क्षत्रीरूप भये उन्होंने जीव को दशांश मन्दमति जानिके दशगुणी सुगम स्मृति प्रकटकरी ज्ञातेजन को बोधहोय यहकारण क्योंकि

जन समुदायकी सत बुद्धि में सत रज निर्मित देखिके दयाकरी है अरु सुरस यज्ञ यजन को मार्ग बताये। पाप एक करै प्रवर्तन सर्व पुरन्ध्री पै होवै युग आयुष १२९६००० मानुषी आयुष १०००० धर्म तीन चरणाते शौच, दया, सत्य ॥ अथ द्वापरचर्या ॥ कवित्त ॥
वैश्यरूप जानि युग आपहू ब्रजेशभये दयालको गुणा-सदई प्रकट पुरानकी । रज तम जाने मन उरअनुमाने आय पूजन प्रकाश कही प्रतिमा परवानकी ॥ अष्टलक्ष चौंसठ हजारको प्रमाण पेख नरसत्यादि दशांशतक स-मानकी । एककरै पाप ताको भुगतै कुटुंब ताय द्वापर ने धर्मकी द्विपाद गति हानकी ॥ टीका ॥ द्वापर वैश्य वर्ण है भगवत अवतार नन्दनन्दन वैश्यवर्णा भये त्रेता अपेक्षा दशांश मन्द देवा जानि कै वेदव्यास द्वारा स्मृतितै पुराण दशगुने सुरस प्रकट कराये क्योंकि जन सत रज तम मय मलीन जानिकै दयाकरी है अरु प-रम सुरस पूजापंथ प्रेरित कियो द्वापरायु ८६४००० मनुष्यायु १००० धर्म द्विपाद दया सत्य पाप एककरै प्रवर्तन सर्व कुटुंब पै होवै ॥ अथ कलियुगचर्या ॥ कवित्त ॥
शूद्रके समान युगजान जगन्नाथरूप आयसु अनूपभरि भाषाशुभ गाइये । तामसी तमाम जन जानिकै जतायो नाम पापको प्रताप आप आपहूकोपाइये ॥ चारलाख सहसबतीसलों निबादजाको मानुष मर्यादशत सम्बत बिताइये। धरमधराये एकअंघ्रिय अपंगभूरिकूरकलि-कालको कराल आततांइये १ ॥ टीका ॥ कलियुग शूद्र

वर्ण जानिकै श्रीजगन्नाथजू शूद्ररूप होइकै चारिवर्ण भले भुगताये और केवल तामस भरे महामंद मति जीवजानिकै सुगम सुधासी भाषा प्रवर्तनकरी यातेवि-मुखतैं प्रभुते विमुख अरुवामें नाम स्मरण महिमा मंडितकियो अरुपातक करै सोई भुगतै कलि प्रमाण ४३२००० मनुष्यआयु १०० जामेंभी पातककी प्रबलताते इतनीभी नहीं भुगतैंगे धर्मएक चरण पंगुरूप क्योंकि तीनचरण भंगभये ताकीविधि तपरूप चरण तौ स्मयसों भंगभयो अरु शौच दुसंगते भंगभयो दया रूप पद मदते भंगभयो अवएक सत्यचरण रह्यो सो अनृतते भंगहोनहारहै तीनोयुगमें शास्त्रधर्मीन परमसंगलोकमानिके मंगलकार्यमें करते कलिमेंनहीं और गवालंब मांस पिंड देवरते सुतोत्पत्ति सर्वको मनाहीहै कलिमें और चामके दाम जोलोट चलतेहैं कलियुग में ऐसे चारिहू युगके आचरण भिन्न भिन्न रचना रचीहै एकतेएकसुगम जैसेग्रीष्ममें जलऊँओजाय त्योंत्योंखो-दै परंतु चारिहू युगमें प्रभुकी दयालुतादेखनी चाहिये तामें कलिकाल मेंतो परमकृपा करीहै जैसे कोई जने समस्तस्थल निर्जल देशके निवासी निमित्त पर्वतनको स्फोटन करिकै गंगाकी नहरलेजायकै घरघरमें गंगोदक प्रकट प्रवाह वहायकै हृदय जुड़ावै तैसेश्रुति सुमेरु ते स्रावभई ऐसी जो हरिगुणानुवाद गंगा ताको त्रेता द्वापरादि देश उलंघन कराय शास्त्र पुराणादि पर्वतमें प्रवेश करायकै कपट कुटिल कल्मष कलेवर कलि-

काल कराल निर्जल मरुस्थलमें भाषा भागीरथीको
लहर प्रकट करिकै आलसी अभागी अपराधीअधमअघ
ओघके आगार ऐसेऐसे अनेक जीवनके यूथकोकलि
कालसे कृतार्थकीन्हेंहैं दीनवत्सलने निज विरदविलो-
किकै प्यारीचीज महादुष्टकालमें खर्चकरैहै ऐसे तीन
युग अवतारादि सुकाल संपन्न होतेभी संस्कृत विभोवि-
लस्यो अबैपरम दुष्काल कठिन कलिकाल बाराका-
ली वालयावस्थ विचारिकै महादुर्लभ परमप्यारो क-
लेजाको टुकड़ो नरभाषा रूप खर्चकरन विचार्योहै
प्रजारूपी पुत्रपुत्री सबते देखिकै अहोप्रभुकी दयालुता
ऐसेकलिमें भाषाते जीवतहैं परंतु परमेश्वरको इतनोब-
ड़ो उपकार भूलिकै भाषा भागीरथी की निन्दा करैहैं
यातेअहो कुटिलकी कुटिलताकू देखो चाहिये कि जो
प्रभुकी दयालुतामें दूषणादेयापिकै विमुखननै अरुआप
अंधजनको भूलि सिखावते डोलेहैं अरु ठौरठौरबिना
अधिकारी पै वेदरचा पढैहैं अब कहो यह कौनशा-
स्त्रमें लिखोहै कि जीवनको श्रुतिश्रवणकरावनो परंतु
इतनो बड़ो निजापराध भूलिकै भगवताज्ञाप्रेरित जो
हरिगुण मय वैष्णव वाणीपै दूषण थापिकै जगतके
जीवनको डरावैहैं कि भाषासुनवेवारे के श्रवणमें सी-
सा ढालैंगे अबकहो कलियुगमें चारिहु संप्रदायआदि
अनेक पंथाईपरवैष्णव भक्त भयेहैं जिनने भगवत्आज्ञा
ते भाषामें प्रभु गुणानुवाद गाये अरुश्रवण करायेउन
भगवतजनको भाषापै दूषण धारते करेजा कसकैनहीं

अबकहा कहिये इनते कि जो मरकटसी मूठी बांधेरहे अरुवितंडावादपे रुपैहैं अरौविवेकी ईश्वरकी नेकदयालुताकौ निहारके कैसीकृपा करीहै कि जैसे काहूश्रोताको बधिरपनो ज्यों ज्यों आवतदेखै त्योंत्यों वक्तादयापूर्वकटेरिटेरिकै ऊंचेस्वरसों समुझायकै श्रेयसुधारैं ऐसे सतयुगमें शुद्ध सात्विकीसृष्टी समुझायबे को श्रुतिमात्र सृजीहुती फेरत्रेतामें जनको दशांशमंद मेधामानिकै दश गुणोशास्त्र सुगम समुझाये वाहूते द्वापर में दशांश मंद मनसा मानिकै व्यासद्वारा दशगुणे पुराण सुगम प्रकटाये इतेकपैलौ कपट कलेवर कल्मषी कलिकाल प्रवर्तनभयो जामें महामंद मति मछरी अल्पायुषी आलसी सर्वसत्ताहीन शूद्रीभूत जन समुदाय जोये जामें कोटयावधिमें किंचित किंचित साक्षरी ते वेदशास्त्रामें तदाकार भयेसंतेशूद्रनको श्रुतिसुनावते डोलैहैं तथापि प्रभुपरम दयार्द्रहोयकै आलसीको सद्यरसोईकी नाईं कोटिकल्पलतासीचारपदार्थ दायिनी सरस सुधामय परम सुगम प्राकृतभाषा प्रकट करिकै प्रसन्नचित्तसों फुरमाई कि कलिकालमें मानसी पुण्य फलदायी होयगो अरुपाप नहीं और सतयुगादि में जपतप ध्यानयम नियमादि करिकै जाफलकी प्राप्तिहुती सोकलिकाल में भक्तजनकेभाषाकीर्तनते होवैगी और भाषाते विमुखते विमुखहोरहैंगे ऐसे फुरमाई यहां प्रभुकी दयालुतापै दृष्टिदीजिये देखो सतयुगमें जेश्रुति समुद्रमें रत्नहुते तिनको कलिकालमेंभाषाकूंडेमें प्रकटकिये तथापिअभाक्तजीव

नहींअंगीकार करैहैं अरु उलटे भगवतकी दयालुतापै दूषण धरैहैं सो केवल याके हत भाग्यके प्रतापते परंतु यथार्थविचारे तोतो ऐसेहै कि जैसेकाहू सरोवरमें वर्षा कालमेंभी कूपखोदे तब जलप्राप्तहोवै सबग्रीष्मकालमेंतो परम दुर्लभ होयहीहोय ऐसे त्रेतायुगमें बुद्धिमान मनुष्य होत संतेभी श्रुतिको अर्थ रावणादिकनके भाष्यद्वारा समझो जातोथो सोश्रुति को अर्थ महादारुण ग्रीष्म सदृश कलिकालके मनुष्य महालंदमतिकैसेसमुझते अरु समझेबिना अंधेरेसे अधोगतिको चलेजाते जोभक्तद्वारा भाषा भागीरथी प्रकट न करतेतो परंतु जाकोनाम पतितपावन अधम उधारण विख्यातहै सोइननामनके विरद विचारिकै युगयुगप्रति तरणोपाय निमित्तश्रुति स्मृतिपुराणप्राकृतप्रकटकियेहैं सोयहभगवतकीकर्तव्य ताको कोईमूर्खसच्चकरताकोसाक्षी निन्दाकरैवाकोमहापातकी जानिकै परित्यागकरिये अबयाहीबातको दूसरे दृष्टांतसों समझावैहैं॥ छंदगीतिका॥ श्रुतिरूपकुवरण पात्रधिषणा धनाढ्यलखि कृत में किये। स्मृति सदृश सुन्दर रजत जो अबताप लक्षण निर्मिये॥ पुनि प्रकट ज्ञानपुराण पित्तल पात्र द्वापरमें दिये। कलि दीन देखि दयाल प्राकृत प्रकट पार्थिवते जिये १॥ टीका॥ सत युगमें नरनको बुद्धिधन धनाढ्य भूरि भाग्य विलोकि कै श्रीहरिने श्रुति सुवर्णपात्ररचेहैं तापै त्रेता आय प्राप्तभयो तहां दशांश बुद्धि बलोदय धन करिकै अधन उत्पन्नभये जानिकै रौप्यपात्र सदृश शास्त्र प्रक-

दाये इतेक पै द्वापरने आय दबाये जामें त्रेता अपेक्षा दशांश बुद्धि घनते अघनभये निहारिकै पीतल पात्र सदृश पुराण प्रचार बिरचे उपरांत कठिन करालकलि काल प्रवर्तन होतेही परम बुद्धि बिवेक धनहीन हत-भाग्य प्रजा प्रकटभई तिनको श्रुतिस्मृति सुवर्ण रौप्य पात्र परम अलभ्य पेखिकै प्रभुने प्राकृतरूप मृणमय निर्भय पात्र निर्माणकिये कि जो सधन निर्द्धन सर्वमनु-ष्यमात्रको सुलभ भये अपरिमित कृपाकरी हे हरि ने ताते भाषाहीको सुगम सर्वोत्कृष्ट समझिकै आदर पूर्वक अध्ययनकरनो उचितहै या मनुष्यको यहसिद्धांत॥ बादीबचन ॥ छन्दनाराच ॥ सुवर्ण सर्व ऊपरै। बिराजमानभू परै॥ सुवर्ण सर्व सारहै। समानको नगारहै ॥ सुवर्ण सर्व आदरै। रुमृत्तिका निरादरै॥ सुवर्ण ईश अंशहै। न धूरिको प्रशंसहै॥ सुवर्ण शीश ऊपरै। रु धूरिकूर भूपरै॥ सुवर्ण सर्व प्रानहै। न मृत्तिका समानहै॥ सुवर्ण सार स्वच्छहै। रुधूर कूर तुच्छहै॥ सुवर्ण शुद्धलीनहै। रुमृत्तिका मलीन है॥ सोरठा ॥ निरास पुरट घट नाम भाषाभाजन मृणमयी। प्राकृत तुच्छ तमाम भयेतुम्हारे बचनते १ कंचन कुम्भ अमोल दुर्लभ जगमें देखिये। तुलै न तिहि समतोल धूरिन के घट भूरिदा २ वार्त्ता॥ भाषाको मृत्तिका सदृश बताई तबतो तुम्हारे मुखतेही तुच्छ ठहरचुकी क्योंकि सुवर्ण है सो तो महा महर्ग परम दुर्लभ धातुहै हरएकको हाटकघट मिलनो कदा-पि नहीं सम्भवै अरु मृत्तिका के तौ जहांतहां ढेरलगे

हैं ताते अर्थात तुच्छहै ताको वारम्बार कहा प्रशंसो हो॥ तद्दांउत्तर ॥ मृत्तिकारूप भाया भाजन रंकराव अन्न तत्र सर्वको सुलभ होय है यह महान उदारत्व को गुण है जा गुणकोतजिकैं उलटो उदारत्वमें औगुण आरोपण किये यामें तौ तुम्हारो अविवेक पनो परम पुष्टभयो क्योंकि भाया मृत्तिका घट सर्वको सुलभ समझि कै नीचमानो हो अरु युति सुवर्णघट हरएकको न मिले वुद्धि धनाढ्य विना ताते श्रेष्ठ समझो हौ सो कहौजो कूपोदक जोहै सो रसरी घटधारे मसावान कोहो प्राप्त होवैहै हरएकको नहींहै जाते कूपोदकको कहा श्रेष्ठ मानिये अरु गंगोदक है सो सबल निर्बल वाल वृद्ध सर्वको सुगम प्राप्तहोवै है ताते कहा नीचमानोगे जैसे मशालन को प्रकाशहै सो बडेलोगसाधको प्राप्त है याते श्रेष्ठ मानौहो अरुचंद्रसूर्यको प्रकाशहैसो राजा रंक अन्न तत्र सर्वको सुलभहै तातेनीच भयेकहा ऐसे हो केसर कस्तूरी बदाम छुहारा अंजीरआदि कितने-कमेवाजोहैंसो धनाढ्यनकोप्राप्तहोवैहै अरु अन्नौषधी आम्रफल इत्यादि रंकराव मनुष्य मात्रको सुगम प्राप्त होवैहै तातेकहा इनपदार्थनको तुच्छ मानैहे परंतुतुम्हारीनाईं उदारत्वमें अवगुणतौकाहूने नहींआरोपनको-न्हें क्योंकि ऐसोसर्वको सुलभ वस्तुतौ प्रभुकी परम कृपाते प्रकट होयहै ॥ दोहा ॥ सशि साशाकसंगाकि-या संगाद्रुण जल नाज । तुलसी तबहीं जानिया हरी गरीबनिवाज १ ॥ वार्ता ॥ परंतु दुष्टको स्वभाव ऐसेहो

होयहै कि गुणमात्रमें अवगुण आरोपणकरै ॥ दोहा ॥ धर्मीकों दंभीकहैंसमाधानकोदीन। यतीजनानेकहतहैं जाकोहृदय मलीन॥ टीका ॥ इन्वयको दूसरो प्रमाणकहेहैं अरुदेनो मरनोसमानबतावेहैं तथापि कोईविवेकवान् परमेश्वर प्रीत्यर्थ धर्म करैं वाको महान् गुणात्याग के दुर्जनभक्ताकोदूषणआरोपैहैं अरुआपचुटकीभरचूननहीं देवें ऐसेही समाधानको महद्गुण तजिकै अशक्त कहि कै दूषणथापैहैं अरु कोई पुण्यवान् परमेश्वरके भयते जितेन्द्रीरहै वाकोजनानो कहिबतलावैं ऐसे जहां जहां सद्गुण देखें तहांतहां दूषण आरोपण करैं ऐसे कछु दुर्जनकोहृदयही बिधाताने बिपरीत बनाये है देखोप्राकृत पार्थिवपात्र तो कलिकालके जीवनको कैसोउपयोगीआनन्ददाताहै कि ॥ दोहा ॥ सबैसुलभनिर्भयसदा स्वादसुधासम शीत। अलप वित्तते सुलभ है मृण्मय भाजनमीत ॥ टीका ॥ श्रुति स्मृति व्याकरण आदि वित्त करिके सधनहोहु अथवा अधन होहु परन्तु प्राकृत पार्थिवपात्र तो सर्व मनुष्यमात्र को अनुकूल है फेर प्राकृतपात्र कैसोहै कि यवन अन्त्यजादि के अग्राह्य तस्करादि के भयकरिके रहित निर्भय है फेर मृण्मय घट कैसोहै कि सुधा समान शीतल मिष्ट है जल जाको क्योंकि कञ्चन रौप्य पित्तलादिकके कुम्भको जलप्रमाण भलेही करो परन्तु मनको तृप्ति तौ मृत्तिकाघटोदक बिना कदापि न होवैगी तब अर्थात मृत्तिका पात्र श्रेष्ठ भयो ॥ तहांप्रश्न ॥ तुमने कही कि

मृत्तिका पात्रोदक विना मनकी तृप्ति कदापि न होवे यह बात सर्वथा असत्यहै क्योंकि मृत्तिका पात्रोदक को अवश्य तौ एक उष्णकालमात्रमें है और चातुर्मास शीत कालादि ऋतु में तौ धातु घटोदकतेई काम चलैहै अरु हम तौ सनपै वारें तौ उष्णकालमेंभी धातु घड़ेसों काम चलाय लेते हैं॥ तर्कोत्तर ॥ हेमूलबुद्ध हमने तौ पहिलेही अर्ज कराथा कि सत त्रेता द्वापरादि शीत वर्षाकाल समहैं सो वहां श्रुति स्मृति पुराणादि धातुरूप गीर्वाण घटके अर्थ जलसों काम चलतेथे परन्तु महादारुण ग्रीष्मरूप कलिकाल में मारेमच्छर के संस्कृत धातुघटको जलपान भलेही अहंकार पूर्वक करौ परन्तु हृदयकी जरनितौ प्राकृत पार्थिवघटजल विना नहीं जुड़ायगी जैसे सेककेसीटर भलेईकरौ परंतु अङ्गशुद्धि तौ कदापि न होवैगी यह सिद्धान्त है अरु एकरीतिते औरभी भाषा मृण्मयपात्र सर्व शिरोमणि दर्शौहै ॥ दोहा ॥ प्राकृत कारण पठितको जग कारण जगदीश । धातू कारण मृत्तिका याते विवुध वरीश ॥ टीका ॥ जगतको कारण जगदीश्वर है ऐसेही वैयरी पठितमात्रको कारण मानुषी प्राकृत भाषाहै अरु तैसे ही धातुमात्रको कारण मृत्तिकाहै तब सहजैही सर्व-शिरोमणि भई और देखो बड़ेबड़े सुवर्ण संग्रहीपुरुष आपके कल्याण निमित्त मृत्तिकाकी प्रार्थना पुराण की आज्ञा ते करै हैं॥ श्लोक ॥ अश्वक्रान्तेरथक्रान्ते विष्णुक्रान्तेवसुन्धरे ॥ मृत्तिकेहरमेपापं यन्मयादुष्कृतं

क्ष्तं ॥ १ ॥ टीका ॥ कि हेमृत्तिके तू मेरेपातक को हर नाम दूरकर तू कैसीहै कि तोपे अश्व जो घोड़ा अरु रथ अनेक फिरैहैं अरु विष्णुनेहू तेरे पै बिहार नाम परिरटन कियोहै याते मेरो जो दुष्क्ष्तनाम महापाप है सो तूदूरकर ॥ वार्ता ॥ मृत्तिकापातक हर्त्ता सुवर्णमें अनेकपाप तबतो ऐसे सुवर्णकी प्रार्थना कहूंसुनीहोय तो बताओ ॥ तबवादीवचन ॥सुवर्णकी तौ एकादश की विभूति वर्णनमें भगवद्वचन है कि ॥ श्लोक ॥ उच्चैःश्रवास्तुरंगाणां धातूनामस्मिकांचनं ॥ अर्थ ॥ अर्जुन ते भगवान् कहैं कि तुरंगनमें उच्चैःश्रवानाम जोघोड़ाहैसो मेरास्वरूप है ऐसेही समग्र धातुन में सुवर्ण है सो मेरा स्वरूप है ॥ वार्ता ॥ सुवर्णतौ साक्षात भगवद्विभूति है याके समान तुच्छ मृत्तिका कैसेहोयगी ॥ उत्तर ॥ सुवर्ण भगवद्विभूति तौ सत्यहै परन्तु महाविभूति रूप भक्तराज नराणांच नराधिपः ऐसा जो परीक्षित तिन ने सुवर्ण में कुत्सित कलिकाल को निवासदीन्हो वा दिनते भगवतदास कढगयो ऐसेही कुपात्र पण्डितनने तृष्णा में तदाकार होयके श्रुतिन के अर्थ में अँगरेज लोगनकी बुद्धि प्रवेश करदीन्ही जाते निसत्व होगई कलिकाल में तबतौ प्रभुने परमदयालु होयकै प्राकृत रूपी पार्थिव पात्र प्रकट कियेहैं और प्रत्यक्षही देख लेवो कि आयुर्वेदादिक में जहां नाम न लिखे तहां मृत्तिकापात्र समझिये अर्थात मुख्यपात्र मृत्तिका के जानेगये और ब्राह्मणादि वर्ण अरु ब्रह्मचर्यादि

आश्रम क्रमक्रमते एकतेएक उपरहै यातें सर्वोपरि सं-
न्यासताको सर्वोपरि भृगमथ्यपापरहै श्रीजगन्नाथजुको
का धातुपाव अगाकपरहै सो मृत्तिकाके घटको प्रवर्तन
किये परन्तु सर्व धातुमात्र मृत्तिकाते प्रकटभई हैं अरु
मृत्तिकामेंही लय होवैंगी याते मृत्तिकाको सर्व धातु
मात्रको कारण शिरोमणि समझिये ॥ वादीवचन ॥
तुम भाषाकी प्रशंसा निमित्त अनेक उक्ति युक्ति
मिलाय कै सुवर्णको कारण मृत्तिका थापन करोहो
परन्तु हमतो श्रुतिकी साक्षी विनातीनकाल में प्रमाण
नहींकरैं ॥ तदुत्तर ॥ यथा ॥ सौम्यकेन मृत्पिंड विज्ञाने
न समृणमयं विज्ञातंस्यात वाचारम्भणंविकारोनाम
धेयं मृत्तिकेत्येवसत्यमितिश्रुतेः १ ॥ टीका ॥ सौम्यक
आचार्य्य कहे हैं कि मृत्तिकाको जो पिंडनाम गोला
ताहि समझेते समग्र मृत्तिका के पात्र समझे जावे हैं
वाणीते कहिवे में नानाप्रकार के भिन्न भिन्न नाम हैं
परन्तु वस्तुतः ते विचारो तौतौ मृत्तिकाही सत्य है१॥
दोहा ॥ श्रुतिस्मृती श्रीमुखवच्चन मुनिग्रवणानते साख।
तब वादीतन तपिलरल मन उपजायो माख १॥
रघुवर राम रजायसहि मणशिर शोभा मानि ॥
षष्ठमकल कल्लोल को वरणयो विशद वखानि ॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीबलवंतसिंहभूपालाज्ञया
कविटीकारामविरचितायांभाषाऽमृततरंगिण्यांचतुर्युगधर्म,
वर्णनंनामषष्ठमस्तरंगः ६॥

दोहा॥ सरलबोधको गरल लखिखलबोलखुनसाय। चन्द्रकला चितवत मनो खगीचक्र चितलाय १॥ बादीबचन ॥ बार्ता॥ जैसे कोई समर्थ सों युद्ध करत करत आपनो बल न्यूनजानि परैतब बीचमे गैयातायके ठाढीकरदेवे जाते सन्मुख युद्ध करिबेवारो शस्त्र नहीं चलायसकै ऐसे तुम बाद करिबे में सामर्थ्य न चलती देखी तब श्रुतिकी साक्षीपढ देवोहो जाते हम कछु बोलनहीं सकैहै परन्तु हमारे तौ भागवत मे लिखा है कि मनःपूतंसमाचरेत जो कछु अपनो मन पवित्रमानेअरुसाक्षी देवै वा वस्तुको प्रमाणकरिकै आचरण करनो सो हमारे मनको तो प्राकृत शूद्रीभाषापै प्रमाण तीनकाल मे नहींआवे फेर भगवत आज्ञाहोवो किभगवत स्वतः आयकै कहो परंतु हमतौ भाषानहीं मान्यकरै और निन्देंगे॥ तहांउत्तर॥ तुमभाषा समभिकै निन्दौहो कि बिनाही समझे निन्दाकरोहो तब बोलेकि समझिकै निन्दे है कहो समझिकै निन्दौहो तौ भाषा काव्यकी रीति अरुलक्षकहो॥ तबबोलेकि॥ रीतिफीतितौहमकछु नहींजानें तबकही रीति लक्षही नहींजानो तब बिनासमझे अरुबिना गुण अवगुणजाने कहा निन्दौहो॥ तब बादीबोलेकि॥ ऐसेतौ तुमभीसंस्कृतजानिकै निन्दौहो कि बिनाजाने तबकही किहमकाहेको निन्दें हमतौ पहिलेही कोहआयेहैं कि हमकोतौ संस्कृत प्राकृत दोऊसमान नेत्रको नाईप्रियहै हमतौ केवल संस्कृताभिमानी कूपपतन गुरूजी आदिअनेकको कार्यभाषा त्रिशत्रष्ट

भयेदेखिदेखिके उन्होंकेकल्याणनिमित्त कलिकालमें भगवतआज्ञाते भाषाअध्ययनकोदृढावैहैं अरुसंस्कृतको गुणदोष जैसो देखें तैसो कहै हैं यामें निन्दा काहेकी निन्दातौ आपकीनाईं मिथ्या दूषण देवेमें है तवत्रादी बोले कि हमभी प्राकृत भाषाको गुणअवगुण देखैंसो कहैहैं तवबूझी तुमने भाषामें काअवगुण देखेसोकहो॥ तब वादीबोले॥ एकतौ महाअवगुणभाषामें यहीहैकिकईं वर्षलौं व्याकरण काव्यको सटीक टिप्पणपै परिश्रम करै तववेदशास्त्रको संमत समझवेमें आवै है अरुसोई सारसंमत जोहै सोप्राकृत भाषा वाल वृद्ध शूद्रस्त्री सर्व वर्णको सहजमें समझायदेवेहै तवहम लोगनको कौन बूझै ताते महाअवगुणतौ यहीहै कोटि अवगुणकोएक अवगुणकि जो पढ़े विनपढ़े सर्वको सुमार्गमें लगायदे है ताते ऐसेकुत्सित प्राकृतकोतौनिंदनोई योग्यहै॥ तहां उत्तर॥ जगतमें दोतरहके दानीहैं एकतौ कईवर्षलौंप- रम परिश्रमते सेवाकरावैं तवयदि किंचित् धनदेतौदें नहींतौ अंगूठो दरशायदेवैं और एक दातार भेंटतही भंडार खोलिकै जन्मजन्मको दरिद्रदूरकरैं इनदोऊमें तारीफ कौनकी तववोले हमतारीफ का कहाखाड़में डारैं हमारीतौ भाषाजीविकाहीवुड़ानेलगी देखोपुरा- ण इतिहास काव्य काष नाटक चंपू रामायण वैद्यक ज्योतिष सांगीत साहित्य व्याकरण वेदांत सिद्धांतादि सर्व शास्त्र परम परिश्रमसाध्यहते तिनको भाषावारे भदेशननने सो जान जानवाकिफह्वै गये तवहमकोकौन

बभ्भैऐसो अनर्थ कियो तब हमारीतो परमरिपुभाषाभई तब यातुच्छको प्रमाण तीनकालमें नमानैं॥ तहांउत्तर॥ अरे विवेकी प्राकृत भाषामें प्रभुने परम उदारत्व प्रेरणाकीन्हो ताकोतुमदूषणमानौ यामेंकछु लाजभीआवैहै जैसेसूर्यकी प्रशंसा सुनिकै उलूक बोल्यो तारीफ मिथ्याहै हमतौ नमानैंगे तैसेभाषाके उदारत्वको तुमने न मान्यो तौ कहामहिमा घटिगई और काहूमूर्खने कहीहमने काशीके पंडितको जीतलये तबकाहूनेबूझी कैसेजीते तबबोल्यो उनने लाखलाखकही हमनेएक न मानी ऐसेतुमभाषा नमानोहोतौ कहाभाषाको घटिजायगो तुम्हारी स्थिति एकवातपैतौ नहीं तुमतौ उत्तमेंके होकि॥ श्लोक॥ यत्रशाब्दिकास्तत्रवैदिका यत्रवैदिकास्तत्रशाब्दिकायत्रनोभयोस्तत्रचोभयो यत्रचोभयोस्तत्रनोभयो१॥ टीका॥ जहांशब्दशास्त्रके जानबेवारे हैं वहां कहैकि मैंतो बेदमें समझूंहूं अरुजहां बेदके अर्थ जानबेवारेहैं वहां कहै कि मैंतौशब्द शास्त्र समझूं हूं अरु जहांशब्द शास्त्रकेअरुवेदके दोनोंके जानबेवारेहैं वहां कहैकिमैंतौशब्द शास्त्रमें अरुवेदइनदोनोंमें एकभीनहीं जानंहूं अरुजहां शब्दशास्त्र अरुवेदके दोनोंके जानबेवारेनहोंहैं वहां कहैकि मैंतो शब्दशास्त्र अरु बेद सर्वमें भिन्नभिन्न समझूंहूं १॥ श्लोक॥ अज्ञःसुखमाराध्यःसुखतरमाराध्यतेविशेषज्ञः॥ टीका॥ जैसेकिमूर्ख पुरुषको समझानातो सहजहै अरु विशेष शास्त्र जाननेवालेको तौ समझाना बहुतहो सहजहै १॥ दोहा॥ सुखतें शठन

रिझाइये प्रमुदित पंडितप्रौढ ।अर्थतत्त्वके बोध्नते अको वियसां वियन्दौढ ॥ वार्त्तामो भलेही मतसानौ परंतुजा जाने भगवत आज्ञा न मानी उन्होंने कौन कौन फल पाये सोतुमहू पावोगे देखो माधवदासजीके प्रतिपक्षी दिग्विजयीने तुम्हारीगोंईसानी सोकारोमुखकराय के समभे और द्राविडीश्रोत्रियदेशी बाबाने महाप्रसाद को गङ्गाचरणा समझके अनादर कियो थो सो तीन दिनलौं दर्शनभये फेर अत्यन्त ज्वाहाखाये तबजगदीशने स्वप्नसें कहीकि तैंने महाअपराध कियोहै सो तो-को याही दण्डहै कि समुद्रकिनारे मृतकश्वान पड़योहै वाकीदाढमें महाप्रसादको कनहै वह पावो तबदर्शन होयँगे तबसर्व शोधी वरीरही अरु ,पावतेई वानिआयो तबदर्शन दीन्हो तब अपनो अहंकार कहारह्यो और रामानुजस्वामीतो शेषावतारथे परंतु सहस्र शिष्यले-कौ जगन्नाथजीके दर्शनको गयेरहैं फेरवहां अनाचार देखके पंडनको मारभगाये और मंदिरको धुपाय़ो अरु सोलहै आवरणमें भोगलगायो पै न स्वीकृत कियोअरु स्वप्नमें कहीकि वेईपंडाआवैं तब वाहीरीतिसें पाऊंगो तब रामानुजजीने आचार परत्व श्रुतिसुनाई परंतुअना चार नहिं दीन्हो तबजोरावर भक्त ज्ञानिके गरुड को आज्ञादई सोरात्रि में शिष्यसमेत सोतेही में उठाय वर दीन्हो तबजाग्रत होयके बिचारी कलिमें ईश्वरकोऐसे-ही करनोहै तब याजीवको योगायोग बिचारनो अनु-चित है क्योंकि जे जो धर्म कर्म आचार धारे हैं ते प्रभु

प्रसन्नार्थधारेहैं वा प्रभुकी प्रसन्नता तौ याहीरीतिते है तबअपनो विचारवृथाहै ऐसेबिचारिकै फेर पुरुषोत्तम पुरी आये अरु महाप्रसाद के कण बीन बीन खाये ऐसेयाजीवको ईश्वररचित गुण चर्यामें कुतर्क न करनो अरुभाषाअंगीकृत करनो योग्यहै और दक्षिणमें ज्ञान देव भक्त प्रभुको अवतारभयेहैं जिनने ज्ञानेश्वरी आदि दैके कोट्यावधि बहभी भाषा में बनाईहै फेर एक बेर ब्राह्मणको सभा में जायके करकमल संपुटित करिके प्रार्थनाकीन्ही अरु कही मोको कृपा करिके वेदाध्य-यन कराइये तब ब्राह्मण बोले तू संन्यासीसुत बर्णसं-करीप्रजाहै ताको बेदको अधिकारनहींहै ताते प्राकृत पढोकर तब ज्ञानदेव बोले मैंने शुद्र संसर्ग नहींकियो कुलभ्रष्ट न भयो फेरकौन अपराधते बेदनहीं पढावोहो तब मत्सरी द्विज बोले कि तू प्रथमतौ संन्यासीसुत है दूसरे शूद्रीभाषा बनावैहै ताते भ्रष्ट होचुको याते नहीं पढावैं तब ज्ञानदेव बोले मैंने तौ भाषामें भगवत यश गायोहै जाके पढ सुने पातकी पवित्र होजायहैं तब मैं पतित कैसभयो याको बिचारदेखो अरु न बिचारोगे तौ परमेश्वरके यहां दंडके भागी होउगे ताते अन्याय जिनबोलो यह सुनिके ब्राह्मण क्रोधाविष्ट भये अरु बोले रेमूर्ख तू जड तहां भाषा कथिकै पतितभयो सो तू हमते प्रत्युत्तर करनेलगो जाते दूरहो यहांते हमको पतितभाषणको प्रायश्चित्त करनो पडैगो यह सुनिकै ज्ञानदेव ब्राह्मणप्रति बोले हेभूदेव तुम लेन देनमें खान

पान जगतव्यवहारमें स्वार्थनिमित्त संसारमें रात्रि दिन भाषा बोलो हो जामें ईश्वर संबन्धीको लेशमात्र नहीं तथापि तुमतो पतित न भये तब मैंनेतो केवल भाषामें भगवत यश गायोहै सो सोको पतितता कैसे प्राप्तभई भालोहो याको अहंकार तजिकै विचार देखिये मैंतो तुम्हारे शरणागत भयोहों यातेवेद पढ़ाइये जो नपढ़ाओगे तो शरणागत त्यागीके वज्रपातक के अधिकारी ठहरोगे यह बचन सुनि सुनिकै कितनेक क्रोधाविष्ट होयकै ज्ञानदेवजूको तिरस्कार पूर्वक नीचे उतारदये तब एक भैंसा आवत देखिकै ज्ञानदेव बोलेकि देखो रेब्राह्मणा वेदको अधिकार हमकोतो नहीं परंतु यह तुम्हारे सजाती भैंसाकोतो है ऐसे कहिकै माथेपै हाथ धर दीन्हो अरु बोले ॥ दोहा ॥ जल थल नभ गिरि शिखर शिखि श्रीपति सदा निवास। तौ महिमा श्रुति सकल यह यह कस पढ़हु प्रकास १ सुनत श्रवण महिषानबै भो विशाल विकराल। पांचजन्य समधुनि प्रकट पढ़त सांग जनुकाल २ चकित भये चितचहुं दिशा सुर नर सह द्विजराज। नमोनमः जय जय वदत बहुविधि जुल्यो समाज३ सुन्यो न देख्यो दृगनते अद्भुत अस अवतारि। विस्मक विलोकत चकितचित तरणि त्रिदश त्रिपुरारि ४॥ कवित ॥ वेदकाज विप्रनपै विनय विशेष बाल भेंटको समेट हेट शीशको चढ़ायकै। वेद युत द्विजन दबायकै दिखाई दीठ तामसी तमाम तुच्छ तक्षण तड़ायकै ॥ ज्ञानदेवजनजूकी गुरुता गरिष्ठ गाथ

भाषापक्ष स्वच्छअक्ष भूरिभू वढ़ायकै । गज्ज सुरगाढ़ा भक्त भीरकाज ठाढ़ा आप क्रूर मदकाढ़ा वेदपाड़ापै पढ़ायकै ॥ दोहा ॥ महिषरूपको महिसुरनि परे भया-तुरपाय । स्रक सुगन्ध षोडशविधी करि पूजा भरि भाय १ चारिवेद सुर पद क्रमनि पढ़ श्रुति सकल अशेश ॥ हरि अन्तर्गत तब भयो गमन कियो महिषे श २ ॥ वेदपढ़ैपै भैंसाको देहांतभयो वहांमहँसो वाको संवाद विद्यमान अद्यापि बनो है पंढरपुरसों सात कोशपरहै ॥ दोहा ॥ त्राहि त्राहिकरि बिप्रवर परेचरण लपटाय । अभिमानी जानीनहीं भक्त गूढ़गति गाय १ वार्ता ॥ भैंसाको वेदपढ़ते देखिकै सर्वब्राह्मण ज्ञानदेवजू के पादाक्रांत भये अरु ज्ञानदेवको भगवत अवतार जानिकै सर्व पंडितमात्रने भाषाको आदरकियो यह कथा श्रीभक्तमाल में है अरु दक्षिणदेश में तौ सर्वत्र प्रसिद्धहै और पंढर में तुकारामजी सदेह धामपधारे उपरांत तेरहदिनपाछे कोट अभंगको भाषाग्रंथ उतर्यो वामें भगवतके हस्ताक्षर लिखेआये जामें तुकोपनिषद करिकै संज्ञादई सो अद्यापि तुकारामके अभंगको दक्षिण में तुकोपनिषद कहै हैं और रायदासजीसों खल ब्राह्मणने बिवाद रोप्यो तब राजाने न्याय कियो कि शालग्रामजू को मध्य में स्थापन करो फेर दोई तरफसों आवाहन करिकै टेरो फेर जापै पधारें सोईभक्त सत्य फेर वैसेही मध्य में पधराय के एक तरफ़ तो ब्राह्मण श्रुति पढ़िकै आवाहन करि-

लगे अरु सब तरफ रायदासजीने पदगायो गद्गद कण्ठ होयकै॥ विरद बिलोकि अधम उधरनको आय दरस अबदीजै। बिन अपराध बिप्रअति कोपतकहो कैसिगतिकीजै॥ ऐसेपदके अभीच ऐतीबेर शालग्राम जू सिंहासन सहवर्तमान रायदासजूकी गोद में आय बिराजे॥ कवित्त॥ सच्छर के साते वर्ण सकल सुवर्ण काज लोभलागि लोलुपभईहै मतिजासकी। कीन्हेंबीच वृन्दाकेबल्लभ बिराजमान एकओर वेदऋचा बिप्रने प्रकासकी॥ एकओर भाखापद उरअभिलायाधारि अधम उधारबेको आछे अरदासकी। अमल अमोदशोध विपुल विनोद भरे लोदसाल गोदमें पधारे रयदास की॥ दोहा॥ संस्कृत सबपूतोरह्यो सुनिभाषा भगवान। रायदासकी गोदमें आय बिराजे आन १ ॥ वार्ता॥ जब शालग्राम रायदासजीकी गोदमें पधारे देखिकै प्रतिपक्षीलोग मुखाच्छादन करिकै पलायमान भये अरु कितनेकने आश्चर्य मान्यो देखोजी भगवतको ब्रह्मण्यदेवकहैहैं तौ ब्राह्मणको श्रुतिसहवर्तमान तजिकै अंत्यजकी भाषा पै कैसेरीझे तब उन्होंको कबीरजीने समझाये भाईरे भगवान तौ ब्रह्मण्यदेव सत्य हैं परन्तु ब्राह्मणके लक्षण शील संतोष दया आर्यता जितेकहैं सोतौ सर्व रायदास में प्रत्यक्ष हैं अरु अनृतादि काम क्रोध लोभ मोह मत्सरादि अनेकअवगुण अंत्यज में चाहिये ते ब्राह्मणने अंगीकार किये ताते भगवत रायदासपै पधारे यामें ईश्वरकी तरफ भूलिकै

दूसरा जिन दीजिये कर्म चांडालहै जाति चांडाल नहीं ऐसे समझाये परन्तु मत्सरीने मानोनहीं अरुसंत शिरोमणि पै दूसरा लियो अरु कितेक असारग्राही खल पण्डितनने श्लोक कियेहैं जामेंते एकलिखौ हैं श्लोक ॥ गतागीतानाम्नां निगमसमपिच्छादूरमगमत । गता नोस्मृत्यायाः क्वचिदपिपुराणांव्ययपगलं ॥ इदानिंराय दास प्रभृतिवचनैर्मोक्षपदवीं । वयंजानीमायं शिवशिव कलेत्वेषमहिमा १ ॥ टीका ॥ हमयहबात निश्चयकरिकै जानतेहैं कि हेकलियुग यह आपकी असलदारी का प्रभावहै कि गीता कोईभी सुनता समझता नहीं और वेदका सुनना अरु अर्थ समझना तो बहुतही दूर है अरु पुराणकीभी कदर बिल्कुल नहींरही फक्त हे कलियुग तुम्हारी असलदारीमें केवल रायदासादिके बचनोंसेही मोक्षहोवैहै बड़ेआश्चर्य सरीखी बातहै१ वार्ता ॥ यामें कलियुग के गुणगण जानेबिना निन्दा करीहै भक्तबाणीकी तातें श्लोक कर्त्ता असारग्राही मालूम भयो जैसे लुटेरे कहैं हाय समय बड़गयोश्लोक में कलियुगकी निन्दाकरी है परन्तु सरस्वती व्याज स्तुति करैं हैं और अन्तकौतुक को अर्थ सरस्वती करैहैं कि हेकलि तेरी महिमा कैसीहैं कि शिवशिव कहते कल्याणकोसो कल्याणकर्त्ता तरियारूप भव प्रवाह में बहेजात जीवनको बेराती अवलम्बनदाता भई अब औरभी काहू असारग्राही कविने कलियुग की निन्दा परत्व कवित्ताकरीहै ॥ सवैया ॥ जातज्ञलार

जुरे दरजी सुभिले मरजी चिक और चमारो। को भिवलालकी वातसुनै दिनरैनरहे इनहींको अखारो॥ विप्रनकी सुधिदीन्हीं विसार सुनैनहिं तादिन तेही गुहारो। एतेवड़े द्विज देवनको इन पाजिनने दरवार विगारो १ रक्षक लूटत दीननको जग मासक कीन्हे किरातरु कोले। वेद पुराणनमें मिलवे पदतो पद कोलो कडेरन बोले॥ जे मुख वेद पुराण वदे अवतेमुख झूठ सभासधि बोले। एकहि पांव के धारत भूमि भले कलिकाल जुजौहर खोले २॥ दोहा॥ जाट जुलाहा चर्मकर मिले मूढ बहुजाय। ब्रह्मदेव दरवारको इन्हें विगाड़े हाय १॥ वार्ता॥ ऐसे आपके अपराव विसारिकै कलिकाल को दोष लगायो क्योंकि जा कलिकाल में सर्व सद्ग्रंथ सत्ताहीन भये ऐसे दारुण समय में वैष्णवजनकी भायावाणी परमसुगम जिहिकेद्वारा भगवत प्रसन्नतर होयकै विनाकष्टसाध्य मोक्ष वरूषै हैं तिनकी तौ परम प्रशंसा करनी चाहिये क्योंकि हजारहा वर्षतक तपकरते अरु वेद शास्त्र घोखते घोखते घबराय उठतेतौभी भगवत सालोक्यादि मोक्ष मुष्किलथी वही मोक्ष कलि में भक्तजनकी भायाते अनायासमिलै ऐसा समय तौ भाग्यते प्राप्तहुवोहै या को सारग्राही होयतौ परमप्रशंसाकरै जैसे गुसाईजीने कहोहै कि॥ दोहा॥ कलियुग समनहिं आन युग जो कर है विश्वास। गाय रामगुणगण विमल भवतर विनहिं प्रयास १ जैसे भक्तमाल में कही आन युगन

ते कमलनयन कलियुग बहुत कृपाकरी ऐसे ठौरठौर विवेकीके मुखते परम प्रशंसा सुनी है क्योंकि कलि-युग तौ तुरियास्वरूपहै जामें वर्णाभेदाभेदनहीं ब्रह्ममयसर्व और मानसी पुण्यहोय पापनहीं॥ भागवतमाहात्म्ये श्लोक॥
अश्वमेधंगवालंबं संन्यासंपलपैतृकं देवराच्च सुतोत्पत्ति कलौ पंचविवर्जयेत् १॥ टीका ॥ अश्वमेधजो यज्ञ अरु गवालंबजो गऊवध करना अरु संन्यासलेना अरु श्राद्ध में मांस भक्षण करना अरु देवरते पुत्र उत्पन्न करना ये पांचोकाम कलियुग में मना किये गयेहैं शास्त्र में १ ॥ वार्ता ॥ ऐसे कुत्सित कर्म मात्रको मनाई अब कहौजी पिंडत्पातमनेहै तब मांस भक्षण तो मनेभयो सो ब्राह्मण ने तौ तजो परंतु क्षत्रीने स्वाद लंपटताते न तजो ताते ब्राह्मण पंक्ति भिन्नभई क्योंकि पितरने तजो तब पौत्रादिको अवश्यतजो चाहिये ऐसे गुण ग्राही संतननेतौ काम क्रोधादिलोभ मोह निद्रातगात के गुणलीन्हेहैं ॥ दोहा ॥ कामभिलावैरामसों जोकोइ जानैराख । क्रोधमिलावै बोधते सकल संतकोसाख१ लोभ बढावै शोभको जोराखै उरमाहिं ॥ सोप्रभुको प्यारो सदा जगत प्रशंसततांहि२ मोहकरै संदोह सुख सहकरै अथरह ॥ मच्छर अक्षरते मिलै हियते तजैंन हह ३ प्रभु तब गुण में प्रीति दे जो निद्राको दीन ॥ चोर यारिद्यूतादि में परसैं नहीं प्रबीन ४ ॥ वार्ता ॥ जैसे रामकथामें आदि श्रोता हनुमानजी अवश्य आय के प्राप्त होवैहैं तैसेहरि यशमात्र कथा कीर्तनमें निद्रा

भी अवश्य आयके प्राप्त होवैहै ये निंदामें परम अव
गुणहै परंतु संतजनेतौ याकोंभीसहाय गुणसान्यो अरु
निंद्रातगात के गुण लीन्हे कलियुग में १ अरु जैसे
एकादशी जानि कै सांस भक्षक कहैं कि आज
कुकर्म नहीं करनो तैसे कलियुग आवतेही मांसपिंडा
दिक वर्जनीय कियेहैं शास्त्रमें तैसे कलियुग दयालुक्नि
जामें कुकर्मरागनकी मनाही को हुकम शास्त्र में ऐसे
बिवेकिजने खरकक्कुर काकादिके गुणलीन्हेहैं तुलसी
कासमयूरवतेलाचंवो। काकूरव। ऐसेसारग्राहीहैंते कलि
सहूवर्तमान भाषा वार्त्ताकी परम प्रशंसाकरैहैं क्योंकि
जाने अगाध समुद्रके सिरा बराकूतैसे लायवरे ऐसी
सरलिके बड़ाईकरैहैं अरु आपसे असारग्राही चीचड़ी
से गुण पयतजिकै अवगुणरुधिर पान करैं हैं॥ दोहा॥
बिमल भेष लखि ठग कहैं भजनी को बकध्यान॥ सो
गुणतजि अवगुणगहैं जाकोहृदय मलान १ अदयकहत
सदशूरको विशद हृदयको बोध॥ सो गुणतजि अव-
गुण गहैं खल मल अधिक अबोध २ ॥ वादीवचन ॥
कलिकाल अनेक अवगुण को आलय महापाप को
पुंजहै ताकीनिंदातो बड़ेबड़े करतेआयेहैं देखोअध्यात्म
राम चरित्र में ब्रह्माको वचनहै ॥ श्लोक ॥ प्राप्तेकलि
युगेघोरे नराःपुण्यविवर्जिताः । दुराचाररताःसर्वे सत्य
वार्त्तापराङ्मुखाः १ अरु शुकदेवने कहीहै कि कलि
दोषनिधेराजन ॥ वार्ता ॥ ब्रह्माजीने तौ कलिमें पातकी
पशुवत प्रजाहोयगी याते कही है परन्तु तरणोपाय

कसी सुगमहै कलिमें ऐसी प्रजातीन युगमें होती तौ कौनगतिहोती अरु कलि में ऐसे अपराधी आलसी कोभी मोक्षमिले भाषापढै अरु राम राम कहैतौ ताते कलि धन्यहै॥ तहांबादी बचन॥ कलिकाल नानाप्रकार के अघ अवगुणको समुद्र समझिकै बडेबडेलोग निंदा करत आयेहैं ताते हमहूं करैं हैं क्योंकि महाजनो ये नगतस्यपंथा॥जाते अनेक अवगुण को ओघ जानिकै निंदा तौ करैंगे और यामें एक दो गुण भी होंयगे सोहमको याके गुणसें कछु प्रयोजन नहींहै॥ उत्तर॥ तुमने कलिनिंदा परत्व शुकदेव कोवचन कह्यो कि कलिर्दोषनिधे राजन परंतुयाही पदकेआगे लिख्योहै कि अस्ति एको महान गुणः सो नीतिवारेने ऐसोलिखोहै कि॥ कबित॥ कुटिलत कुरूपको गजानन बिहारीताको भक्तिको प्रभावमानि सिर पटु पेखे हैं। जीवन को भक्षीपीन पक्षी ताहि टीकाराम बेगको विलोकि विष्णु बाहन विशेखेहैं॥ अशुभ अनन्तभरि भेषहै भयंकर पै शंकर सुजान जान पुंजप्रिय पेखेहैं। दीरघ जो एक गुण देखिये जहांतौ तहां औगुण अनेक कौन लोकन में लेखेहैं १॥ वार्त्ता॥ सुरनर सबको रीति है कि काहू में एक गुण दीरघ होवै तौ वाके अनेक अल्प अवगुण को न देखै अरु अंगीकार करै है तौ कलिकाल में तौ अनेक दीर्घ गुणहैं तब तुमको समझिकै निन्दोहो॥ तबबादीबोल्योकि॥ तुमने एक गुण को कही सो ठीकहै परन्तु नीति में ऐसेभी लिखे हैं

कि दीर्घ अवगुण एक होय तो अनेक लघुगुण युत त्यागकरनो ॥ दोहा ॥ दीरघ अवगुण एकतस लघुगुण तजोअनन्त । बहुगुण पै दुर्गन्धते तजत लसन मुरमन्त ॥ वार्ता ॥ ऐसे कलिकाल में अनेक लघुगुण होयँ परन्तु अनेक अघ अवगुण को ओघ प्राकृत भाषा प्रवर्तन करी यह महान अवगुण है ताते यह निन्दबेई योग्य है तब कही कि भलेई निन्दाकरो कलिकाल के मल धोबेवारे धोबीभी तो चाहिये परन्तु तुमने भगवत प्रेरित भक्त जननकी भाषा श्रुति को सार उभयलोक सुधारिबेवारी तामें कहा अवगुण देख्यो सो इतनी मत्सरता धरीहै जो पै विचारिके देखो तोतो प्राकृत भाषा के उपकार को तो पारावार ही नहीं क्योंकि तुम्हारेही मुखते कहीहै कि ॥ श्लोक ॥ गतागीतानाम्नि निगमसर्पिच्चादूरसगमलं । गतानोस्मृत्याया: क्वचिदपि पुराणव्यपगतं ॥ वार्ता ॥ कलिकालकी करालताते वेद शास्त्र पुराण सर्व सद्ग्रंथ सत्ताहीन होवेंगे अरु प्रजा आलसी अधर्मी अल्पायुषी मन्दमति मत्सरी तमाम नर तामसभरी भगवतते विमुख सर्वसदुपदेशक विना अधोगति की गैल गहैंगे ऐसे दारुण समय में भगवत आज्ञाते भक्तजनने अपनी भाषा सरल श्रुतिस्मृति को सारलेके कीटभृङ्गन्याय भगवत प्राप्ति करायके उभय लोक सुधारेहैं अरु निगमागम को निर्बीज होते संते रक्षा करी है अरु श्रुतिनके सारको सहज में बोधकरै जबतो गुसाईं जीने कही है कि ॥ इतिवेदवदंतनदंतकथा

क्रिजोप्रभुभाषा पैरोभिके मोक्षनहींदेतेतौ कलिकाल
के कुटिलजीव कुपढ़ताके योगतेसर्व सारासार समझे
बिना नर्क निवासी होतेभाषाते भगवत न रीझते तौ
क्योंकि जोबीज परमअल्लक्ष्य कौरवावरोध वनस्वरवै
जवसिले वोहीबीजकोउ महजते अल्पवन में मिलाय
देवे उनको तौ परमउपकार मान्योचाहिये क्योंकि
बीजतौ वहीहै अरुमहज में मिलायदई ऐसो जा मोक्ष
निमित्ततपतीर्थ यम नियम वेदाध्ययनादि अनेकउपाय
करतेथेवोही मोक्षभाषाद्वारा हरएकको प्राप्तहैतव प्रभु
कोपरमउपकारमान्योचाहियेपरंतुमूर्खनमान्योअरुरि
सायकै चल्योगयो फेरसभनाने भगवतकीभक्तावात्सल्य
तापतित पावन प्रसविचारिकै कुलकोसवत्यागकियो
भीखसांसलावनी अरु भगवतरुचि विचारिकैहजारहा
भाषापदवनायेऐसेकहांलौंगिनाऊंपरंतु हजारहासंस्कृत
को मानमर्दिकै भक्तनी भाषाको पक्षकियो अरु भाषा
ते बिमुखवे भगवतते विमुख रहैं और युगत्रय में प्रथम
तौ उमरमोटीथी दूसरे बुद्धि प्रबलथी तीसरे सत्संगकी
सोहबतथी चौथेकामादिवटपड़ा प्रबलनहींथे पांचेंअव-
तारादिराजा प्रकटथे तातेजपतप योग यज्ञ यमनियम-
सध्यान धारणा वेदाध्ययनादि बड़ेफेरको पिपील मार्ग
हते सालाक्यादि मोक्षपुरके सोशनैः शनैः कालांतरमें
पहुंचा करते थे और कलिकाल में वहमार्ग गहेतौचल
तेमार्गमेंही उमरबीतजाय पहुंचनेनपावे क्योंकिअल्पा-
युषीहैं अरुबुद्धि बलविनाकि जामेंसत्संग सोहवतनहीं

सो काम क्रोध मद मत्सरादि फांसी गराघात करभारै क्योंकि ये मोक्षमार्गके बटपड़ा हैं ताते बीचमें मारे जायं पै प्राणी निजधाम पहुंचने पावै नहीं ताते ईश्वरने जीवपै परमदयालु होयकै सुधो सुखदायक नजीकको निर्भय भाषारूपी विहंग मार्ग में चलवेकी आज्ञादई है याको बुद्धिवलके लायक कि जामें आंखिमींदकै चल्योजाय तौभी निजधाममें निर्विघ्न दाखिलहोय अरु एकदृष्टान्त औरभी है कि वेदशास्त्राध्ययनरूपी सोना चांदीके पात्रलैकै पहिलेके आये वै वड़े फेरके मार्ग हैं तो इन बटपड़ा पैलूटयो पीटयोजायँ पै कुशलपूर्वक पहुंचसकै नहीं अरु अल्पायुषी सो बीचमेंही उमरबीतजाय पै पहुंचने पावै नहीं और भाषा तो मृत्तिका पात्र है सो खुले दस्तलियेचलेजावो कोई नछेडै अरु स्वादसुधासम अरु निजधामदाखिल शीघ्रहोजावो अब इतनीबड़ी प्रभुकी महद दयालुता को भूलिकै भद्र कारिणी भाषाकी निंदा करते चूकै नहीं उनकृतघ्नीकोंका कहिये तहां प्रथम तुमने कही कि यज्ञयोग श्रुतिस्मृति ये फेरके कठिनमार्ग जानिकै भगवतने कलिकालमें भाषारूपी सुगम मार्गकी आज्ञादई है तो यापै सद् ग्रंथकी साक्षी सुनावो तब सांनें ॥ तहां उत्तर श्रीभागवतेउक्तं श्लोक ॥ कृतेच ध्यायतेविष्णु त्रेतायांयजतेमखैः। द्वापरेपरिचर्यायां कलौकेशवकीर्तनात् ॥ कलौनामैवनामैव नामैवममजीवनं १॥ वार्त्त ॥ सत युग में ध्यान त्रेतामें यज्ञ द्वापर में प्रतिमा पूजा ये तीनों उपचार वेदोक्त हैं कलिमें कीर्त्तन

करना यहप्रेमाभक्ति है १ नलाजकानि लोगकोन वेद को कह्योकरै१ सोप्रभुके अग्रेनृत्यगीतादि भजनकरनो तातेप्रभुप्रसन्न रहैं स्त्री शूद्रअंत्यजादि सर्वकोअधिकार हैभजनको ॥ दोहा ॥ जाट भजो गूजर भजो भावे भजो अहीर । तुलसी सीतारामसें सब काहूकोसीर १ ॥ तहां वादीवचनवार्त्ता ॥ यामें कीर्त्तन करवे की आज्ञा है सो कीर्त्तनकाहा संस्कृतमें नहोयहै प्राकृतका तौयामेंनाम-हीनहींयाते प्राकृत भाषाकी साक्षी चाहियेतबप्रमाण करें ॥तहांउत्तर॥ तुमप्राकृत भाषापरत्वसाक्षी पूछौंहौ सोतौ प्रथमही काशी के पण्डितने श्लोक कह्यो है कि इदानींरैदासः प्रभृति वचनैं मोक्षपदवीं । वयंजानी सोयं शिव शिव कलेस्त्वेव सर्वहिंसा ॥वार्त्ता॥ सर्वसद्ग्रंथ सत्ताहीन भयेपै एकरयदासादि भक्तनकी वाणीते मो-क्षहै सोपरमकल्याण कारिणीकलिकी महिमाजानी गई ऐसे तुम्हारेही पक्षपातवारे कोवचनहै फेर साक्षी कहा तहां ॥ वादीवचनश्लोक ॥ तौकाहू पण्डित ने प्रसंग पायके कहिदियोहै याकोप्रमाण कौनकरै यातेप्राकृ-तपैकोई सद्ग्रंथकीसाक्षी सुनावो तबमानेंगे ॥ तहांउत्तर॥ प्राकृत परत्व तौपहिलेही एकादशमें कोभगवत वचन सुनाय आये हैं पौराणैः प्राकृतैरपि ॥ वार्त्ता ॥ हाल में पौराणते प्रभुकी प्रसन्नता है अरु भविष्य कलिकाल आवैगो तब प्राकृत भाषाते अधिकहेतेनिश्चय करिके प्रभु प्रसन्नहोयगो ॥ तबवादीबोले ॥ कि तुम्हें एक पदभा-गवतको मिलगयो प्राकृत परत्वताको भाषासमझिके

पक्षखेंचोहो सोहमनहीं प्रमाण करैं क्योंकि प्राकृत तौ बालसरस्वती की मागधीवाणी को भीकहेहैं याते मनुष्यकी देश भाषा परत्व साक्षी सुनाओ तबप्रमाण करें परंतु देश भाषा परत्व साक्षी हैही नहीं सोलावोगे कहांते ताते भाषाके पाखंडको प्रमाण हमें नहीं आवे ॥ हाउत्तर॥ १ विवेकीतू श्रुति स्मृतिन को सारउभयलोक सुधारि वे हारी सद्गुरुसो श्रेयकारक भगवत प्रेरित भक्तभाषाको पाखंड कहे तामें कछु लज्जाभी आवेहै पाखंड तो श्रुतिस्मृतिते विमुख होयसो कहावैहै अरु भाषातो सर्वशास्त्रकी संप्रदाताहे ताते परम पूज्यहे अरु तुमदेश भाषापरत्व साक्षी चाहो होसोयोग रूढीतेभी प्राकृत देशभाषाही को कहै हैं अरु तुम न मानो तौ देशभाषाहीकोसाक्षीसुनो॥ तउक्तंविष्णुपुराणषष्ठांशे ॥ श्लोक ॥ संस्कृतैः प्राकृतैश्चैव गद्यपद्याक्षरैस्तथा । देशभाषादि भिश्चैव बोधयेत्सगुरुस्स्मृतः ॥ अर्थ ॥ जैसेगायत्रीमंत्रगहे तब ब्रह्मत्वआवे और ब्राह्मण प्रतिष्ठाकरें तब प्रतिमा मेंईश्वराम आवै ऐसेप्राकृत जो देशभाषा आदि संस्कृत गद्यपद्य पढजाने तबही जनकोबोध करिबेको गुरुत्व आवै जहांलों सर्वशिरोमणि प्राकृतभाषानपढै तहांलों बोध करनेको अधिकारही नहीं अर्थात दोऊ लोक को सिद्धी भाषाद्वार जानोगई केवल संस्कृतते नहीं तबबादीबोले ॥ तुमने दोऊलोकको सुधरनो भाषाकेआधीन बतायो जामें यहलोकतौ भाषाके आधीन सत्यहै अरु परलोक को कह्यो सो मिथ्या है परलोक को

सुधरनो तो ज्ञान भक्ति वैराग्याधीन है भाषा संस्कृत दोऊते नाहीं ॥ तहांउत्तर॥ तुमने कही सो ठीक है ज्ञान भक्ति वैरागहीते परलोक सुधरै है परंतु इन तीनही का बोधक गुरू चाहिये सो गुरुत्वताको अधिकार भाषा विना नाहीं अर्थात परलोक सुधरनो भाषाके आधीन निश्चय भयो परन्तु हतभागीन मानै ॥ तबवादीबोले ॥ ऐसीभाषा समर्थहैतौ युगत्रयमें प्रवर्तनक्योंनभई ॥उत्तर॥ भाई प्रभु समर्थहैं सो त्रियुगमें भी प्रवर्तन करदेते परंतु प्रपंचमें बहु कुटुंबवत्सलकी रीतिहैकिकौडीसों कामव- कै तौलौं पैसा न खरचै और पैसा सों काम चलैतौ रुपया नबटावै और रुपया खरचै तोभी काम अटकि जाय तब मोहर हेरै अरु मोहर खर्चते भी काज नसरै तब अंगर के अलंकार उतारदेवै परंतु कुटुंब पालैअरु महाकालपडै अरु गहनाभी कोई न लेवै अरु प्यारेपुत्र पौत्र अरुआप अन्न बिन मरतदेखै तबपातालमें गाड्यो प्राणात प्रियतर पारस सर्व संपतिको कारण निकाल कैदेवे परंतु कुटुंबको पोषै क्योंकि कुटुंब वत्सलहै ताते ऐसे भगवत जगत कुटुंबवत्सल है विश्वंभर नामहै सो तीनयुगलौं नानाप्रकारके संस्कृत मतसों परिपालै फेर दारुण कलिकाल देखिकै सर्वभाषाकी शिरोमणि सर्व को कारण प्रभु को प्राणात प्रियतर पारस रूप प्राकृतभाषा प्रवर्तनकोन्ही अरुसर्व जनके मरते नरक पडतेबचाये अहोईश्वरकी दयालुता अरुअहो कृतघ्नो की कुटिलता कि ज्ञोसर्वकी सारकारण रूपभाषाकी

निंदापै कमरबांधी है जातेप्रभुकी दयालुताअरुखलकी कुटिलता दोऊकोआडो अंक है अरुतौलौंतो कुटिलता बढ़ै और इन महामूर्खनकी मूर्खता तौ देखिये कि जे सर्वविभवसंस्कृतादिकोकारण पारसरूप प्राकृतताको तौ न्यूनमानै हैं अरु संस्कृतादि सुवर्णपात्र संपदा को विशेषसमझैहैं परंतु ऐसेनहींजानैंकि प्राकृतपारसहैसो तौअनेक संस्कृतादि सुवर्ण संपदादिको कारणहैयाते अनेक संपदाकी करनहारीहै ऐसेनहींजानैं ज्ञातेनिंदैहैं परंतु इतनीतौ जानैंकि सुरअसुरते लगायकै पशु पक्षी प्रेत पिशाच पर्यंतकी देहकोकारणनरतनहै तैसेयाकी प्राकृतवाणीतौ अर्थात् संस्कृतादि सर्ववाणीको शिरो-भागकारण ठहरचुकीताते आदरयुत अंगीकारकरनी॥ तब वादीबोलेकि॥ तुम्हारो अतिअग्रहहै तौजाको संस्कृत नहींआवै सो भलेई भाषापढ्योकरै यहतौहमनेभीकबूल करीपरंतु भाषासबको कारण अरुसर्वमें श्रेष्ठतर यह बात तौ तीनकालमें नहींमानें क्योंकि सर्व भाषामें श्रेष्ठ अरुकारण तौ संस्कृतहै॥ उत्तर॥ भाईतुमने हमतेकही कि तुम्हारेअग्रहसोंजाको संस्कृत नहींआवैवाको भाषा पढ़ना कबूलकियो सोस्याबातहै कितौभाषाकीभनक सुनेते पातक मानतेथे अरुअब इतनी तौ कबूलकरी है परंतुतुमदोवात विना विचारेबोले एकतौ तुमनेहम-सों कहीकि तुम्हारेअग्रहते भाषाकबूलकरीसोमिथ्या है क्योंकि हमारे अग्रहते का होतहै अग्रह तौ कालिमें परमेश्वरकोहै सोभी याजीवके कल्याणार्थ तबतो जो

जो भाषाते विमुखहते उनको शिक्षादेवेको सूधेकिये हैं
और तुमने कही कि जो संस्कृत नहीं पढ़िसके उनने
भाषापढ़ी औरनेनहीं तौप्रथमतौ भाषापढ़ेविना दूसरे
कोवोधकरनेको अधिकारहीनहीं दूसरेदिशविजयी आ
दिदैकै केवल संस्कृतवारेकोकीर्त्ति तुम पढ़िले सुनतेही
आयेहौ जाते भाषासर्वको सादर पढ़नी योग्य है ॥
तव वादीवोलेकि ॥ सर्वको भाषापढ़नी कबूलहै परंतु हमा
वातकौ इसारीसौ रक्खो कि सबभाषाकौ कारण अरु
सर्वशिरोमणि तौ संस्कृत है क्योंकि वडेलोगनसौं सुनते
आयेहैं कि संस्कृतते भाषाभईहै यहवात कवूलकर लो
तौ प्रतिवादिनाय सिदजाय क्योंकिप्राकृत सर्वभाषा को
कारण अरुसर्वमेंश्रेष्ठ वेदेकहूं वचनसुनवेमें आयो नहीं
है याते ॥ उत्तर ॥ तुमतुमिकौं कहाभूलोहौ भाषा सबको
कारणपरत्व तौदैकाड़ा साखीदेते आवे अरु और यौ
सुनलोजै देखो श्रीमद्भागवत में कही है ॥ विमृदेहमा
द्यंसुलभंसुदुर्लभं ॥ तौ कहौ जौ नरदेह सर्वदेहको आद्य
कारण भूतहै तव नरकी प्राकृतभाषातौ अर्थात् आदि
कारण रूपभई और तुमश्रेष्ठताकौं पछौ तौ पद्मपुराण
को लेखहै कि संस्कृतैःप्राकृतैश्चैव देशभाषादि भिस्त
था ॥ वार्ता ॥ देशभाषा आदिदैकै संस्कृत कही तो या
आदि पदते भाषा सर्वभाषा में शिरोमणि जानी गई
जैसेआदित्याद्याग्रहासर्वे ऐसे कहैतौ याआदिपदते नव-
ग्रहमें सूर्यश्रेष्ठजानेगये जैसेकाहूने इन्द्रादि देवकहे तौ
देवन में इन्द्र श्रेष्ठ जाने जैसे माहेश्वरादौ अष्टवसु कहे

तौ या आदि पदते अष्टवसु में माहेश्वर श्रेष्ठ जाने ऐसे देशभाषादिभिस्तथा याआदिपदते देशभाषाजोप्राकृत भाषासर्वप्रसिद्धा समझोगई वाणीमात्रकी॥ तबवादी बोलेकि॥ तुमभगवतवचन आदिदैकै अनेक श्रुतिस्मृतिन की साखी सुनायकै भाषाको वाणीमात्रको कारण ठहराये चाहौहौ सो हम एकनहीं मानैं सबमें श्रेष्ठ अरु कारणतौ संस्कृतहै॥ उत्तर॥ रे विवेकी शास्त्रनमें ऐसे लिखेहैंकि श्रुतिस्मृति अनुभव अरुयुक्तीयेचारोंप्रमाण जाबातपे मिलजायँतो वाबातको चतुर्मुखब्रह्माभीनहीं उत्थापन करसक्तैहैं अरुतुम कहौहौ कि हम चारोंमेंते एकभी नहींमानैं सोयेबातको कोई विवेकी सुनेगोतो कहैगो कि पंडितजी परम पतिब्रताके जाये हैं तबतौ श्रुति स्मृति श्रीमुखके बचन सुधाकाहूको प्रमाण नहीं मानैहैं यातेबडेलोगने कहीहै॥ दोहा॥ निगमागम मानै नहीं करै कुटिल अतिक्लेश॥ बृथा बितंडा बाद में स्वादनहीं लवलेश १ विमुखसदा भगवन्तते निपट हरामी नौन। स्वादनहीं तितबाद में मानहार रहुमौन २॥ और भीभले लोगनकहीहै॥ कि हार मान लीजैपै न बाद कीजै बेकलसों सबबसदीजै पैनपरबशपारिये। याते हमतोइन बचनको समझिकै आपते हारमानी अरु संस्कृतका-रणअरु भाषा का जो ऐसेहीकबूलहै क्योंकि॥ दोहा॥ हारेको हरिमिलतहैं जीतेको यमराय॥ अंबरीषदुर्बास में किहिको करी सहाय १॥ वार्ता॥ याते हमने तौ हार मानी अरु संस्कृत में ते भाषा निकसी ऐसेही कबूल

करी परंतु तुम याही पै ते डामाडोल जिन होइये क्योंकितुलको वदलते विलंवनहीं है ॥ तववादीबोले ॥ हम कोतौसंस्कृत कारण अरुभाषा कार्य्य तुम्हारे मुखमों कबूल करावनोथो सो कियो अव विवाद मिट्यो ॥ दोहा ॥ प्रतिपक्षीप्रण छांड़के अखिलभये अनुकूल ॥ तव संस्कृतभाषानको कारण कियो कबूल १ ॥ वार्ता ॥ शस्त्र डारके मिलेजैसे प्रार्थना पेख गुसांईजीने कांड कांड प्रति श्लोक धरे तेसे ॥ तव वादीबोले ॥ कि कबूल करी तवतौ अर्थात भाषा तुच्छ भई जैसे अग्नितेतुच्छ तर विस्फुलिंगादिनिकसिकै नाश पावैहै वेकहूं अनल की तुल्यता तीनकालमें न पावेंगे ऐसे संस्कृतहै सो तो आद्य कारण रूप है अरु भाषा तौ नई याही में ते नई निकलि कलिकाल की निशानीसीहै सो संस्कृत की समता कैसे पावैगी ॥ तहांउत्तर ॥ भाईजी तुम संस्कृतते भाषा भई ताते तुच्छ कहौहौ ऐसेही तुम्हारे संगीको- ऊकहैहैंकि सीपड़ी आदिकारणहै सोथें यहै अरुवाते निकस्योमोती सोतुच्छहै अरुमृत्तिकातेनिकसीवातुसो तुच्छतरहै अरुमृग तेकढी कस्तूरी सोतौतुच्छतमहै ऐसे हीसर्पतेमणि कीटतेपटांवर मक्षिकातेमधु टाटतेकागज शालितेचावल ऐसेअनेक वस्तुको नूतनप्रकटी जानिकै हियाफूट तुच्छतरकहैं परंतु विवेकी लोग तीनकालमें नमानैं अरुविशेष आदरैं संस्कृतते प्रकटी भाषाकोनाई क्योंकि सारग्राही सहृदयरके मानिवेकोतो ऐसे क्रमहै कि ॥ कवित्त ॥ मूलते भईहैशाखशाखाहूते फूलभये फूलते

भयेहैंफलसोतोमहामिष्टहै। ऊखतेभयो है रस रसतेभई है रावरावते अजीवखांड़जाको स्वादविशिष्टहै॥ सागरते तोयहोय तोयते तमीप भयो ताते तत्त्व सार सुधावर्णत विशिष्टहै। तैसे वेदहुते शास्त्र शास्त्रते पुराण भये ताते भईभाषाभव्यगुणमें गरिष्टहै १॥ दोहा॥ पयदधिघनेनूते प्रकटउपजोआज्य अनूप॥त्यों निगमागमतेभई भाषा सार स्वरूप १॥परापस्यंतीमध्यमा भईबैखरीतास॥ निग मागमतेनिकसित्योंभी भाषातेभास २॥ वार्ता॥ भाईजी येऊपर बर्णनकीन्हीं इनके आदि दैके तिलतेतेल फ-लतेअतर ऐसेअनेक अंगरेजोचीज नबीनभई अरुहोती आयहैं इनको तौल मोल कला कीमत काम करतब स्वादशोभासार महूर चाह चतुराई गुण गौरवता घटैहै कि बढ़ैहै उत्तरोत्तर सांचीकहौ तुम्हैं तुम्हारे इष्टको कोटिश्दुहाईहै तब मुहंबिगाड़कै॥ बादी बोले॥ इनकीतौ बढ़ैहै॥ उत्तर॥ पुठपादिकसे अतरादिकी कदर कीमत बढ़ैहैतबतो तुम्हारेही मुखते न्यायभयोकि तिलते क-ढ्योजोतेल ताकोकदर कीमत सिवाय शालीते तंडुल कोसिवाय दधितेघृतकी सिवाय ऐसेसंस्कृततेकढी जो प्राकृतभाषा ताकी कदर कीमत मान महातम सबप्र-कार शिरोमणि भई ताते अहंता तजिकै अंगीकार करनी सलाहहै यह सिद्धांतहै ऐसे उक्ति उलटती देखि कै बादीतटस्थ होयकै रहे उत्तर देतनहीं बन्यो अरु कैसी दशाभई कि जैसे॥ दोहा॥ मनु निजमंत्र विलोम है परै आपपै आय। सुधिनारहै शरीरकी त्यों बादी

बिलखाय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुधि बुधि गई समूल उलटत देखी उक्तिको। गये चौकड़ी भूल कूदत मनो कुरंग वन १ पहुंचत नहीं पराक्त शोचत हृद सोचत नमन। गरबी भई गिरास्त तलफत तन झलपत न जड़ २ पुनि मन कियो विचार प्राकृतको कारण कहो। संस्कृत कारजसार अबकछु युक्तिउलेटिये ३ ॥ छंदतोक॥ मनमें पछताय अघाय घने। प्रतिउत्तर देत नसक बने॥ तब तामसते तन तापलये। वड ढोल अमोलसे बोलकहे॥ पहिले तुमप्राकृत मूलकही। तिहिपैनिगमागम साख दई॥ तिहिते प्रकटी गिरवाणगिरा। नर भाषनको कहि सर्वगिरा॥ अवक्योंउलटी वहवाननको। जिहि पै श्रुतिशब्द प्रमाननको॥ तुम प्राकृत कारण सत्य कही। पहिले पुरुषोत्तम देहदई॥ तिहिते इहिपै बहु साख मिले। सुरवानि परत्वन भाय मिले॥ सबको सत प्राकृत कारनहै। तिहिपै लखाक हजारनहै ॥ दोहा ॥ कारणते कारज कठिन यह उत्तम अनुमान। प्राकृत सुलभ प्रमाणिये कठिन गिरा गिरवान १ याते तुम्हरो प्रथम मत आवत डर अनुमान। कारण प्राकृत पुरुषवत्व काज गिरागिरवान २ ॥ वार्ता ॥ क्यों कि तुमने प्रथम श्रुति स्मृति पुराणन की साक्षी दैके सर्व भाषाको कारण प्राकृत व्रजभाषा निश्चय करी हुती सो हमको तुम्हारोही कहिबो कबूल है तवतौ कार्य्यरूप होयकै संस्कृत प्राकृतको शिरोमणि भयो यामें तौ संदेह नहीं॥ उत्तर दोहा ॥ बहिकै आई बाटमें

महिषी उलज विधान । आगे पाछे घर कियो करि दोसुतको हाल ॥ वार्ता ॥ भो बुद्धिमान प्राकृत सर्वभाषा को कारण तो हमने प्रथमही निश्चय कियोथो ता- पे इतने प्रतिबाद करिके मूंडक्योंपचायो तब बोलोकि वादीभद्रन्नपश्यति ॥ वार्ता ॥ बड़े लोगनने ऐसे कहीहै सो बाद करिबे में तो तीनकाल में पीछेपावँ न धरैं ॥ उत्तर ॥ तब कही कि हम ऐसे बितंडबादी सों काहे को मूंडपचावैं ॥ दोहा ॥ निगम बचनमानैंनहीं कर्कश कुटिल करूर । ऐसे पामर पतितको तजिये ज्ञान जरूर १ सप्तम लहर ललाम यह पूरणभई प्रमान । अष्टम तुंग तरंगको करिहैां अबै बखान २ ॥

इतिश्री महाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीबलवन्तसिंहभूपा लाज्ञयाकबिटीकारामकृतायांभाषामृततरंगिण्यांसर्वदेहा नांमनुष्यदेहस्यकारणत्वेतट्टापायाअपिसर्वभाषा कारणत्ववर्णनंनामसप्तमस्तरंग: ७ ॥

दोहा ॥ रघुबर राम प्रणाम करि उरधरि प्रयास सुजान । अष्टम तुंग तरंगको करिहैां बिबिध बखान ॥ वादीबचनकबित्त ॥ पहिले प्रसिद्ध तुम कही विष्णुशासन से प्राकृत प्रतिष्ठकरैं पीनपद रोपके । बादकौ बितंडबा द चण्ड निज तुंडनते नीके निरधार कियो चाहैं सो निरोप कै ॥ साहस सिरात अबै आयसु उलंघिबे में गंजभई ज्ञान गिरा राखत हौगोपकै । उचितानुचि- त को न सुचित बिचारी पैल धारी ध्रुव मौन कौन कारज पै कोपकै १ ॥ वार्ता ॥ तुमने प्रथम तो कही

थी कि हम भगवत आज्ञा परिपालनार्थ भाषामृततरं- गिणी निरचे हैं अरु अब कहो जो कि हमारे कौन मूंड़ पचावे सो यामेंतौ भगवताज्ञाते वहिर्मुख ठहरोगे याते हमारे प्रश्न को तो उत्तर दियो चाहिये ॥ दोहा ॥ भाषा भगवतकेमते जोपरिपाले कोय । प्रणाधरिकरि है त्याग तौ विमुख विरणुते होय ॥ याते इतनी तौ अवशि न्याय कहो निरधार । प्राकृत प्रभुता प्रबल के गीरवाण शिरसार ॥ वार्ता ॥ जगतमें महत्वता संस्कृत की सिवायके प्राकृतकी यह निर्धारि करिके तुम्हारे ही मुखते सत्य कहो ॥ तहां उत्तर ॥ दोहा ॥ भगवत जाकी भीरपे सोही सबल सुजान । वालीप्रबल प्रचंडकहं कहँ वनचर हनुमान ॥ कहां विभीषण बापुरो कहँ रावण रणधीर । सोइसबलयह्नि रुरिमें जिहिंराखैंरघुवीर ॥ कित श्रुति सुबरण सद्धुधी कितलर गिर मृणतुच्छ । तिहिलजिरचित कृपाकरी सदना सदन प्रतक्ष ॥ श्रुति संन्यासीकीतजी प्राकृतपद्युत प्यार । नरसीकोसरसी करी दामोदरदेहार ॥ कहँलौंकहैं कृपायतन कर प्रा- कृतपै प्यार । सूरश्यामदे भोगपद स्वीकृत बीस हजार वार्ता ॥ महत्वतातौ ईश्वराधीनहै सोजाकीवढावै ताकी बढ़ै अरु घटावै ताकीघटैहै यातेआपनीनजरमें महत्वता माननीकौनकामकी देखौदक्षिणीवामनपंडितनेशास्त्रा ध्ययनकी सामर्थ्यसों दिग्विजयकरिआयेथे अरुईश्वर को नहीं भाई तब भूत द्वारासूचना कराईकि रे वामन पंडितायते तू या संस्कृतके अभिमानसों प्रेत योनिपाय

कै नरक चलो जायगो यातें याको संग त्याग करिकै प्राकृत पुनीत प्रबन्ध को प्रारंभ कर जो निज कल्याण कियो चाहै तौ तब वामनने तथास्तु कहिकै संस्कृत को कृतयुग बरदई फेर आयु घरही तहांपर्यन्त लक्षावधि प्राकृत सिलोक की रचना करी परन्तु संस्कृत को शब्द साथ न बोले तब प्रभुने अंगीकार किये यातें कहोजी अब संस्कृतकी प्रभुता कहां रही यातें प्रभुको कर्तुम कर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ मानिकै कलिकाल में ईश्वराज्ञातें प्राकृतकोही प्रबल प्रमाण करिये॥ तबवादी-वचन॥ तुमने कहीकि ईश्वर आज्ञातें प्राकृत भाषा प्रबल भई है सो तौ सत्य है परन्तु जगत की जाहिरता में अरु आपने अनुमान करिकै तौ भाषा संस्कृत को दिन रात्रि कैसो अंतर दीख परै है यातें संस्कृत तौ सर्वगोरमणि पदार्थ जानि परैहै अरु प्राकृत है सो तौ सहज सूधी मनुष्य भाषा है नदीके जलको नाईं जाको हरकोपानकरलै परन्तु कछु अदको नहीं॥ दोहा॥ सरिता ताल रुमड धन हर काहू हर लेत। बलिहारी नृप कूपकी गुणबिन बूंदन देत॥ वार्ता॥ भदेग भूपको धन सरिता तालके जल सदृश भाषा काव्य पंडितकु-कलित हरएक हर लेवेहैं अरु संस्कृत भूप कूपकी तो बारम्बार बलिहारी जाइये किजो काव्यकोष व्याकरणादि गुण घटविजा सकबंद सात्र अर्थ जलको नहींदेवैहै यातें संस्कृत तौ संस्कृतही है याको विचार देखिये॥ उत्तर वार्ता॥ तुमने भाषा भागीरथी के उदा

रत्वं को अवगुण मानिके न्यूनत्व निर्णय कियो परन्तु विवेकवान कदापि नहीं मानकरें जैसे दातार अरु कृपण दोइ लक्षाधीश हैं सो दाता तो सदाव्रत आदि धन सबकोदे अरु कृपण बहुत खुशामदवारे को किंचितदेहैं और को नहीं ताते वाके धन की बड़ाई है उदारत्वको तो महानगुण गिन्योजाय है क्योंकि यापे गुसाईंजी को वचनहै ॥ दोहा ॥ तुलसी संस्कृत कूपवत गुण घटगहे गुन्नार । प्राकृत परकट सुरसरी ताको तजत गवांर ॥ वार्ता ॥ गंगाको जल कैसो सुगमहै कि विनाई गुण घटते सबल निर्बल सब को प्राप्तहोवैहै अरु नीचके संसर्गसों अपवित्र न होवे ऐसेही भाषा भागीरथीको अर्थ जल जो है सो बिना गुणके घटकोभी सुलभहै गुण घटमें स्थलयहे बिन गुण के घटनाम शरीर जेहैं उनकोभी बिना परिश्रम प्राप्त होवैहै याते ऐसीतरणतारणी भाषाभागीरथी तजिके किनारेपर संस्कृत कूपको श्रमकरै वा मूर्ख शिरोमणिको वृथाश्रम देख के भाषाभागीरथी के किलोल करनहार धिक्कार देवैहैं न मानो तो गंगापे आय के खोदिदेखो याप सत्पुरुष के वचनहैं ॥ श्लोक ॥ वासुदेवंपरित्यज्य योन्यदेवमुपासते । तृषितोजाह्नवीतीरे कूपंखनतिदुर्मतिः ॥ टीका ॥ जो पुरुष विष्णुको छोड़ करके और देवकी उपासना करता है वह पुरुष जैसे गंगाके तटपर पहुंचिके गंगाजलको त्याग करके कुवांखोदिके पानीपीनेकी इच्छा करता है ऐसामूर्ख॥

वार्ता॥ भगवतने दीनपै अतिदया करिकै कलिकाल निर्जल मरुस्थली में भाषा भागीरथी की लहर घर घर में बहाई ताहि तजिकै मारे मत्सर के संस्कृत कूप खोदै वाको देखदेखकै जगत जगदीश दोऊ हँसै हैं ताते विवेकीको भाषा भागीरथीकी लहर लेनी मुनासिब है यह सिद्धान्त॥ तब बादीबोले कि॥ हमारे तौ परम्परा ते संस्कृत कूप खोदते आये हैं ताते स्वधर्म ठहर्यो सो स्वधर्मे निधनंश्रेयः ऐसे भगवद्वचन हैं ताते अवश्य कूप खोद्यो चाहिये॥ तहांउत्तर॥ भाईजी गतानुगत तौ महामूर्ख चलैहैं पिण्डहृषणाः स्पर्शकीनाई और विवेकी को तौ विचारनाचाहिये पहिले भाषा भागीरथी को प्रसिद्ध प्रवाह नहीं प्रकट भयोथो तब लौं संस्कृत कूप खोदनो योग्यथो और अबतौ भाषामृततरंगिणी की तरंगे चलरहीं ताहि तजिकै कूप खोदनो महामूर्खता है॥ तब बादीबोले॥ तुमने कही सो ठीक है परंतु बारावारा वर्षलौं अहर्निश परिश्रम करै तब संस्कृत में चंचु प्रवेश करैहै अरु भाषाविचारी कैसी भंटघ्राहै कि बिना परिश्रम सहज में हरएक पढ़ले हैं ताते हमारी दृष्टिमें तौ संस्कृत के समान भाषा कदापि न होयगी॥ उत्तर॥ भाई भाषाकाव्य को तौ सर्व व्यापी को अन्तर जानिकै द्वारकाधीश ने हुंकार दीन्हो है अरु तुमको रासभको मिश्रीकीनाई न रुचै तौ ऐसे समझौ परन्तु सयानेलोगको मततौ ऐसो है कि दमड़ी की दवाते निरोग होय तौ महासहर्घ मृगांग बंग पारा

हरतालादि धातु न लेवे क्योंकि कामकी सिद्धि होने तेहै और धातुमें किंचित कचाई रहिजाय तौ कलतौ रोग बढाय देवे ऐसे संस्कृत धातु में विवेककी कचाई रहे तौ अहंकार रोग बढायदेवे और भाषारूपी सोंठ मिरचादि दवागुण तौ करैपे अवगुणमें सम्भवहीनहीं क्योंकि यामें धातुनहीं अरु संस्कृत में धातु है याते अहंकार रोग बढाय देवैहै और भाषातेंबिनापरिश्रम भक्ति ज्ञान वैरागादि पायके परमेश्वर को पहिचाने जाते संसृतिरोग कटै अरु विवेक वृद्धिपावै ऐसे पदार्थको तौ कोई हतभागी होयसो तजै क्योंकि यापै गुसांईजीकी साक्षीहै॥ दोहा॥ वहभाषा वह संस्कृत प्रकटै प्रेम अंकूर। कम्बलआवै कामतौ करकआयकोदूर॥ वार्त्ता॥ परन्तु कलिकाल में भगवत आज्ञा भाषापरत्व है ताते भाषाद्वारा प्रेम पुष्ट शीघ्रहोय है संस्कृतते तौ घोरविवेक घन परिश्रमते छाती छीजिके प्रेमांकुरानंद जरिजाय जैसे रसोइया को भोजन सुखको नाशतोकी नाई और जैसे जो देशकालकी औषधि वाहीमें गुणकारी होय ऐसे कलिकालकी औषधि भाषाहै सो शीघ्र गुण देवैहै॥ दोहा॥ गुणकारी सो औषधी फते करै सो फौज। विद्या शीघ्र विवेक सो नतो निवारहु बोज १ ज्योतिष भेषज ग्रंथ बहु विफल भये इहि काल। तव प्राकृत नूतन्न किये कलिमें विविध विशाल २॥ वार्त्ता॥ वादी बोलेकि ज्योतिषके ग्रंथतौ युगयुगके तेही काम चलै हैं यापै नूतन्न कौन ग्रंथभये सो

बताओ। उत्तर॥ तदुक्तंताजकवचने श्लोक॥ धात्रा शास्त्रं मकारयतकृतयुगेतत्सर्वथाऽनन्यथा॥ त्रेतायामपिबादरायणकृतेतच्चानृतंनोभवेत्॥ यद्गर्गेणविनिर्मितंकृतिचसत्कारायतत्द्वापरे। कालेपीप्रबलेकलेर्यवकृतं ताजीय कोक्तंफलं॥ टीका॥ कृतयुगमें ब्रह्माकेबनाये शास्त्रको चमत्कार यथास्थित हुतो फेर त्रेतामें बचन मिथ्या होनलगे तब व्यासजीने यथा युग परत्व नवीन ग्रंथ बनाये उनके फलसत्य होनलगे सो त्रेतायुगभरको काम चल्योफेर द्वापरकोआगमन होतही व्यासजीके बनाये ग्रंथभी विपरीत होनलगे तब गर्गाचार्यने देशकाल विचारिकै और और नवीन ग्रंथ बनाये उन बचनके प्रमाण यथार्थ मिलने लगे एतेपै प्रबल दुर्द्धर्ष दारुण कलिकाल आयपहुंचो जाने सत त्रेता द्वापर तीनहुंयुग के ग्रंथको आज्ञा उठायदई सो काहूको फल सांच न होवै अरु ताजककारमहानोच यमनके भाषा ग्रंथको प्रमाण सत्य होनलगे तब वाहीको मत लैके कितनेक पंडितनने गीर्वाणभाषामें ग्रंथ बनायलये जिनके फल अद्यापि वर्तमानकालमें सत्यमिलैहैं अरुवामें भी बुद्धि प्रवेश होतो न देखो तबवाहीको आगयलैकै भाषाग्रंथ बहुधा कियेहैं देखो यथाराजा तथाप्रजा कहैहैं सोसत्य है क्योंकि जैसे राजा पाट बैठे वैसेही दीवान मुसद्दी कारबारी संग्रह करिकै हुकम चलावे ऐसे कलियुग नैं ईश्वरआज्ञापाट बैठतेही यवनको भाषामत प्रवर्तन कियो अरु सबी को आज्ञा मेटिकै अंगरेजकोयसाई

मंत्रशास्त्र सेटिकै सावरीमंत्रके बचन सत्यकिये अथ तप यज्ञ योग यमनियमादि को रद्द करिकै नाम स्मरणा सर्व्वोपरि कियो ऐसे अनेक मार्ग प्रचलित करइ करिकै नवीन मतचलाये सर्वकर्तव्यता श्रीहरिको समझिकैश्रीरापे भारधाकरनो भलाहहै क्योंकि प्रथम तीन युगमेंकहूंचारहु वर्णा भेलेभोजन करते सुनेथे अरु जगन्नाथजू ने कलियुग जानिकै सर्वको भेलेपत्रायरच्ये सो श्रद्यावधिपावैहैं अब या बातको कोइ नमानै तो परमेश्वर सों विमुख होयकै अग्निहोत्री कीनाई दंडपावे जातेयेतो युगयुगके व्यवहार न्यारे न्यारे बनायेहैं जैसे जैसे मनुष्य की बलवुद्धि न्यूनभई तैसे तैसे जीवनके प्रबोधार्थसुगम उपाय निर्माणकिये क्योंकि कालनूर्यअवस्थाहै भेदाभेदनहीं ॥ तदुक्तं ॥ श्रीभागवते ॥ श्लोक ॥ कालेन मीलितधियामवमृश्यनृणां स्तोकायुषां स्वनिगमोवत दूरपारः आविर्हितस्त्वनुयुगं सहिसत्यवत्यां वेदद्रुमं विटपशोविभजिष्यतिस्म ॥ १ ॥ टीका ॥ कालकरिकै मीलितभई बुद्धिजिन्होंकी ऐसे अल्पायुष पुरुषनको मेरेवेद कौ विचार बहुत दूर है ऐसेबिचारिकै सत्यवतीके गर्भ में व्यासावतार होयकै वेदवृक्षको पुराणरूप शाखा विभाग कियो ऐसेही कलिकालमें महामंदमतिजीवन को जानिकै भगवत आज्ञाते वैष्णवन ने परम सुगम भाषा निर्माण करीहै यातें निज श्रेयार्थ अवश्य अंगीकार करनो योग्यहै ॥ प्रश्न ॥ तुमने तीनयुगकी साक्षी तौयथार्थदई परंतु कलियुग परत्वतौ फकत ताजक

वचन कह्या सो यहतो ज्योतिषशास्त्रको मतहै कछु ज्ञान भक्ति वैराग प्रस्थतौ है जहां सो जासों जीवनको उद्धार होवै याते यह वचनतो सामान्यहै अरु तुमतौ कहौहौ कि कलियुगमें भाषा बिना भगवतकी प्राप्ति नहीं होवैहै सो यापै कोई दूसरी साखी सुनाओ तबयह मानाकरौं ॥ तहांउत्तर ॥ श्लोक ॥ तदुक्तंपांडवगीतायांभगवद्वचनं ॥ हरेर्नामैवनामैवनामैव ममजीवनं । कलौनास्त्येवनास्त्येव नास्त्येवगतिरन्यथा १ ॥ वार्ता ॥ नास्त्येव पद बारंबार कह्यो यामें व्यवसाययुत अत्यंत अवश्यध्रुवांक जान्यो गयो भगवतने कह्योहै कि कलिकालमें जप तप तीर्थ यज्ञ योग यम नियमादि सर्व साधनको फल नाम स्मरणमें रह्योहै अरु मेरो जीवननाम स्मरणहीतेहैया विना आन उपायते नाहीं नाहीं फेर नाहींहै याते सदा भक्तनकी भाषा मिश्रित नामस्मरण कीर्तन अवश्य करनो उचितहै ॥ तदुक्तंपद्मपुराणे ॥ श्लोक ॥ स्मर्तव्योसततंवि ष्णोर्विस्मर्तव्योनजातुचित् । सर्वेविधीनिषेधास्युरेतयो रेव किंकरः ॥ टीका ॥ जप तप यज्ञ योगयमनियमदान व्रतककुभीनहींबन्यो अरु नामस्मरण बनिआयो तो ऊपरकहेजेजप तपादिसबकर्मसो सबयथासांगकरचुको औरनामस्मरण न बन्यो तौ पंच महापाप अरु बाल हत्या गोहत्या औरकोटि सबपाप कछुभीनहींकिये परंतु सबपातककरचुको जो भगवन्नाम स्मरणनकियो तौ क्योंकि येतो नामके किंकरहैं ताते कोटि कोटि प्रपंच के काम रचनके सो मनुष्यको वैष्णवनकी महामंजुल

भाषामें भगवद्भजन करनो उत्तम है क्योंकि कलिकाल के आलसी अभागी अल्पायुषी कुटिल जीवनते पद पदपे महापातक बनेंगे सो उनजीवनके तरणोपाय निमित्त परमेश्वरने परमदयालु होयके परम सुगम उपाय दरशाये हैं ॥ दोहा ॥ जगत व्यथा में भज यथा तुलाधरनकी टेर । बिसरे टीकम होतहै लख चौरासी फेर १ ॥ प्रश्न ॥ तुमने कही कि कलिकालके सबजीव महापातकके कर्त्ता होंयगे सो यह बात मिथ्या है क्योंकि महापातकतो श्रुति स्मृतिमें पांच लिखेहैं जाके नाम ॥ श्लोक ॥ ब्रह्महत्यासुरापानं स्तेयंगुर्वंगनागमः । महान्तिपातकान्याहुः संसर्गश्चापितैःसह ॥ इति मनोर्वाक्यं १ ॥ टीका ॥ मनु कहे हैं कि पांचोंमहापापके नाम एकतो ब्रह्महत्या करना दूसरे मदिरा पान करना तीसरे चोरी करना चौथे गुरुकी स्त्री संग गमन करना पांचवें इन चार पातकोंकी सोहबत करने वाला ये शास्त्रमें पांचो महापातक कहेहैं १ ॥ वार्ता ॥ अबकहोजी महापातक तो ये पांच कहेहैं सो कहासर्व मनुष्यतो महापातक करेंगेही नहीं तब तुमने सर्वमनुष्य को समुच्चयवचन क्योंकह्यो ॥ तहांउत्तर ॥ तुमनेमहापातक पांचकहे सो पांच कहांहैं मनुनेतो चारही लिखे हैं अरुपांचवांतो तत्संसर्गीहै तोसंसर्ग तेतो कलिकाल मेंकोईभी नहीं बचैगो क्योंकि महापातकके कर्त्ताजो अंगरेज लोगहैं तिनको राज्यतो आसमुद्र पर्यंत सर्वत्र चारहू धाममें प्रवर्त्तन होगयोहैसो उनको दर्शन पर्शन

अन्नजल इनमेंते कहां लैंबचे इनमेंते एक कोतो संसर्ग अवश्य होयही होय अरु उनते और संसर्गकरें ताते वोभी महापातकी होयचुको ऐसे एकते एक संसर्ग करिके कोई भी बचैगो नहीं तब सर्व कलिकाल के जीवमहापातकी ठहरचुके जामेंभी कोई विवेकीलोग इनपातकतेतो बचजाय परंतुकाया वाचा मनसामिल कै दश दूसरा महापाप समान नित्य नित्य बनेहैं उनते तो बचनो परमकठिनहै दशदोषकेनाम॥ दोहा ॥ हिंसा यारी तस्करी तनके पातकतीन । निंदाअनृत कठोर वच यह वाणीके चीन ॥ तृष्णाचितवन संकलप अरु संसर्गीदोष । कायिकवाचिक मानसिक दशों दोषतज मोष ॥ वार्ता ॥ येदशों दोष ऐसे गरिष्टहैं कि इन एक एकके अवांतर महापातकहैं प्रथमतो चोरीकेअवांतर तो सुवर्णस्तेयी आयगयो दूसरेयारीके अवांतर गुर्वांग नागमन आयचुकोक्योंकि॥ कामांधःपुरुषश्चैवदिवा रात्रौनपश्यति॥ ऐसो बचनहै तब गम्यागम्य का बिचा रैगो अर्थात मात्रागमनो होयचुको तीसरे हिंसाके अवां तर ब्रह्महा आय गयो क्योंकि हिंसकहै सो वध्यावध्य नहींबिचारैहै जैसे पासीगराहै सोकहा ब्राह्मणजानिकैं छांड़ि देहै अर्थात हिंसक ब्रह्महा ठहरचुको चौथेनिंदा के अवांतर मद्यपान आयगयो क्योंकि सर्व चांडाल निंदकः ऐसो बचन है तब मद्यपी अर्थात होयचुको पांचवें मिथ्यातौ सर्वपापते विशेष है याके अवांतर तो महापातकादि सर्वपाप आयचुके या उपरांत तो

पातक में आड़ो अंकहै क्योंकि गुसाईंजीने रामचरित्र में लिखोहैकि ॥ नहिंअनृत समपातकपुंजा। गिरिसम होय कि कोटिक गुंजा ॥ वार्ता ॥ पंच महापातक ये कोटि कोटि भेलेकरो परंतु एक मिथ्या भाषण के समानतो नहीं होइसकैहै तापैदृष्टांतहै कि कोटिकोटि गुंजाभेलीकरो तथापि कहा पर्वत तुल्यतो न होवेगी तवअर्थात मिथ्याभाषणवारो महापातकी को शिरो मणि भयो ॥ तहांप्रश्न ॥ तुम सों कैयेवेरतौ कही कि हम भाषाकी साखीकदापि नहीं मान्यकरैं याते यापै संस्कृत वचन सुनावो तव प्रमाणकरैं ॥ उत्तर ॥ तदुक्तदान चन्द्रिकायां ॥ श्लोक ॥ नग्रहस्थात्परोधर्मोनैवदानंग्रहात्परं नानृतादधिकंपापंनपूज्योब्राह्मणात्परम ॥ टीका ॥ ब्रह्म चर्य गृहस्थ वानप्रस्थ ये चार आश्रम हैं परंतु चारिहू को शिरोमणि गृहस्थाश्रम है क्योंकि याकी आशा सभी राखे हैं अरु यह आखरेकी लड़ाई है सो छोटे वड़े अपराधकी चोटयाके आसरे सों बचजाय परंतु गृहस्थाश्रम ऐसो चाहिये ॥ कवित ॥ देवीदास ॥ ऊंचकुल जनम निरोग है शरीरघर विभव विलास सुरसरीतीर धाम है। साहस सपूत सुखदायक कुटुंब सव पतिव्रता नारिसव परेमन कामहै ॥ रामजीकी भक्ति अरुशक्ति दानदेयवेकी अनुचर अज्ञाकारि जागेजसनामहै । देवी दास एतेगुण पाइये प्रपंचमें तो सुन्यमान मुक्तिहूको दूरते प्रणामहै १ ॥ वादीवचन॥वार्ता ॥ तुमते कितनीवेर तौ कहिचुके हमें प्राकृतभाषा तौ सहाकरण कटु

सीलसौहै जाते हसकोतौ संस्कृत बाणीको साख सुनावो ॥ उत्तर ॥ श्लोक ॥ सानंदंसदनंसुतास्वसुधियः कांता मधुर्भाषिणी स्वेच्छापूर्णधनंस्वयेर्षितरतिः आज्ञापराः सेवकाः॥ आतिथ्यंहरिपूजनं प्रतिदिनंमिष्टान्नपानंसदा सर्वस्वार्थसमर्पकः शृणुसर्वेधन्योगृहस्थाश्रमः१॥टीका॥ समग्र आश्रममें गृहस्थाश्रमहै सो अत्यंत उत्तमहै परंतु गृहस्थाश्रम कैसोचाहियेकि एकतौघरमें नितनयेआनंद होतेरहैं दूसरे सुबुद्धी पंडित पुत्र होवैं तीसरे घरमें लुगाई सोठी बोलवेवारी सतपात्र पतिव्रता होवै चौथे इच्छा प्रमाणौ पूर्णधनहोवै पांचवें भर्तारको अपनीघर को लुगाईमें प्रीतिहोवे छठे आज्ञानुसार सेवकजो चाकरसो सपूत होवै सातवें भिक्षुक लोगोंकोहमेशा सत कार होतोरहै आठवें श्रीहरिकी सेवामें सावधान सर्व कालमें घरके सर्वमनुष्यहोवैं नवमें मिष्टान्न पदार्थ नित नयेखानपान करनेको होवैं इतने समग्र स्वार्थको देनेवाला जो गृहस्थाश्रमहै सोधन्यहै१ ॥वार्ता॥ याते गृहस्थाश्रम सर्वाश्रम शिरोमणि समझ लीजिये और नैवदानंगृहात्परं कितेगृह के उपरान्त कोईदाननहीं है क्योंकि सर्वदानहै सो गृहदान के अवान्तर होय है जैसे कोई गृहदान करिबे को विचार करै तौ न गृह गृहणी बिना क्योंकि गृहणी बिना तौ गृहसंज्ञाही न होवैहै याते गृहदान करिबे में प्रथम तौ ब्राह्मण के लग्न करायदेके गृहदानदेनो कदाचित् लग्नकोइच्छा न हो तौ वाको निष्क्रय देदेनो तब गृहसंज्ञाहोय फेर

थाके आवान्तर अश्व गज रथ धेनु धराधन सर्वदान देव तन यथा सांग गृहदान होवे याते गृहउपरान्त दान दूसरो नहीं ऐसेही न पूज्यो ब्राह्मणातपरः ब्राह्मण उपरान्त दूनों त्रैलोक्य में पूजनीय पदार्थ नहींहै कदाचित कोई कहै कि ब्राह्मणाते उपरान्त पूज्य भगवत तो है कहो ब्राह्मण तो भगवतकेभी पूज्यहैं क्योंकि ब्रह्मण्यदेवहै नाम जाको याते ब्राह्मण उपरान्त पूज्य पदार्थ नहींहै अब गृहस्थाश्रम गृहदान अरु ब्राह्मण पूजनीय ये तीनोंको वखांन तो या श्लोक में आयगयो याते प्रसंगोपात यह किंचित अर्थ लिखदीन्हो परन्तु मुख्यतो अनृत परत्व प्रसंग चल्यो है क्योंकि नानृतात्पातकंपरं अनृतके उपरान्त कोई त्रैलोक्य में पातक है नहीं सो अनृत या मनुष्य तो अहर्निश पद पद बोलिबे में आवैहै याते सर्व महापातकीभये अरु कदाचित कोई विवेकवान विचारिकै मिथ्याभाषण न करै परन्तु इनको संसर्ग तो जरूर पड़ेबिना रहै नहीं तब संसर्ग दोष करिकै अर्थात सर्व महापातकी ठहरचुके सो ऐसे महापातकी अपराधीके तरणोपाय निमित्त भगवत ने परम दयार्द्र होइकै महामंगल को मंगल पवित्रको पवित्रकर्त्ता नामस्मरणनिर्माणकियो जामें जप तप दान धर्म यज्ञ योग कोटिकोटि तरणो पायकी सत्ता श्रीजानकीजीवन राघारमणने निर्माण कीन्ही याते कलिकाल में सर्वसाधन छांड़िकै नाम स्मरणकरै तब कायिक वाचिक मानसिकादि दशों

दोष अरु तत्संसर्गादि महापापते छूटै ॥ तहांप्रश्न ॥ ये परमदारुण पंच महापातककी निवृत्ति के निमित्त मन्वादिकने कृच्छ्र चांद्रायण अरु द्वादशाब्दादिव्रत किये तथापि महापातककी निवृत्ति न होवैहै सोकेवल नाम स्मरणते कैसेशुद्ध होयँगे सोकहौ॥ तहांउत्तर॥ दोहा ॥ प्रभुता पातक हरणकी जितीनाममें जोय । तेतौ पातक पातकी करि न सकतहै कोय १ पातक वारुद विविधविधि सकलजनमको संच । पावककण प्रभुनाम सो परत न राखै रंच २ ॥ तुलसीजी॥सवैया ॥ कबते व्रतनेम गजेन्द्र कियो कह वेद पुराणपढी गनिका । अजामील कहा सुआचार गह्यो निशिवासर पान सुरापनिका ॥ वह गिद्ध कहा जग जापकियोब हु जीवनको सुहुतो हनिका । तुलसी अघ मेरुसुमेरु जरै हरिनाम हुताशनकी कनिका ॥ दोहा ॥ एक नाम के आसरे पापकिये भरमोट । जैसे जग में यारनी ढकै कंतकी ओट ॥ प्रश्नवार्त्ता ॥ तुमते कईबेर तौ कहि चुके कि हम प्राकृत को प्रमाण कदापि नहीमानैं फेर वारम्बार प्राकृत साक्षी काहेको कहौहो ॥ तहांउत्तर ॥ तदुक्तंयाज्ञवल्क्यस्मृत्यां ॥ श्लोक ॥ नतावत्पापमस्तीहयन्नाम्ना नहृतंहरेः । अतिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तांतरंबुधाः ॥ प्रश्न ॥ ब्रह्महत्या को प्रायश्चित्त को द्वादशाब्दादि व्रत मन्वादिकने क्योंकिये कहा वे नाम महिमा नहीं जानतेथे॥ उत्तर ॥ स्यानेलोग ससल्याकी शिकारपर परतेसिंह को नहीं छोडै हैं क्योंकि वाके वधको तौ

आवतही वहुतहै ऐसे जन्म मरणादि भयंकर दारुण दुःखको दूरकर्त्ता ऐसा जो रामनाम ताको तुच्छब्रह्म-हत्या पररव बतावते लज्जा आवैहै याते मन्वादिक ने द्वादशाब्दादि व्रत निर्माण कियेहैं सो सर्वत्र प्रवर्तेहैं १ तदुक्तंब्रह्मवैवर्तकपुराणे॥श्लोक ॥ सर्वेषामपियज्ञानां लक्षाणि चव्रतानिच। तीर्थस्नानानिसर्वाणि तपास्यनशनानि च॥ वेदपाठसहस्राणि प्रादक्षिण्यंभुवःशतं। कृष्णना मजपस्यास्य कलांनार्हंतिषोडशीं॥ टीका ॥ अश्वमेध आदि देकै सर्वयज्ञ करै अरु लक्षावधि व्रत यथा सांग करै और पुष्कर आदि देकै सर्व तीर्थ में स्नान दान यथाविधि करै और सहस्रों वर्ष पर्यंत महाउग्र तप-स्याकरै और ब्राह्मण भोजन करावै और पदक्रम जटा घनादि सांगस्वर सहवर्तमान हजारहा वेद पाठ करै और सैकड़ा पृथ्वी प्रदक्षिणा करै परन्तु थोरा धारमण श्रीकृष्णको नाम प्रेमपूर्वक उच्चारण करै तौ वाकी सोलहवीं कलाके पुण्यकी समान ये सबो मि-लिकै नहीं पहुंचे हैं॥ तदुक्तंहनुमान्नाटके॥श्लोक ॥ कल्या णानांनिधानंकलिमलमथनंपावनंपावनानां। पाथेयंय न्मुमुक्षोःसपदिपरपदः प्राप्तयेप्रस्थितस्य॥ विश्रामस्था नमेकंकविवरवचसां जीवनंसज्जनानां। बीजंधर्मद्रुमस्य प्रभवतुभवतां भूतयेरामनाम॥ टीका ॥ भवतां भूतयेराम नाम प्रभवतु तुम्हारे ऐश्वर्य के अर्थे रामनाम जोहै सो होहु कैसोहै रामनाम कि कल्याण को तौ निधान नाम भंडार अरु कलिके मलको मथनहार फेर कैसो

है रामनाम पवित्रकारी पदार्थकोभी पवित्रकर्त्ता फेर कैसोहै रामनाम कि मुमुक्षुपंथी को रस्ता खर्च अरु फेर कैसोहै रामनाम कि जो मुमुक्षुने परमपद पै कमर बांधी वाको शीघ्र परमपद प्राप्तकर्त्ता अरु सत्कविकी वाणी को विश्राम स्थल अरु सज्जन जनको तौ जीवनरूप फेर कैसोहै रामनाम कि धर्मरूपी वृक्षको बीज ऐसो जो रामनाम सो तुम्हारे श्रेय के अर्थहोहु तदुक्तंप्रभासपुराणे ॥ श्लोक ॥ मधुरमधुरमेतन्मंगलंमंगलानां सकलनिगमवल्लीसत्फलंचित्स्वरूपं। सकृदपिपरिगीतं श्रद्धयाहेलयावामृगवरनरमात्रंतारयेद्विष्णुनाम॥ टीका॥ हेमृगवर नृसिंह विष्णुनाम श्रद्धाकरिकै अथवा अश्रद्धा ते एकबेरहू कहेते नरमात्रको तारैहै और सुगमअर्थहै तदुक्तंहारीतस्मृत्यां॥ श्लोक ॥ ऋग्वेदोथयजुर्वेद सामवेदोह्य थर्वणः। अधीतस्तेनयेनोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयं १॥ टीका॥ ऋगवेद और यजुर्वेद और अथर्वणवेद और साम-वेद येचारों वेदके पढ़नेवाले को जो फल होताहै उतना फल उस पुरुषको होताहै कि जिसने अपने मुखसे हरि ये दो अक्षरका जपकिया १॥ तदुक्तंमांडव्यस्मृ-त्यां॥ श्लोक॥ सुरापोब्रह्महाचैव चौरोभग्नव्रतोऽशुची। स्वाध्यायैर्वर्जितःपापी लुब्धोनैष्कृतिकःशठः॥ अव्रती वृषलीभर्त्ता कुनखीसोमविक्रयी। सोपिमुक्तिमवाप्नो तिविष्णोर्नामानुकीर्त्तनात्॥ २॥ टीका॥ एकतोमदिरा पान करनेवाला दूसरेब्राह्मणको मारनेवाला तीसरे चोरी का करनेवाला चौथे व्रतभंगका करनेवाला

पांचवेंवेदका नहींअध्ययनकरनेवाला ब्राह्मण छठेलोभ का करनेवाला सातवेंशठनाम सूर्खपुरुष आठवें एका-दशी आदिकव्रतको नहीं करनेवाला नवेंदासीका भ-र्त्तारदशवेंजिसके नखगलेहुये ऐसाकुष्टीपुरुष ग्यारहवें सोमनामलता को बेंचनेवाला इतने ये पातकी पुरुष विष्णु नारायणको स्मरण करिके मुक्तिको प्राप्तहोवे हैं १॥ श्लोक ॥ नदेशनियमोराजन् नकालनियमस्तथा। विद्यतेनात्रसंदेहो विष्णोर्नामानुकीर्त्तने २॥ टीका ॥ शुकदेवस्वामी कहेहैं कि हे परीक्षित विष्णुकेनामलेने में अथवा कीर्त्तन करने में नहीं तो देशका नियम है अरुनहींकालका नियमहै इसमें कोई तरहकाभी संदेह रखनानहीं सर्वसमय में सर्वकाल में सुमिरण करना योग्यहै २॥श्लोक॥ गच्छंतिष्टन्स्वपन्जाग्रन् पिबन्भुंजन् जपस्तथा। कृष्णाकृष्णेतिसंकीर्त्य मुच्यतेपापकंचुकात्३ टीका॥ चलताहुवा अथवा सोताहुवा अथवा जागताहुवा अथवाजलपीताहुवा अथवा भोजनकरताहुवा अथवा जपकरताहुवा किसीसमयमें कृष्णकृष्णऐसानामलेतेही पापरूपी कंचुकीतेवहपुरुष मुक्तहोताहै ३॥ तदुक्तंच्यवन स्मृत्यां ॥ श्लोक ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणेषु रामनामसमीरितं। तन्नामकीर्त्तनंभूयःतापत्रयविनाशनं॥ सर्वेषामेवपापानां प्रायश्चित्तमिदंस्मृतं । नातःपरतरंपुण्यं त्रिषुलोकेषु विद्यते ४॥टीका॥ वेद अरु धर्मशास्त्र अरुपुराणोंमें ऐसा कहाहै कि रामनामकेलेने से अथवा कीर्त्तनकरने से तीन तरहकी ताप दूर होतीहै और समग्र पापोंका दूर

करनेवाला रामनाम कहाहै तो तीनोंलोकोंमें रामनाम सरीखा पवित्रकरनेवाला दूसरा नहींहै॥ तदुक्तंश्रीभागवते॥ श्लोक ॥ येपठंतिनमस्यंतिध्यायंतिपुरुषोत्तमं॥ तान्स्पृष्ट्वाप्यथवादृष्ट्वानरःपापैप्रमुच्यते॥ टीका॥ नामस्मरणाकरनो तो बहुत बड़ी बातहै परंतु नामस्मरण करिबेवारे भक्तको दर्शनपर्शनकरिबेवारे महापापते छूटिजायहैं तदुक्तं वैष्णवचिन्तामणौ॥ युधिष्ठिरप्रति नारदबचनं॥ श्लोक ॥ सस्नातः तुसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः। सत्त्वदानफलंप्राप्तोयस्तुसंकीर्तयेद्धरिमिति १॥ टीका॥ नारदजी कहैहैं किहेराजा युधिष्ठिर जोपुरुष हरि ऐसो अपने मुखते कहताहै वह पुरुष सर्व तीर्थांमेंस्नान दान यज्ञ सर्वसत्कर्म करनेका इतना फल लेचुका १॥ अन्यच्च। श्लोक॥ आकृष्टिःसुखसंपदांसुमहतामुच्चाटनंचांहसा माचांडालसमूकलोकसुलभोवश्यश्चमुक्तेःश्रियः। नोदीक्षानचदक्षिणानचपुरश्चर्यामनागीक्ष्यते संत्रोयंरसनास्पृगेवफलतिश्रीराममाभिधः१ ॥टीका॥ सुख संपदाको आकर्षणकारी महापापको उच्चाटनकारी अरु चांडालपर्यंत सबहूको सुलभ अरु मुक्तिरूपी स्त्रीको वश्य करिबेवारो ऐसो राममंत्र ताको गुरुदीक्षा दक्षिणादिक काहू काम नहीं अरु पुरश्चर्या नहीं करनी पड़ैहै यामंत्रको तौ जीभको स्पर्श होतेई फल मिलैहै ऐसो रामनाम मंत्रहै १ दोहा॥ तुलसी जाकेवदनते धोखेहु निकसतराम॥ वाके पद पदत्रानको मेरे तनको चाम १ रसना तो तबलग भली जबलग सुमिरै राम। नातर काटि निका-

सिये सुखमें भलो नचाम २ ॥ वार्ता ॥ याते सर्व माध्र-
न छांड़िके कलिकाल में भगवत भजन करनो मलाह
है ॥ तत्रांप्रश्न ॥ भगवत नाम स्मरण करनो सोतो हमने
प्रमाण कियो परंतु नामस्मरण तौ शुद्धसंस्कृत है याते
यामें तुमने भाषा को अड़ंगा कौन रीतिते लगायो
क्योंकि हमने तौ भाषा अध्ययनपै साक्षी देने को प्रश्न
कियोथो सोतापैतौ उत्तर तुमको मिल्योनहीं तवनाम
स्मरणपै स्मृतिनके वचन ढूंढलाये सो जातेकहा पनो
तेसये नाम स्मरणतौ निःकेवल संस्कृत है यातेहमारे
प्रश्नको उत्तर देतवन्यो नहीं ॥ उत्तर ॥ जोनाम स्मरण
संस्कृत होतो तौतौ संस्कृतके पढ़िवेवारेही सों भजन
बनआवतो अरु विनापढे उनके मुखको देखदेखके तर
से करतेसोतोकछुहै नहीं नामस्मरणतौ कैसोही कुपढ
सर्वते मूर्ख महामंदमति होय वह भी नामस्मरणकरै
तौ विना प्रयासते वनिआवैगो याते अनुमानते जान
लीन्हीकि केशव नारायण माधवगोविंद राम रघुवर
आदि देके भगवद्धके नाम स्मरण हैं सो भाषा अपेक्षा
भी सूधा सरल परमप्राकृतकी नांईहै तवतौ कलियुगमें
भक्त लोगनकी भाषा मिश्रित भजन करिवेकी आज्ञा
दीन्हीहै अरु औरभी विचार देखिये प्रत्यक्षकोप्रमाण
कहा क्योंकि संस्कृत में तौ ब्राह्मण भजन करतेहीथे
तब उनको तजिके रायदासपै सधनापै भाषा वारेजानि
कै क्योंपधारे कहा शालग्राम जूमें तुम्हारे तुल्य बुद्धि
वल न हुतो और संस्कृतमें यदि किंचित अशुद्ध बोले

तौ भ्रष्ट होजाय क्योंकि कूपजलसें कदओछो है अरु भाषा भागीरथी अरु भाषामें आरात्तिको आरतीकहैं स्तुति को अस्तुति कहैं राघव को राघो लक्ष्मणको लषणअयोध्यापतिको अवधपति शंकरको संकर ऐसे अनेक शब्द कहे पै बिगड़ैं नहीं ऐसे मरा मरा भजन करते मुनिराज भये पै बिगड़ेनहीं अर्थात भजन भाषा कीरीति एकमानैहैं प्रभु याते भगवतआज्ञामानिके या जीवको कलिकालमें उभयलोक सुधारिबेनिमित्त भगवत जनकी भाषा भागीरथी में काया बाचा मनसा पूर्वक आनन्दके झकोला लेने तब त्रिबिधतापकी जरनि जुड़ाय अरु कृतकृत्य होय नहींतौ धोबीकेसे कुत्ता ज्यो घरके न घाटके ऐसेउभयलोकते भ्रष्ट होयहैं॥

इतिश्री महाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीबलवन्तसिंहभूपा लाज्ञयाकविटीकारामकृतायांभाषामृततरंगिण्यांश्रीहरि नामस्मरणद्वाराभाषादृढ़ीकरणंनामा ष्टमस्तरंगः ८॥

दोहा॥ माधवको शिरनायकै साधवको धरिध्यान। नवमी कल कल्लोलको करिहौं बिबिध बखान॥ उरआधा पूरन अखिल मामा रहै न मैल॥ भाषा भव भयहरनकी गहौ गुणाकर गैल १॥ तबबादीबोले॥ हमतौ मुड़ियानकी भ्रष्टभाषा मत प्रभुकी समझि कै संहार कियो चाहै हैं तब बूझी भगवतजनको भाषाने ऐसेका तुम्हारो पिता बधकीन्हो सो ऐसे बैर बांध्यो बादी बचन॥ श्लोक॥ आयुर्वित्तंगृहछिद्रं मंत्रमैथुनमौ-

षधं ॥ दानमानापमानंचनवगोप्यानिकारयेत ॥ वार्ता ॥
आयुष्य गृहछिद्र वित्त मंत्र मैथुन औषधि दान मान
अरु अपमान ये नव वस्तुको गुप्त रखनी कहीहै बडे
लोगनने जामेंभी वित्तकोतौ अत्यन्त गुप्त राख्यो गुणा-
कारी होयहै देखो जगत में मद्यपान करिवेवारे जहां
तहां जल्पैहैं अरु कितनीक गुप्त रखिवेकी बात होवै
सोऊ प्रकटवकैहैं परंतु गृहमेंको वित्त तौवेभीनहीं प्रकट
करैहैं क्योंकिवित्तको राज तस्करआदि अनेक कोभय
होवैहै यातें गुप्तराखनोकह्योहै ऐसेपंडितको परमअल-
भ्यसर्वोपरिगोप्य विद्याधन है ॥ श्लोक ॥ नचोरहारीन
चराज्यग्राहीविदेशगमनेनचभारवाही ॥ सततंसर्वधन
प्रधानं विद्याधनंकापुरुषावदंति ॥ वार्ता ॥ पंडितलोगन
कोधनकहा विद्या सोविद्याधन कैसोहै कि सर्व धनमें
प्रधान जाको चोरराजा कोईभी नहीं हर सकैहै
ऐसोगुप्त धनहै जाको इनसेठू बैठावननें संस्कृत संदूक
को तोडिकै भाषामें जन जनपै प्रकट लुटायोहै अरु
देखो अगाडीके आचार्यनको बोलनो ऐसेहै किगोपनी
यं गोपनीयंगोपनीयंप्रयत्नतः क्योंकि गुप्ता सोमुक्ता
ऐसे कहैहैं सोया बातपै पानी फेरकै संस्कृतकोभलो
अर्थ प्राकृतपंथमें डारिकै प्रकटलुटायो रामानुजजूकी
नाईं गोपुर पै चढिकै टेरदीन्ही सोभी उननेतौ अर्द्ध
रात्रि समय एक बेर पुकार्यो सोनहत्तर जन सुनपाये
अरु भाषावारे बैठावनें तौ गोपुर कहा काशीरूपी
दरवाजे चढिकै सहस्रावधि भाषा ग्रंथकी टेरदीन्ही

अरु लिख लिखके प्रवर्त्तन किये जाते घर घरमें जन जन जानिके सिद्ध बनवैठे ॥ तहांउत्तर ॥ तुम परमउदार वैष्णावनको दूषण देवोहौ कि इन्होंने वेद शास्त्रको अर्थ भाषामें प्रकट करदीन्हो परंतु तुम कलियुगआवत्ते जानिके भाषा में अर्थकरिके आपनो धनआपही क्यों लुटानेलगे॥ वादीबचन ॥ हमतौ अपनी स्वेच्छाते उदरपूर्णा निमित्त सामान्य अर्थ प्रकट करैहैं अरु भक्तलोगनके भाषा ग्रंथते तौ श्रुति स्मृतिन के अर्थ सर्वजन आपही समझलेवै हैं देखो तुलसीदास जीने महागूढ अर्थको वाल्मीकी रामायणादि सर्वरामायण भाषामें करदई सो पूर्वभूमिमें लुगाईलोग गावें अरुअर्थमें समझैहैं अरु महा गुप्तार्थको गीताजी के श्लोक श्लोक प्रति परम सुगम प्राकृत दोहा बनायदये जाते मूर्ख होवे वहभी समझलेवै ऐसेही नन्ददास ने श्रीमद्भागवत की सुगम भाषा करदई और पुरुषोत्तम पुरबासी माधव-दासजीनेतौ भारतआदि अठारह पुराणप्राकृतमें कर दिये ऐसे कहां लौं गिनावें परन्तु वैद्यक ज्योतिष शिल्पशास्त्र छन्दरस अलंकार काव्य कोष साहित्य सांगीत वेदान्त न्याय व्याकरणादि सर्व ग्रन्थमात्र इन वैष्णवनने प्राकृतभाषा में परम सुगम बनायदिये सो घरघर में सभीअर्थ समझिवे लगगये तब हम सा-रिखे पण्डितलोगनको तौ कछु कामही न रह्योअरु जीविकाहू बूडचुकी ऐसो अनर्थ कियोहै इन वैष्णावन ने ताते भाषाको तौ हम निर्मूल कियोचाहै हैं सोजैसे

बनैगा तैसे प्राकृतभाषाको प्रमाणतौ पृथ्वीपैते उठाये बिना नहींरहैंगे ॥ तहांउत्तर ॥ ऐबुद्धिमान जैसे काष्ठजल सों उत्पन्न होयके वाहीके मस्तक पै मार्ग निकालै और मेघ अग्नि ते उत्पन्न होयके अग्निकोही नाश करै बिच्छूजाते उपजै वाहीको बरबादकरै तैसेकलि-काल में संस्कृतादि सर्वभाषा को डार सर्वको कारण रूप सर्व विद्याके बीजकी संरक्षक सर्वकी सुहृद सद्गुरु समान जामें अर्थ साधनिको पढ़िके पण्डितभये ऐसी परम उपकारी प्राकृतभाषातेही विरोध बढ़िकै केवल कृतघ्नी क्यों ठहरोहो भाषातौ ऐसी समर्थ है कि जाकी ऊषरभूमिसी जड़ीभूत मन्दमतिहोय वामें भी बोधांकुरकी जमायवेवारी ताको उदाहरण ॥ हरिगीतकवृत्तं ॥ बड़बधिर अन्ध सुधासलाको पतिमरोपर वासमें । सेमव्य सूचनकाज सुजनसमाजहारे जासमें ॥ गहिहस्त चुरिय समस्त चूरण कीन पथर प्रहारतें । तबजानि हियहित हानि होयभई विगत भरतारतें ॥ टीका ॥ जैसे काहू जन्मान्ध वधू बधिरलुई को पति परबा समय मरेकी खबरआई परन्तु सूचना करिवे को शोर डारिडारिके सर्वउपाय करियके पै सुनैसम-झैनहीं तब काहूविवेकीने हाथपकड पथरातेचुड़ियां फोडी तबवानेजानी कि कन्तको अन्तभयो॥हरिगीतक ॥ इमि दीन मनसि मलीन पापी पीन जनकलिकालके। मतिमंद मदन मदान्ध बिनगुण बंधकोहि कराळके॥ मल मनुज दारुण दनुज समबिन पुच्छ बिशाल बिषान

के। तिंहि कपट घटके प्रकट पलटत नहिंनपीन पश्चात के ॥ तिंहिं बोधरहित चितशोध संच विरंचिहद हित करनहै। सुखशरणा सबदुखहरणा समरथ प्रबल प्राकृत बरनहै ॥ अस अघट घटना घटनभाषा भणित भक्तनकी गनो। करसंग भृङ्ग बिहंग लटघट प्रकटकट पलटत मनो॥ कलिकाल पेखि कृपाल प्रभुशुभ सुगम भाषा बिस्तरी। बडभाग गहि अनुराग अतिहत भाग पामर परिहरी ॥ टीका ॥ ऐसे ज्ञानांध बुद्धितेबधिर ऐसे कलिकाल के कुटिलजनकी अमोलआयुष वृथाबीती जाय वाको प्रभु प्रीत्यर्थ लगायबेकी सूचनाको वेद शास्त्र पुराणादि अनेक ग्रन्थ शोर पाडत पाडत शिथिल होयके थकिरहे परन्तु बोध सूचित न भयोतब प्रभुने परम दयालु होयकैकोटिकोटि बधिरताकीभंग कर्त्ता परम सुगम प्राकृत प्रवर्तन करतेही हजारहाजन को बोधहोनलगो अरु सारासार समझिकै भगवत सन्मुख होचले याते जानीगई कि कलिकाल कराल में जीवनको बोध करिबेको प्राकृतभाषाही समर्थ है और नहीं अरु भाषा में प्रभुने कैसे सरलसूधे कलको मलखारावे देखौ ष वर्ण कठोर जानिकैं छराख्यो णवर्णकठोरजानि दूरकियो अरु रय राख्योसुधाको छुधा तीक्षणको तीछण तालव्यी मूर्द्धन्य कठोरतजि कै दन्तीसकार राख्यो द्राक्षाकोदाख अंगरक्षी को अँगरखी भद्रावती को भैलसा माहिष्मती कामहेसर ऐसेकहांलैां गिनावैं परंतु कठोरशब्दमात्र निकालदिये

जैसे रायभोगके चावलतेकठोर कंकड वीनडारे या रीतितेछांटिके कोमलतवर्णाराखेजन को मंदमतिजानि के और संस्कृतके कितनेकशब्दलज्जाविंजकविरोधा भासभीहैं जिनके एकदोनाम लिखे हैं देखो गंडस्थल प्रमोदन भोयड़ानन लूतवृस ऐसे अनेकहैं सो इन पदके अर्थ भाषामेंनहीं समझावतेतौ कोईपढ़तेभी नहींअरु उपहास करते अरु न मानौतौ हालमें काहूते कहौकि माचोदधीचोद हरामजादे देखोकैसे राजीहाय भाषा में समझेविना याते संस्कृत तौ भाषाही सुधारेहे अरु भाषासेंही अर्थ साधनिका समझै जवैध्यानमें आवै है अर्थात् भाषाके आधीनहै और संस्कृत विनाभाषा के कछु अटकैनहीं क्योंकि स्वतंत्रहै काहू की अपेक्षा न राखैक्योंकि संस्कृतमात्र भाषामें समझायोजायहैपरंतु भाषाको संस्कृतमें समझावते सुनेहा तौ वतावा अरु संस्कृत वारेको भाषाविना कदापिनचलै अरु गुरुजी की नाईं कुवांमें बूड़मरै तहांभाषापुकारै तवप्राणावचैं अर्थात् संस्कृतको तरनोबूड़ने भाषाके आधीनरह्यो यहलोक परलोकसुधारे यातेभाषाको उपकारमान्यो चाहिये औरभूपत्व भाषाकी तरफ जान्योगयो भूप चाहैजाको तरावै चाहैवुडावै अरु एक रीतिते और भी भाषा भागीरथी भूपरूप जानीजायहै कि जाकी शोभासुनिकै संस्कृत यामिनी पिशाची शूरसेनीमाग- धी हरेकदेश भाषाकेपद आश्रित होयवेको आवैं तौ उनको सांचेमनते सुहृदभावते प्रसन्नताते सादर राखे

समीप आसनदैकै अतिउदारकीनाई अहो भाषाको सज्जनताकी बलिहारी जाइये अरु बिचारेकि हमको परमेश्वरने प्रभुता दीन्हीहै तातेआयेको आदर दियो चाहिये ऐसे समभिकै बहुदेशी शब्दते भाषाकाव्यभूप की नाई शोभापावै ऐसे संस्कृतमें कोई अन्यभाषाको शब्दआवै तौ आपको भ्रष्टभयो मानिकै निरादरतेनि-कारैपै लज्जानहींआवै अबगौरवता कौनकी तरफरही सोकहौ परंतुसंस्कृतएकदेशीभाषा बहुदेशी सोतुम्हारे-ही मुखकोन्यायहै कि सामान्यशास्त्रतोन्यूनं विशे षोबलवान्भवेत्‌ ॥ अर्थात्‌ प्राकृतभाषा विशेषभई क्यों-किसमर्थहोय सो सबको आदरै दुर्बलको कोउनहीं तब वादीबदन बिगाड़िकेबोलेकि भाषामेंसागधी पिशाची संस्कृत इनपदको लेते सुनेहैं परंतु यामिनीपद लेतेतो काहूको सुनेनहीं क्योंकि भाषाही भ्रष्टहोजाय ताते यामिनी पद लेवेकोरया बोलौहो यामिनीतो महा नीच भाषाहै तबतो ठौरठौर लिखाहैकि नवदेद्यामिनीं भाषां प्राणै:कंठगतैरपि॥याते यामिनीपद प्राकृतवारे नहीं लेवे हैं तुम वृथा बादकरौहौ ॥ तहांउत्तर ॥ तुमने कहीकि यामिनी शब्दपदभाषामें लेतेनहींसुनेहैं परन्तु कानलगायकै सुनौ प्रथमतो गुसाईंजीने रामचरित्रमें लिखाहै कि गनीगरीब ग्राम नरनागर । देखो गनी गरीबयहपद यामिनीहै दूसरे सूरदास जीने लिखो है चश्मनकीचोट चली चंचल चलायकै। सो यहचश्म पद यामिनी है तीसरे माधवदासजी ने लिखो लोचन

दराज ब्रजराजके कहीले हैं।यह दराज पद यामिनीहै
और रसरासने लिखो है ताले चिलंद नंदके फरजंद
हुवा है। यहपदयामिनी है देव कविलिखे हैं दोज़ख
दराज ब्रजराज पापलायो है। सो दोज़खदराज यह
यामिनीशब्दहै और विहारी लिखे हैं लिख्यो काच
पर काफ़ और भूषण पायंदाज ऐसे कहांलौं गिनावैं
परन्तु भाषा कविमात्र ने यामिनीपद सादर लीन्हे हैं
क्योंकि राजाके सदनमाहिं सबकी समाई है देखो प्रा-
कृत पृथिवी को आशय अगाध है याते वहे दरबार में
बहुत समाये अल्प में नहीं क्योंकि संस्कृत एक देशी
प्राकृतबहुदेशी याते भाषा भागीरथीमें भूपत्व जान्यो
गयो सोईशिरोमणि समझिये॥ तत्रवादीवोलैकि॥ ब्राह्मण
की जातिमें इतरजाति न समायहै ताते सर्वशिरोमणि
अष्टादश वर्णके राजाहैं अरु अंत्यजादि पामरजाति में
नीचतेनीच सर्वजाति समायहैं यातेमहाअधमाधमभार
भ्रष्टजाहिरहैंई तुमने भाषामें ऊंचनीच अंत्यजादि सर्व
भाषा समावती देखिकै श्रेष्ठशिरोमणिमानीहै सो सर्व-
था मिथ्याहै क्योंकि सर्वसमायेते जो श्रेष्ठत्व होयतौ
तौ यमनजाति को सर्वशिरोमणि श्रेष्ठ पूज्यतर मानो
चाहिये क्योंकिवामें सर्वजाति समायहैं सोतौजहांतहां
लिखेहैंकि॥नीचोयमनात्परः॥ यमनतेअपरनीचजा-
तिनहींयेईमहानीचतरहैं औरविप्रवर्णमेंकोईइतरजाति
नहींसमाय सकैहै ताते इनमें कहा लाघवतामानोगे इन
को तौश्रुतिस्मृति पुकारै हैं कि वर्णानांब्राह्मणोगुरुः

और अश्वत्थामाको अर्जुन बांधिलायो तहांद्रौपदीको
बचनहैकि मुच्यतांमुच्यतामेष ब्राह्मणोनितरांगुरुः
और अष्टादश बर्णमात्रके राजा जगत्‌ जाहिरहै ऐसेही
संस्कृतमेंकोऊ इतरशब्द नसमाय अर्थात्‌ सर्वशिरा-
मणिवाणी मात्रको राजा भयो अरु प्राकृतभाषा तौ
यामिनी महानीच शब्दकेसंगते नीचभ्रष्टभई जाहिर है
तबतौ समझैलोग सुनेको पातक मानैहैं अर्थात्‌ भाषा
भूलिकै न सुनिये यह सिद्धांत ॥ तहांउत्तर ॥ भाईजी
भाषामें बहुदेश बाहुल्यताको परम उदार गुण तजिकै
म्लेच्छजातिको दृष्टांतदैकै अवगुण थापित कीन्हो सो
केवल असारग्राहीकी तरह कुतर्क है क्योंकि यामें
कछुपंक्ति भोजनतौहैईनहीं सोभ्रष्ट होजाय यहतौ शब्द
ब्रह्मको वाक्‌बिलास है सो वाक्‌बिलास तौ ऊंचनीच
अंगरेज अंत्यजादिकसोंभी कामपड़ै तबहोय है याते
कहा जातिभ्रष्टहोजायहै यामिनी विद्यातौचारिउबर्ण
पढैहैं सोयातेका नीचहोजायहैंयामिनीमतकीतौ कित-
नीकबातैं अथर्वण वेदांतर्गतसी दृष्टिपड़ैहैं और हाल
तौ चारहू वेदकेस्वर बिचारिये ऋगको कंठस्वर यजुर
कोहस्तस्वर सामको अंकस्वर ऐसेअथर्वण को बाणहै
जोयमन अहर्निश बाणैहैं और अष्टादशलकार संयुक्त
अल्लासूक्त प्रसिद्ध अथर्वण मेंहै और कितनेक शब्द
यामिनी संस्कृत दोऊके एकहैं देखोमस्तकको संस्कृत
वारेभी शिरकहैं अरुयामिनीवारेभीशिरकहैहैं ऐसेही
भैंसको महिषी सूखीचीज़ सो खुश्क घुटनसो ज़ानु

उड़दकोसाय ऐसेहजारहाशव्दयामिनी संस्कृतके शक हैं याते इनशब्दन को उच्चारण संस्कृत के अभिमानी को नकियो चाहिये सोतो सहस्रशीर्षाः आदिदैके सर्व पढैहैं तब यामिनीको परहेजकहांरह्यो परंतु आपतो परोपदेश कुशलहोहन्तिदंतउयों चर्वणाकेऔर अरुदि-खायवेके औरहैं याते यामिनी शव्दते कछुवाधानहींवा-यातोयाते भयेहैंकि इनमेंपैगंबर भयेहैं उन्होंनेविपत्ति कालविलोबिवौ मांसभक्षणाकी आज्ञादईथी अरुइनने महाअधर्महिंसाको स्वधर्म मानिके सदाही करन लगे ताते इतनो विरोध पड़गयेहै और प्रथमतो यामिनी मतमें भी हिंसा परमवर्जनीय थी तव तो यामिनीमत में लिखीहैकि अजावुलवकार अजावुल दरख अजा वुलकरज ॥ याकोअर्थ ॥ हिंसाकरना १ हरितवृक्षकाटना २ और किराया न देना इनतीनों तकसीरको खुदा कहैकि कदापि माफनहीं करूंगा अर्थात निर्हिंसक मतजान्योगयो परंतु आपत्ति कालकीआज्ञाको सदा-चारमान्यो जाते इतनो विरोधहै और यामिनी शव्दते कछु विरोधनाहीं शब्दतौलेतेई आयेहैं ॥ तथयादीवाले ॥ कि ये जानू भिर आदि पद यामिनी नहींहैं संस्कृतते यमजने लीन्हेहैं हम यामिनी नीच भूलके न लेवें तव कही सत्ययामिनीते संस्कृत कूपभ्रष्ट होय भागीरथीमें समाय ॥ तहां उत्तर ॥ तुमने प्राकृतभाषाकी पुष्टिनिमित्त इते उतैते उक्तियुक्ति मिलायके यामिनीभाषा महानि-षेदताको विधि प्रतिपादनकीन्हीं परंतु हमऐसी कची

बातकोप्रमाण कदापिनहीं मानें यामिनीतौ महानीच भाषाहै अरु वाहीके मिश्रितभई तुम्हारीप्राकृत भाषा तातेनीचभईताकोभलीक्रैनसुनिये॥ तहांउत्तर ॥तुमप्राकृतभाषाको यामिनी मिश्रित मानिकै अनादर करौहौ परंतु यामिनीपदतौ अल्लासूक्तमेंप्रतिपद आवैहै उनको क्यों गावोहो और यामिनी शब्द सूरसागरके माननी के प्रकरणमें श्रीमुखते श्रीकृष्णने धरेहैं कि प्रीतमकी प्राणप्यारी अबलाके आकमें ताले बिलंदतोसी नाहिं तसणी त्रिलोकमें ॥ अब कहौ जो तालेबिलंद पदतौ प्रत्यक्ष यामिनीहै परंतु न मानौगे तौ भगवत्‌ते बिमुख ठहरोगे ॥ तबबादीबोले ॥ कि हमैंतौ बचनात्प्रवृत्ति अरु बचनान्निवृत्तिहै सो अल्लासूक्तकी प्रवृत्तिहै याते प्रमाणहै और तुमने श्रीकृष्णके बचनकहे सोतौ कभी प्रमाण न करैंगे फेर बिमुख मानिकै नरकमें डारैं तौ नरकही कबूलहै क्योंकि श्रीकृष्णकी कछु जाति नहीं बिगड़ैहै क्योंकि उननेतौ मीरमाधव रसखानिके भले खायलियेहै तब यामिनी पदतौ धरेही धरे ताते हम को इन बचननको प्रमाण नहीं श्रीकृष्णतौ बौद्धरूप होयकै परम पूजनीय श्रुतिनकी निन्दा करने लगगये ताते हमको इन बचननको प्रमाण नहीं ताते हमारेतौ आर्षं बचनहैं कि नवदेद्यामिनींभाषांप्राणैःकंठगतैरपि नमीचोयमनात्परः ॥ वार्ता ॥ यमन उपरांत नीचमलिन जातिहैही नहीं तब यमनवाणी तौ नीच भ्रष्टभई और याके संसर्गते प्राकृतभाषा तौ भ्रष्टतरहैई याते अवश्य

गात भूलिके न करनी यहसिद्धांतहै॥ तत्रांउत्तर॥ भाईजी तुमने कहीथी कि भाषा भागीरथीहै सो हरेक अर्थ जल ग्रहण करलेवे हमारो संस्कृत तो कूपवतहै सो बिना गुणघट अर्थजल न मिलैहै सो बात सत्यहै परंतु जैसे नीचके स्नान पान संसर्गते कूपजल भ्रष्टमानें तैसे भागीरथीको मानें तौ वे पुरुष महापातकी होयँ अरु महामूर्खनमें गिनेजायँ क्योंकि भागीरथीमेंतो सहस्रावधि पातकी पिशाच श्वपचादि स्नान पानकरैं अरु अनेक अस्थि डारैं चाहे मदिराके घट दुरकावें परंतु अपवित्र न होवें क्योंकि गंगा तो सदापवित्र हैं और संस्कृत कूपमें नीच भाषा को संसर्ग होय तो सद्य भ्रष्ट होवै अरु भाषा भागीरथीमें चाहे तैसी नीचभाषा मिलै परंतु सर्वको पवित्र करलेवैं अरु आपतो सदा पवित्रहैं याते तुम्हारो प्रश्न वृथाहै और हालतो तुम्हारो अविवेकयाहीते जान्यो जायहै कि भक्त लोगनकी भगवत गुणयुत भाषाकोतो पाप मानिके सुनिबे को परहेज राखौहो अरु जैन यमन म्लेच्छ खरकूकरकी वाणी को परहेज नहीं अब तुम्हारी बलबुद्धि कहांलौं सराहिये अरे भाषा बिना तो घड़ीभर नहीं चलै अरु सहजमें बोधकरै अरु दोऊ लोकको सुधारै जापै भो भगवत आज्ञा तासों वैर बांधिकै का फलपावोगे भाषा तो कैसीहै कि॥ कवित्त॥ बिमल बरण जाके हियके हरणहार तारणतरण तीनों तापते तरत है। स्वारथ सकलजाके समझेते सिद्धहोत पुंज परमारथ के प्रभुता

धरतहै॥ अकलकी ऐनकतेनीकेकै निहारि लेरे ज्ञानको प्रकाशभूरि भानु सों करतहै । सुधासी सलाका तापै मूढ मन मारयो हाय देव अभिलाषा भूरि भाषा की करतहै ॥ टीका ॥ भाषा भागीरथीमें नीच ऊंच हरेक भाषा आयपडै परन्तु पवित्र करलेवे तातै विमल बर्णकहे फेर भाषा वर्ण कैसेहैं कि हियके हरणहार जाके श्रवणते हियो हरयोजाय फेर कैसे हैं भाषा वर्ण कि तारण तरण जो पढै सो तरै अरु श्रोताको तरावै फेर कैसेहैं भाषावर्ण कि तीनोंतापते तरायकै पारलगानेवारे फेर भाषा कैसीहै कि समग्रस्वार्थ प्रपंचकी सिद्धिकर्त्ता और परमार्थमें पारलगायवेवारी परमप्रभुता संयुक्त धर्म अर्थ काम मोक्षपर्यंत निर्विघ्न निर्वाहदेनहारी याते हेसज्जनो अकलकी ऐनक लगाय देखिये भाषाते विमुख ताकी कैसी खराबी भईहै और भाषा कैसीहै कि अज्ञानतम मेटिकै ज्ञान को प्रकाश तौ भूरिभानुकी नाईं करतीहै फेर भाषा कैसीहै कि सुधाकी सलाकासी महा अमृतके घूंटसी श्रोताको सींक बँधायवेवारी परमानन्दको दाता सर्व भाषाकी शिरोभाग ताते मूढमच्छरता को मारयो विरोध बुद्धिधरैहै हाय इनके कौन अभाग उदयभयेहैं रेहृदनयनांध तुम चार अक्षर देवगिराके पढिकै कहाभूलेहौ देवता तौ निरन्तर भाषाहीकी अभिलाषा राखैहैं ॥ दोहा ॥ चिन्तामणिकी मुष्टिका हृदयहृष्टिका जान। आंधरेनकी यष्टिका पटु प्राकृत पहिंचान ॥

टीका ॥ भक्तजनन की भाषा कैसी है चिन्तामणि की मुष्टिकासी मनवांछित देनहारी फेर कैसीहै भाषा कि श्रवणक्रिये ते हृदयानन्द को हृष्टपुष्टकी करनहारी फेर भाषा कैसीहै कि कलिकाल के अन्ध अज्ञानी जीवको यष्टिकासी सुमार्गदरशावनेहारी ऐसी केवल कल्पलतिकासी मनवांछितदायिनी भगवत प्रेरित सर्व शिरोमणि कारणरूप भगवत जनकी भाषाको तौ कोऊ हतभागीही होयगो सो त्यागकरैगो ॥

श्रीबलवंतसिंहआज्ञयाटीकारामकृतायांभाषाबाहुल्यतावर्णनंनवमस्तरंगः॥

दोहा ॥ जसजस उक्तीदर्श है उरप्रेरक भगवान । दशईदिव्य तरंगको तसतस करौं बखान १ भाषाहीते भवतरन भाषाते संसार । भाषाश्रुति को सारतिहि नरनिजभूलिनिवार२ ॥ वादीवचन ॥ सवैया ॥ दिनचारक हूते चली जगमें कलिकाल करालकी कूर निशानी । कोली कहेरनकी करतूति सनातन शब्दनकी हित हानी ॥ ऐसी अलीन मलीन महा तिहिको तुमने वद वादबखानी । शूद्रनकी छलक्षुद्रशालागत मूढ महा मुड़ियानकीवानी ॥ दोहा ॥ भगवत इच्छातेभई भाषाप्रकट प्रचार । वृथावृथातुम सर्वथा भाषण उरअविचार ॥ थापकधर्म धरानपै ईश्वरमत अनुकूल । सोकिमि प्राकृत प्रकटिहै सबअधर्मको मूल ॥ वार्ता ॥ तुमकहौहौ कि प्राकृतभाषा कलिकालमें भगवत इच्छाते प्रवर्तन भई है सो यहबात सर्वथा मिथ्या है क्योंकि गीताजी में भगवत को वचनहै कि ॥ श्लोक ॥ परित्राणायसाधूनां

विनाशायचदुष्कृताम। धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगे
युगे१॥ टीका ॥भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहैहैं किहेअर्जुन
साधूलोगोंके रक्षाकेलिये और पातकी पुरुषकेसंहार
के लिये और धर्मको पृथ्वीपै स्थापन करनेके लिये
युगयुगमें मैं अवतार धारणा करूंहूं १॥ वार्ता ॥ ईश्वरतौ
युगयुग प्रतिधर्मके स्थापनको प्रकटहोयहैं तब म्लेच्छ
मिश्रित प्राकृत भाषा सब अधर्मकोमूल ताकेप्रवर्तनको
इच्छाकाहेको करैंगे अर्थात् तुम प्राकृतभाषा ईश्वर
इच्छाते कहौहौ सो सर्वथा अप्रमाणहै क्योंकि यहतौ
परमशूद्र पंथाई मुडियानने प्रकट करीहै ॥ उत्तरसवैया ॥
हरिनाभ सनाल मृनालमहीं भरम्यो चतुरानन भूरि
भुलानो । कौन हैं आयो कहांते कहो तिहिकोन
मिल्यो कहुंठौर ठिकानो ॥ तपओतपताह अवाज
भई तिहिको उर आप कियो अनुमानो । चेतके हेत
समेत धरी शिरसार रजायस वाकविधानो १ ॥ वार्ता ॥
सृष्टिको आदिमें शेषशायीके नाभि कमलमें ब्रह्माज़ी
उत्पन्न होयके शतवर्ष पर्यंत भ्रमतरहे परंतु मैं कौनहौं
अरु कहांते आयो अरु कौन कर्त्तव्यता करवेकोहै यह
कछु खबर नपरी फेर तप तप ऐसे दो अक्षरकोआवाज़
भई जाको पौरुषीवाणी कहैहैं पौरुषीविन ब्रह्माको
ज्ञान न भयो तवतुम कौन गिनती में अर्थात् पुरुषकी
वाणी विना ज्ञाननहीं ताको श्रवण करी तवदो अक्षर
को ज्ञानभयोयह बात सत्य कि असत्य सो कहौ ॥ तब
वादी बोले ॥ कि यहतौ वेदोक्त बातहै सो सत्य सत्य अरु

फेरसत्य याको असत्य कौनकहै ॥ तहांउत्तर ॥ सोरठा ॥ दो अक्षर को जाप निशिपै बन्यो न बिलखते । प्राकृत प्रकट प्रताप हरि इच्छा बिन होत कहुं १ जिते ग्रंथ सिखानसें शुद्ध अर्थ युत जोय । तिते प्रकट प्राकृतभये यह भगवत बिन होय २ ॥ वार्ता ॥ भगवत आज्ञा बिना ब्रह्मा सारिखे समर्थसोभी दो अक्षर नहींबनैं तब कलि-कालसें संस्कृतके ग्रंथसान प्राकृतभाषा में भये अरु होते जायहैं सो कहा बिन हरिइच्छा भये होयँगे याबातको सत्सरत्तार्तजके विचार करि भगवत आज्ञा परिपाल-नार्थ संस्कृताभिमान तजिकै निज कल्याणार्थ प्राकृत भाषा मस्तकपै धारनो भलाहहै यहसिद्धांत॥ वादीवचन ॥ छंदभुजंगप्रयात॥ कहीं आपने ग्रंथ जेते नवीने। सबै आयभे ईश कीन्हे कवीने ॥ तिन्हैं जानकै मानकै मानकीजै। यहै बालको ख्यात नाहं पतीजै॥ कितेकौलका कोटि नास्तीक पंथा। यती जैन बौद्धादि चर्वाक ग्रंथा ॥ उदंडी अपी पीन पाखंड कारे। तिन्हैं कौनसी रीतितै शीशधारे १ ॥ वार्ता॥ तुम कही हौ कि कलिकाल में कोट्यावधि भाषाग्रंथ भयेहैं सो सर्व भगवतआज्ञातेही जानिकै अंगीकार करने तौ कहोजी कलिकालसेंतौ जैन बौद्ध चर्वाक नास्तीक कौलकादि कुपंथके कित-नेही नवीनग्रंथ भयेहैं पाखंड प्रवर्तनार्थ सोकहा इनको भी भगवत आज्ञा पूर्वक मानिकै अंगीकार करने तब सद्ग्रंथके पंथतौ छूटचुके॥ तहांउत्तर ॥ कुण्डली ॥ निगमा गमते बहिर्मुख सो पाखंड प्रचार। प्राकृत परकट संत

की सबै श्रुतिनको सार ॥ सबै श्रुतिनको सार भक्तलो-
गनकी भाषा। विबुध विधाता विष्णुकरैं जाकी अभि-
लाषा ॥ श्रवण सुनेते स्वच्छहोय सद्गुणको आगम।
सरस सुधाको स्रोत सर्व संमत निगमागम ॥ वार्ता ॥
पाखंड तौ श्रुति स्मृतिनते विरुद्ध होय सो कहावै है
अरु भाषाग्रंथमें तौ वैष्णवनने केवल श्रुति स्मृतिनको
सार वर्णन कियोहै तबतौ बालकांडके मानसरोवर
वर्णनमें लिख्योहैकि ॥ चौपाई ॥ सुमति भूमिथल हृदय
अगाधू। वेद पुराण उदधि घन साधू ॥ बरषहिं राम
सुयश बरबारी। मधुर मनोहर मंगलकारी ॥ वार्ता ॥
समुद्रमें मीठो खारो फीको अनेक नीर होवैहै परंतु
मेघनके वृन्दहैं तेतौ महा मधुरसार सिद्ध जल लायकैं
जीवनके काज बरषैंहैं ऐसे वेद शास्त्र पुराणनमें तौ अने-
क प्रकारके धर्म कर्म क्रियाकांड गायेहैं परंतु घनरूप
साधूतौ वामेंते परमतत्त्व सार भगवतधर्म लाय लायकैं
जीवनके हित भाषामें वृष्टिकरैंहैं तबतौ काहू सत्कवि
ने कहीहै कि॥ दोहा ॥ श्री तुलसीपद पद्मको बंदौं दोउ
कर जोर। बरसोउजिनरघुनाथयश श्रुतिसिद्धांतनिचोर
॥ अन्यच्चबलवन्नृपति ॥ श्रीतुलसी जलजातपद बंदौंधरिधरि
माथ। श्रुतिकोसार निचोर जिन बरसोउयश रघुनाथ
१ ॥ वार्ता ॥ प्राकृतभाषाको श्रुति स्मृतिनको सार इत-
रसमभि कै काया बाचा मनसापूर्वक विशेष आदर
कियोचाहिये जो यामें मनुष्यपनो होयतौ क्योंकि
भाषातौकलिकालमें सद्यभगवत प्राप्तिकी करदेवारी

है॥ तववादीवचन ॥वार्ता॥ तुम प्राकृत भाषाकी पुष्टीकरणार्थ अनेक उक्ति युक्ति लायके पानचढावोहो परंतु हमतौ सनातन की श्रुति स्मृतिन के धारण करबेवारे हैं सो कलिकालके नूतन प्राकृत पाखण्डको प्रमाण तीनकालसें नहींमानें॥ तद्वांउत्तर॥ तुमकहौहो कि हम नवीन कृत्यको नहींमानें सोठीकहै परन्तु सनातन तौ सत्ययुगकेवेदहुते फेरत्रेतामेंशास्त्र नूतनभये वाकोप्रमाण सर्वने क्यों किया अरु द्वापरमें फेर पुराण नूतनभये ताकी आज्ञा भीशपे क्योंचढाई ऐसेही कलिकाल में प्राकृत प्रकट भईहै सो याकोभी भगवत आज्ञाजानिके सत्कारकियो चाहिये अरुतुम कहौहो कि हमकलिकालके नवीन कृत्यको तौ कदापि प्रमाण नहीं करें यह सर्वथा मिथ्याहै क्योंकि कलिकालको कृत्य तौ मुख्य श्रीजगन्नाथस्वामीको महाप्रसादहै वाको क्यों मानौहो दूसरे देवरते सुतोत्पत्ति निषेध तीसरे राज कन्याग्रहण निषेध अरुब्राह्मणसवों एकपंक्ति भोजन वर्जनीय पांचवें विवाहमें वृषभवधनिषेध छठेंमांसपिंड वर्जे सातवें अंगरेजको हुक्मजामें सर्वसों उच्च ब्राह्मण अरु सर्वते नीच चांडाल एक बिछौनेबैठे अरुराज्यतौ क्षत्रीकोथी अंगरेजतौ कलिमें प्रकटे भाषाकीनाईं तातें माननो अयोग्यहै अरुकहूं कामपडै तब सगरप्रियव्रत की दुहाई क्योंनदेहो अंगरेजतौ नयेहैं आठवें महाभ्रष्ट नीचतेनीच ऐसी जो तमाकूचारिवर्णते लगाय अंत्यज म्लेच्छ पर्यंतको एक करबेवारी कलिकालकी दूती

ताकोतौतुमने तमालपत्रं तुलसी समानं मानिकैमस्तक पै धारी जाको एकादशी व्रतमें भी लीनकरी अरु जापैझूंठे बचन बनाय लायेकि॥ श्लोक॥ तमालं त्रिविधंभाति हरेर्भागीरथीयथा॥क्वचिद्वहुक्काक्वचित्फक्काक्वचित्तनासाग्रगामिनी१॥ टीका ॥ तमालपत्र जोतमाकूवह गंगाजी सरीखो तीन प्रकारकोहै कितनेक तौ हुक्केमें पीवेहैं और कितनेक फंका मारतेहैं और कितनेक नासाते सूंघतेहैं ऐसी गंगा समानहै तीन प्रकारकी १ वार्ता॥ ऐसे कहांलों गिनावैंपरंतु हजारहा कृत्य कलिकालमें नवीन भयेहैं सोतौ सर्व प्रमाण करिकै शीशपै चढ़ायेहै तब भगवत्भक्तको वेदानुसारभाषाते क्योंबैर बांध्यो इननेकहा तुम्हारो पिता बधकियोहै सो भाषा को नाम सुनतेही नख शिखते आग लगजाय याको कारण कहा परंतु हमने बिनाही कहे जान लीन्ही क्योंकि महाप्रसादनमानैं तौतौ जगदीश आंधरे बनाय देवैं ताते याको प्रमाण कियो चाहिये और अंगरेज की आज्ञा न मानैं तौ सद्यही दंड प्राप्त होवै अरुमांस पिंडादि कृत्य करैं तौ जाति वाले पंक्ति भोजनते दूर करैं ऐसे जिन जिनको जबरदस्त देखे तिन तिनको आज्ञा शीश पै धारी है क्योंकि ॥ सोरठा ॥ गुस्सा चतुर सुजान जबरदेख आता नहीं । पंडित करौ बिज्ञान ज्यों मूसा मार्जार बिल ॥ वार्ता ॥ बिलमें मूसा होतसंते बाहर बिलाईजानपड़ै तौ भीतरही बन्योरहै पै बाहर निकसै नहीं ऐसे मनमें क्रोध होतसंते आपते

प्रबल होय वाये प्रकटे नहीं ऐसे तुमने भी प्रबल देखे तिनकी आज्ञा मान्य करलई अरु मनते निबल भगवत्त भक्तकोजाने तब तौ प्राकृतको निरादर करोहौ परंतु यहभीखबरहै कि प्राकृत भाषाके प्रतिपक्षीको भगवत्तनेकौन २ दशा करीहै सो अब तुमभी फल पावोगे याते कलिकाल में कोई निज श्रेय चाहैतौ भगवत्त आज्ञा प्राकृत भाषा भीमाषे वाँचै तब उभयलोक सुखै ॥ वादीवचन ॥ कलिमें भगवत्त आज्ञा जानिकै भाषामें यदि किंचित् अर्थतौ हमहू करदेहैं परन्तु इन बैठणावलनेतौ रस अलंकार काव्यकोश आदिदैकै सर्व शास्त्रके अंगभाषाछंद बद्धकरदये जाते पंडित कुपंडित स्त्री पुरुष बालवृद्ध सर्व शास्त्रनको स्वतःसिद्ध समझने लगगये तबहम लोगनको तौ परिश्रम व्यर्थभयो अरु जीविकाभीगई यातेयाकेलिये प्राकृतवारेको हमपरम शत्रुसेमानैहैं औरकछुभाषाते विरुद्धको कारण है नहीं क्योंकि भाषावारे हमारी आजीविकाही उड़ायवेलगे तब हमभाषाको भलोक्तबमनावें यहसिद्धांत॥ कविवचन॥ सोरठा॥ प्राकृतसंत उदार निरचेजन हित ग्रंथबहु ॥मानी नहीं लगार बरजे कृपण विदग्ध मिलि २॥ वार्त्ता ॥ परम उदारसंतजननेकलिकालके कंगालजीवकेनिमित्त भाषाके भंडारखोलते देखिकै कृपण विदग्धकीछाती में छेदपड़नेलगे तबभक्तलोगनको बहुत बरजे किभाषा जनिबनावो परन्तु सूमके मनेकियेते कहूं दातार भी रुकैहै सो एकभी न मानी ॥ दोहा ॥ सब हटकेजगजीव

को तिनहूं मानीनाहिं। तब मच्छरता धारिकैंजिन प्रति निंदततहिं॥ वार्ता॥ संत जननको भाषा करते देखिके बहुत बरजे परन्तु एकहू नहींमानी तब भाषा रसाल क्षेत्रके बिजूका बनके जीवनको डरावने लगे भाषातो म्लेच्छ मिश्रित शूद्रबाणीहै सोसुनिवेवारेके श्रवणमें यमदूत तप्तशीशा डालैंगे तबभाषा सुनिवेके पापते छूटौगे क्योंकि भाषाके अक्षर२प्रतिसुनिवेवारे महापापके अधिकारी होयके कुंभीपाकादिकमेंपड़ैंगे ऐसे अनेक प्रकारते जगतके जीवनको डराये परन्तु बिवेकी लोगननेतो बिचारलई कि कलिकालमेंभाषा ते बिमुखरहैं उनको माधवदासजीके प्रतिपक्षीकीनाईं कारोमुख भयावत कौंगे ऐसेबिचारिकै इनकी एकभी मानीनहीं॥ दोहा॥ भजनकबिजूका खेतको जंबुक देख डरायँ॥ सिंहशूर भयत्यागिकै बिमलप्रेम फलखायँ १ वार्ता॥ खेतके बिजूकादेखिके सियार शशकादितुच्छ जीव डरिके पलायमान ह्वैजांय परन्तु महान् सिंह शार्दूलपुरुष कदापि नहींडरैं अरु मधुरफलखायँ ऐसे भाषाखेतके पंडितबिजूकाके डरायेसूखे मनुष्यडरें अरु सत्पात्रसिंह सारिखे पुरुषतो सर्व भय त्यागिके भाषा खेतके मधुर अर्थफलके स्वादानंदबिलसैं परन्तु परशु रामजीकी साखीहैकि॥ दोहा॥ पापीपुण्यनकारसके जीवतयमानहिलेयँ। खेतबिजूकापरशुरामखायँनखाने देयँ १ वार्ता॥ खेतके बिजूका कंगाल जीवन कोभी डरावैं अरु फलखाने नहींदेवैं अरु आपभीनखायजानैं

ऐसे खल पंडित आपभी भाषामृत को स्वादनहीं लेय जानें अरु औरकोभी डरायकै अंतराय पाड़देवैं तदुक्तं नीतिग्रंथेन॥ श्लोक ॥ दह्यमानासुतीक्ष्णेन नीचाः परयशोग्निना। असक्तास्तत्पदंगंतु ततोनिंदांप्रकुर्वते ॥ वार्ता ॥ नीचपुरुषपराये यशरूपी तीखी अग्निसें दाझे संतो उनकोबराबरीनकरसकैं तबमच्छरताधारिकै नीचकी नाईं निंदाकरैहैं यातेमहाचांडाल कहावैहैं परन्तु निंदा करतीनरहैं और एकरीतितेऔरभीकृतघ्नीभये॥ दोहा॥ निजनिजपतिनारीवपु जातिवखानैं लोय। परप्रशंसि निजनिंदिहैयारिकृतघ्नीजोय॥ वार्ता ॥ नारिकोकैसोही कुपात्र पति मिलै परन्तु वालुगाड़ै तौ परमेश्वर करि जानैं तब कल्याणहोय अरु कदाचित आपनो असक्त पति देखिकैनिन्दाकरै अरुपरपुरुष सुंदरदेखिकैप्रशंसै तौ वह जगतमें तौ यारिनीकहावै अरु यमदूतकीयातना सहै ऐसे नरदेह में बसिकै नरकी प्राकृत भाषा निन्दै अरुपरकी संस्कृतादि भाषासराहै वादुष्टको परमकृत-घ्नी व्यभिचारी महापातकी यमदंडको भोक्ताजानिये याते विवेकीलोगनरदेहमें बसिकै नरवाणीकी निन्दा कदापि न करैहैं अरुकितेक कूर निन्दैहैं उनको ऐसे जानिये जैसेकोई दुष्ट जापात्रमें खायवाहीमें बिष्टाकरै दोहा ॥ सज्जन ऐसो समझकै निन्दैं भाषानाहिं। अपनी जंघउघारते आपहि अतिलरजाहिं १ कूरकहावैं जगत में पड़ैंधूरशिरबीच। पैप्राकृतकी प्रकटखल निन्दातजैं न नीच २ वार्ता ॥ जगतमें कुटिल कहावैं जिंदगीमेंधूर

पडै परलोकबिगाडै भगवत्तेबिमुखठहरैं परन्तुकत्तघ्नी प्राकृत निन्दतेरहैं ॥ वादीबचन ॥ सोरठा ॥ शेषभूमि विष रुद्र शशीमाकलंकहरिभृगुलता। बडवानलहि समुद्र अंगी कृतत्यागयोनहीं ॥ वार्ता ॥ बडेलोगजा पदार्थको अंगी-कारकरैंबातेबनै कि बिगडै परन्तुगुण अवगुणदेखिकै तज्जैंनहीं ऐसे हमप्राकृत भाषाके प्रतिपक्षीभये सो भये अब बनै या बिगडै परन्तु प्रण परिहरिकै निन्दा तौ नहींतजैं ॥ तहांउत्तर ॥ भाई भूलिकैं फूटीनावमें बैठै अरु साबुत मिलजायतौ फूटीकोत्यागदेनो अरुअंगीकारके अहंकारमेंा बूडिमरनो महाअयोग्य बेवकूफीहै ॥ वादी वचन ॥ तुमकोटिकोटि दृष्टांतदेकैभाषाकी दृढता करौ परन्तु भाषाको प्रमाणतौ तीनकालमें नहींमानैं ॥ तहां उत्तर ॥ दोहा ॥ सोभीसांचोरेकको नरखतरावतनाहिं। स्वारथकीसर्वगिरधरैं बंचकचतुरकहाहिं १ भाषानि-न्दतसंतकी हरिगुणभरे अरूढ। नारी गारी यारकी भाषा मानतमूढ २ ॥ वार्ता ॥ कितेक खलकी प्रकृति कैसीहैकि कोऊ गारीदेवे वा भाषाको शोशपैधारण करिकै लडबेको तैयारहोयँ और घरमें लुगाई अनेक वस्तुकी भाषामें आज्ञाकरै सोसर्व श्रुतितुल्य समझिकै शीशपै धारणाकरैं और यारिनी भाषामें संकेतस्थल सूचनाकरै वाको सद्गुरुसे वचन मानिकै कबूलकरैं और कोऊ द्रव्यदेबेको भाषामेंबुलावै तौ उनवचनको भगवत बचन समानमानिकै हाजिरहोयँ और विवाह में समधिनजइयाजइया पितु पितामहलैां मादर पिदर

भंडीको परन्तु रुचिरुचि युनें अरु मोनमानें अरुकहें कि ॥ छंद ॥ ज्योंघनसार द्वगनमेंआंजें शीततात्रावि-कारी। त्योंसुतकीशादीमेंगारी लागतहैं अतिप्यारी॥ प्यारीगारी लागतहैंहरिबिन अस्तुतितें अधिकारी। उरजकठोरबाडतज्योंउरमें त्योंसमधिनकीगारी॥वार्ता॥ ऐसे स्वार्थसाधकी भाषातो गीधपे धारण करें और न सोनें भगवतगुण युतभक्तकी भाषा तातें महामन्द असारग्राही जानेजाये ॥ दोहा ॥ ककई कोल्हू चीचडी चलनीजोकमलानाइनतें नीचेदुष्ट यह जानहु संतसुजान वार्ता॥ककई सुंदरकेशतजिकें निर्जीव दूटोकेशकेलाय सह बरलालयोखजुवां दूढा ग्रहणाकरें औरकोल्हूरस तजिकें निरसछिलका ग्रहेहैं चलनी सुंदर सेदातजिकें भसीराखें चीचडी दुग्धतजिकें रुधिरपियें जलोंका दुग्ध अरु सजीव रुधिर दोऊको तजिकें रोगार्थबिग-ड्यो रुधिरआकर्षे सो वांजिवी है क्योंकि ये तो जड जंतुहैं परन्तु इनसबनतें नीच हियाकूरदुष्ट मनुष्यजानिये कि जो भगवत गुणयुतभक्तनकी प्रसादसाध्याववाविध वंत बिहायकें जद्धातद्ववाणी मान्यकरें यातें अवश्य भगवत बहिर्मुख असारग्राही जानपरें॥ दोहा॥ कण तजिकैंककरगहे निश्चयतासिंनिवार। नारायणकी भक्तिबिन सर्वविभक्ति धिरकार १ तजेसार संसारमें गहे अज्ञानअसार। ऐसेमानीमूढको धिकधिकधिक धिक्कार २ परमभक्तको सासरा निन्दत मनवचकाय। गहीविभक्तीभक्तितजि यातेअनुचितनाय ३॥वार्ता॥ सर-

वह प्राकृत निन्दत निठुर खल छल मलकी खान ॥ वार्ता ॥ संस्कृत वारेकी रात्रिदिन आदर युत प्रशंसा करते भाषावारेको वदन न खोवैहै तथापि संस्कृत वारे प्राकृतकी निन्दा करतहीरहैं ॥ दोहा ॥ अतिशयनिन्दा श्रवणसुनि पुनि प्रति निन्दैकोय ॥ घरसे चन्दन दारुहै पावक प्रकटत जोय १ निपट निठुरता निरखिकै व-दत विदित बरजोर । रेशम नरम रहीमकवि रैंचत कठिन कठोर २॥ वार्ता ॥ रेशमजानिते पपोले परमनरम लागैहै अरु वाही रेशम को तानैं तौ अंगुलीकोंदडारै ऐसे चन्दन परमशीतलहै दूसरेकी दाहको मेटिवेवारो परन्तु अत्यन्त परस्पर संघर्षणा कयें तौ आगि भबू-का प्रकटै ऐसे भाषावारे परम सत्पात्रहैं परन्तु अत्यन्त निरापराध निन्दा सुनिकै एक दो उत्तर सांचेसे ऐऊ सुनावै हैं ॥ दोहा ॥ कमलमध्य कोमल भयो महत ष-डांघ्रीकेद । कपट कलेवर कठिन करि कठत काठको छेद ॥ वार्ता ॥ षडांघ्रीनाम भ्रमरजोहै सो काठमें कठोर होयकै छेदडारै अरु कोमल कमलमें परमकोमलहोय कै रहिरहै जैसे सें तैसो होयकै ॥ तदुक्तंवृहद्चाणाक्ये ॥ श्लोक ॥ शठंप्रतिशठंकुर्य्यात आदरंप्रतिमादरं । त्वया पिलुञ्चितंगात्रं मयापिमुंडितंशिरं ॥ टीका ॥ जो कोई अपनेसाथ मूर्खता करिकै दुष्मनी करै तौ उसकेसाथ समझवानकोभी मूर्खबनकर दुष्मनी करना मुनासिब है ॥ जिसपरदृष्टांतोक ॥ वेश्याने राजा प्रति चुगली करिकै सुवाकेपंख कटवाये तब सुवा परम सज्जनहुतो तथापि

वेश्या को मस्तक मुड़वायके निकारी १ वार्ता ॥ ऐसे भाषावारे सत्पात्र काहूकी निन्दा न करें अरु इतनेपै कोई इनसों निरापराध खेचरीकरै तब येहू अपनी सज्जनताते सकुचायकै दोचार सांचीसी सुनावें परन्तु मिथ्या दूषण कदापि नहींदेवें ॥ कबितप्राचीन ॥ कसन न छोरछोर बसन उतारधरे जंघन उघारजल भीतरयों जाइये । सीसीसीसी करैं हरें कुंकुमादि कज्जरनलाय उर आप ताप दाप बिसराइये ॥ पतिके समान उपपतिकी सुरतिहोत बदन उदोत मोद मनको बढ़ाइये । ब्याकरणवारे मतवारे कहा जानेंवारिबारिजो नपुंसक तो बारिज नचाइये ॥ वार्ता ॥ स्त्री रतिसमय पुरुष पै जायकै जेजे हाव भावादि चेष्टाकरै तेतेचेष्टा जल में प्रवेश होते करने लगजायहै कौनकौन चेष्टा कही प्रथम तो नीवीबन्धनादि कंचुकीकी कसैं खोलडारै दूसरे सर्व पोशाक उतारिकै एक वस्त्र परिधान करै तीसरे जंघा उद्घाटनकरै चौथे अंगअंग स्पर्शकरै पांचवें उरउरोजादि मर्दन करै छठे रोमांचादि सात्विक बतै सातवें सीत्कार शोरसुनावै आठवें नाशास्किु रावै नवें भ्रू भृङ्गादि चेष्टाकरै दशवें कुंकुम कज्जल केश पाशादि अस्तव्यस्त शिथिलहोयँ अरु बदनचंद्र की शोभाबढ़ै ग्यारहवें तनमन की तापटरै अरु मोद मानै ऐसेपतिसंग सदृश जलउपपति संगरति चेष्टावर्तै है वा परम पुरुष रूप पानीको बारिनाम बतलायकै नपुंसक ठहरायो परंतु इतनोनहीं बिचारतेकि तौसह-

मानसिकयातेइच्छामें आवे जामारग चलावैक्योंकि सर्व ब्रह्मांडके एक यही जगातिहेतहां कोई कहैकि ब्रह्मांडकी उत्पत्तिमें विनासेवकक्रोसेपहुंचतेहोयगो कहीमन तो महा पुरुषार्थ लिये प्रबल है जाकी गति विरुद्धते बलाहकते वायने हनुमानतेहू विशेषहै तबलो ब्रह्मांडभरे में अकेलो अनेक रूपते पहुंचेहै देखो भगवद्गीतामें लिखोहै कि ॥ श्लोक ॥ चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबल वहृढं ॥ वार्ता ॥ मनउपरांतचपलब्रह्मांडभरेमें दूसरो नहीं है ॥ दोहा ॥ मनके हारे हारिहै मनके जीते जीत । बंध मुक्तको पाइये मनहींकी परतीत ॥ वार्ता ॥ काया वाचा मनसा तीन प्रकारहैं तथापि मानसिक तीनोंमें प्रबलहै दोहा ॥ देहकृत्य कछुकृत्य नांहि मनकृतकृत्य बखान । जिन करते तियकुच गहे मात पयोधर पान ॥ श्लोक ॥ नशरीरकृतंपुंसांमनस्तुकृतंकृतं । येनआलिंगिताकांता तेनैवालिंगितासुता ॥ टीका ॥ शरीरके किये जो कृत्यते कृत्यकी गिनतीमें नहीं अरु मनके किये कृत्य सो सब सत्यहैं क्योंकि शरीरके किये कृत्य सत्य होयतो कन्या को छातीसों लगायके मिले नहीं ॥ दोहा ॥ साधनकरें अनेकविधि देत देहको दंड । सुंदर मन भटकत फिरत सप्तद्वीपनवखंड ॥ वार्ता ॥ ऐसो महा प्रबल पुरुषार्थी भगवतरूप जो मन ताको व्याकरणवारे खंड बुद्धि जनाने ठहरावैहैं परंतु इतनो तो बिचारैं कि जनानेके कहूं संततिभी भई है अरु याके तो मनोज सारिखो त्रैलोक्यविजयीपुत्र विद्यमान है मानसीसृष्टि सुनीहै सो

नपुंसक कैसे होयगो परंतु भाषा वारेको सांची सीख
सुनिकैतौ पड़ै पलीते आग अरु तुमरैं आप व्याकरण
वारेको उन्मत्त ठहरायकै ठट्ठाकरत डोलें ऐसे कपटके
पुतलाहैं तब बोले हमने कब ठट्ठाकियो तोतें वताणनो
श्रवणके अधिकारी नहीं अधिकारीतो प्रथमके आये
वैसे चाहिये॥ तहांउत्तर॥ हमने कैयेबेर तुमसे कृतघ्नोंके
मुखतें सुनाहै॥ श्लोक॥ प्राचीन॥ नपुंसकमितिज्ञात्वा
प्रियायैप्रेषितंमनः तत्तुतत्रैवरमतेहतःपाणिनिनावयं॥
टीका॥ हमने व्याकरणवारेके वचनपै बिश्वास राखि
कै मनको नामर्द समझिकै प्यारीके पास भेजो सो वह
तौ आपही रमण करिवे लगगयो तब जानी कि इन
व्याकरणवारे पाणिनेयके वचनको प्रमाण करेंगे
वे हमारी नाईं ठगायँगे यह श्लोक कभी सुन्योहै कि
नहीं तुम्हैं इसको ग्यानहै तब बोरे कि यहतो घनेके
मुख सुन्यो अरु हमैं भी आवैहै तब हमारे कहनेपै क्यों
आगलगी तब कही कि चूके तो कान पकड़ो क्योंकि
मर्दहै वाको घड़ीभरमें नामर्द कहि बतलावै अरु वाही
को पीछे कोई बेर मर्दभी कहै ऐसेसर्वथा मदोन्मत्तसो
अप्रमाणी बातैंहैं॥ वादीवचन॥ तुम कहोहो कि व्याक-
रणवारे वाहीपुरुषको मर्दकहैं अरुवाहीकोनामर्दकहैहैं
यह सर्वथा मिथ्याहै कौनको कह्यो सो बताओ॥ उत्तर॥
तड़ाग शब्दहै जाको नपुंसकभी कहैहैं अरु पुल्लिंगभी
कहैं॥ श्लोक॥ पद्माकरस्तडागोस्त्री इत्यमरः निषिद्ध
लिंगशेषार्थं। निषिद्ध लिंग शेषके अर्थहै ऐसेही देवता

कोमर्दभीकहैं अरुनामर्दभी कहैहैं याकोअकलकोपेन-
कलगायके विचारदेखिये एकपुरुष मर्द अरु नामर्द
दोऊ तरहकोकौन रीतितेहोयगो कदाचित ऐोयवितै
बीचकोभयो नामर्दको मर्दभी होयसकै अरु मर्दकोना-
मर्दभीहोय परन्तु घनरमनाम पानीताको स्त्रीपुरुष अरु
नपुंसक तीनि तरह को मानैहैं यातें इतनो अंधेर तो
संस्कृतवारेके घरसेंधकै और भाषावारेतो भूलिकैं मर्द
को नामर्दनकहैं अरु कोऊ भूलिकै कहिदेवैतो जरूर
शस्त्रचलै यामें संदेहनहीं क्योंकि भाषावारे मतकचिनमें
नपुंसक शब्दमात्रको गुजारानहीं तब तौ भाषावारे
काविनने नपुंसक लिंगनहीं राख्योहै तब पापा वाईको
राजजानिकै संस्कृतमें आयसमानो क्योंकिवामें मर्दको
नामर्दकोभेदनहीं दोऊको शकलै समझैहैं ॥ वादीवचन॥
तुमने कहीकि संस्कृतमें मर्दको नामर्दकहैहैं सोयामेंका
बिगड़ो काहेतेकतुनामर्दतो होतेहीनहीं यहतो व्याक-
रणामें ऐसेही वाक्यविलास सिद्धहोयहै ॥ उत्तर ॥ बीबी
बोली मियांनेभाकोबुरीबुरी गारीदीं मियांलीलयहतो
वाक्यविलासहैहमबीचवाजववसमारेंगेतैसे॥ दोहा॥ प्रकट
बचाये प्राणको कातर परमप्रवीन। यथातुरकने तीय
को वाचकबदलालीन १ लुगाईको जबरनेगारीदी तब
बाचक तरवार मारी तैसे तुम्हारो मत है भाई तुमने
कही सोभाषामें का शब्द सिद्ध न होवैहै परंतु मर्दको
नामर्द अरु नामर्द को मर्द सिद्ध होय ऐसा गबोला सो
संस्कृतमेंही धकै भाषावारे तौ नपुंसक को नामही न

लेवैं॥ दोहा ॥ मूढ करै मदपानको बोलै बदन कुबाच।
शक्र श्वान इकसूत्र सँग गुहै सुमणि मधिकांच॥ वार्ता॥
जैसे कोऊ महामूर्ख मदोन्मत्त होयकै वाच्यावाच्य
जल्पै और चिन्तामणि रत्नमाला में कांचकी पोत
पोय पहिरै तैसे व्याकरणवारेने सर्व देवाधिपति सर्वो-
परि जो इन्द्र और सर्वते नीचश्वान दोइ एक पांतिमें
ऐसे एक सूत्रमें गुहे कांचमणिकी नाईं॥ तब वादीबोले॥
ऐसे मिथ्यादूषण क्यों देतेहो कौन ठौर में इन्द्र अरु
श्वान एकसूत्रमें पोहे सो बतावो॥ तहांउत्तर॥ भाईजी
मिथ्या दूषण देनो तौ तुम्हारेही विभाग आयो है
हमतौ परायेदूषण देखैंहीनहीं अरु तुम उपजिकै दू-
षण कहावो तौ सहस्र दूषण सांचेदेखैं तब एक दूषण
परम सकुचायकै कहैहैं देखौ अनुभूतिस्वरूपाचार्यने
सारस्वतमें सूत्र लिख्योहै कि॥ श्वनयुवनमघवनशब्दा
नां॥ यह सुनिकै तटस्थ होय रहे प्रत्युत्तरनसूझो अरु
बोले यहतौ सत्यहै इतनो अंधेरतौ भाषामें नहीं परन्तु
क्षुद्र भाषा सो भाषा अरु व्याकरण तौ सर्वशास्त्रा-
लयको दीपकहै॥ तहांउत्तर॥ हमकबकहैहैं कि दीपक
नहीं है दीपक है तब तौ ग्रदानीचे अंधेरा रहैहै और
दीपककी रक्षक भाषा फानूसहै जाको निरंतर निंदो
हौ अब तुम्हारी बल बुद्धिकी बडाई कहांलौं करैं परंतु
दोहा॥ जीवन मन क्लीवन कहै श्वानमघ्र एकत्र।
सो प्राकृतको परिहरै यामें कहा विचित्र॥ टीका॥ जी-
वन नामजल और महा समर्थ ऐसोजोमनइन दोऊको

परम पुरुषार्थ प्रजामें प्रकटहै परन्तु दोउनको व्या-करण वारेने जन्म जनाने लिखेहैं या वातको अकल की ऐनक लगायकैहियेकी आंखिनसोंहेरिये जिन्हों के घरमें इतनोवड़ो अंधेरहै वे भगवत् भक्तकी भाषा निंद यामें का आश्चर्य॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराठौरवंशायतंसश्रीवलवंतसिंहभूपालाज्ञया कविटीकारामेणकृतायांभाषामृततरंगिण्यांभाषावाहुल्यताबर्णनं नामदशमस्तरंग: ॥ १० ॥

दोहा ॥ श्रीहरि हर गुरुपद कमल वंदोमन वचअंग। अब एकादश अतिसरस वरणौं विमलतरंग॥वादीवचन॥ दोहा ॥ भाषा वारे भजिचले व्याकरणीके वाद। ज्यों धीमरकी थाकते पड़ पलातजलजाद ॥ टीका ॥ भाषा वारे आप अपनी ठौरपै गालभलेही वजाया करो परंतु व्याकरणवारेके अग्र तौ पलायमान होतेदीखैं जैसे धीमरकी थाकसों जलजाद जंतु पलायँ यारीति तेभागते नजर आवैं॥ तत्रोत्तर ॥ भाईजी भाषावारेभग-वतजनतौ थोड़ी बहुतसज्जनता देखैं तातें वाक्रविलास करैहैं और विमुख वितंडावादीतें याकेलिये टालो देजायहैं ॥ दोहा ॥ तुलसी तजौ अंगार जो द्रुतहरोको संग॥ सीरी सिसकारे करै तातेदाजै अंग १ सज्जनते संधानिये व्याहबैर अरुप्रीति॥ तुलसी तनकन छांड़िये अपने कुलकी रीति २ बढ़े वितंडावादबहु उरमें अधिक अनीति। उपरटंगड़ी आनिकै जड़दरशतनिज जीति ३॥ छंद ॥ गरीमा मैंनेमल्ल पछाराऊपरलैकैघम ॥

वोरिखिसियाना जमीनदेखै आसमान देखैंहम १ ॥दोहा॥ सूझत सारासारनहिं मानतहै नमनाक ॥ ऐसे बंचक बादको तजदे तौमतलाक १ ॥ वार्ता ॥ सत्पात्रके संगमें प्रीति फलदायक होय यामें कौन बड़ीबात है परंतु बैरकरै वह भी फलीभूत होवै अरु बादकरै तौभी बादेबादेजायते तत्त्वबोधः अरु बैर करै तौ देवीदासजी ने कही है कि बड़ेनके बैर को बिचार देखो भली भांति नीचनके नेहकी बराबरी तऊ करै दोहा ॥ सज्जनहोवै शत्रुतउ प्रकटन देवैपीर । सोखैतउ शीतल करै जैसे नीर समीर ॥ तदुक्तं पंचोपाख्याने ॥ श्लोक ॥ पंडितोऽपिवरंशत्रु र्नमूर्खोहितकारकः ॥ वानरेणाहतोराजा विप्रश्चौरेण रक्षितः १ ॥ दोहा ॥ रीझै खीझै एकसे तुलसीभजो निशंक । खीझैदीन्हो अमरपद रीझै दीन्होलंक ॥ क्रोधोऽपि देवस्य वरेणतुल्यः ॥ वार्ता ॥ सत्पात्र पुरुषकाहूते शत्रुतान राखै अरु कोऊ निरपराध बैर बांधै तो उनते चंदन घर्षणान्याय येभी शत्रुतातौ सांची न राखै परन्तु शत्रुता भासराखै सोभी कैसी शत्रुता भासराखै कि जामें शत्रुको बिगाड़ नहोवे अरुपरिणाममें कल्याण होय जैसे भाषावारेने निरपराध जिजतिंदा सुनिकै पीछे संस्कृतकी निन्दा कीन्ही परन्तु बिचारिकै देखो तौ केवल प्रशंसारूप सांची२ कहीजामें निन्दाको लवलेशमात्र नहीं क्योंकि उन्मत्तकी नाई मर्दको नामर्द अरु नामर्दकोमर्द लुगाई को पुरुषअरुपुरुषको लुगाई ऐसे अस्त व्यस्त जबातको

बतलावनो भलेलोगको कामनहीं ऐसेहितकारी शिक्षा बचनको उराहनो सोदियोताको कोऊअपनीमूर्खताते निन्दामाने तौ भलेहीमानो निन्दातौ मिथ्यादूषणदेवे सो कहावै है ॥ दोहा ॥ खरानाहा खोटेबिनफिरआया पुरमाहिं । खोटेको खोटाकहै यामेंनिन्दानाहिं॥ वार्त्ता ॥ याते भाषावारेने सांची २ शिक्षादीन्ही जामेंद्वेष को लेशनहीं याते दोनादुष्टमनकी बलिहारीहै और खल सासरा निर्दूषित निज वाणीजो भाषावाणीकी निंदा चूकैनहीं यातेखलसज्जनमें महदांतरहै ॥दोहा॥ सज्जन जनकी परखहै मननहिं आनतसंश। काटेफाटे छेदिये बाजै मधुरो वंश १ सज्जन गुणको नातजै दयेसज्जन को त्रास। काटेपील जराइये ऊखन तजत मिठास २ खूंदतखूंदत जारियत करत सैल दुखदेत। साकर मिसिरी मधुर मधु ओलाहोत सुपेत ३ ॥ वार्त्ता ॥ ऊखको काटै पीलैजरावै खूंदै दूंदै चासनी चढावै त्योंत्यों गुड राव खांड मिश्री ओला उत्तमोत्तम रसदायक होवै ऐसे सज्जनको ज्यों ज्यों गासै त्योंत्यों भाषावारे भक्त की नाईंगुणदाता होवै॥ दोहा ॥ कनकवनक श्रीखण्ड शुभ सज्जन तापत त्रास। त्यों २ भास सुवाससुख निज गुण प्रकट प्रकास ॥ वार्त्ता ॥ कनकनाम सुवर्ण वनक नामकपास श्रीखंड नाम चंदन अरु सज्जन पुरुष इन चारहु के एकसे स्वभाव हैं क्योंकि इनको ज्यों ज्यों त्रास देवै त्यों त्यों ये निज गुण को प्रकाश करें परन्तु पीछे दुर्गुण कदापि नहीं दरशावें ॥ दोहा ॥ सरस

भक्त विपरीत ह्वै तउ सरसत्व नजाय । जोविपर्य्य ह्वै खाक्षरा राक्षस से दरशाय ॥ वार्ता ॥ सरस भक्त लोग कोई प्रकारते विपरीत होजायँ तथापि सरसत्वता को छांड़ैं नहीं जैसे भाषावारे प्रतिपक्षी बनके संस्कृत की निन्दा करनेलगे तथापि सौजन्यता न छांडी अरु हितोपदेश सदृश सांची सांची कही और खल साक्षरा विपरीत होयँ तो साक्षात राक्षस होजायँ याते खलको अरु साधूको महदांतर समझिये ॥ श्लोक ॥ विद्याविवादायधनंमदाय शक्तिःपरेषांपरपीडनाय । खलस्यसाधोर्विपरीतमेतत ज्ञानायदानायचरक्षणाय ॥ वार्त्ता ॥ खलविद्या पढै तौ विवाद करिकै दूसरेको मानघटावै अरु वहीविद्या सज्जन पढैतौ ज्ञान बैरागादि शुभगुण की पुष्टि करिकै आपको अरु परायो कल्याण करै ऐसे खलको धनप्राप्तहोवै तौ वेश्यासंगमें मद्य मांसादि भक्षणमें लगायकै नरकमें चल्योजाय संगीसुद्धा अरु साधुको धन प्राप्तहोय तौ नानाप्रकार के दानधर्म्म करिकै दुर्बलनको पोषै ऐसे खलको सत्ताप्राप्त होवै तौ पिंडारा की नाई जीवन को सतावै अरु साधुको सत्ता प्राप्तहोय तौ अनेक दुर्बलकी रक्षाकरै ऐसेसाधु को अरु खलको महदांतर जानिये ॥ दोहा ॥ सज्जन धेनु समानहैं तृणनीरे पयदेत । काकोदर अरु कुटिल नर अमृत विष करलेत १ दीनहीनता ना तजै सुन्दर वडे शरीर । मस्तक छेदै वीरको अंत वीरकोवीर २ वार्ता ॥ देखौ दीनपुरुष को अंग वृद्धिपावै तौभी हीन

होजाय जैसे भाषावारेने प्रथम संस्कृतकी बहुतप्रार्थना करी तथापि प्राकृत निन्दा न तजी और वीर पुरुषको मस्तक छेदनकिये तथापि वीरवन्योरह्यो जैसे भाषा वारे संस्कृतके निन्दकभये तौहू अन्यथा वचन नहीं कह्यो तबतौ प्रथम कहि आये हैं कि पंडितोपि वरं शत्रुर्नमूर्खोहितकारकः ॥ वार्ता ॥ खलसाक्षरी को भाषा वारेपंडित मूर्खजानिकै सन्मुख चर्चा नहीं करै हैं यामें दूसरो विचार जनि जानियो ॥ वादीवचन ॥ तुमनेअपने मुखसों भाषावारेको पंडित ठहरायो यामें कछुलज्जा भी आवैहै क्योंकि विनासंस्कृत तौ पंडित तीनकालमें नहोवैहै याते तुम भाषावारे मूर्खको पंडित कहौ यह सर्वथा मिथ्या है ॥ उत्तर ॥ भाईरे पण्डिताई तौ सौ-जन्यतामें रहीहै अरु संस्कृत प्राकृतको अहंकार करै सो मिथ्याहै क्योंकि पढिवेकोतौ तोताहू पढिजायहै सो कहा पण्डित होजावैहै देखोयापै अकबाजी को साक्षीहै कि ॥ दोहा ॥ पढेन पीतम पाइये मतकोइला-वोमास। अक्वा खांड़ा हेमका रण नहिं आवैकाम १ चौदाचार अठारहू नवषट पढिकैतोल। तुलसीहरिको भक्तिविन ज्यों पक्षी चंडोल २ तार्किक घटपटको रटै शाब्दिक खफकछ जाल। तुलसी हरिकी भक्ति विन पंडित खंडित मान ३ पढना गुणना चातुरी कारीगर को काम। घरघर महल बनायकै बसे न राकोधाम ४ वार्ता ॥ वादीवचन ॥ तुमसों कितनीवेर कहिचुके कि हम प्राकृत भाषातौ कानसोंही नहीं सुनैं फेरयाको प्रमाण

दे हो सो क्यों भाषा तो गूढीबाणीहै याते आज्ञपोके जानिकहियो नहींतो हमको प्रायश्चित्त करनो पड़ैगो यातेभाषा देनोहोय तो संस्कृत देवो॥ उत्तर॥ श्लोक॥ गर्वंनोद्वहतेननिन्दतिपरं नोनिष्ठुरंभाषते। प्रोक्तंकेनचिदप्रियंचसहते क्रोधेननोलिप्यते॥ दृष्ट्वाशास्त्रमनस्परं परकृतं संतिष्ठतेमूकवत्। दोषानूछादयते गुणानिकथयते पांडित्यसष्टौगुणाः १॥ टीका॥ प्रथम गर्वनकरै दूसरे काहू कोनिंदै नहीं तीजे कठोर वचन कदापि न बोलै चौथे कोइ अप्रिय वचन कहै वाको सहिलेवै पांचवें क्रोधाविष्ट न होवै छठेंदूसरेकी काव्यअशुद्धदेखैसुनैतहां मूककीनाई चुप ह्वैरहै सातैंपरके दोषढांकै अरु गुण को विस्तारकरै ऐसे आठगुण सबजहोयँ तब पण्डित कहावै कि संस्कृतपढै वाको पण्डित कहनो ऐसोनियम नहींहै क्योंकि सज्जनता बिना संस्कृत पढै भी तो सा-क्षरा कहावैहै जो विपरीतभयेते राक्षस ह्वैजाय और प्राकृत भाषावारे भक्त लोगनमें ये आठहू गुण प्रकट दरशैंहैं क्योंकि इनके हृदय सरसहैं सो बिपरीत भये परभी सरसता नहीं तजैं याते सत्पात्र पण्डित इनहीं को जानिये और प्राकृतमें प्रपंच अरु परमार्थ दोऊ प्रत्यक्ष सुधरै हैं इतनो बड़ो गुणतजिकै निन्दाकरै वा दुष्टको तौ सर्पके समान जानिकै परित्याग करनो उचित है॥ छप्पै॥ करिगुण अमृतपान दोष दुखविष-हि समर्पै। बंक चलन नहिं तजै युगल जिह्वा मुख थर्पै॥ तकै निरन्तरछिद्र सुयश परदीपन रुचै। बिन

कारण दुखदेत वैर विष कबहुं न मुचै ॥ नरमौन मंत्रते होत नश संगतिकीन्हे हानहै । तिनहि तजहु गतसरण दूरते दुर्जन सर्प समानहै ॥ वार्ता ॥ ऐसे अमक्तिकै खल साक्षरी सों भाषावारे दूरहैं ॥ यादीवचन ॥ इनभाषा केबचन तौ कदापि नहींमानैं याते संस्कृतभाषी कहा तब प्रमाण करैं ॥ तदुक्तंचाणाक्ये ॥ श्लोक ॥ दुर्जनःपरिहर्तव्यो विद्ययाभूषितोऽपिसन् । मणिनाभूषितःसर्पः किमसौन भयंकरः ॥ टीका ॥ विद्यावान् दुर्जन होय तो उससे बचकर दूर रहना चाहिये अर्थात विश्वास नहीं करनाचाहिये जिसपरदृष्टांत कि जैसेसर्पमणिकारिकै भी सुशोभितहै परन्तु उससे डरतेरहना चाहिये क्योंकि सर्पहै अरु मणिधारीहै तौभी प्रण भयंकर क्या नहीं होताहै अर्थात होताहै जिससे विश्वास दुर्जन पंडितका अरु मणिधारी सर्पका नहीं करना चाहिये सज्जन पुरुषोंको ॥ दोहा ॥ नहीं सर्पको मुखरकत नहींकलेवर साथ । टीकस दुष्ट स्वभावयह निजपर देत वहाय १ सुन्दर दुष्ट स्वभावहै अवगुण देखै आय । जैसे चींटी महलमें छिद्रताकती जाय २ परको काज बिगारदै आपु न होहु न होहु । यह स्वभावहै दुष्टको सुन्दर तजिये सोहु ३ बीछूकाटे दुखनहीं सर्पडसे पुनिआहि । सुन्दर जो दुख दुष्टसँग सो कछु कह्योनजाहि ४ गज मारै तौ नाहिं दुख सिंहकरै तनभंग । सुन्दरऐसो कष्ट नाहिं जैसा दुर्जनसंग ५ सुन्दर झंपा पातले करवत लीजैशीश । पैदुर्जनके संगते राख राख जगदीश ६

सुन्दर सब दुख तौलिया घालि तराजूमाहिं। पै दुर्जन के संगदुख तासम कोऊनाहिं ७॥ चौपाई॥ वरभलवास नरक करताता। दुष्टसंगजनिदेहु बिधाता १॥दोहा॥ दाहजरे दुखहोत है ऊपरडारे नोन। ताते अति दुख दुष्टसँग तीसरासहैसुकौन १ कंटक बहुकवलौं चुनैताते पगारखधार। ऐसेधरवर मौनको खलसमुदाय निवार२ वार्त्ता॥ मार्गमें कंटक चुनेते नहीं पारपड़ै अरु पगारखी चढ़ायले तौ खुशीसों चलाजाय ऐसे कलिकालमेंयदि किंचित संस्कृत पढ़िके वितंडावाद करिबेवारे तौ असंख्यहैं तब कौन कौनते झगड़िये यातेमौन पकड़ि के किनारोखैंचि बैठिये क्योंकि यापै सत्पुरुषके वचन हैं कि मौनंसर्वार्थसाधनं और ऐसेभी कहीहै कि॥दोहा॥ हारेको तौ हरिमिलैं जीतेको यमराय। अंबरीष ब्रत भंगको दुर्बासा ऋषि आय १॥ वार्त्ता॥ प्रत्यक्ष को प्रमाण कहा देखो माधवदासजी के प्रतिपक्षी पंडितादि जीतिबेवारेको कौन गतिभईहै॥ सवैया॥ समझै नहिं सत्य असत्य कछू निजहानिरुलाभ को नाहिं निहारै।सज्जनता सपने न मिलै कटु अप्रियबोल अनंत उचारै॥ सावन अंधज्यों हेरैहरचो नहिं देश निदेशरु कालबिचारै। ऐसेअजान अलायकते हमजीतेउहारेरु हारेउहारे १॥ टीका॥भाषावारेसबसांची सांचीकहै हैं परन्तु वाको सांची नहीं समझै अरु आपकेवलविपरीत बोलै तथापि निजदोष नहीं निहारै और आपके लाभालाभमें भी दृष्टिदेवै नहीं अरु जिनमें सज्जनता

तौ सपनेमें भी शोधी न मिलै और दूसरेकी आत्मा जरिजाय या रीतिके कर्या कटु वचनबोलै और सावन के अंधकीनाईं भगवत आज्ञा वहिर्मुख होयके देश काल बिचारे बिना युगत्रयकी नाईं कलिकाल में केवल संस्कृत प्राधान्य कियेचाहै जैसे वर्त्तमान के राजाको छांडिकै संकट निवारणार्थ सगरप्रियव्रतादि राजाकी दुहाईदेवै ऐसे चतुरा नकांधनालायकसाक्षरा महापशुहैंतौ सज्जन पुरुषहारे अरुजीतेदोऊनातते हारि मानैहैं नीच महापशु क्योंकह्यो काहीपशुतौ हितअन- हित पहिंचानैहै अरु इनको इतनो भी ज्ञान नहींयाते और पशुतौ कालपाय बोलैहै यहसदा झगड़तोडोलै है और पशुको तो शकुनलेवे याको अपशकुनमानै पशु भारबहै यह औरको दहै शूकर पशुग्राम शुद्धकरै यहग्राम बिगाड़ैहै गर्दभजाति पशु शीतलाके अर्थआवै है यह शीतलाकी पूजा लोपिदेवै है॥ दोहा ॥ तनका धूर सुख परतही पशु त्यागतहै हाड़ । धिकधिक धूरी सहतखल गहन गहतहै गाड़ १ संस्कृतवारेकोसरै भाषा बिना न काज । भाषाहीते भक्तकी राखैं रघुवरलाज॥ वार्ता ॥ संस्कृतवारे प्राकृत भाषा नहीं बोलनेपावैं अरु प्राकृतवारे संस्कृत नहीं बोलैं ऐसे प्रण पूर्वक प्रतिज्ञा करै तौ संस्कृतवारेको प्राकृतबिना कदापिनहीं निवहै अरु प्राकृतवारे को संस्कृत बिना कछु अटकै नहीं या बातको कोई मत्सरी नहींमानै तौ प्रतिज्ञाकरिदेखै याते कलिकालमें उभयलोक सुधारिणी भगवतआज्ञा

प्रेरित प्राकृत भाषाही निश्चय भई जानिये॥वादीबचन॥ दोहा॥ परिजनको पालो प्रकट पढ़ि प्राकृत जगमाहिं। जन्म परण अरु मरण तौ देवगिरा बिननाहिं॥वार्ता॥ भाषापढ़िकै भदेशी लोग प्रसन्नकरौ और प्रपंच भलेहीपालौ परन्तु जन्मपरण मरणादि अड़तालीस संस्कार तौ संस्कृत बिना तीनकालमें सुधरैं नहीं तब परलोक सुधारनो संस्कृताधीन ठहर चुको तब भाषा वृथा भई॥ तद्दांउत्तर॥ दोहा॥ तीन युगनमें त्रिदशकी गिराधीन संसार। कलिमें भाषा कल्पतरु प्रकटलगावतपार १॥ वार्ता॥ तुमने कही कि जन्म मरणादि अष्टचत्वारिंश मुख्य षोड़श संस्कार संस्कृत बिनान सुधरैं सो ठीकहै परन्तु यहनेम त्रययुगकोहै वहां गर्भाधानादि षोड़श मुख्य संस्कार के नाम १ऋतुशांती २ गर्भाधान ३ पुंसवन ४ सीमन्तोन्नयन ५ अनवलोभत ६ जातकर्म ७ नामकर्म ८ निठक्रमण ९ अन्नप्राशन १० चौलकर्म११उपनयन १२ दोलारोहण१३ दुग्धपान१४ जलपूजा १५ भूम्यप्रवेशन१६ कर्णावेध१७विद्यारंभ१८ महाना१९समावर्त्तन २० बिवाह२१ प्रमशानसर्वसंस्कार नियमपूर्वक उत्तर कर्मांतर सर्वकरतेथे अरु कलिकालमेंतौ मुंज बिवाहादि उत्तकर्म करैहैं तौ कहोजी अड़तालीससैं कलि प्रवेशहोतेही तीनकर्मरहे तबचार लक्षबत्तीस हजारमें कितनेक रहैंगे सोकहो अर्थात्कलिमेंभाषा प्राधान्यहै अरुहालमेंभी ग्रामी त्रिवर्गमेंतौ ग्रामकूटक कुपढ़ ब्राह्मण जाने संस्कृत स्वप्नमेंभी नहीं

सुन्यो सो विवाहादि सर्वकर्म करावैहैं जाके मंत्र समेते हास्यआवै अबीरंच गुलालंच चोवाचंदन मेवच्च। फूलं पत्रंतथाधूपं नैवेद्यंकरभोजनं ॥ इतिमंत्र ॥ अथमुंजीमंत्र ॥ सावित्रीनेकात्योसूत ब्रह्मानेयांठीसजूत । सतसिलि कुटुमपेराईकांत हूजेबालकबिद्यावंत ॥ इतिमंत्र ॥ वार्ता॥ ऐसे मंत्र पढ़िकै जनेऊ पहिरायदेवैं वाको संस्कार में संस्कारमानिकै यामें शुद्ध संस्कृत कौनहै सो बतावो पर्त्ति भाषा रीति बीन्ही तिनकी नगर निवासी विप्र पंक्तिभोजनादि सम्बन्ध सर्वकरैहैं अब सांचीकहौ इन मंत्रन में कैसो शुद्ध संस्कृतहै और कितनेक विवर्ण में लुगाई गीतगायकै जनेऊ निवाह करावै हैं और ऐसे-ही महामूर्ख द्विजजाने संस्कृत की छाया न छुई ऐसे कुपढ़ क्रियाकरावैहैं जे इतनो उच्चारण करैं कि कर्त्ता सेकहैं संकल्पलेवो लियो स्यानाश पिंडकरो कियो स्यावाश पाणी मेलो मेल्यो स्यावाश चंदन चढ़ावो चढ़ायो स्यावाश अपसव्य करोकियो तब कहैं स्या-बाश अब कहो जी फकत स्यावाश मंत्रसों सर्व उत्तर कर्म हाल विद्यमान में करावै हैं परन्तु पितर मात्र मान्य करलेवे हैंकलिकाल जानिकै जो न मानकरते तौ प्रेतहोयकै घूमते परन्तु घूमैंनहीं ताते जानीगई कि कलिकालमें जद्वातद्वा भाषाहोते जन्म मरणहू सुधरैंहै अबकहौजी संस्कृताधीनजन्मपरणमरण कहां रह्यो यहां तो ऐसेसमझिये कि जद्वातद्वाभाषा मान्य करिकै जन्म मरण सुधरैहैतो शुद्ध छंदोबद्ध वेदांग

भगवत गुण युक्त भक्त जननको भाषाते सुधरैयामें कहा संदेह॥ तबवादीबोलेकि ॥ ऐसेजहांतहां भाषाते तौ ग्रामीद्विज के संस्कारहोय हैं और ग्रामीकेही पितर भाषामान करेहैं अरुहमारे नगर निवासीमेंतौ बिना श्रुति स्मृति एकभी कर्म सिद्धनहोवैहैं हमऐसी तुच्छतर भाषाते कछुकाम न राखैं ॥ तहांउत्तर ॥ भाईग्रामी की अरु तुम्हारी जातिएकपंगतिएक कन्या देनो लेनो परस्पर एकतबद्विधा कहांरही हालकालको प्रवेशमात्र भयोहै अरु परीक्षितके वर्षबाकीहैं ताते जातभरेमें सौ पचास संस्कृतते कर्मकरावोहो परन्तु धीरे धीरे सर्वके कर्म भाषाधीन भयेजायहैं और हालतौ तुमकहोहो किहम भाषा नहींमानैं सो तुम्हारो कहनो वृथाहै जोभाषा न मानो तौ जिनजिन ग्रामीको कर्मशुद्ध संस्कृततेनभयो उनते संबंध न चाहिये क्योंकि॥ श्लोक ॥जन्मना जायते शूद्रःसंस्कारातद्विजउच्यते॥ अर्थात भाषातेभये संस्कार मानौहौ यातेवृथा अभिमान तजिके भाषामानकरनो सलाहहै क्योंकि भगवत आज्ञाहै वाको तजिकेबिमुख होनो योग्यनहीं और परमेश्वर प्रीत्यर्थ वृथाटेकतजि-के विचार देखिये कलिकालमें भाषाद्वारा अनायास ते ज्ञानभक्ति बैरागपायकेही जड़जीव भगवत पदको प्राप्तहोय यावातश्रेष्ठकि भाषाते तौ बिरोधराखे अरु संस्कृत पढ़वेकी श्रद्धानहीं जातेमूर्ख रहिके सारासार समझेबिना रौरवादि नरकमेंजाय सोठीक सांचीकहौ तुम्हैं इष्टदुहाईहै ॥ तबवादीबोलेकि ॥ हमैंतौ नरकपड़नोहो

कबूल परन्तु भाषाकी तौ भनकमात्र न सुनैंगे अरु न मान्यकरैंगे ॥ उत्तर ॥ भाई तुमयदि किंचित देववाणी पढ़िकै इतनोघमण्डराखौहौ वे देव यक्ष गंधर्व विद्याधरादि पितर पर्य्यंत तौनर शरीर अरुनरको प्राकृत भाषाको अभिलाषैं सो तौ सर्वएकहौ तवतुम कौनके भरोसे भूलेहौ ॥ तववादीबोलेकि ॥ देवताको कछु प्रमाण नहीं देवइच्छाते होयँगे परन्तु तुमने कहीकिभाषाकी इच्छा पितरहू करैहैं यहवात सर्वथा मिथ्याहै पितर तौ शुद्ध संस्कृतके इच्छवे वारेहैं क्योंकि ऐसे लिखै हैं कि पितराःशब्दमिच्छंति भावइच्छंति देवता ॥ वार्ता ॥ देवताजोहैं सोशुद्ध अशुद्धभाषा अथवा संस्कृतमें स्तुति करै अरुअंतःकर्णमें भावहोय तौ देवता मानकरलेवैं क्योंकि देवमात्र भावके इच्छकहैं याते परन्तु पितर तौ शुद्ध संस्कृत पदके इच्छक हैं अरु वामें भी यदि किंचित ह्रस्व दीर्घ अशुद्ध उच्चारण सुन पावैं तौ निराशापितरोगतः ॥ वार्ता ॥ निराश होयकै फिर जायँ तौ कही जी संस्कृत में किञ्चित अशुद्ध सुनेते निराश होयकै श्राद्ध सामग्री छोड़िकै चलेजायँ तवम्लेच्छ मिश्रितभ्रष्टभाषाके इच्छनेकोलेखोहीकहा ताते तुमने कही कि पितरहू भाषामानै हैं यहवातवृथा वृथा अरु फिर वृथा ॥ तहांउत्तर ॥ भाईजी कोऊराजमें ते पट्टा परवाना लिखावैहैं परन्तु जहांलों खास दस्तखत मोहर न होय तौलों भूठेहैं अरुमोहर दस्तखतभये पैखरे पड़ेहैं क्योंकि मोहर दस्तखतहै सो सार जीवनहै

ऐसे पितरको प्रेतत्त्व निवारणार्थ अरु विष्णुलोक की प्राप्तिकेलिये वेदविधिपूर्वक गया श्राद्ध करै हैं परंतु भाषाशब्द सुनेबिना पितर कबूल न करै अरु भूमें यदि तुम सारिखे बडेबडे छहूशास्त्रके बक्ता हाथ बांधिकै गयावालके हाहाखाय अरु स्तुति करिकै कहैं महाराज प्राकृतभाषा में भया फरमायकै हमारे पितरको प्रेत योनि छुडावो अरु विष्णुलोक पठावो तब गयावाल पण्डितज्ञोसों कहैं कि तुम श्रुतिस्मृतिपढिकै पिताको प्रेतत्व छुडायदेवो तब पण्डित हाथ जोडिकै कहैं श्रुति स्मृति तो बेरबेरपढी परन्तु यह तो परम पुनीतप्राकृत भाषाकी इच्छा करैहै याते कृपाकरिकै भाषा सुनाइये ताते पितरको प्रेतयोनिछूटै ऐसे बडीबेरलों प्रार्थनाकरैं अरु मनमान्यो द्रव्यलेवै तबगयावाल चारछै अक्षर बिनाछन्दकी भाषाबोलैं तेराभया तेरे बापदादेकाभया सो इनभाषाके अक्षरनको प्रेत पितर महामन्त्र तुल्य मानिकै मस्तक पै धारैं अरु वाहीघडी प्रेतत्वतात्तजिकै परम प्रसन्न होते प्रभुलोकप्रति प्राप्तहोयँ तब प्रभुके पार्षद बिचारैं ये पातकी प्रथमहते परन्तु श्रद्धा सहित प्रभुप्रेरित भाषा सुनीहै ताते परम पवित्रभये आने दो आदरते लेवो सो वेधायकै लेजायहैं भाषाके प्रताप ते याते बिचारलीजै सत त्रेता द्वापरमें गयावालको कहूं भाषाभया बोलते सुनेथे परन्तु कलिकालको आगमन ज्ञानिकै श्रीपित्रेश्वर गदाधर भगवानने गयावाल को भाषाभया की आज्ञादीन्ही है सो भाषा सुनि सुनिकै

पितर प्रसाथा अद्यापि करैहैं जो नहींमानो तौ प्रत्यक्ष गया श्राद्ध करिकै अनुभव करलीजिये और भाषाको भगवतने मानो अरु भगवत आज्ञा तो तुम्हारे पिता प्र- पितालें साथेपै धारणाकीन्ही अब तुम भाषा न मानो तो कौन गिनती में होवाहो और पुरुषाने मानी अरु तुमनहींमानोहो याते वर्णसंकरत्व जाहिर होयहै और जाने पितरको प्रेतत्व मुक्तकियो अरु चारदिन पीछे तुम्हारो प्रेतपनो छुटावैगी और सर्वशास्त्रको रसरू अरु सर्वशास्त्र जाके द्वारा पढेजाय और यहलोकपर- लोक जाते दोऊलोकसुधरैं और कैसोही मन्दमतिहोय परन्तु वाकोभी अनायास बोधकी कर्त्ता और सहज में पढीजाय सर्व सद्ग्रन्थ को सारे सरलसूवी भगवत आज्ञा और संस्कृतादि सर्ववाणीको कारणरूप ऐसी सर्व शिरोमणि कल्पलताभी नरको प्राकृतभाषा नर देहपायके नरभाषाकी निन्दा करनो तौ महा कृतघ्नी क्रूर कुटिल नालायकको कामहै और कलिकाल में भाषाको चमत्कार तौ देखो कि लघुआसन में विना पढे आसकूटके ब्राह्मण फक्त व्यावास मन्द जहांतहां भाषातेंक्रिया ठौरठौर करायदेवैहैं परन्तु भगवतआज्ञा जानिके मान्य करलहैं परन्तु प्रेतहोयवेको भूलैंनहीं तौ भाषाग्रंथहै सोतौ वेदके षडंग शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्ति ज्योतिष छन्दादि पिंगल के अनुसार भये हैं याते इनतेजन्म परण मरण सुधरै यामें कौनसन्देह और संस्कृततेही जन्म मरण सुधरतो होयतौ पढे पण्डित

प्रेत न भये चाहिये और व्याकरण पढ़ते परलोक सुधरतो तौ शंकराचार्य यों क्यों सिखादेते कि प्राप्ते सन्निहितेमरणे नहिंनहिं रक्षतिडुकृञ्करणे ॥ वार्त्ता ॥ संस्कृततेही क्यों न मरण सुधारले गोबिन्द गोबिन्द भजनो तौ भाषावारेको कामहै परन्तु भाषाहीते सर्व सुधरैहै अरु वाहीको निन्दा करनो परममूर्खताहै और तुमकहौहो कि हम भाषाकर्त्ताकीसौ निन्दा नहींचूकैंगे तौ अँगरेजलोगननें श्रुतिस्मृति आदि बड़े२ सिद्धांतग्रंथ की वार्त्तिक भाषा लिखाय लिखायके प्रवर्त्तनकीन्ही है सो उनके समस्त गायकें मनाकरौ अरु निन्दौ सो खबर पड़ै ऐसे सर्वग्रंथकी भाषा करते गुणत्रय में सुनी होय तौ कहौ परन्तु कलिकाल में भगवत आज्ञा है याते कोई अपनो श्रेयचाहौ तौ प्राकृतभाषाको अनादर भूलिके जिनकरियो यहै सिद्धांत ॥

इतिश्री महाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीबलवन्तसिंहभूपा लाज्ञयाकबिटीकारामेणकृतायांभाषामृततरंगिण्यांसज्जन दुर्जनगुणगणबर्णननामएकादशस्तरंगः ११॥

दोहा ॥ श्रीसद्गुरुको नायशिर उरधरि अमित उमंग। प्रभुप्रेरक अनुसार कहुं द्वादशोऽहब्ध तरंग १॥

वादोवचन॥ दोहा॥ चन्द्रबिना जिमि यामिनी रूपबिहीनो गात। बाणीहै व्याकरण बिन पंकज बिनपरभात १॥

उत्तरकाकोक्ति॥ नव व्याकरण विरूपयुत पढ़िपेखहु सब कोय। बाणी बिन रघुपति भजन कहांकृतारथ होय १

पढ़ै बिभक्ती भक्तितजि सो लागत नहिंनीक । भोक्ता

लहु व्यञ्जनतजे लवण बिनाके फीके २ ॥ वार्ता ॥ भग वतभजन लवणविना विद्या व्यञ्जन जैसेहैं ते भक्तभोक्ता न हुवें केवल मत्सरी महियके उपयोगी होयहैं दोहा॥ मिल्यो सन्तको मत्सरी प्रकट पलेटोवृन्द । सारस्वत शिष्यदेयकृत भगवतभजन बिरुद्ध १ पढतपढत प्रकट्यो कहूं रामकथा असनाम । लखि उरउत्कगदाबढो भयो भूरि अभिराम २ मरोमिच खिलियो मनो अम उमग्यो अनुराग । तनपुलकित गद्गदगिरा ललित बढोउरला ग ३ नामांकित दल द्रुम परशि लीन्हो कंठ लगाय । अपर पत्र फिटफाडिके दीन्हे अनखि उडाय ४॥वार्ता॥ पंढरपुरमें कोई प्रेमी सन्तभजनानन्द में छके नृत्यकरै उनसों काहखल मत्सरीने कही ऐसे मरखकी नाई राम कथा कहिके कहा नाचैहै जासों थोही अम सारस्वत पै कर सो प्रौढपंक्ति में शामिल होजावो तब प्रेमीबो ले कि तुम्हीं पढावो कही अच्छा हमीपढावैं पढो तब पढनेको परिश्रम उठायो सो चारप्रहर दिन अरु तीन प्रहररात्रि ऐसे सातप्रहर घोखना शुरूकियो जामें रो- मांचादि अश्रुपात अरु पूर्वको प्रेमानुरागन जानै कि ते बिलायगयो अरु मारे परिश्रमके हृदय कठोर होय गयो ॥ दोहा ॥ तीनतापसे जगजरै परिडत सातकिशोर। पाठ बिसरजन हानि यम चारताप ये ओर १ फेरघो- खत घोखत रूपावली घोखनेलगे जामें अकारांत पु ल्लिंग देवशब्द घोखनेलगे देवः देवौ देवाः देवं देवौ देवान देवेन देवाभ्यां देवैः देवाय देवाभ्यां देवेभ्यः देवात दे-

वाभ्यां देवेभ्यः देवस्य देवयोः देवानां देवेदेवयोः देवेषु हेदेव हेदेवो हेदेवाः सर्वंघटपटस्तम्भ विप्ररामकृष्णादयो प्यकारांतापुल्लिंगाः ऐसे चानचक रामकृष्ण शब्द अनायास सों आयो जाको देखतेही कैसो पूर्वानुराग उमगयौ कि मानौप्राणात प्रियतर मित्रसख्याहुवोसज्ो व होयकै आयमिलै वा सुखते अनन्तगुणों आनन्दको ओघ उमगयो सो जामें रामकृष्ण शब्दलिख्यो वा पत्र को वारम्वार हृदयनेत्र लगाय लगायकै शीशचढायो अरु गद्गद कंठहोयकै पण्डित सों कही तेरो खोज उड़जाय हत्यारे द्रोही तैंनेमेरे प्राण प्यारेजीवके जीवन रामलाल कृष्णसनेही सोंवुद्धिभ्रंश करिके अंतराय कीन्हेंांथो याते यह तेरी वलाय ऐसेकहिके पंडितके माथेपरपुस्तक दैमाखो अरु भजनानन्द में शामिल हुयो महा तृषार्तके जलपानते सहस्र गुणो सुखमानिकै अरु घोखिवेमें श्वास वृथागये ताके पश्चात्ताप ते भजनमें अतिउत्कंण्ठा बढी फेर पढवेको कभूनामनलियो अरु कही कि हमारो कियो॥सवैया॥ घट औपटको रटना रटिकै हटकै हदही हहरावते हैं। घनधातु न घोखत घायलसे सुघने घटमें घवरावतेहैं॥सज्जनता सप ने न लहैं शठ औरनको तकि तानते हैं। परिपूरण प्रेम की पाटीको पंथ ये ग्रंथनवारे न जानते हैं १ काहूको सवैया॥ घट औपटकी रटना रटिकै केउ वाद विवाद मचावतहै। पुनि डुकृञ् आदिकै घोखतही उरमाहिं छईरुज छावतहै॥ जगको भ्रमरूप वताय किते भ्रम में

पुनि आपहि आवत है। कमिया न करो किन केऊ कहा रसियानकी रीतिको पावत है १ रसिक अनन्य न को पथवाको। जापथके पथको चतुरानन मूंदत आंखिरहै नितनाको ॥ सो परब्रह्म सियावर भेदत स्वामी अजब अदाको । सो भाया भक्तनकी तजिकै और चहत कहीकाको ॥ पोचन सकत मदा शिवहूसे भय धरे अबलाको। बडेबडे अद्वैत विवादी क्यों मुनीगगायाको। श्रीहरिवंश रसिकके घरकी को कहै अकहकथाको १ ॥ लखीजिनलालकी मुसक्यान। तिनहिं बिसरी वेदबिधि जपयोग संयम ध्यान ॥ नेम व्रत आचार पूजा पाठगीता ज्ञान। रसिक भगवत दृगन दइ असि ऐंचिकै मुखस्यान १ ॥ दोहा ॥ तीनताप में जगजरे पंडित मात किशोर। पाठविसर्जनजयअजय चारतापतन ओर १ पढतेपढतेपढिगये शेयरशेयरकूर । भाया अभिलाषा विना उयोनप्रेमअंकूर २ ॥ वार्ता ॥ शेयरलों पढिकै खरसेकुटिल प्रकृतिकेभयेसोजिनजिनते विवाद कीन्हो तिन तिनके हृदय दुर्बाच्य दुरुत्तीमारमारकै छीलडारे सोदुखीभये विचरैहैं अरुकहूं कहूं पराभव पायेहैं ताते अपनेहीको हृदय संतप्ततापते तचैहैं क्योंकि अर्धदग्ध है जाते और संपूर्णहै तिनके बोलतो ऐसेहैं कि इन्द्रादयोऽपियस्यांतं नययुः शब्दवारिधे क्योंकि संपूर्णकुंभ न्न करोति शब्दः ॥ दोहा ॥ सुंदरजाके विसवहु सो तो राखतगोय। कौडी फिरै उछालतो जो टटपुंजाहोय १ पन्नग पूरोविषभरयो विचरै माथमहीश। बीछू सुद्र

लियेफिरै श्वानपुच्छसमशोभा २॥ वार्ता॥ परन्तुकलि-
कालके जन अल्पायुषी मन्दमति तातेसंपूर्ण पढवेको
सामर्थ्य काहूको नरही तातेरसिक जननकीभाषाको
अभिलाषा रखनी चाहिये क्योंकि भाषा बिना प्रेमां-
कुरकी उत्पत्तिनहीं और किशोरदास परम प्रेमीहुते
उनते कोऊखलसास्त्री बोल्यो ऐसेलुगाईसेकारेवौहो
जाते हमारेपासच्चारदिन पढवेपै श्रमकरौतौमहापंडित
होजावोगे तब किशोरदास संस्कारवश्य परिपूर्णपढे
उपरांत पंडितसोंबूझी अबकाकरूं तब कहीकि अब
जहांतहां सभामेंपंडितनते बादकरिकै उन्हेंकोपरास्त
करौ जातेउनको मानखंडनहोय अरुतुम्हारी पंडिताई
विख्यातहोय तबकिशोर बोले परायेमान भंगकोफल
कहा तब पंडित बोले धनकी प्राप्ति अरु गौरवताकी
प्रतिष्ठामिलेगी तबकिशोर बोलेमोको कुटुंबनहींपाल-
नो सोधनकी इच्छाकरूं और साधुलोगोंको प्रतिष्ठा
गौरवताको तौ ऐसे लिखैहैंकि प्रतिष्ठा शूकरी विष्ठा
गौरवंतत्ररौरवंसोमोको शूकरीविष्ठाभी न चाहियेअरु
रौरवके भयते माथा मुडायो फेर रौरव अगाडी क्यों
आयो जातेसांची सांचीकहो ये दोऊफलहैं कितीसरो
भी सारफलहै कछु तबपंडित कोपकैबोले तेरीतौतुच्छ
भाषागंधगईनहींसोहमतेहीवादकरनलगोअरेमहामूर्ख
हमते फलबूझैहै तौ तुहीं क्योंन देखलेवै का तूसमझै
नहींहै तबकिशोरने धर्मशास्त्र विचार्यो वामें ब्राह्मण
के मानखण्डनकी महिमा ऐसे लिखीदेखी कि जो

जाको मानखंडनकरै वाको मारेको पातकलगै ॥श्लोक॥ आज्ञाभंगोनरेन्द्राणांविप्राणांमानखंडनं। पृथक्शैय्या चनारीनां अशस्त्रवधउच्यते ॥ टीका ॥ राजाको आज्ञा भंग अरु ब्राह्मणकोमानखंडनकरै और स्त्रीकीशय्या त्यागै तौ तीनहूंको विनाशस्त्रते वधकरे को अपराध लगै ऐसो लेख देखिकै किशोरदास ने समग्रपोथी पढ़ा सकेलिकै पंडितके आगे देमारे अरु कह्योमोको तौ ब्रह्महत्यानहींलेनी यहलेतेरीविलायगेसेपथ। पटकि कै वद्रीनारायणकोचलेगये अरुभाषाहीगाई जन्मभर कै परन्तु संस्कृताभिमानीको मुखावलोकन न कियो और सहस्रावधि भाषामें साखीशब्दकहे ॥दोहा॥ पढ़ि पढ़िकै पथराभये लिखलिखहोवैचोर। विनाप्रेमरीझै नहीं कौशल राजकिशोर॥ वार्ता ॥ पढ़ि पढ़िकै मारे परिश्रमकेहृदयपाषाणसेकठोरहोजायँजामेंकरुणाजल किंचित नभिदै अरु कठोरताते अनेक साधुब्राह्मणके मानभंगके समाचार समान शीलवारेपै लिख लिखकै प्रभुके चोरभये तातेपरलोकमें मुख बतायवे माफिक नरहे पढ़िवेकोफल यहसिद्धभयो और भगवततौविना प्रेम कदापि नरीझै अरु सच्चो प्रेम आवनो भक्तजन की भाषाके आधीनहैं कलिकालमें याते वृथा अभि-मान तजिकै भाषामें प्रभुगुण गायन करिकै निज वाणी सफल करनी भलाहहै ॥ तव वादीबोले ॥ कि संस्कृततो महादीर्घ पदार्थ पढ़े उपरांत परम लघु तुच्छतर भाषा पढ़नो सोतो विना सहूरकीसी बातैं

दरशौहै याते संस्कृत उपरांत कछु पढनो बाकी नहीं तहांउत्तर। दोहा॥ तुलसी दीरघके मिलै लघु नदीजिये डार। जहां कामहै सूईको कहाकरै तरवार १॥ वार्त्ता॥ काहू बनजारेकी गोन बनमें फटी सो कस्तूरी बिखरी जाय तब कही दसडीकी सुईको का सौं हजार रुपैयाकी तरवार हाजिरहै तब काही तरवारको खाड़में पटको यहांतो सुईआवै तब कामचलै तबकही सुईतो नहीं सो सारी कस्तूरी सुई बिना बिखरिगई अरुपरस पश्चात्तापकियो ऐसे कलियुगवनमें जीवबन जारेके मन बैलकी बुद्धिगोनफटिकै भक्ति कस्तूरीबि खरिचलीहै याते बुद्धिगोनकेएकाग्रहाकरिबेको भाषा सुई चाहिये तब भक्ति कस्तूरी बुद्धि गोनमेंरहै अरु संस्कृत खड्ग तौ उलटो प्रतिवाद करिकै फाड़वे को समर्थहै अरु एकता करनेतो भक्तजनकी भाषा सुईको कामहै क्योंकि यामें सतोगुणहै अरु संस्कृत तरवारमें सतोगुण सूत नाहीं सो एकताकौं केवल तामसी तर-वारहै॥ वादीवोले॥ तुमने काहे पैसे जानी कि संस्कृतमें गुण नहीं॥ तहांउत्तर॥ गुण तौ प्राकृतमेंहैसो सर्व भाषा को आपमें मिलायराखै और संस्कृतमें कोईभी भाषा नहीं खटाय याते जानी कि गुण नहीं और संस्कृतमें गुणहोतातौ गुसाईजीकीबनी बनाई रामायण पिथ्वना थनेक्यों हरलई अरुभाषाकी आज्ञादई और मंत्रशास्त्र होते महादेवने प्राकृत साबरमंत्रक्यों रचे का महादेव त्रिकालज्ञ होयकैनहीं जानतेथे और हित हरिवंशजी

ने छैलासकी अवस्थामें पलनामें पौढेसंते राभा मुभ्रा-
निधि संस्कृतग्रंथकियो परंतु प्रत्यक्ष दर्शननदीन्हों फेर
स्वप्नमें कही कि तुम प्राकृत भाषा में विहार गायन
करौ तवप्रत्यक्षदर्शन होवैगो तव भगवतआज्ञा शीश
पै धारणाकरिकै प्राकृतभाषामें रहस्य विहारको पद
चतुराशीगायनकीन्हों जाको महलीवाणी कहेहैं सो
गाई तवप्रत्यक्ष दर्शनहुये अरु जानी कि कलिकाल
में भाषाकी आज्ञाहै अरु भाषाहीते प्रभुकी प्रसन्नताहै
और संस्कृताभिमानीके शिरोमणि तो वामन पंडित
हते परन्तु संस्कृतको पंढरीनाथने कलम ही वरवाय
दईलोजीयेजोलों भाषामेंयशगायो और भाषावारेको
दौरदौरप्रभु ने पक्षकियो है ताते जानी कि संस्कृत में
तीनयुग पर्य्यंत गुणारहेहैं अरुकलिकालमें तोभाषाही
कीध्वजा उडिरहीहै अरुभाषाते विमुखते प्रभुतेविमुख
हैं परन्तु महापशुने भाषानिंदाकी टेकपकडी सोछांडै
नहीं तहां कहोगे कि संस्कृताभिमानीको महापशु क्यों
कहे ॥ ताकोउत्तर ॥काहू पशुको स्मशानमें हाडचावतो
देखिकै काहूको करुणा आईकि याकोतालु फूटजा-
यगा तवधूरको मुट्ठीभर मुखमें डारदईसोधूरिकेप्रताप
ते अस्थिडार दीन्हों अरु डारैहैअरु निन्दकको नीच
पशु यातेकह्योकि साधूलोगकोटिकोटिधिक्कार धूरके
धोवाडारैहैं परन्तु भक्तभाषाभागीरथीकी निन्दारूपी
हाडमुखते डारैनहीं फेरपरलोक तालूफूटै तोभलेहीफूटै
और निन्दककोनीच खरकह्यो ताको कारण यह

हैकि आकाशमेंबीजुरीचमकेवाको प्रकाश देखिकै खरघूरेपर चरतेसंते दुलत्ती झाडै तातै बीजुरीको तौ कछु बिगडै नहींपरंतु खरतौप्रतिलत्ताप्रहार चूकैनहीं ऐसे भक्तजननकीभाषाको घोसप्रकाश जितै जितै सुनै देखे तितैतितै खरनिन्दकनिन्दादुलत्ती झाडैबिन नरहैं सो भलेही झारौ जो खरकोदुलत्तीते विद्युतको बिगडैतौ निन्दकते भाषा को बिगड़ै भलेही निन्दौ रासभकी नाई निंदककीभी हंसी होय है परंतु महामूर्ख की मत्सरता तौ देखियेकितेक कुटिल रामचरित्रके श्लोकमात्रतौ पढै अरुप्रशंसाकरै औरभाषाछंद देखतेहोउपहास करिकैपत्र डार देवै अरुकहै कि तुलसीदासने यह वृथा परिश्रम कर्योकियो तबदूसरेकहैं तुलसीनेतौ शुद्ध संस्कृतकियो थो परंतुकाल पायकै कछु विप्रवेश्वरहीकी मति भ्रंसभई तबतौ वह ग्रंथलेकै तुच्छभाषा बनायबेकी आज्ञादई अरु गंगाकीभी महिमामिटबेवारीहै नारद कह्यो पुराण तबतौ बूडोयो अफंडपीछे वर्ष उपरान्त प्रकट कियो अरु कितेक मछरीकहैं कि हम तौ यों जानैं कि कलिकाल पाय कै भगवत्तकी बुद्धि बिपरीत भईहै तब तौ निगमागम होतसंते भाषाकी अज्ञादई और ठौर ठौर भाषावारे को पक्षकरैहैं अरु श्रुतितजिकै सदना रयदासादि अंत्यजपै पधारे अरु सूरपदस्वतःबनायकै प्रवर्तन किये और सर्वाश्रम शिरोमणि सन्यासी की श्रुतितहकरिकै नरसीके भाषापद पै प्रसन्न होयकै मालापहिराई

अरु कौल अनुचारणकी भाषापै हुंकार दीन्हों अरु पृथीराजको नेलवर्गा नाकरूप ते सुनो ऐसे सर्व विपरीत कर्त्ता ईश्वरहीहैं वो भाषा पाखण्ड प्रवर्तन करैं या में कौन आश्चर्य ऐसे काल कर्म ईश्वरकी कर्तव्यतामेंदुष्ट दूषणादेवैंअरुआप पोथाकेपाव जोवर्मकेरंरसककहा येचाहैं अरुकहैं कि आपन पंडितलोगभी भाषाअंगी- कृत करलेते तौ संस्कृतयुक्ता निर्बीज भूतल होयजाते अरु मूढ़ी भाषाही आचाद्दृष्टिपड़ती ऐसे मारेमत्सरके ध्यानमंशकरन्याय अहंकाराकें परन्तु ऐसे न विचारैंकि संस्कृतकूपते तत्त्वार्थ जलकाढ़िकै भाषाखेल न भरते तौ कलिकालके मन्दमति अल्पायुषी अधम अभागी जीवन को तरणोपाय कैसे पड़तो तातें अहो प्रभुकी दयालुता कि जिनने समुद्रके महा अमूल्य रत्न सहज कुंडामें लायधरे सो सर्वको बिनाश्रम प्राप्त होवैहै ऐसे गुणतो नहींमानैं अरु कहैं कि इन भक्तलोगनने भगवत की छिपायलणयके परमअलभ्य संस्कृत सागरकेअर्थ रत्नको भाषाद्वारा घरोघर में करदीन्हों सो सहज में समझ लेवैहै ऐसे पश्चात्ताप करैं जाने बापदादा को खजाना लुटैहै जैसे सोंठ्या गरास्या पिंडारांकहै हाय बखत बुड़गई सो उपकारको अपकार मानिकै निर- न्तर निन्दैहैं सो इनको दोषनहीं दुर्जनको स्वभावही ऐसो होयहै ॥कवित्त॥ सरलको शठकहैवक्ता सोवैरी ढीठ विनयकरैं ताको कहै धनके अधीनहै । क्षमीसों निबलकहै यतीसों जनानोकहै तृष्णाको घटावेतासों

कहै भागहीनहै ॥ धर्मीसों दम्भी निष्प्रेहसों गुमानी कहै वीरको बिलोकि कहै पापी परपीनहै । जहां जहांगुणदेखे ताहिको लगावै दोष ऐसे कछू दुर्जनको दूगन मलीन है १॥

इतिश्री महाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीबलवन्तसिंहभूपालाज्ञयाकविटीकारामेणकृतायांभाषाऽमृततरंगिण्यांदुष्टस्यप्रकृतिवर्णनंनामद्वादशस्तरंगः१२॥

दोहा ॥ अंघ्रि युगल अवधेशके सकलधर्मके धाम। बन्दि तिन्हैं वखानकरों त्रयदश लहर ललाम १॥

कबित्त ॥ अक्षरहैं स्वच्छजाके मच्छर मनाकनाहिं दक्ष शरणागत को बक्षथल दानी है। रक्षक रमेश चित्त चाहत हमेशहाल भाषाहीको भरिधा विशेष टेकठानी है ॥ प्यारी ब्रज छैलदोऊ गैलमें सुनीहैबेल प्राकृत पुनीत पृथीराजकी प्रमानीहै। श्रुतिके समानी वरबोध मोददानी भूमि भक्तनकी बानी कलिकाल सुखदानी है १॥ टीका ॥ भगवतभक्तको भाषा कैसीहै कि सुगम मनोहर हैं अक्षरजाके जा में कठिनोचार को लवलेश नहीं फेर भाषा कैसीहै कि मच्छरमनाकनाहिं संस्कृतयाबिनी पिशाची कोऊभाषा आवो तो आपमें मिलायलेवे परन्तु काहूते किंचित मच्छरता न राखै सबते सुहृद भाव निबाहै फेर कैसीहै भाषा कि दक्ष शरणागत को बक्षस्थल दानी है जो कोऊभक्त भाषा के शरणागत होय ताको दिव्य दक्षता अरु निज बक्षस्थलमें निवासको देनहारी फेर कैसीहैभाषा कि

रक्षक रमेश रमेश कहेते रघुवंश शिरोमणि के स्वतः रक्षकजाके जव तौ संस्कृताभिमानी ने राम चरित्रको गंगामें डुवायदीन्हो हो परन्तु चर्य पर्यन्त रक्षाकरिके पीछे उद्धारकियो निजजनके कल्याणके लिये अरु सूरसागरकी स्वतः समाप्तिकरी ऐसेअनेक ठौर विचारलीजे जाते जानीगई कि भक्तभाषा की परम उत्कंठायुत भगवत रक्षाकरेहैं और हाल वर्त्तमान में तौ ठौरठौर हजारहा भक्तनकी भाषाटेक प्रतिपादन कीन्हीहै और वैश्यरूप धरके पृथीराजकी वेलसुनी याते भाषाध्वनिकी भगवतको अति उत्कंठा ज्ञानपडी फेर भक्तभाषा कैसीहै कि श्रुतिके समानीनाम श्रुति तुल्यहै॥तहांवादीबोले॥किश्रुति तौ साक्षात नारायणरूप है ताकेतुल्य तुच्छतर भाषा कैसी होयगी ॥ तहांउत्तर ॥ तुकारामजीके भाषा अभंगको दक्षिणमें तुकोपनिषद संज्ञाहै जो श्रुतिको शिरोभाग और ज्ञानदेव साक्षात विष्णु अवतार तिनकी भाषावोवी को ओछीब्राह्मणा ने निरादर कीन्होंथो तव श्रुतिको पाड़ापै पड़ायके गर्व गंजनकियो परन्तु भाषाकी निंदा प्रभुनहीं सहि सके अरु भाषावोवी छन्द प्रतिपादनकियो अरु भाषा सर्वोपरिराखी तव तौ अर्थात भाषा श्रुतिते भी सिवाय ठहरचुकी भगवत आज्ञाते और श्रुतीजेहैं तेतौ भगवत के सुषुप्ति अवस्थाके श्वासोश्वासहैं अरु भाषासूरसागर तौ प्रभुने जाग्रत अवस्थामें भी परम प्रेमते सावधहवेके एकाग्र चित्तते रुचिपचिके बनायोहै अब कहो जो

निद्रामें बरड़ै उनबचननको प्रमाण विशेषके जाग्रतमें भी एकाग्र चित्तते विचारिकै बचन उच्चारण करै उनबचननको प्रमाण विशेषहोयहै सो बिचारलीजिये तब अर्थात्भगवत्‌ भक्तको भाषाश्रुतिते सिवाय सदाई है यामें कहनोकहा और हमतो आपको भलोमनाइबे को भाषाको न्यूनही मानलेते परन्तु शास्त्रकहैहैं कि वेदोनरायणोहरिः अरु वाहीके बलते बिना बिचारे तुम बितंडाबाद करौहो परन्तु जोवेद को नारायण हरि कहौहो वह नारायण हरि तौ स्वतःसिद्ध आयकै श्रुतिपाड़ापै पढ़ायकै भाषाबोबी को विशेष राखी और सन्यासीकी श्रुतिको निरादर करिकै भाषापदपै दामोदर रूपते नरसीजीको मालापहिराई तब अर्थात् भाषा श्रुतिते सिवायभई तब हमने भाषाको श्रुतिके समानकही वामें कौन अनुचितकियो श्रुतिते तो भगवत्भक्त भाषा सदाही सर्वोपरिहै यहसिद्धार्थ फेरभाषा कैसीहै कि बरबोधमोददानी कहेते श्रेष्ठबोध अरुमोद कहेते परम आनंदको सद्यदेन हारीहै ऐसे भूरि कहेते विपुल भक्तकी भाषाजेहैं ते सतत्रेतादि युगत्रयमें भी परमअलभ्य अरु परमाह्लाद दायिनीहै इपरन्तु कुटिल कल्मषागार कलिकालमें तो भगवत आज्ञाते सर्व श्रेय कर्त्ता भाषाहीहै अर्थात कोटिकोटि यत्नते प्राकृतभाषा पढ़नो अरु याहीको श्रवण करनो भलाहहै क्योंकि याबिनाया नुष्यको बोधकर्त्ता और नहीं यहसिद्धांत देखो लंकाकाण्ड में परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानंद

श्रीकौशलकिशोर नरतनलीलानुहार नागपाशमेंबंधन विलोकि गरुड़जू को महामोहने आवरणकीन्हों तब शिवशरणगये सो शिवमहामोह निवारवेको महाही समर्थ हैं अरु औरभी त्रैलोक्यमें देव ऋषिमुनि बड़े बड़े सिद्ध साधक मोह निवारिवेको समर्थ होतसंते काहूके समीपनभेजे गरुड़जीको अरु कागभुसुंडजीको सजाती जानिकै इनके समीप जाइवे की आज्ञादीन्हीं क्योंकि समझै खग खगहीकी भाषा सो वहां मोह निवारण भये। ऐसे कलिकालके जीवन को महामोहमें मगन विलोकिकै श्रुति स्मृति इतिहास पुराणादि काव्य कोष नाटक चंपूसंचिता समूह समर्थ होतसंते मनुष्यके महामोह निवारिवेको साधुको प्राकृतभाषाही पठन श्रवणको हुकम दीन्हेंहै भगवत ने अहोदयालुता क्योंकि बिना परिश्रमते समझैंगेनर नरहीकी भाषाको अरु सर्वको सारशिरोमणि सरल सारतेकलिकूर कुटिलजीवहत कृत्यतापावैंगेअवक-होजीईश्वरकी इतनीबड़ी अनुकंपायुत आज्ञाअज्ञअव-लोकैनाहिं वा पामर पंडितते तो जक्त के जड़ जंतुको विवेकवान जानिये कि जेनिज अनहित हितहिये में विचारे रहैहैं॥ छप्पय ॥ कुमड़बीज मृगडवै परेवा पत्री लावै। अमरकोषकोभूमजितेसुगमदतितधावै॥ अजान बैठेकूप धूपलखिजलजप्रकासै। ऋतुवसंतकोपाय को-किला बचनविलासै॥ सीपउचकलतस्वातिलखि श्वान दानव्रतन्नाभखै। नरतनठीकमपायधिकईश्वरआयसुना

लखै ॥ टीका ॥ कुम्हड बीजको हेतकोलामें बीजजेहैंते रोहिणी नक्षत्रलौं वनेरहैं अरुमृगको आगमन हियेमें हेरिकै अखिल अंकुरकीउत्पत्ति अकस्मातकरैंउनको कौनगणितने सूचितकियो सोकहो परन्तु समय सम-झैहैं तबतौ उगै हैं और बेपारीलोग जहाजपै चढिके जनपदांतर जलधिमें चलेजायँ परेवा संगलैके अरुपरे-वीको घरै छांडिजायँ फेर घरकोपत्र पठावनो होयतौ परेवाकेपगसें बांधिके उडादेवैसो सैकडा योजनजलमें मार्ग भूलैनहीं अरु परेवीपास आयके पत्रपहुंचावैसो वाने संगसोहवत अथवा कबलीन्होथो परन्तु अध्वउर बिसरैनहीं और अमर कोयतणाको धूम्रजेहैंते जहांमृग मदहोय तहां चल्योजाय वाको कौनने कस्तूरी को खवरदीन्हीहै और कालांतरको मुंद्योकूपकीजायगा पै बकरीको वृन्दघेरराखौ परन्तु मुंदे कूपकी जगह छोडिकै आसपास बैठैगी सोवाको कौनस्यानेने सम-झाईहै कि यहांपहिले कालांतरमें कूपहतो परन्तु वा पशुमेंभी इतनो बिवेकहै और जलजजेहैं कमल वा पै कितनोही आवरण करिराखौ परन्तु सूर्योदय होते समय प्रफुल्लित होयगो अरु अस्तसमय मुंदजायगो सोवाको समय सुचायवेकोकौनगयोथो परन्तु वाको भी इतनो ज्ञानहै कि समय समझै है और कोकिला पक्षी जातिहै परन्तु मुख मूंदेरहैहै अरु वसंत ऋतुको प्रारंभ होतेही वचन विलासको महामधुरेस्वरसों मीठे मीठे टहूका छांडिवे लगै सोवाको पंचांग सुनायवेकौन

गयोथो सोवसंत आगमजानिपर्यो परन्तु पक्षीजाति-
भी ईश्वरआज्ञाजानिके समयसमझैंहैं और सीपउक्तलत
स्वातिलखि समुद्रमेंसीपड़ी कीटजंतु जातिहै सोसमुद्र में
बडरहैहै अरु हस्तचित्रावीते और स्वातीकेप्रवेशहोते
ही सर्वसीप वदन विदारिके ऊपर उछलआवैंअरुतन
मनते तृषातुर तरलडोलैं अरुस्वाति बूंदग्रहण करिके
निज निज स्थानपै पलटजाय अरु महामनोहर मुक्ता
मणि उत्पन्नकरैं सोसीपड़ीने स्वातिसूचनार्थ कवडाक
वैठाईथी सो खबर पायके प्रकटी परन्तु ईश्वरआज्ञा
जंतुभी जानिकै शीशपर वहैहै और ज्ञानदानव्रत ना
भयै और वाजेज्ञानजे हैं ते आदित्यवार अथवा और
कोई व्रतवासर समझके अहारनहींभयैहैं सोउनकोव्रत
वासरकोन सूचित कारैहै परन्तु निजहित समझिकै
ज्ञानभी समय विचारिकै ईश्वर आज्ञा शीशपर वहैहै
चंद्रायण॥ मरतलकेमरुदेश ऊंटयहअदलहै । पावसप्रक
टलपेखि छकलगंगावदलहै॥समयसमय लखिज्ञान सरल
हालपुच्छते।हरिहां धिक्युगधर्मनलखै नीचनरतुच्छते॥
टीका ॥ ऊंटपशुकोदेशांतरमें लेजाय परन्तु मरणसमय
में निर्वंधन रहै तौ मुख मारवाड़ दिशाकरैहै क्योंकि
वहनिज वतनवसुधा समझिकै वानेध्रुवमच्छ कव सा-
ध्योथो और वर्षाऋतुको आगमन अवलोकिकै छक
लासनाम कणगट्याको कर्दमें भरिकै भुंवरामेंभलेही
छिपाय राखौ परंतु पावस पायकैविवश वपु विदित
लिवेअकार होयगो वानेखरआकंव बिलोको सोकहौ

परंतु ईश्वराज्ञानुसार सर्वजीव जंतुवर्ते हैं और श्वानकी पुच्छसदासर्वदा बक्ररहैहे परंतुवामेंभी बिवेकहैकि सह दभयसमयसरल सूधी होजाय है परंतु चतुरोंतु चतुराव कांधकी अकलमें अंधेरतोअवलोकियेकिकठिनकराल कलिकालकल्मषागार मध्ये मनुष्यनको अन्नभागी अवमआलसी अधिक असमर्थ अल्पआयुषी अशक्तधं-धकधुरीनशिठणोदरपरायणांतःकर्णबिगतबुद्धिवासा शक्त बराकावलोकनकरिके करुणार्णव कौशलकि शोरनेसदय हृदयते याहीके कल्याणार्थ स्वल्पश्रमसा ध्य सुगमबोध बिवर्धिनी गीर्वाणगिराग्रगण्य परम पुनीत प्रेमाकर प्राकृतपठनपरत्व पुनि प्रेरणा प्रेरिके प्रभुनेप्राकृत पक्षप्रत्यक्ष परिपूर्ण करनेलगेहैं अरु शुष्क संस्कृताभिमानीको ठौरठौर सज़ावार ठाने हैं ताकीमा सी सहस्रावधि सुनतआये और सुनैंगे सोमाधव कबीर रयदास ज्ञानदेव नरसी सधनाके प्रतिपक्षीको देवने दु-र्दशाकीनीसो देखतेसुनते आये हैं और यासमयमें भग-वत् भाषाही तेप्रसन्नहैं अरु भाषाहीको आज्ञाहै अरु भाषाबिन प्रपंच अरु परमार्थ दोऊसिद्ध नहोवैंहैंसोभी मनमेंभलीभांति समझैहैं और कलिकालमें भाषाराम चरित्र गंगामेंडुबोयदीनहेंथो सो वर्षभरमें पीछे उद्धार कीन्हों देखोजैमिनि कृतमहाभारत संस्कृत व्यासजीने डुबोयेसो क्योंनउद्धर्‍यो और अनेकग्रंथ संस्कृतके शं-कराचार्यने जैनमतके डुबोये सोतो एकपत्रभीपीछेउद्ध-र्‍योनहीं और तुकारामजीने कोटिअभंको गुटका धाम

पधारिपै तेरादिनपीछे गंगामें डार्यो सोभी भाषाग्रंथ
पंढरीनाथने उद्धारिकै विशेष दक्षिण देश में प्रवर्तन
कियेजाको तुकोपर्तिपद वड़े वड़े पंडितक्त हैं हैं ऐसे
ठौर ठौरसारी वसुधापै विजयग्रुत भाषाहीकी चवल
ध्वजा फहराय रहीहै अरु भाषापढ़िवेहीकी भगवत
आज्ञाहै इतनीवड़ी महास्थूलतर विश्वविदित वातकौन
विचारै अरु भाषानिंदै वाहियाल लाडीफट खलपंडि-
तको तो ऊपरकेआयेजे कुम्हड़वीज कोकिला कवूतर
कूकरकृकलासादि कीटतेभीकूर कृतिमत्तानितरनीचतर
जंतुजानिकै वारंवार वदनपै कोटिकोटि धिक्कारदैकै
भगवत आज्ञा वहिर्मुख मानिकै कारोमुख कीजिये
अरु वदनविलोके महापाप मानिकै दूररहिये॥ दोहा॥
भाषाभासअकाशअरुरह्योपुहुमिपरपाग। अज्ञउलूनहिं
लखततौ ताहीको हतभाग॥ वादीवचन श्लोक॥ बालसखे
त्व मकारणहास्यं गर्दभयानं म संस्कृतवाणी स्त्री सुवि-
वाद सखज्जनसेवा षट्सुनरो लघुतामुपयाति॥ टीका॥
वालसखेत्व वालकतेसख्यता करनो और अकारण
हास्यकहेते विनाकारण हंसदेनो अरुगर्दभ यान कहेते
गधाकीसवारी करनो और असंस्कृत वाणीबोलनोअरु
स्त्रियनतेवाद प्रतिवादकरनो औरअकुज्जन पुरुषकीसे-
वामें हाजिररहनो ऐसेयेछे कामकरिवेवारेजेनरहैं उन-
को अकस्मात अवश्य में लाघवताआवै तवप्रभुता को
तो लेशमात्रनरहै तातेहम सारिखे प्रौढपंक्तिवारे कोतो
प्रभुताकीरक्षा निमित्तअसंस्कृतजो भाषावाणीताकीतो

भनकमात्र सुनीनचाहिये तबप्रभुतारहे फिरकलिमेंभाषा पढ़िबेकी भगवत आज्ञाहे तौ भलेईहो। परंतुपंडितलोग तौनहींपरसैं फिर भगवत्त आज्ञा विमुख तौ बिमुखही सही॥ तहांउत्तर हे सदविवेकाभावाग्रगाय जोप्राकृत भाषामें भाषणाकरिकै जगतकोसब व्यवहारसिद्धकरौ हौ और भाषाही में साधनिको समझिकै सर्व संस्कृत सिद्धभयोहे ऐसी उभयलोक सुधारिणी सर्व संस्कार संयुक्त सद्गुरु समान सरलसुधा सदृश परम पुनीत पौरुषी भाषाके अनेक उपकार बिसारिकै असंस्कृत ताको मिथ्या दूषणादेतहौ यामें तौ तुम्हारो तरफ केवल कृतघ्नोपनो साबित होयहे क्योंकि पौरुषी प्राकृत बाणी तौ भाषा व्याकरणानुसार नवहू संस्कारकरिकैसंयुक्त संस्कारी शुद्ध संस्कृतभाषाहे जाको असंस्कृत क्योंकहौहो नवहू संस्कारके नाम सुन लीजिये॥कवित्त॥ प्रथम प्रवीणा पंचसंधि स्वच्छ सोहतहे दूजेशब्द तीजे तात अव्यय अशेखिये। चौथे प्रिय प्रत्यय प्रत्यक्ष पांचे पेखियेजू कारक समास छौं प्रकट परेखिये॥ तद्धिततमाम सप्त आठमें अख्यात ख्यात नवमें निशंक अंत में छंदंदेखिये। उदित उजासा शब्द शास्त्रकेनुशासा सर्व नौहूअंग खासा भव्यभासा में बिशेखिये॥ दोहा॥ संस्कार संयुक्त सब अखिल अंग अनुकूल। कहै असंस्कृत आंधरे नरभाषाको भूल १ उदित बिदितआदित्यको अवलोकै न उलूक। इन उभयन में निपुण नर कहौ कौनकी चूक २ त्यों बर ब्रजभाषान को कहत

असंस्कृत कूढ । निज नयनन निरखै नहीं महामन्द मतिमूढ ३ खल खुनमें भाषान पै निजमति निपट अबोध । यथा कुमस्तनि करतहैं कंचुकारि परक्रोध ४॥ टीका ॥ देखौजी सरल संस्कार सहित मध्यबोधको करनहार उभयलोक उद्धारणी भगवत प्रेरित प्राकृत भाषाकी धरानपै येमा वजरही इतनी बडीबात आंख रेनकी अक्ल में उतरैनहीं अरु असंस्कृत ठहराय कै विना विचारे वितंडावाद बदिरह्योहै उलूकादित्य न्यायते और जैसे यौवन पैचुश्त कंचुकी पहिरवे वालीबाला वृद्धाप काल में वैसी चुस्तनहीं चोलिकै कंचुकीकार सीयदेवारे दरजीकोंभारदोष धरिकै क्रोप करै परन्तु आपके कुच कुंचितभये ताकोनहींतकै गेसे प्राकृत परखेविना खल पंडित नीच निरादर करैहै अवकहौ जी इतनी बडी भलको कदलौं सराहिये वादीवचन ॥ तुमने व्याकरण बिलोकिकै नव अंगके नाम मात्र लिखिकै तुच्छतर भाषाको संस्कारी भाषाकही है सो हमतीनकालमें नहींमानैं भाषा संस्कारी वाणी तौ तवमानैं कियेनवहू अंग भाषामें घटायकै बतावोतव प्रमाणकरैं ॥ तहांउत्तर ॥ सवैया ॥ येनवअंगके नाम निरूप किये अति सूक्षम सज्जनयाते । अंगाज गोविंदहे मम ताहिने भिन्न रचो गुरुग्रन्थ गिराते ॥ पेखि पुरातन पंथ पवित्र विचित्र बनाय धरी बहुबाते । प्राकृत पुंज परख किये बरवैयाकर्ण सुवर्ण विख्याते ॥ दोहा ॥ काहूकोन प्रतीत तौ लीजै ग्रन्थ निहार । भाषा व्रज

व्याकरणमें कियो विपुल विस्तार १ स्थाली तंडुल न्यायते गुणयोग्रन्थ विख्यात। ताहीमें ते लिखतयह सुगम विभक्तीसात॥ ललितपदवृत्तम्। याहीछंदकोदेशांतरमें चौपैयाकहै है॥ सो इकते बहु प्रथमापेखहु ताहि तिन्हैं पुनिताको। तिनको ताप्रति तिनप्रति द्वितिया जिय मधि जानहुजाको॥ ताकरिकै तिनकरिकै ताने तिनने त्रितिया छाजै। ताअर्थै तिन अर्थै औरै ताकाजै तिन काजै॥ तालीये तिनलिये चतुर्थी पंचमितातेतिनते। ताको तिनको ताकीतिनकी षष्ठीकहिये इनते॥कही सप्तमी तामधि तिनमधि ताकेविषय बखानो। तिनके विषय तामते औरै तिनके मते प्रमानो॥ चामरवृत्तं॥ इचवर्गऔरटवर्गप्रत्ययादिजोयहै। ना तवर्ग कोम कोम को णविंदहोयहै। एकहो विभक्तिमें समान शब्द भूरहै। अन्यलोपि एक शेष जानियो जरूर है॥ बरवैवृत्त॥ हेअमुक हे अमुको हे अमुका सुचीन। सुमति स्वच्छसंबोधन शोधनकीन॥ दोहा॥ लिखी विभक्तीसकलयह संबोधनअरुसात।व्रजभाषाव्याकरण को असक्रम विपुलविख्यात॥ अथवार्तिक॥ याहीग्रंथ कोलियेब्रजभाषा व्याकरणको प्रारंभ करायोथोपरंतु बिस्तार बढ़तेबढ़ते बढ़िगयो तातेब्रजभाषा व्याकरण ग्रंथ भिन्न राख्योहै सो काहूको प्रतीत न होवैतो ग्रंथ मँगवायकै आदिअंतलौंविचारिकै नवहू अंगब्रजभाषा में घटायलीजिये परन्तु ब्रजभाषाको असंस्कारीभाषा भूलिकै न भाषिये क्योंकि ब्रजभाषा तो नरनारायणी

परम पुनीत पौरुषी प्रभु प्रेरित प्राकृत वाणीहै याको तौ सर्वभाषाको शिरोभाग समझिकैं शिरपै चढ़िये तब कलिकालमें कल्याणहोय यह सिद्धांत॥तहांवादीवचन॥ भाईतुमने जैसे तैसे करिकैं आरंभदेशी व्रजभाषाको संस्कृतठहराई तौसही परन्तुजबै असंस्कृत भाषाकौन को कहौगे सो पक्ष परित्यागकै सांची सांची कहौ तहांउत्तर॥ भाईसुनो तुमने कहीकि प्राकृत भाषाको तुमने जैसे तैसे करिकैं संस्कारी वाणी ठहराई सो येमे कुतर्कीकेवचन क्योंकहौहो हमारी प्रतिष्ठितकरीप्रतिष्ठित होतीनहीं भाषातौ सनातनते श्रीहरिने सर्वोपरि संस्कारी प्रतिष्ठितकर राखीहै परन्तु आपकोउन्माद ते विस्मरण भईथी सोअबतौं दृढ़ीकरण भईकिनभई सो तुम्हारी तुमजानौ और तुमने पूछीकि असंस्कृत भाषाकौनको कहौगे सो यथामति उत्तरसुन लीजिये कि पौरुषी प्राकृत भाषाकहै आदिदैकै षट्भाषाप्रतिष्ठितहैं और शरीरानुसार अनेक भाषाहैं परन्तुजाभाषा को भगवतयशांकित संस्कारनभयो वाहीभाषासंस्कृत समझिकै परित्याग कीजिये क्योंकिभगवत यशरहित भाषा तौ वायसतीर्थ सदृश कहावैहै सो वहकामीको कबला कवि हरिवेको स्थलहै वहां भगवतभक्तराजहंस भूलिकैनहीं विचरै हैं॥ तववादीवचन ॥ भाईऐसी दंत कथाकपोल कल्पितको प्रमाणतौहमैं कमआवैहैजाते कोई सद्ग्रंथकी साक्षीसुनावैतौ प्रमाणकरैं॥ तहांउत्तर प्रथमस्कंधे नारदवाक्यं॥ श्लोक॥ नयद्वचश्चित्रपदंहरे

यंशो जगत्पवित्रंप्रगृणीतकर्हिचित् तद्वायसंतीर्थमुशं तिमानसा नयत्रहंसा निरमंत्युशिक्क्षया॥ याकोअर्थ पत्र २६ में लिख्योहै॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराठौरबंशावतंसश्रीबलवंतसिंहभूपाला ज्ञयाकविटोकारामकृतायांभाषामृततरंगिण्यांभाषा बाहुल्यताबर्णनंनामत्रयोदशस्तरंगः १३॥

दोहा ॥ जसप्रेरत उरआयकन कौशलराजकिशोर॥ चारुचतुर्दशलहरको कहतयुगलकरजोर १॥ तिप्राकृत की पुष्टता धियमधि मच्छरधार। उत्तरकछु आयोन तब बोलेबिना बिचार २॥ बादीवचन॥ तुमतुच्छ भाषा की बाहुल्यताभलेही भांतिभांतिसे बढाओपरंतुसंस्कृत पढेते जे फलकी प्राप्तिहै सो फलतौ भाषा पढते कदा पिनहोयगो ताते हमारे मततौ भाषा पढनोही वृथाहै॥ तहांउत्तर ॥भाईजी तुमकहोहौकि संस्कृतते जो फलकी प्राप्तिहै तेभाषातेनहीं यह तुम्हारो प्रश्नबिना बिचार्यो है जो बिचारिकै कहतेतौ ऐसेअन्यथा बचन नबोलते कि संस्कृतसमान भाषाते फलनहींहै क्योंकि फलतो संस्कृत प्राकृत दोऊतेसमानहै अरुबिचारिकै देखोतौ भाषातेतौ निस्संदेह सद्यफलकी प्राप्तिहै तैसीसंस्कृत ते नहीं ॥ तहांबादीबोलेकि॥ ऐसातुमनेसुख्यो याइंबाको प्रमाण कौनकरैयापै कोईग्रंथकी साक्षीदेकै गलेउतारो तब प्रमाण करैं ॥ तहांउत्तर ॥ भाई संस्कृत वाक्भट ग्रंथमें खाजको दवालिखीहै कि ॥ श्लोक ॥ रसोद्विजीरेहनि शामरोचे सिंदूरदैत्येइद्रमनःशिलानां। चूर्णीकृतानांघृत

मिश्रितानां विभिर्द्रलेषे विलियंतिपामा॥ यह तोसंस्कृत में कह्यो अब भाषावारे कहेहैं याही खाजको दवाई दोहा ॥ हजीरा पारोसिवी है गरवी सिंदूर । मनसिल गंधक नवरकस पीस लिही चकचूर १ लेपकरै जोतीन दिन गो घृत मध्य मिलाय। तनकरहै तनताबड़े पामा पीरविलाय ॥ भावप्रकाशे ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मीमुंडीवचाशुंठी पिप्पलीमधुसंयुता। समराशीप्रसंयोगकोकिलाकिंकोर-ध्वनि ॥ अवयाही कंठकी ओषधी भाषावारो कहे हैं दोहा ॥ ब्रह्मी मुंडी वालवच पीपर शुंठ ममोय । मधु मिलायलै सातदिन कंठ कोकिलाहोय ॥ वार्ता ॥ अब कहोजी खाज की दवाई सकल नौ श्लोक चांचिवेको कीन्हो दूसरेने दोहामेंको दवाई कीन्ही परंतु आराम रूपी फलमें तो फेर नहीं दोऊको रोग जायगो ताते भाषा संस्कृतको फल समानहै ऐसेही संस्कृत ग्रंथदेखके तुलावले देखो अथवा प्राकृत ग्रन्थ देखिकै तुलावलो। परन्तु कोष्ठ शुद्धहोनो फलदोऊ को समानहै एकने संस्कृतमें ले दवादीन्ही दूजेने भाषामें देख दवादीन्ही परन्तु दवातोवहीहै ताते फल समानहै अरु पूछ्योहो तो भाषामें निस्संदेह क्योंहै क्योंकि ओषधिके नाम अलमेंसी संस्कृतमें न समझे जाते विपरीत होजाय ऐसे जो श्रुति पुराणमें समझके जिनिनिर्णय नहो अथवा त्यागोके प्राकृते परन्तु कामनो बारानार समझेने है सो भाषाते निस्संदेह समझेजाते भगवान ने आज्ञा दईहै समझे बिना कंठकारिको काढालैके जन्म भ्रष्ट

करे और संस्कृतके कितेकनाम रसदैत्येंद्र मिश्रादि समझे विना दूसरी दवाई मिलायले तौ आराम भी नहींहोय अरु रोग बढ़िजाय जाते फलभी विपरीत होजाय अरु भाषामें तौ पारा गन्धक हरदी खुलासा समझकैलावै जाते जरूर निस्संदेह फल प्राप्तहोयहै और संस्कृत के नामसों कंदाल्पा समझैही नहीं तब दवाईको मिलनो मुश्किल है तब फल। फलतौ दवाई लगाये परहोयहै ताते जो फलभाषाते अवश्यहै तितनो संस्कृतते नहीं यह सिद्धांतहै इतेपर न मानौतौ संस्कृतकेनाम रसविद्या दैत्येंद्र कोहकौ दवाईलायदेखो परंतुमिलनो मुश्किलहै तब फलतोपाछेरह्योताते फल भाषामेंविशेषहै औरज्योतिषवारे संस्कृतमेंचंद्रनिवास दरशायोकि॥ श्लोक॥ मेषेचसिंहेधनपूर्वभागे वृषेचकन्या मकरेचयाम्ये। मिथुनेतुलेवा घटपश्चिमायां कर्कालि मीने दिशिउत्तरायां॥ अबभाषावारोकहै है॥ दोहा॥ मेष सिंह धनराशिपै ऊगमनोहै चंद। वृषकन्या अरु मकर को दक्षिणदिशा अनंद॥ कुंभ मिथुन तुलराशिजो तौ आथमनोजान। मीनराशि वृश्चिक करक उत्तरको सुखदान॥ वार्ता॥ अबयकने श्लोकमें चंद्रवासो विचार्यो दूसरेने दोहामें देखलीन्हों अरु दोऊप्रवासगये दोऊको फलसमान होयगो याते भाषा संस्कृतको फलसमानहै परंतु संस्कृतमें देखिबेवारोपढ्योहोय तौतौठीकहै अरु विनपढ्यो श्लोकमें देखिकै गमन करै अरुयाम्य अरु अतो इनशब्दनमें नहीं समझैतौ वाको फल अन्यथा

होजाय अरु भाषातेसङ्कको रसतासूवो जामेंआवाल वृद्धसबी सलझैजामें बिनबूझे आंखि मूंदिकै चलेजावो परन्तु मुकामपर पहुंचैगो याते अवश्य फलअन्यथा नहींहोय संस्कृतकी नाईं भाषाकोफल संस्कृत समान बतावेगो सो हम कदापि नहीं मानें क्योंकि ज्योतिष वैद्यक तो जगत व्यवहार परत्वहै अरु हमने तो फल बोबूझो कि जाते ज्ञान वैराग्यकी प्राप्तिहोय अरु पर लोक सुधरै सो फल तुच्छतर भाषाको संस्कृत समान तीनकालमें नहीं होयगो और श्रीमत भागवतमें नर-देह दुर्लभतापै कह्योहै ॥ श्लोक ॥ नृदेहमाद्यं सुलभंसुदुर्लभंप्लवंसुकल्पंगुरुकर्णधारं । मयानुकूलेननभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धीनतरेत्सआत्महा १ अवयाही नरदेह दुर्लभता भाषामें गुसाईंजी कहेहैं ॥ चौपाई ॥ नरतनभव वारिधि कहँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रहमेरो॥करण धार सद्गुरु दृढनावा । दुर्लभ साज सुलभ सबपावा ॥ दोहा ॥ जो नतरहि भवसागरहि नर समाज असपाय । सो कृत निन्दक मन्दमति आतम हत गतिजाय॥ गानं॥ अब कहो जो व्यासजीको तो संस्कृत और गुसाईंजी को प्राकृत इनदोउनको उपदेश यथार्थ समझिके नृदेह परम दुर्लभ मानिके मनको कुकर्मते खैंचिकै सुकर्म भजन भावमें लगावै तब ज्ञान भक्ति वैरागरूपी फल समानहोय परन्तु यथार्थ भाषामें समझैगो तितने सं-स्कृतमें नहीं ताते भाषातेफलविशेष होवैहै क्योंकिस-मझिवेमें कसररहैगी तितनी कर्तव्यतामें कसररहैगी

अरु कर्तव्यतामें कसरइतनो जाफलमें कसरयामें संदेह कहा और नहींसानो तौ श्रोताके समुदायमें दोइकाव्य सुनायदेखौ देखेंकौनमें सिवायसमझै अरु जामेंसिवाय समझैंगे वाहीमें फलसिवाय यामें संदेहही नहीं ऐसेही संस्कृत कोषवालेने देवतानाम लिखेहैं । अमरानिर्जरा देवा त्रिदशाविबुधाःसुराः ॥ अब भाषावारे लिखे हैं देव अमर निर्जर विबुध सुरसुमनसत्रि सदिवेश ॥ याते भाषाते हरएकको निस्संदेह फलकी प्राप्तितेसी संस्कृत ते नहीं यह सिद्धांतहै और भाषा तौ परमेश्वरने फल रूपही निर्माण कीन्हीहै देखौ यापैमाधव दासजीकी साखहै ॥ चांद्रायण छंद ॥ वेदवृक्ष विस्तार तारजिहिबीज है । माधवसाखास्मृतिन सुसुजन पतोजिहै॥पत्र पुंजइति-हास पुराणन फूलहैं । हरिहां । प्राकृत फलरसरूप रम्य अनुकूलहै ॥ वार्ता ॥ ऐसे रसरूप फलको छांडिकै पेड़ नको परिरंभन करतडोलै वोभी महामूर्ख जानिये ताते सद्यबोधकी दाताफलरूप जो भाषा ताको अवश्य आदरदेवे तब उभयलोक सिद्धहोयहै और जगतमें व खानोभीहै कि आम खायबेते कामहैकि पेड़गिनवेते क्योंकि फलतजिकै पेड़गिनै सोतो मूर्ख कहावैहै ताते भाषाको सबको सार समझिकै स्यानेलोग आदरै हैं और अंगरेज़ लोगननेभी भाषाको सद्यबोध देनहारी समझिकै श्रुतिस्मृति सबके भाषामें तर्जुमा करदीन्हे कि जामें पढ्यो बिनपढ्यो सभी समझलेवे जाते अंग-रेज़लोग परम सारग्राही और सर्व संसारके जीवन पै

उपकार कर्त्ता जानेगये क्योंकि ईश्वराज्ञा पालनकरी ताते ईश्वर आशा अवश्यहै तबतौ राज्यपायेहैं और या कालमें भायाते विमुख ते ईश्वरतेभी विमुख रहेंगे यह सिद्धांत समझियो ॥ तहांवादीवोलेकि ॥ तुमने अंगरेज़लो-गनके परम सारग्राही अरु सर्व परउपकार के कर्त्ता सुखदायक ईश्वरांशकहे सो सर्व मिथ्याहै हमारी न-ज़रमें तौ परम असारग्राही सर्वको दुखदाता सर्वजीव की जीविका छुड़ायवेवारे कापटयके कलेवर कलि-कालके कुटुंबीसे दरशैं हैं देखौ पृथ्वीपे अनेक राजा लोग आप आपकी आज्ञाते अपनो अपनो राज्यकर-तेथे सो उन सर्वको हुक्म उठाइकै आप का हुक्म सर्व पर राख्यो ताते सर्वकी जीविका गई अरु सर्व राजा दुखीभयेअबरही प्रजातिाको दुखसुनिये प्रथम पहाड़नमें बांके टेढे रस्ता झाड़ीमेंहुते जाते हरएक पाथिस्थसला-ऊ अगवाद्रव्यदेके संगलेतेथे अब अंगरेज़ोंने पहाड़फोड़ि कै सूधी सड़क करदीनी झाड़ी कटायकै जामें हरएक निर्भय चलेजावे तब हजारहा सलाऊ अगवान की जीविकाहू डूबी अरु दुखीभये और कितनेक गरीब गाड़ा घोड़ा ऊंट बैल खच्चरन ते भाड़ा करिकै कुटुंब पालन करतेथे तापे धुवांकी गाड़ी चलाई जो एकके पीछे दशबीस आपते चलीजाय तब अनेक भाड़ेवाला गरीबकी जीविकागई और दुखीभये और दूरकेसमा-चार मँगायवेको अनेक क़ासिद भेजतेथे अब दूरकी खबर तारमें चलीआवे तब क़ासिदनके कुटुंब तौ बिना

मारे मरचुके और हज़ारहा रांडी कूंडी अनाथ चरखा कातिकै अथवा कसीदा निकालिकै अथवा ऊखलीचक्कीते गुज़ारा करतीथीं अब अंगरेज़ोंने कल को सूत चलायो कसीदेते कोटिगुणी तरह तरहकी जामदानी लोटजाली चलाई और ऊखलते अनेकगुणे कोटके पलाखांडे और चक्कीकी ठौरपनचक्की पवन चक्की पीसैं तब रांडीकूंडी गरीबनीकी जीविका तौ गई तातेपरमदुखीहैं और हज़ारहा लेखककीजीविका छापाखानेते डूबी ताते दुखीहैं अनेक घड़ियाली को रोजगार कलकी घड़ी चलायकै डुबोयो और ठौर ठौर पाठशाला करदीन्ही जामें घाची मोची कोली कातियानको पढ़ायकै पण्डित करदीन्हे तब ऊंचवर्ण की कदर कीमत कहांरही ताते परमदुखीहैं अरु बिचारे सैकड़ा पण्डाकोभी रोज़गार डुबोयो तात्ते वेभी परमदुखी हैं और जुलहीभी मरचुके और कलके पूतला कपड़बुनें तातेबुनकरको रोजीगई चित्रअकस्मात सांगमंडजाय तब चितेरे को कौनपूछे ठौर ठौर महा नदिनमें पुलबांधिकै कंगालकहारनको रोजगारखोयो तरह तरहके पक्के कपड़ा छींटें चलायकै रंगरेज छिपियन की रोजी छुडाई और कलकी टकसाल में आकस्मात रुपैयापडैं ताते टकसाली अरु सुनारकी जीविका खोई और अनोखे यन्त्र अरु गान आदि चलाये जामें भांतिभांतिकी रागिनीबोलैं तब गवैयान कोकौन रक्खे और नन्दन में ग्यास जलायकै घरघर

में प्रकाश करै हैं तब तेली को काम कटा बातुगज्ज
और कुरता अँगरखा फरगुले सौदागर बिकें हैं तब
बिचारे दरजी कुटुंब कैसे पालैं अर्थात महदुखी हैं और दौ-
र और डाक्टर दवाई देवें तब वैद्यनको काम अर्थात रह भये
और कंठालेकी मक्खी उड़ायेकरो और कितनेक देश
में कंगाललोग किसानी धंधेसें चडस हांकते पानतको
मजूरी करिके उदरपूर्णा करते थे जापे गंगाजीको नहर
लायके घरघरमें प्रवाह बहायेजाते हजारहा मजूरन
की रोजीगई और बालकन की शीतला पूजते जामें
कैयो पुजारी नाई ढोली व जंत्रीकी रोजी चलती थी
जापै अंगरेजने शीतला गोदने गुरुकिया सो निकलैं है
नहीं तब सभीकी रोजीखोई और देव दीर्घ भये ऐसे
कहांलों गिनावें परन्तु कागज चक्कू छूरी तमंचा तुप-
कादिकांचके प्याला दिवालगीर अनेक चीज उपाय
के सर्वजातिकी रोजी रोजगार रद्द किये जाते प्रजापर-
मदुखी है और कितनेक बैपारी दूकानदार कमती ज्याद
देते थे हर एक भावते उन्होंपै निरख चलाय पूरी तोल
तुलावे तासे उन्होंकी मिलकतभोगई जाते महादुःखी
हैं ऐसे सौदियें गिराइये पिंडारे ठगफांसी गीरे आदि
अनेक गरीबइतै बितै लूट लयइ करिकै आप आपने
धंधा करिकै गुजारा करतेथे उनअनाथनको तो हक्क-
ही उठाय दीन्हो सो रोते डोलैहैं गरीब बटपाड़ा अबेरे
सबेरे लटके गुजारा करतेथे तापै शील सीलपरचौरा
रोपे जासों अबेरे निकलैं नहीं अरु निकलैं तो काश

कोशपर चौकीचढी ताते दावनहीं लगौ जातेदुखीऔर कितनेक रईसनको आसदकमतीथी वेठगवटपड़ेकोअपनेइलाकेमें बसायके उनतेचौथानलेके काम चलातेथे क्योंकि ईश्वरके बनायेजीवईश्वरकी सृष्टीमें रहतेआये हैं अरु अबकोई रखने पावैनहीं तातेवेभी महान्दुखी हैं और कितनेक क्षत्री अपनी लाचारी देखिकै वित्त माफिक एकआध कन्या जीवतीरखते यानहींरखते जाते गरीवनकी इज्जत बनीरहतीथी क्योंकिनीतिको वचनहै ॥ श्लोक ॥प्रातस्नानंरिणाच्छेद्यंकन्यामरणमेव-च। क्षणमेवमहादुःखं पश्चात्त्वै सततंसुखं १ ॥ टीका॥ एकतौ प्रातकालमें स्नान करना दूसरे करजा अपने शिरका बिलकुलदेना तीसरे कन्याका मरणहोजाना ये तीनोंकाममें किंचित एककक्षणभरको तौ दुख उसी समयमें जरूर होताहै परन्तु फेरतौ जन्मभरको सुखी होजाताहै ॥ वार्ता ॥अबकन्या बधभी बंदअबकैसेइज्जत रहे तातेवेभी परमदुखीहैं और कितनीक अनाथविध-वा हरएक पुरुषसों संतोष करिकै गर्भपातन करजाते में इज्जतबनी रहतीथी और अबैगर्भ पातन मानको मनाई जातेतीन कामकीहानि होवैहै प्रथमतौजारिनी ज्ञात कुटुंब जगतते जायचुकी दूसरे गर्भपात करायबे वारेको रुजकगयो तीसरे बर्णसंकरी प्रजाभई जाते पिंडोदक क्रियामिटी जाते पितरमात्र पतनभये यापै गीताको वाक्यहै ॥ श्लोक ॥संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्यच। पतंतिपितरोह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रिया १

कहना नहीं छठेंमैथुन समयकेवर्त्तमान किसीकोकहना नहीं सातवेंदान करना सो किसीसे कहनानहीं आठवें मानपावेवो किसीसे कहनानहीं नवमेंअपमानकाहोना ये नवही काम गुप्तरखना चाहिये१ परंतुइन्होंतेएकभी गुप्तनहींरहै देखोकहूं युद्धसें जयहोयजो अखबारद्वारा सर्वत्र सांचीसी जाहिर करदेहैं और अंगरेज की पेटी कमती यासस्ती जेतनीक पैदाहोयसो पहिलेही खबर देशदेश में पहुंचाय देवैं कि अबकी इतनी पेटीछपी हैं जातेखरीददार होशियार होजायंसो भावकम आवैसो ये राजनीतिकी रीतिनहींहै परंतुसलाह प्रकटहोयवेके कारण तीनहैं प्रथमतो कमअकलीदूसरे नीतिमेंसमझै नहीं तीसरे बड़ेलोगकहते आयेहैंकि षट्कर्णगतबात भईसो सलाहछिपाई छिपती नहीं जातेकामकर्त्ता एक होना अरु इनके तो कंपनीकी सलाहकिजामें चौबीस अंगरेज भेटतेहोयं सो अड़तालीस कर्णगत बातजगत जाहिरहोय यामें अचरजकहा और सनातन धर्म भी इन्होंने अनेक मिटाये देखोयुगयुगसे सतीहोती आई औरइन्होंकी मनाहीहै ऐसेहीहिमालय गलनाबौरफंड- नीकरवटलेना सबबंदकीन्हीं तबसनातन धर्मकहांरह्यो और पुनर्लग्नभीत्रिवर्णामें कभीसुनेथेसोहोनहारहैऔर डाकिनभूतप्रेत और इनके मंत्रसनातनसों चले आवैं हैं औरयेमानेहीनहीं तबडाकिनभूत और मंत्रवाले दोउन को हकउठ्यो तातेयेभी दुखीहैं और इनको अविवेक तोदेखो कामवाले हजारहारुपयातो खाजायं अरुझूठे

हीअशक्तिलाको वहानालैके घरबैठें उनते डंडतोलेंनहीं
और उलटे इंगलिस पहुंचावैं अहोअनीतिदेखिये और
पीछेवाले राजकरैंगे जिन्होंके लिये अपनी दुर्लभदेह
नाशकरैंऔरझगड़ामें मारेजायंऔरसुनेहैं अड़मदीवड़-
मदीनहींजाने कहांके साहूकारकी पटीकेवास्ते चीन-
वारेसोंलड़े और अपनी उन्हों की फौज कटाई और
पेटी पीछे लाय के जिन को जिन को दीन्हीं ऐसे
वेवकूफ नहींतौ आधोआध पेटीतौलेते परंतुलेवें कहा
राजनीतितौ समझेहीनहीं जातेऐसेही दीवानी फौज-
दारी सभीमें अंधेर समझलीजै तनतौ रैयत मात्र परम
दुखीहै और इन्होंको अविवेक तौ देखिये कि परम
पूजिवे योग्यजे पांचोंतत्त्व तिनतेटहल करावैंअरुकाम
लेहैं और रोज़गारतौ रैयतमात्रको हरलीन्हें क्योंकि
कितनेक कंगालकोयलावेंचिकै पेटभरतेथेजापैइन्होंने
पाषाणके कोयलाचलाये परंतुरोज़गारतौ काहूकोन
रहनेदियो ऐसेस्थालीतंडुल न्यायते सयानेहोयँ सो स-
मझलीजियो क्योंकि अवगुणतौ अनंतहैं कहांलोंकहैं
परंतु प्रजा परमदुखी है अवरहे ब्राह्मण जाकी तौ
पूजा प्रतिष्ठा पै दासप्रभुताकोमूलही मिटायो जिन्हों
को न्याय शालामें भंगी नीचतेनीच और सर्वोपरि
ब्राह्मण दोऊसमान औरविद्याशूद्रनको और अंत्यज-
नको पढ़ायदीन्हींसो भूमंडलको भूगोल और आकाश
मंडल को खगोल ऐसे सारेब्रह्माण्ड की रचना सर्व
समझलेवें अब ब्राह्मण को कौनपूछै और जन्मपत्री

वर्ष फललग्नादि पढ़िकै प्रपंचपालैं तौ ये लोकफला-
देशको कछु मालहोनलागनै अरु ठट्ठाकरैहैं अबब्राह्मण
को पूजिवे पालिबेवारेरहे जे क्षत्रीलोग बेतोपहिलेही
स्वधर्म छोड़िबैठे तातै सर्वदुखीहैं क्योंकि सत्ताइनकी
भी हरलई याते सर्वके दुखको कारण अंगरेजलोग
जानियो जामेंभी ब्राह्मणके तौ निर्मूलकर्त्ता परमदुख-
दाईभयेकि जानै श्रुतिस्मृति सबके अर्थ भाषामें तर्जुमा
करिदीन्हेंहैंसो हरएकअर्थ समझलेहैं जासोंखरीखटक
तौ येई दुखदाई भई अरु याहीते अत्र असारग्राही
असुर अंशजानेगये तिनकोतुमने सर्वोपकारी सारग्राही
ईश्वरांश कैसेकहे याको उत्तरदेवो ॥उत्तरसुनियेयथामति॥
भाईजो ऐसे वचनहैं कि ना बिष्णु पृथ्वीपती बिष्णुके
अंशबिना पृथ्वीपति न होवैहै ताते ईश्वरांशकहे और
इन्होंने बिन अपराध काहूको राजनहीं लीन्हों और
कितनेक इन्होंते सन्मुख लड़े उन्होंको राज्य लीन्हो
थो परन्तु नीति बिचारिकै पाछे दीन्हों क्योंकि तीन
तकसीर ईश्वर भी माफकरैहैं जाते सभीको बनै राखै
दोहा ॥ रज्जबरीति सराहिये जोविधु कैसीहोय। कदा
निगोड़े तरनिको तप्यो सतारनखोय १॥ वार्ता ॥ देखो
लीन्हों राजनीति विचार पीछे दीन्हों और सबको
बनैराखेइन अंगरेजलोगनकीतो तरह तरहसों तारीफ
करनी चाहिये सोतौ धरीरही और वृथा दूषणदैके
गुणको अवगुण बतावोहौ जामें कछु लज्जा भी आवै
है उन्होंको राजदीन्हों और तुम्हैं बुरीलगी याको

कारणाका परन्तु खलको स्वभावहै पर संपति देखि न सकैं तब निन्दाकरैं और कितेक सुद्र सवी कन्याबध करतेथे उन्होंके शिरचारहत्या चढतीथीं प्रथमतोबाल-हत्या दूसरेस्त्रीहत्या तीजे गोत्रहत्या चौथे विश्वासघात ऐसी चार हत्या परमदयालु अंगरेजने बंदकराई उन्हों की तारीफ तजिकै निन्दाकरौहौ सो कन्याबधमें तुम्हें कालाभहै सो कहो परन्तुनिन्दक सो गुण तजि औगु-णगहै सो सत्यहै और तुमनेकही कि हुक्मबिना रईस लोग अवैपरम दुखीहैं सोमिथ्याहै क्योंकिपहिलेगनी-मणके जुलमते मारेमारेफिरतेथे और अब मुखमोंरोटी अंगरेजके प्रतापसों मिलैहै और आप आपके परगने में हुक्महैही और पहिले पहाड़न में सघन झाड़ी के महाघोर विकट कठिन भयंकर मार्गथे जामें सैकड़ा लोग बलाऊ सुदां लुटेपिटे मारेजातेथे और हजारहा बैल लंगड़ेलूले पिटातपिटात आंखीं निकल पड़तीथीं तब जो बिरले त्राहित्राहि सों साबुत पहुंचतेथे तापैपरम दयालु होयकै अंगरेजलोगनने सर्वके सुखको लाखों रुपये लगायकै झाडी कटाय बड़ेबड़ेनद्दीनाघके मार्ग से पहाड़ फोड़ायकै सूधी सुखदायक सड़क कराई जामें कांचनउछालते अबल सबल हरएक आंखेंमूंदिकै चलेजायँ पै कोई बटपड़ा मात्र सूझैनहीं और नजीक नजीक चौकी चट्टीथापनकरीं जामें मुसाफिरको घरते घनेरो सुखहोवै अहो अंगरेजनकी दयालुता कि जामें सर्व जीवमात्र सुखपावैं और बलाऊ बटपरनको भी

पलटनमें भरती करलीन्हेंजाते वेभी परमसुखीहैंऔर भाड़तीभाड़ा करैंहीहैं अरु परवन हुह्वां मार्गमें परमसुख पावैहैं अब इतनोबड़ो विश्वविदित उपकार भूलिकैकृत-घ्नीकीनाईं उपकारको अपकारमानतेलज्जानहीं आ-वैहै और हजारों कोशकेसमाचारको सैकड़ोंरुपया ल-गावते उनकोभी कभूक महामुश्किल मौंवरसैं बन्दमें कहूंक आवते और अबै गरीब गुरबामैंएक आनादेके कलकत्ताकेसमाचारचारदिनमेंसँगायसकैहैंअबविचा-रिकै देखौतो उपकारको पारावार नहींजाको भूलि-कै अपकार मानना आपहीको कामहै और कासिद कासिदीकरैहीहैंऔरनहींतोकिसानीकरैं हैं और परम चैनसेहैं और ऐसेहीभाड़ती भाड़ाकरैही हैं परंतुपहिले से अबपशू हुह्वां सड़कते सौगुने सुखीहैं और धुवांकी गाड़ीने परवनको परमचैन दीन्हों है औरऐसेहीक-तियारी पीसनहारी फौजकी बिगारमें कातत पीसत अकुलायउठतीं और अबैकलचक्की व पनचक्कीकेप्रताप ते बिगारसों छूटिकै चैनपावैहैं और पीसनहारीपीसैं-हीहैं परन्तु जो कपड़ा पहिले सरदारको मयस्सरनहीं था सोकलके प्रतापसों कतियारी पहिरैहैं और सुखी हैं और अनेक ग्रंथनको कालिखावते अरु लिखाईके संकोचते मूल मिटजाते और विद्याभी डूबजाती जो द्रव्य लगायकै निजपुत्रज्यों प्रजाको पाठशालामें नहीं पढाते तो और छापाखाना न चलावते तो हजारहा प्रतिकैसे होतीं और कितनेक लेखक और पंडितीं

कारोजगारछापाखानेमें औरपाठशालामें अंगरेजखूव देवैहैं और कितनेक लिखैभीहैं अरु पढ़ावैभीहैं परन्तु हज़ारों ग्रंथगरदीमें जलगये और डूबगये उन्होंकेपीछे हज़ारहाप्रति कौनलिखायके प्रवर्तनकरतेतातेइनको परम उपकार मानिये जाने सर्व मतके ग्रंथराखे और सैकड़ा मुसद्दीके लड़का पढ़ाये और कामहुसियार किये तातेअनेक अशीशदेहैं अरु आनंदमेंहैं और नदीनालेके उतरिवेमें महा दिक्कतथी कितनेककोचीज डूबजाती वहिजाती और कितेकवहिजाते गोतेखातेतनकुपिकल ते पारपड़ते और अवपुलके प्रतापते घोरनदी पैलुगाड़ै लड़काखुशीते चीजलिये चैनसें चलेजायँ और ऐसेही डाक्टरको दरमहा और सैकड़ा रुपयेकी दवाई अंग- रेज़ देहैं और गरीव तालेवर ऊंचनीच सबकी पीड़ा हरै हैं और शीतलाते हजारों वालक टूटतेथे अरु म- हादुख पावते उन्होंकी दया विचारिकै गोदनेवारेन को आप रोजगार देकै राखे अरु वालक जिवाये जिन्होंकी शादी सगाईमें ढोली वजंत्री नाई सर्वको लाभ होवै ताते सुखी रहें सभी और भगीरथ राजा अपने पितर तारिवेको गंगाजी लाये और अंगरेजने कइयो देशोंको गंगाकी नहर लायके सुखीकिये अरु लाखोंरुपैया लगाये गांठके और सौदागरोंसे पिंडारे ठग पाशी गोरे वंदीकिये कि करुणा तुम्हें आई तैसे अनेक को मारते लूटते तोवरा चढ़ाते शान जलाते लुगाईको इज्ज़त वेइज्जत करते और सवरे जगतके

जीवको तलतलायकै त्रासदेते तिन्होंकी करुणा क्यों न आई परंतु अहो अंगरेजकी दयालुता कि जाने फसादीमात्रको वशकरिकै सर्वजगतके जीव सुखी किये और बटपड़ा पिंडारेभी कछु मर नहीं गये वेभी खेती मजूरीकर कुटुंबपालैहैं और तुमने पुनर्लग्नकीकही ॥ ताकोउत्तरसुनो ॥ जो पतिव्रताहैं अरुपरमेश्वर प्रीत्यर्थ लोकलाज कुलमर्य्याद बिचारिकै अपने यकीनसों बैठीरहैं वो पतिव्रता भलेही बैठीरहें उन्होंको पुनर्लग्नको हुकमनहीं और जे जारिणी हैं ताके कोटिउपायकरो परन्तु जारकर्म कीरबिना हरगिज रहनेकी नहीं ऊंच नीच बिचारेबिना हरेकते संगकरिकै भ्रूणहत्या बालक बध करिकै सर्व कुटुंबको भ्रष्ट करैगी तातेतो खुलदस्त जातके को बरलेनो उत्तम है और पुनर्लग्ननहीं चाहै ते भलेहीमतकरो परन्तु बालकबध बंदके भयते जारत्व कम करैगी क्योंकि बालकजीवेको जातेजाति कुटुंब सब छूटैगा याकेडरते कितनीक बैठरहैंगी और वर्णसंकरकी कही सो तो जिन जिनकी जारिणी लुगाई ताको कुल अर्थात वर्णसंकर होयगो तात्ते वृथा गर्भपात बालक बध क्यों करनेदे और तुम्हैं नहीं रुचै तो अरजी देकैपीछे बालकबध कन्याबध रुकवाइये और तुमने कहीकि नौकरीलिये बिनाइम्तिहान क्यों देवैहैं ॥ ताकोउत्तर ॥ जिन्होंने जन्मभर सांचेमनते सेवाकीन्ही उपरांत अशक्त लंगडेलूले जखमी कहांजायँ जानिके पालनकरैहैंजापै

तुम्हें खटकै याको कारणकहा परन्तु अंग्रेज़की खलता तो देखिये और नीतिको वचनहैकि अबलस्य बलंराजा सोराजापना इन्हींमेंहै यहै विचारिकैलाखों रुपया खर्चकिये लड़ाईकरी और चीनमेंपेटी लाय दीन्हीतिन्होंकी तारीफ करनीचाहियेसो तौनहीं अरु उलटी निन्दाकरौहौ कैसाहूकारको वे कसूरपनेसों दीन्हीहै लड़केलाये जातेहैं हजम करनी सलाहथीसो हजम करबेसें तुम्हेंक्या फायदाथा सोकहो और तुमने कहीकि कमअक्लीते लांचनहींलेहैं जोलेतेतो अनेक के काम सुधरते सोसिध्याहै क्योंकि लांचलेवेतबतो झूठेको सांचो करनोपड़ै ताते अन्याय होवैहै औरतुम कहौकिनोंकरी महसूलतेतो रैयतको लूटिकै बरकनावै हैं औरतर्थैला गहकके हजारहां रुपयेछोड़दिये॥तहां उत्तर॥ पेटीपाछे पांचसै रुपयालेहैं सोतो तुम्हारी आं-खिनमेंखटकैहैं परन्तु पेटी एक एकके हजारहांरुपये मिलतेभी कभीपहिले सुनेथे और अबै हजारहां चीन सें घटेहैं तातेमाल प्रमाने जगातलेहैं यामें जुल्मनहींहै और नोटकोकहा सो जैसे चमड़ाके नोटके रुपयादेहैं तैसेपीछे वेंचे तबमिलैहैं यामेंभी जुल्म नहीं उलटोबन राखिवेकी जोखिममिटी और तुमने कहाकि परचक्र फौजफिरे बिनछली बंदको रोजगारगयो॥ तहांउत्तर॥ कितनेक छलीबंद रुजगारीहैंहीं और कितनेक और धंधामें लगिकै प्रपंचपालैहैं कछुभूखे नहींमरै हैं परन्तु फौजनते सबरो मुल्क तुमसुद्धा मूलधानी नाहि तोपा

करतोथो सो क्यों न बिचारो और अबैराजाराजाप्रजा
चैनताको निन्दौहौ याते धन्यहै तुम्हारे बोधककोऔर
बादशाहीके जुल्ममें बड़े बड़े सरदारनको बैठक नहीं-
थी खड़ेरहते और जाको आसेको टेकोमिलै वहमहा
सरातबसावै और अबै अंगरेजन की प्रजा वात्सल्यता
पेखियेकि हरेक रईस सबी चमरपालकीमें बैठौपरंतु
सनेनहीं क्योंकि प्रजापर इन्होंको संतति भालासवारी
निकलैपै खड़ काहूकोनकरै और खुशीते खड़ होय
जाको मनेनहीं क्योंकि कवचसरादि सिरेषोज संतति
अर्थ लगावैहीहैं जगतमें याते वात्सल्यताजानीगईऔर
तुमकहौकि राजनीतिकीरीतिते कामकर्त्ताएकचाहिये
तब हानिलाभ जय अजयकी सलाह गुप्त रहेहै और
इनके तो सलाह कामकर्त्ता चौबीसको कंपनीहै ताते
बातगुप्तरहेनहीं तातेनीतिविरुद्धहै॥ ताकोउत्तर॥ एकतो
मालिक चाहिये और सलाहगीर कामकर्त्ता एकहोय
जहां अविवेकते लोभते अथवा शत्रु मित्रताते कैयोंको
भलोबुरो करडारैहै और इनके चौबीसकी सलाहएक
तुलैसो कामकरै ताते अन्यथा कदापि न होवै क्योंकि
एकको मतिते चौबीसको मतिपरम प्रबलहै और एक
मालिकहै वो अन्यायतो कदापि नहींकरै परन्तुकभी
वाकोभी मनबदलैतौ वापै चौबीसको कंपनी सिक्का
उनपैभी अष्टकौसल उनपै और अनेकहैं उनपैभी बाल-
स्टर फेर अन्यथा कैसे होनपावैं देखिये जिनके बन्दो-
बस्त फेरये क्यों न चक्रवर्तीहोयँ और ये अवरेज की

पेटीकी संख्या और जय अजयके समाचार जहान में जाहिर करैं याके कारण दोयदरशोहैं प्रथमतो निर्बल होय सो शुभ राखैं प्रबलको भयकोंनको दूसरोनिष्कपट क्योंकि प्रजा पुत्रवत जानै तिनते दुराव कारक्खै और कितनीक शुभ सलाह ये लोग शुभरक्खैं ऐसी काहूके रहीनहीं रहेगी ताते नीति निधान ईश्वरने इन्होंको बनायेहैं और सती हिंसात्यगतन वीरपकून साँचेमको हैं वेतोकोटि उपायते रुकैनहीं अरुमनमानी करैं और सबेरहीको येभीरोकेनहीं और कितेक मोहोनमवरी को पानीचढाय जबराई रोकलावैं आगकी यानतेभगे तो काटिकेडारे लोक दरयायनेको क्लेश भयते मरे उनको समझाय राखेहैं और तुमने इन्होंको दीवानी फौजदारीमें गफलतबताई परंतुअकबरके बंदोबस्तकी शारीफसुनेहैं जिन्होंकी फौजदारी के अहवाल सुनिये छेखोहरद्वारके चढावकेमेलामें गोसाईबैरागीकोपंद्रह दिनपहिलेसे सैकड़ामुसद्दी कारवारी वजीर और खुद अकबर बादशाह ने सामदामदंड भेदते भांति भांति समझायेपै मानीनहीं तबदूरबीगलगायके दूरतेलडाई का तमाशा देखाकिये और हजारहां गोसाई बैरागी कटिमरे और अंगरेज बहादुरका बंदोबस्त देखियेकि सहजसें समझायके रोकैं चिड़ियां कोभी लडाईमें न मरनेदीन्ही अबैइन्होंकी और अगली फौजदारी को पड़छेमीडो कितनो अंतरहै अबअगलोदीवानीसुनिये याह जहांके वक्त साहूकार के लडकाने फरियाद

कीन्हो मेरापितातौ मरगया तीनलाखकी खज़ छोड़ि
के और मेरीमाता मुझेकुछ देतीनहीं सोआपदिलाइये
तबसाहूकारकी औरतको बुलायके सबदौलत भी मँ-
गाय तीन हिस्सेकिये अरु हुकम फरमाया लुगाई सों
कि लाखरुपये तौ तू लेजा और दाखिल करो तबसे
ठानी हाथजोड़के बोली जापनाह तकसीर माफकरो
अरुजानबख्शो तौलौंडी अर्जकरै तब हुकमकिया जान
बख्शा अर्जकर तबबोली यह दौलतमेरे खाविंदकी है
और मैं उसकी औरतहूं तासोंलाख रुपये पाऊंसो वा
जिबहै और लड़का उनका बेटाहै सो लाख इसके भी
इनसाफसों हैं क्योंकि उन्हीं के पेशाबसों पैदाहुआ है
लेकिन हजूरका और मेरेलाख लड़केको दिये और
खजानचीसे कहालाख अपनेखज़ा खाविंदका नाता
क्याहै यहमुझे मालूमनहींहै सो लौंडी सुना चाहतीहै
तबबादशाह हँसिकै हुक्मकिया तुम्हें इनायत किया
हमाराहिस्सा तुहीलेजा तबलेआई सो अगलीदीवानी
इसमाफिकथी और येलाखों रुपयागांठकेलगायलड़ा-
ई चीनवालोंसे करजिनकी पेटीजिनकोदई अबइनकी
और अगली दीवानीतौलिये कितनो अंतर है तबतुम
इनमें गाफलत किसतरह बतावो हो सोकहो और
पंचतत्त्व पूज्यहैंसोहैहीं कामलेवेमें कहापूज्यपनोजातो
रहैहै कामतौ आगेतेलेते आये देखोजहाजते बादवान
बांधि पवनतेकामलेतेथे और तापतुपकादिहाराअग्नि
तेलेतेआवैहैं पालाबांधि पानीतेलेतेथे और ज़मीनको

तौ खोदते खोदतेइमारत कोनीममें पत्थरापटकते ऐसे अपनीअपनी अक्लमाफिक कामलेतेही आये परन्तु इनते अंगरेजन की अक्ल अनंतगुणीहै तातेअनंतगुणा कामलेहैं यामेंतुमने कादूषणादियोपरंतु असारग्राहीको स्वभावहैकि गुण में अवगुण थापिकै भूत काल को चर्थासिरा हैं और वर्तमानको निंदैं परंतु पाछेही के जुल्मसुनो कैयोजमीदारोंको मुसलमानकिये तबजमी-दारीदीन्ही और कैयोप्रतिमा भंगकरी कहींआनमत के ग्रंथडुवोये मथुरामें मंदिर गिराय ससीत करी ऐसे सैकड़ोमंदिर गिराये तवहिंदू लोग मंदिरपै ममीतके चिह्न करानेलगे तवमंदिर वाकीके वचे ऐसेअत्यंत जुल्म करते और कोईअर्ज करने को टेटपहुंच सकते नहीं वाजुल्मके शापते निर्मूल हुये और अंगरेज की नीति निहारिये काहूको वलात्कार सों किरस्तान न करे कोईलोभते होयतौहोउ और कोई प्रतिमा भंग न करे काहूको मत न उठावे सर्वतीर्थ महिमा यथास्थित वनीराखी सर्वमतके ग्रंथउद्धार किये गरीव तालेवर सर्वकीअर्जसमानसुनै और यहांलौंहुक्महै कि कोईअं-गरेज जास्ती करेतौ विलायतपीछे वाको सुनाईनहो-यगी और कोई शत्रु सेनारहित या वालक होय वासों कहै पांच वर्ष पीछे लड़ैंगे तुम सव तरहसों हुशियार रहो लौ ऐसे सांची सलाहशत्रुकोभी वतावैं औरअच्छे कपड़ा चीजें दूर दूरके समाचार गरीव धनाढ्य सव को प्राप्त होयँ पहिले कोसभर पहुंचनो मुशकिलथा

अब हजारों कोस निर्भय चले जावो जैसे अंगरेजके राज्यमें प्रजाने चैन पायो ऐसे काहूके राज्यमें नहीं पायो याते हियेकी आंखिनते हेरि देखिये अंगरेज को उपकारतो सुहृदते स्वामीते जनक जननीते सहस्र गुणोहै कि जिन्होंसे जन्म जन्मांतरमें भी उऋण न-होय सकोगे तिन्होंके कृतघ्नोकी नाई गुणके अवगुण बतावते लज्जा नहींआवैहै और इन्होंमें महा अवगुण तो एक हिंसा करैं जाकोहै सो तो तुम्हैं सूझोई नहीं और जितेक गुणथे तिन्होंके अवगुण बताये ॥ दोहा ॥ फीकभये सब प्रश्न निज रही न रंचक बात। चितवत बदन बिगाडिके उर अतिशय अकुलात ॥

इतिश्रीराजाधिराजराठौरबंशावतंसश्रीबलवंतसिंहभूपालाज्ञयानागर गुर्जरस्थरत्नरामात्मजकबिटीकारामेणकृतायांभाषाऽमृततरं-गिण्यांगौरांगगुणबर्णननामचतुर्दशस्तरंगः १४ ॥

दोहा ॥ खलसलको खटकै खरी सज्जनको सुखदान। प्रकट पंचदश लहरको करिहौं अबै बखान १ भई कुगति सब युगतिकी तन मन तजैन टेक। उत्तर कछु सूझो न तब बोले बिना बिवेक ॥ बादीबचन ॥ तुमने अंग-रेज लोगपै हिंसाको दूषण धस्यो परंतु हमैं दूषणसों कछु दरकार नहीं जाको दोष दृष्टी होय सो देखैकरो हिंसाको हिंदुस्तानके लोग नहीं करैंहैं परंतु हमारे हियेमें तो खरी खटक एकहै देखो श्रुति स्मृति समु-द्रके अर्घरत्न हससारिखे पंडित मरजीवाको प्राप्त हुते तिनको इन अंगरेजने तुच्छभाषा के तज्जुंसा में प्रकट

करदीन्हो जातेपढ़े तेपढ़े हरेकके हाथलगजाय तबहमें कौनपूछे यहमहा अपराध इन्हों के शिर साबित है तहांउत्तर ॥ तुम अपनोअपराध औरपे धरौहो ताते ऐसे क्योंनविचारो अंगरेज लोगलाये कहांते कितनेऊआप सारिखे लोभीपंडितनने पढ़ायदीन्ही तबतो भाषा में तर्जुमाभये तातेनिजदोष दूसरेपे क्योंधरनो ॥वादीवचन॥ भाईतुम ब्राह्मणपै क्योंदोषधरौ ब्राह्मणतौ भगवत को मुखहै शूद्रचरण वैश्यजंघा क्षत्रीभुजा सो भुजानकोनिज धर्मयहहैकिजोसुंदरपदार्थ हाथचढ़ेसोमुखके अर्पणकरै तबमुखरूपविप्रजठरानलजगै तबजठरानलचारोवर्णरूप अंगअंगचरण उरभुजमुखादि परिपुष्टराखै ऐसोअनुक्रमयुगयुगते चलोआवतोथोतापैअज्ञ जन्मचतातेप्रथमभुजानने मुखसेवन स्वधर्म श्रद्धाघटाईतय आहुतिविनाथजज ठरानलनिस्तेजभई तातेचारिहूवर्णरूपी अंगअंग निस्तेजसात्तहीनभये तबविकार रूपीम्लेच्छ राजाआय उदय भयेजिन्होंने चारिहूवर्ण अंगअंगस्वधर्म छुड़ायकैंनिजाधीनकीन्हो वा आधीनताके वशीभूत ब्राह्मणनने श्रुति स्मृतिसर्व पढ़ादीन्ही अरु इन्होंने पढ़िकै तुच्छभाषा में तर्जुमाकरदीन्ही ताते नितरनीच ऊंचसर्व समझ वेलग गये ताते नानाकिये अनेकअस्तव्यस्त कुकर्मकी कर्त्तव्यता कलिकालकी है क्योंकि ऐसे अनर्थ तीनहूं युगमेंसुन्येदेख्येनहीं और जैसेमहानीच कलिकाल तैसेही तुच्छनिपटनीच अंत्यजते अनंतगुणअपराधी अंगरेजराजाप्रकट किये नतो राजापनो क्षत्रीको काजैसे

॥ उत्तर ॥ भाई कलिको और कलिके राजाको प्रेरक तौ परमेश्वर है इनको दोष नहीं यह्रयात्ववातिवातोयंयज्ञ- यात तपतेरवि: जाकेभयते पवनबहे अग्निदहे रविततपै कालचक्रचलै वहप्रभु सर्वको शास्ताहै वाकी आज्ञाते युग प्रमाणेराजा प्रकटैहैं सतयुगमें ब्राह्मणराजा और क्षत्रीको तो हाहाखवाय छोड़े परशुरामने तब राजा काहेके जाकोहुकमसो राजा फेर त्रेतामें रघुनाथजीने ब्राह्मणतेराजसत्ता खैंचलई अरुक्षत्रीको राजदीन्हों द्वापरमें महाभारतद्वाराक्षत्री क्षयकारिकै वैश्य नंदनंद- नराजा उपरांतयादवाऽस्थलीमें निजकुलनशायकलि- कालमें क्षत्रियाभास राजाकिये फेर कलिप्रवर्त्तनदेख यवन राजाकियेउपरांत अंगरेजराजा और भाषाद्वारा बोध भाषा तीनोंयुगमें बीजभूतहुती कलिके प्रारम्भमें अंकुरजम्यो हालमें संस्कृत भाषासमानहै परंतुसंस्कृत दिनोदिन घटैहै और भाषाबढैहै परंतु परिक्षित वर्ष बाकीरहेहैं तापर्य्यंत श्रुति स्मृति गीता भागवतादि सं- स्कृतमात्र रहैगा उपरांत ज्ञानभक्ति वैराग्यगीता भागवत ज्योतिष भेषजादि सर्वग्रंथ भाषामात्र में रहैगा और भाषाद्वारा बोधकारिकै भगवतनाम स्मरणते परमपद की प्राप्ति अरु प्रभुप्रसन्नता ऊंचनीचसर्वजाति सहजमें पावैगा और अंगरेजोंकी प्रजापै सदृष्टि और याही रीतिकी नीति रहैगी तहां पर्यंत राज्यभी इन्हीं को रहैगा परंतु अंगरेजके राजको अरु भाषाको गुण उप- कारप्रजापर अगलेराजाते और संस्कृतकेग्रंथतेसौगुणो

सहस्रगुणो सत्यसमझियो क्योंकि पहिले बड़े २ राजा होगये पैं कलकत्ताकी खबर चारघड़ी में अल्पद्रव्य सें आवती और बद्री केदारके पहाड़में मड़कगैमीकाढूने कोऊहीहोयतौवताओ ऐसेऐसे अनंतउपकारतौ अंगरेज केहैं अबभाषाके सुनौं कि वारेवारे बयलौं चुटिया ऊंचे वांधिकै आधीआधीरातिलौं जोखिवेकी मेहनत उठावै तथापि चंचुप्रवेश न होवे तबजगतकी महज भाषा में साधन का समझावै तबकछुमासरीहोय और भाषाके ग्रंथकेसे सुदैसरसकहे थोड़ीबहुत बँचगतौ हुँतौ भा-याते शास्त्रभावकोसारसहज में समझलो जासंबद को लवलेशनहीं ऐसेही अनंतउपकार भाषाकेहैंसवायप्रभु-कीभीयाहीतें प्रसन्नताहै और भाषाहीकीआज्ञाहै ताते तुससंस्कृत भरोस कितेभूलेहौजाकेराजमें वाहीकीदुहा-ई और वाहीको धारसौंले तबवचै हाल में सुसारभरी रघकीदुहाई और संस्कृतकोसनहीं मदैहै और जाके व्याहमें वाही बनरीके दुलहा को नामले गीतगावैहैं और को नामलेवें तौ निकालीजायँ न मानैतौ गाय देखो भाषा तौ सर्वसंस्कृत को सारहै क्योंकि सृष्टि के क्रम में परब्रह्मते प्रकृति ताते महत्तत्त्वते तामसाहंकार तातेपवन तातेतेज तातेपृथ्वी तातेसृष्टी ऐसेक्रमहै और संहार समय प्रथम पृथ्वी को नाश फेरतेज फेर पवन फेर आकाश फेरशब्द फेरअहंकार फेरमहत्तत्त्व फेर प्रकृति पाछेपुरुष एकसच्चिदानंद सर्वकोकारण परब्रह्म रहैहैशेष सोईसारहै तैसेसर्व संस्कृतको संहारहोतहोत

प्राकृतभाषा सर्वकोकारण भारभूत कलिमें रहैहै याते परमचतुरलोग संस्कृताभिमान तजिकै ईश्वराज्ञातेअंगी कृतकरैहै कलिकालमें तरणोपायदूसरोनहीं यहीसिद्धांत

बादीवचन॥ तुमनेकहीकि परीक्षितके बर्षपीछे संस्कृत के सर्वग्रंथ लोपहोयकै एकप्राकृत भाषाहीरहेगी ऐसी काहू औरनेभी कहीहै कितुम्हींने अनोखी उपज को अडंगालगायोसोकहो॥ उत्तर॥ भाई अडंगातो आप केहीहिस्से आयोहै हमनेतो सैकड़ा साखीदीनहीं तामें एकभी अन्यथा होयतो कहो और यापैभीमाधवदास-जीकी साखहै॥ छप्पै॥ नारदकलि कर्त्तव्य कह्योनिज ग्रंथनमाहीं। बर्षअढाईसहस ग्रामसुरसकल बिलाहीं॥ पंचसहस गतबर्षजाह्नवी जलपलटैहै। तपतीरथआचार सतीसत समताजैहै॥ नवदशगत पंचानये साधु शुद्धहरि दिनतटै। शुक्लीसरही प्रहर परीक्षितकोतपघटै ४ बर्ष सहसदशगयेमेदिनीमापति तजिहै। सात्त्वर्ष अर्वाकप्रस-व पापनितियपजिहै॥ गायत्री अरुगंग गोबर्धन गीता जैहैं। भाषाभजनप्रसिद्ध सिद्धकारज सबह्वैहैं॥ इमिनाम हितैनिर्बानपद दरशत माधवदासको। इतउतभरमैभूलि कै अखिलआनउपहासको ५॥ बादीवचन॥ तुमनेमाधव-दासकी साखीदीन्हीं परंतु भाषाबारे को हमैं प्रमाण कमहै तातेसंस्कृतकी साक्षीकहो तब प्रतीतिआवे॥

उत्तर॥श्लोक॥ कलौदशसहस्राणि विष्णुस्त्यजतिमेदिनीं। तदर्द्धंजाह्नवीतोयं तदर्द्धंग्रामदेवता ६॥ टीका॥ कलि युगके दशहजार वर्षगयेपै विष्णु भगवान जो हैं मे-

पृथ्वीको त्यागकरैंगे और पांचहजार वर्षगयेपर श्री गंगाजी महारानी लोपहोजायंगी और अढ़ाई हजार वर्षगयेपे ग्रामदेवताजो भैरवभवानीको आदिदेकेछोटे मोटे इनदेवताकी महिमा मिटिजायगी १ ॥ वार्त्ता ॥ या पैतौअनेक आर्यवचनहैं तो ईश्वराज्ञा मानिकै सर्वश्रेय कारिणी प्राकृत भाषाधारणाकरनाहीधीमानकोकाम है ॥ दोहा सुनिकैभयो सशंकउर उत्तर उपजत नाहिं। गहीछछूंदर सर्पज्यों त्योंबादी बिलखाहिं ॥ वादीवचन ॥ आपनेकही किजाकेराजमें वाहीको शरणोंपन लेंसो तौ सत्यहै याते भाषाते विमुखता योग्यनहीं परंतुनीतिमें लिखेहैंकि ॥ श्लोक ॥ बालसखित्व मकारणा हास्यं ॥ टीका ॥ बालकते मित्रता करनी अरु बिनहीं कारण हंसनो इत्यादि भाषा पढ़ते परम लघुताई आवे जामें पंडिता ईकी प्रभुताकोतौ लेशभी नरहे यह अंदेशाहे ॥ उत्तर ॥ भाईजी जा लाघवता के लिये यम नेमादि ध्यान धारणा सत्समागम कथा कीर्त्तन अनेकसाधन विवेकी लोग अहर्निश करैहैं परंतु प्रभुता पापिनीके मारे लघुताको लेश नहीं आवैहै सो परम पदार्थ परमेश्वर ते मिलायवेवारी लघुता भाषा पढ़ते अकस्मात आवै तौ अहोभाग्य जानिये वा लघुताके दशोनाम लिखेहैं दोहा ॥ मुदिता मैत्रिव पेक्षता करुणा कोमल अंग। सत्संगतिकी सर्वदा उमगतरहै उमंग १ शील सहनता मृदुलता निर्मल निपट अनूप। नम्र दासता दश प्रकट लख लघुताके रूप ॥ इन दशाते विपरीतते लख प्रभुता

के नाम। इच्छत ताको आप कित टेरत टीकाराम॥
लघुता कैसी चीजहै कि ॥ दोहा ॥ द्विज प्रभुता प्रभु
पेखिकैपरिहरि बसे नपास। राघव लघुता लेखिकिय
सबरी सदन निवास ॥ रावण लघुता लेखिकै अर्प्यौ
ओज असाप। क्षितिपै रख्यो नछोर तिहिं प्रभुताईके
पाप ॥ हरि बांध्यो प्रहलाद पितु लघुता लीनी लेख।
बिदित बिदाख्यो बाघह्वै प्रभुता पूरण पेख॥ लघुताही
ते लखतहैं घटघट प्रकट गुपाल। बढ़ै नजौलों बीचमें
प्रभुताईकी पाल॥ प्रभुता लखिकै परिहख्यो दुर्योधन
को धाम। लघुताईलखि बिदुरके सदनबसे सुखधाम॥
लघुताई लीनेरहे प्रभुता पावै पूर। प्रभुताईके पापते
परै शीशपै धूर॥ लघुता लिये पिपीलिका मिसिरी
चुगै जरूर। प्रभुताईते पीलके परै शीशपै धूर॥ लघु-
ताईमें सुख सकल प्रभुतामें दुखपूर। तारे लघु न्यारे
रहैं ग्रसत चंद अरु सूर॥ तुलसी लघुप्रह्लादके बालक
चढ़े बिमान। संडामर्क तरे नहीं प्रभुता गलै पयान॥
छोटे छोटे तरगये भये रामपद लीन। प्रभुताईके पाप
ते बूड़े बिपुल कुलीन॥ पंपासर शोणितभयो प्रभुताई
के पाप। राघव लाघव सबरिते सपदि सुधाख्यो आप॥
श्रीहरि पामर परिहरत प्रभुतावारे पीन। जन जेते
जगदीशके लाघवतामें लीन॥ राघव लाघवता चहै
समझहु सुघर सुजान। खल पंडित निरखत रहे वेश्या
चढ़ी बिमान॥ पीन मीन चितचीन ज्वर जरत जाल
लिपटायँ। टीकम झीने जीवजे मरैं नमारेजायँ॥ सहि

मोटेअहिफेन तरुजरै ज्वाड़ जगज्जोय। छवि छोटेअंकुरको बाल नवांको होय॥ पूरगा शशि लखि परिहर्‌यो प्रभुता पेख पुरारि। लाघव लखत ललाटपै लियो द्वीजको धारि॥ प्रभुताई लखि परिहर्‌यो पूरगाचंद अमन्द। लघुता लखिकै द्वीजदिन नमत नरनकेवृन्द॥ लघुता बार मुरार लखि अचरज नकर अपार। लघु शिशु लखिकै करतहैं पशु पक्षीहू प्यार॥ लघु बच्चा लखि लोग सब पय प्यावत युतहेत। पुनि प्रभुताके प्रकटते संड करत धुर देत॥ रज्जव रज ऊंचो चढै लघुताईको पाय। ढोला ढोकर खातहै प्रभुता बुरी बलाय॥ बड़ा ढींग भंजत सकल मनोमेजको फेर। रज्जव रज शिरपै सदा हियकी आंखिन हेर॥ प्रभुता ढोला पायकै पंथिनको दुख देत। डारतहै तकि ताहि सब डारत झीनी रेत॥ छोटी छिगुनी छाजहै नग भूषण निरधार। मोटी दरशत मध्यमा खलत खुनसत संसार॥ नानक नान्हां बन रहो जैसे नान्ही दूब। बड़ा घास उड़जायगा दूब खूबकी खूब॥ लघुता लीन्हेंते सकल जंबुक बचो जमात। प्रभुताईके पापते भई भूप की घात॥ दीपत लघुता दीप तव भव्य प्रकाशत भौन। प्रभुता पाय बड़े भये कहौ कामको कौन ३२ ताल तलैया कूपनद तिहिंसब पियो न तोय। प्रभुता पेखिपयोधि किय घटज आचमन दोय॥ छोटेअसित अँकोरको प्यावत पानीपेख। विपुल बहेलखि वृक्ष तिहिं डारतकुरिकाछेख॥ चंद्रायणा॥ मोटाविटलैमनुय

नबिट लैनानका। जहिंमानौ तोभयौ अन्नकोउ आन
का॥ सोटकेशिरसकलदोषकोमंडहै। हरिहांछोटेको
नहिं छोभिदेत जगदंडहै॥ दोहा॥ अमिततजे अपराध
युत लघुता धारेलोग। प्रभुता भरे फसादिसब जाहिर
बधवे योग॥ कुण्डलिया॥ फूलनसहैन फूलको देतडारले
डार। फूलीप्रकटैदृगन में करैअंधकरतार॥ करैअंध-
करतार फेरफूलन जिहिंआवै। बिगडो मानैबस्तुमोल
पूरानहिंपावै॥ टीकम जगमधिआय सीख सद्गुरुकी
भूलन। लघुताई गहिरहो सहत नहिं औहरिफूलन॥
कीकीनहींको तनकभी लखै निखिलजनलोक। बडो
भयो किहिं कामको फिटफूलादृग फोक॥ फिटफूला
दृगफोक बिगाडैरूपको। अंधबंध नहिं दृशैछांह अरु
धूपको॥ प्यारी प्रभुको लगै सुटीकम जीवनजीको।
फिटफूला दृगफोक तनकसी कीकीनीको॥नीचोराखै
नजरको तामेंनफा बिशेष। कंटककीटकते बचै पावै
बस्तुबिशेष॥ पावैबस्तु बिशेष लगै ठोकरतिहिंनाहीं।
उभयलोक कल्याण बढैअलपन जगमाहीं॥ यातेफल
बिपरीत फिरै ऊँची कर घींचो। सुनि टीकमकोटेर
नजरजन राखयोनीचो॥प्रभुताईमें रहतहैंप्रभुताईतेदूर।
प्रभुताईमें रहतहैंप्रभुताईते दूर॥ चंद्रायण॥ बांधि मरोड़ै
गहैं रुखदैनित कीचमैं। डलजैआंटीपड़ै बडप्पनबीच
मैं॥ तानैताडैपडै कोटबड केशमैं। हरिहांटीकमनाजहैं
निपट नहीं दुखलेशमैं॥ दोहा॥ टीकम प्रभुपशुकोदिये
बपुऊारक्षाबियान। सामर मांगे बहु बढन प्रभुता खोये

प्रान ॥ लघुवस्तुलखि टीकमकहत रजत रुपैया रोक । बहुकौड़ी करि कहत तिहिंकौड़ोको वसुलोक ॥ लघु दीपक लखि लोग सब पट रक्षत करि प्यार । बड़ोभये आदर रहित अधिककरै अँधियार ॥ ऊंच पतन तेहतन है नीच हतन नहिंहोय । टीकम को न प्रतीततौ चढ़ि पड़ देखौ कोय ॥ प्रभुता परवत शिखरसी तजिये बुरी बलाय । राघव जल तजि ताहिको लाघव सरै समाय ॥ नरकी अरु नलनीरकी गति एकै जगजोय । जेतो नीचौ ह्वै चलै तेतो ऊंचो होय ॥ तन अस तंबो तारकी टीकम सम गति जोय । जेतो अध उतरत चलै तेतो ऊंचो होय ॥ टीकम लघुता लीनह्वै दीन सुखी सरसाय । वड़पन वेज सुमेरसें टूनो वाग समाय ॥ नीचे आसन नायके सूक्षम छेदे कान । ऊंचो इच्छत अन्नते पावै पीड़ महान ॥ सुखद दुखद ह्वै जातहै ऊंची एक सत डाड़ । अति प्रियपै आदर विना आपहि डारै पांड़ ॥ हारे जाको हरि मिलैं जीतेको यमवास । अंव-रीष अपराधते सही सकल दुर्वास ॥ हारे जाको हरि मिलैं जीतेको यमदूत । हय गिरधार निहारकर मन मानी करतूत ॥ नम्र होय लघुता लिये वामें वजन विशेख । उच्च तुच्छता लहतहै तौल तराजू देख ॥ प्रभुता दरशो पुरुषनी सहि नसकै निज नार । टीकम प्रभु कैसे सहैं जाको गर्व अहार ॥ राघव रिझयो चाहि तौ लाघवता गहिलेह । सब संतन कहि शपथ करि नेक नकर संदेह ॥ गुरुता पावत पृष्ठके अक्षर अंक

निशंक। प्रभुताको आगे बढत प्रभुताको किय रंक॥ पाछे रहि दशगुण बढे अग्र भयेते रङ्क। ताते प्रभुता परिहरी विबुधन किये विवेक॥ सर्व विना सतसढ तऊ लोलुप लोन हराम। ऊपरकी इच्छा करै पढत पत्र निज नाम॥ शीतलता भूतल सुखद चतुर करहु चित चेत। तप्त लोहको शीतपन छिन्न भिन्न करदेत॥ पारस रहतहै नरमको तुच्छ तजत तिहिं भूल। ताला तोड़त लोह तिहिं तनक कटै नहिं तूल॥ कनक रजत करड़ोजितो तितो खोट खलु जान। नरम मोल पावै परम टीकम के अनुमान॥ पीन तितो छवि छीन है धराधार धुवधात। कनक तनक नहिं नमतहै महि टीकम मृणधात॥ सबै बिगाड़ै स्वादको जेतो करड़ो धात। ताते नर्म कथीरकी करत कलाई तात॥ गोकुल में गुजरी तरी टरी तास तन ताप। बूड्यो बिप्र प्रतीति बिन प्रभुताईके पाप॥ राघव लाघवतालिये सही बि-प्रकी लात। प्रभुसमर्थ सर्वोपरीयहै खलकमें ख्यात॥ रोष तोषके दोषगुण सुनमन मेरसीख। लक्षवक्षथल बसत हरि भूसुर मिलै न भीख॥ आमफलै नीचेनवै ऊं-चोजाय अरंड। प्रभुताईके पापते भयो फालगुनभंड॥ नवन बडीहै नरनमें नवैं नहींते नीच। लटनी लटतरवर तुटै बढै भूंगला बीच॥ श्लोक॥ नमंतिफलिनोवृक्षानमं तिगुणिनोजनाः।शुष्ककाष्ठाश्चमूर्खाश्चभञ्जंतिननमं तिच१॥ टीका॥ जिस दरखतपर फल होतेहैं वह दरख्त नम्र होताहै और जो गुणवान होताहै वोभी नम्र

होताहै परंतु सूखी लकडी अरु मूर्ख पुरुषये नवायेमें टुकडे होजातेहैं तथापि नवते नहीं १ ॥ दोहा ॥ भूभूषण जगतीनहैं उपजत अपर अनंत । क्षमासबल धीनगर्व विन विद्या कोमलवंत ॥ प्रभुतासों नहिं परमरिपु लघुतासों हितकारि। निरालावास निश्चय कियो वारंवार विचारि ॥ चांद्रायण ॥ राघव लाघवलखे तितैचलिजातहै। प्रभुता प्रभुकेगर्व्यकरत घनघातहै ॥तद्यपिप्रभुतापाय चहत चितआपहै । हरिहां प्रकटे तातें परम पुरातन पापहै ॥ दोहा ॥ लाघवते राघव मिले घालत प्रभुता घात। तद्यपिप्रभुता चहत तुम वड अचरजकी वात ॥ कवित्त ॥ पानी और प्रभुजूकी पेखिये प्रतक्षप्रीति निवसे निशंकनाथ नीचेथल आयके। आदमद ऊंचे विप्र तजिके प्रतससताहि रामदास संगचले रात में पलायके ॥ मदना मनाक अति अदना अनूपहेर मदना केसदन सिधाये चित्त चायके । टेरकहै टीकमरे धीकम विचार धीय राघव रिझाय लीजै लाघवता लायके ॥ दोहा॥ सहिछुर म्लेच्छ विचार तजि लाघवता लखि आय। राघव तित तितजातहै ज्योंवच्छा सँगगाय ॥ प्रभुदुर्योधन धामकी छागदई छटकाय। राजी ह्वैभाजीभखी लघुजन लखि यदुराय॥ वार्ता ॥देखोजी लघुता कैसीहै कि ब्रह्मारे लगाय इंद्र चंद्र वरुण कुबेर पशु पक्षी कीट पतंग पर्यंत स्थावर जंगम जड चैतन्य ऐसे अनंत ब्रह्मांड जाईश्वरके इच्छाधीन वर्तैहैं सो समर्थ प्रभु लघुताके वशभयो निशिदिन निरंतर वच्छा

संग गैयाकी तरह डोलेहैं इतनोबड़ो पदार्थ भगवत्प्रेरित भाषापढेते अकस्मात् आय प्राप्तहोय वा लघुताकोतो अहोभाग्य मानिकै अंगीकृत करी चाहिये आगेसरजी आपको अब कहनोथो सोकहिचुके ॥ दोहा ॥ श्वानपुच्छकी सरलता सब्बल हेरते होय। वाकोविपुल उपायको भूलिकरो जिनकोय॥ सुनिसुनि सदउपदेशको संशयरह्यो न लेश। मिटी मूढता मलिनता कढिगो कुटिल कलेश॥ सुहृदभायते सरलवच पुनिबोले सरसाय। तनकरह्यो संशय तहां सपदिदेहु समझाय। वार्ता ॥ भाषामृत तरंगिणीके तत्त्वतेयते तन मनकी तमाम ताप शीतल भई परंतु तुमते कही कि लाघवतामें राघव निवसैहें सोतो सत्यहै परंतु गीतामें लिखेहैं कि नराणांच नराधिपः नरनमें नराधिप जो राजा परमप्रभुतावारेहैं वे मेरे रूपहैं या बचनते विरुद्धपडैहै ताको समाधान कहा॥ तहांउत्तर ॥ भाईजी नराधिपमें भगवतांशहै यामें संदेहनहीं परंतु कबलों है कि अपने मनते परम लघुता लीन्हेरहै तौलोंहै अरु जादिन प्रभुतामानिकै गरीबनको संतापै तब तत्क्षण तिनकोतजिके गरीबनिवाज कहावैं क्योंकि आपकोनाम दीनबंधुहै कछुपीनबंधुनहीं ॥ दोहा॥ राम गरीबनमें नहीं जोरावरमेंनाहिं। जोरावर जोरीकरै तबराम गरीबन माहिं।प्रभुतावारेमें प्रभु तौलों निवसत आय। जौलों जाहिर ना करै प्रभुता बुरी बलाय॥ जौलौं प्रभुतामें बसै प्रभुता प्रकटतनाहिं। प्रभुता प्रकटतहीप्रभु प्रकट गरीबनमा-

हिं ॥ वार्ता ॥ रावणको परम लघुतावारो तीव्र तपस्वी दुर्बलजानिकै ईश्वरने अमित वरदैकै अपनो अंशस्या-पन कीन्हो फेर प्रभुता प्रकटी गो ब्राह्मण दुर्बल को दुखदायीदेखिकै प्रभुने प्रहारकर अपनो तेज आपमें मिलायलीन्हो। तहां काऊ कहैवो तेजतो रावणकोथो तहांउत्तर ॥ रावणको तेजहोतोतौ शिशुपालको पुनर्जन्म नहीं धरतो ऐसेही परशुराममें ते प्रभुता प्रकटत पवित्र धनुष द्वारातेज खैंचि लियोथो याते प्रभुको निवास निरन्तर लाघवता में है और ऐसेही लाघवता को निवास भगवत जनकी रची भाषापद्धिवेमेंहै यह सि-द्धांत समझिये अरु और भी संदेह होय तौ बूझिये दोहा ॥ बूझेबिना न पाइये तत्त्वबोध गुरुज्ञान। ताते तजि मद बूझिये कहिगये सन्त सुजान ॥ शिष्यउवाच ॥ दोहा ॥ शीलाक्षरसंवादकी लगी चित्तमें चोट । ढई भरमनाकी बुरज मिटी प्रकट घटखोट ॥ मोहमिट्यो संशय सट्यो कट्योकूर अभिमान। द्रोहदट्यो हृदमद हट्यो प्राकृत करी प्रमान ॥ विनयबढ़ी रति चित चढ़ी कढ़ी कुतर्क अशेश। अमृततरंगिणि सुनतही संशय रह्यो न लेश ॥ अधिक अढ्यो हित चित चढ्यो घढ्यो घाट शुभसार। कलहकढ्यो अनहद बढ्यो पटु प्राकृत परप्यार ॥ काय वचन मन जरतहो नर भाषाके नाम। अर्थ तरंगिणि तोयते उर उमग्यो अभि-राम ॥ ब्रजभाषा बिलसे बिना विपुल गये दिन बाद। तिहि शिरधुनि पछतातअति मिटत न विविध बियाद॥

प्रथम न समझो पीनमें चूको चतुर सलाह। कीन्हो वृथा बिवाद बढ़ ताको दारुण दाह॥ ॥ कवित्त ॥ कूर को कुसंग फंद बैरीह्वै बिलंद मंद मच्छरके हाथ बुद्धि बिदित बिकाईथी। गुरुतामें गर्क कोट कीन्हीमें कुतर्क हाय आदिहीते ईरषा अनंत उर आईथी॥ पूरबके पुण्यते प्रलम्ब जुर्यो योगनतो गजब गुनाह भरो गैल को गहाईथी। श्रुतिते लवाई महा मंजु मोद दाई ऐसी भाषाको भदेश मानि मूढ़ने बिहाईथी १ अति अभि-मानी अंध आदिके अज्ञानी हम आपहीने आपको करीही हित हानीथी। देय दुखदानी नीच नर्कको निशानी पूर पापनको पुंज पीन प्रभुता प्रमानीथी॥ रावरी सुसीख सुनि उरमें न आनी अज्ञ मर्कटकी मूठी सी वृथाही टेक ठानीथी। प्रभुकी प्रमानी तापै आस्ता नआनी हाय भाषाको भदेश मानसत्तह्वै बिहानीथी २ जेते प्रश्न कीन्हे जाके उत्तर अशेष दीन्हे ताहीपै तमाम वृथा बाद बिस्तार्योमैं। उर अभिमान आनि ज्ञानिके अज्ञान जैसे उर उपकार रम्य रावरो बिसार्यो मैं॥ तोम तकसीर मेरी माफ कीजे महाराज आयसु उलंघि अज्ञ झूंठ झखमार्योमैं। पाय प्रभुताको हाय जीतिबेको रही चाह लघुता ललाम लेश धीयमें न धार्योमैं ३ पौरुषी गिरा प्रताप पढ़िके भये प्रवीन पौरुषी प्रतापते प्रपंच बिस्तार्योहै। पौरुषी प्रलोकहू सुधारै प्रतिबिंबरूप हेरिके हियामेंनीकेन्यायनिर्द्धार्यो है॥ पौरुषी प्रमाणतो बिशेष बाप दादाकोन कूरजो

नमानैतौ कपूत निस्तास्योहै ॥ विष्णुको विरोधी होय आपही अबोधी होय क्रोधी औ कृतघ्नी होय हाहू-रानि हास्योहै ४ भाषापद प्यारते अभीरा देत मीराजू को माल सुख सीरासी मिलाई निजअंगमें। कांइगिर-वान गिरा अलकी अलभ्यमान दीन्ह्योहै हुंकारापूर प्यारांकेप्रसंगमें॥ श्रुतिकोसमूहकांइहारकाते दीनानाथ भागे अधरात रामदासके सुसंगमें । वडी अभिलाषा सुनो गोप व्रजभाषा काज भये व्रजराजराज उरकी उमंगमें५ कुंडलिया॥ व्रजभाषाश्रुनिये श्रवण उर उमग्यो आवेश। वेद ऋचाको विदित हरि दीन्हो निरखि निदेश ॥ दीन्हीनिरखि निदेशादेश व्रजमें तनुधारो । गोपसुताह्वै सकल कीजिये तवन हमारो॥ हमहूहैं नंदनंद अधिक उमगत अभिलाषा । विविध व्यंगके वचन सुनहु श्रव-णन व्रजभाषा ॥ टीका युगुलवृत की ॥ मीराबाई रानाजीके डरते द्वारकाधीशके शरण रही तब कुटुम्बी बला-त्कारतेलेबेआये उनते कही मैं आज्ञा लेआऊं फेर चलूं ऐसे बहानो बनायके प्रभु शरण लीन्हो तहां पदगायो नाथ रावरे शरणागत जीवनको यमराज जालिमको भी सामर्थ्य नहीं जो लेजाय और रावरी चेरी को अनाथ की नाईं लियेजाय ऐसे करुणा करिके पद गाय अभीरा देत समय सुधाकी सीरसी श्वासाके संग निज शरीर में पंचभूत को प्रलय रूप मीराजी को शरीर मिलाय लीन्हो भाषापद सुनिके भाषा ऐसी प्रिय है और सैकडों संस्कृत स्तुतिके शोरको निवा-

रिकै अलूचारण के भाषाछंदपै रणछोड़जूने हुंकार दीन्हो और यारिनी तुराईकी अांख यारतेलगैवाके संग उठजाय सर्व कुटुम्ब तजिकै तैसे रामदास बोडाना संग भाषा पद सुनिबे को आधीरात के पलायमान भये डाकौर नामधरायकै और वेद ऋचाको आज्ञा दीन्ही तुम श्रुतिरूपा गोपसुता होयमेरो भाषामें स्त-वनकरो रसीले व्यंग बचननते ताहिमें नंदनंदन रूपते परमप्रीति युत सुनि सुनिश्रवण शीतल करैंगो॥ आदि पुराणे ॥ श्लोक ॥ नतथारोचतेवेदा पुराणाद्यास्तथेतरे। यथातासांतुगोपीनां भर्त्सनागर्भितंवचः१॥ टीका ॥ कृष्णकोबचनहै ॥ मोकोवेद पुराणादि अनेक शास्त्रनरुचैतैसे प्राणप्यारी गोपिकानकेअनादर गर्भिततुंकार संयुक्त ब्रजभाषाके बचनरुचेहैं तब भक्त भाषाके प्रेमपरोछंद बद्ध परमप्रिय अर्थ अर्थापत्यते जानिये अहोप्रभु को भाषाकी अभिलाषा तौ निहारिये कि जाके निमित्त अजन्मा होत यशोदाके जन्मेहैं तब नरभाषाते बिमुख होय ताको अभागा जानिये इत्यर्थः॥ दोहा ॥ हृदय उद यभो सहृदसुख भई सुदुर्मतिदूर। भाषाअभिलाषाबढ़ी कढ़ीकुटिलताकूर ॥ अमृततरंगिणिओघते मनमल बहीकुतर्क। शीतलमज्जनतालही खहीहियेकीकर्क॥ भाषामागधविप्रको पितरनकरत प्रमान। शठसुतजो समझैनवह पशुबिन पुच्छविषान॥ प्रभुप्रेरी पाली पितर भनतभक्तजनभूर। पुनिपामरपरिहरहिंवह जा-रजलखोजरूर॥ रहिंबुधिभाषाभणितकोकहि कहि

परसप्रताप। असमंजसअगलीसवै क्षमाकीजियेआप॥
क्षमाबड़नकोछाजहै ओछेकोउतपात। कहाकृष्णको
घटिगयो सहीभृगुकीलात॥ कविवचन॥ सर्वदिनमारग
भूलिके सांझसिलयेमुकाम। हानतथापीहैनहीं टेरत
टीकाराम॥ भाषाक॥ आयुनेजघटतेवचो गईकूप गृह
माहिं। छोरअंतकोचपगहै तौकछुबिगरैनाहिं॥ सवैया
प्राचीन॥ मोहकेफंद फँस्यो मनमूरख छांड़तना गढटेक
गहीको। बालयुवापन खोयखरे खलकानकरी नहिं
संत कहीको॥ चाहेको चाहत भोगेको भोगत फेर
बिलोवै बिलोयमहीको। चेततक्यों न अनारी अजौंरे
गईसुगई अवराखरहीको॥ दोहा॥ जगतव्यथामें भज
यथा बयागननकोटेर। बिसरेटीकमहोतहै लखचतुरा
सीफेर॥ टेरकहैटीकमभजत कररघुवरपदहेत। काल
घमूकामारिहै जोमिगुजोरतचेत॥चिनगुनपतिचेतना
चितपहिलाचेत। इनधंधारेऊपरे रालैक्यों नहिरेत॥
कवितकाहूको॥ देवगुरुसांचे मान सांचो मनहिये आन
सांचोहीबखान छलिसांचेपंथआवरे। जीवनकी दया
पाल झूठतजिचोरीटाल देखनाबिरानीबालतृष्णाको
घटावरे॥ आपकीबड़ाई परनिन्दाजिनकरैभाई येही
चतुराई मदमासते बचावरे। साधूमतधार साधुसंगतमें
बैठबीर जोपै रामरीझनको तेरे चित्तचावरे॥ दोहा॥
भूतदयाभगवत भजन परनिन्दा परिहार। सकलधर्म
शिरताजयह टीकमकहतविचार॥ अधिकदेखआनँद
बढ़ैसमलखिप्रकटैप्यार। लघुलखिअनुकंपाकरैटीकम

यह मतसार ॥ वयबिद्याकुलरूपधन तजिइनकेअवि-
कार । भगवतकोभावैयथा चलियेचतुरबिचार ॥ इहि
बिधिबिनय बढायकै कीन्होमुदितसिलाप । हिलेमिले
रँगरसरले मिट्योसकलसंताप ॥ कर्ताकोबचन ॥ कूरकुपढ
बलमूढमत जडजिमि निपट निकाम । टीकम धीकम
बिकटशठ धिकधंधनकोधाम ॥ कोउकहै असमंदमति
ग्रंथकवनबिधिकीन । ताकोयह उत्तरसुनो पंडित
परमप्रवीन॥ कबित्त ॥ मैंतौमतिमंद अंधधामधिकधौरी
धंध जानौंना प्रबंधछंद कछुकबिताईहै । एपैउरआय
तन स्वामीसूत्रधारवसै ताने प्रेरपूतरी ज्यों प्रज्ञाकोनचाई
है॥ वायुबशबातुलीप्रसिद्धदांवपांसाबश सोवबशजीवहू
की पेखप्रभुताईहै । प्रतिधुनीबोलकोकलोलपराधीन
जैसेतैसेहीतमाम मैं तरंगिणी बनाईहै॥ दोहा ॥ अघटित
घटित अजानते लिख्योहोयछलसुद्र । तो परबशसर-
बससमभि क्षमियोसमासमुद्र ॥ रचतन मरा सूझो
जहां मोमति अधिकप्रमाद । तितातितप्रभुदरश्योसुहृत
शुभसपनेसंवाद ॥ असमंजस अनुचितउचित बन्यो न
रचतबिचार । उचितनहूजैदेखिकै लीजैसुचितसुधार॥
येतेपैइहिग्रंथको धरैमोरशिरअंक । सोमोते शतसहस
गुण जडमतिनिपटनिशंक ॥ हिजकुलसबकुलतेबडो
तिहितेद्राविडजात । द्राविडतेहिगुणगात बडो नागर
बिप्रविख्यात ॥ षटप्रकारनागरकहेशिरोभागहैतास ।
गुणआगरसागरशुची विसनगरमेंबास॥अधिकअचार
बिचारवर सुखतधात्रककास । जाहिर ज्ञिहिब्रह्मत्व

को पुहुमीप्रकटप्रकास ॥ तिहिकुलमें टीकम प्रकट सच्छरताकीओट। ताहिय़डीसत्संगकछु कडोहृदयकी खोट॥ दासनामसुभिक्करतहो अर्थत अधिक उपहास। अनउरअभिलाखारहे कहैंमोहिंकोउदास ॥सोरठा॥ उर उमगतआवेश दासवेयससरसेसदे। अपनावैअवनेश वो दिनेश कवऊगहै ॥ दोहा ॥ प्रभुताकारणजरतहो रागद्वेषकीआग। संतसहरतेश्रवकछ्यो लाग्वदनाकोलाग॥ सोरठा ॥ मैंनहिंसमरथतमल ईश्वरप्रेरितशक्तिसव। जे ईश्वरअनुकूल तेइहिपढहिंकुतर्कतजि॥ दोहा॥ मिथ्या कहौं सनाकतो इष्टदेवकोआन। तातेसांची मनभिक्के पंडितकरहिं प्रमान ॥ सुनिसज्जन अनुमोदहै दुर्जन लागैदाह। अद्भुतअमृततरंगिणी पेखहुप्रकटप्रवाह॥ तिहकनाभितकनिठुरनर सच्छरभरेमलीन ॥ आन उपासककुटिलखल तिहि जिन देहुप्रवीन॥ संतोषी हंसीमती हरिआयसुअनुचारि। सज्जनजिज्ञासीजिते हैउत्तमअधिकारि॥ भाषाअमृततरंगिणी मनुजकसौटीमान। सज्जनसुनिहियहोतसुख दुर्जनजरतनिदान॥ दुर्जनकोनदिखाइये अर्थतरंगिणितोय। नकटेकोआदर्शजिमि दुखदायीउरहोय॥ सवसाधनकीशिरमणि भगवतभक्तीनाक। तिहिराखीजहिंयतनतो रखीकूर कहरवाक ॥कवित॥ कामीकूर कुटिल कुकर्मकेकरैया कोहि हिरसे हरामीहिया फूटपै न गाइये। निंदक निलज्जनीचनारकी न सूगे सत्व दोषीदगावाजकोन दीठते दिखाइये॥ वैरी वासदेवके विरोधी त्रिगुण

भक्तनके कलहीन कुटिलतें कलहनीते छिपाइये। ही
कम रईसधिक थोकसधनाढ्यधूत टीकम इतेको
कभंभलिना सुनाइये १ विद्याबयबित्तबर्गा आश्रमाभि
मानीअंध लंपट लबार लोललखिके लुकाइये। म
च्छरी महान पीन पसारी प्रतक्षजेते नास्तिक नीरोस
कोन स्वप्नमें सुनाइये॥ चीकने चलाकचोर चूतिया
चबाई खोर सूमभिरमोर ताको ठौर पै न ठाइये।
सिंहिणी के दूधसों तरंगिणी को तत्वताहि संतन
सुवर्णहीयधन्यमें धराइये २ पापिजनपतंगिनीसी गुरुजन
को गंगनीसी आरज अनंगनीसी सद्य सुखदाई है॥
दुर्जनदुरंगनीसी सज्जन सुसंगनीसी रसिक नरंगिनीसी
चारु चित्त चाईहै॥ नेकनको नंदनी चकोर चितचंद-
नीसी नरक निकंदनी तीरीति निपुणाईहै। सिंहनीसी
शठको भुजंगनी भदेमानको बिंगनीसी टीकमतरंगिनी
बनाईहै ३ दोहा॥ पक्षपात परतक्षतजि ईश्वरआयसु
मान। टीकाराम तरंगिणी भाषाकरी बखान॥
पक्षपातकीपोटतजि खोटहृदयकी खोय। अमृत तरं
गिणी सुरसको तब अधिकारीहोय॥कवित्त॥भाजजाती
भक्तिऔ पलायजाती प्रेमपुंज छायजाती जडता जहर
जियजालमें सूझते न सारासार अवनी अशेषहूमें बि-
गतिबिवेक बीजहोते हियहालमें॥टीकाराम धाम धाम
धीकमधुबांक होत्ते पापके प्रचार पुराय पैठती पताल
में। सुरतरु सीशाखा अभिलाषापर पालिबेको भक्तन
की भाषा रसराखा कलिकालमें ॥दोहा॥ सटनव आठ

मयंकलिख माधवमास पुनीत । उयगा। अनुमतितीथ अमल भयोग्रंथ सुतप्रीत ॥ कछुकविता नूतनकरी कछुलीन्ही प्राचीन । टीकाराम तरंगिणी विरच्यो ग्रंथ नवीन ॥ चांद्रायणवृत्तं ॥ यहतरंगिणी तोय लखे सुखआय कै । परत परीक्षा प्रकट सुजन समुदायकै ॥ नरवर निरखत वदनसहद मुदमानहै । हरिहां पेखिवआपप्रति बिंब घुघुरत श्वानहै ॥ दोहा ॥ भायाअमृततरंगिणी मनुज कसौटीमान । सज्जन दुरजन दुहुंनकी परकटपरत पिछान ॥ जनकाजनस जनजानिवे कलितकसौटीकोन । तनक तरंग सुनायकै परखहु परमप्रवीन ॥ छंदचांद्रायण ॥ अपने अवगुण आप जुपरखे चाहिये । तोयह तनक तरंग श्रवण सुनि पाहिये ॥ सज्जनको सुखदान प्रेम परिपाकहै । हरिहां दुरजन देखतपडे पलीतें आगहै ॥ दोहा ॥ हित युत अमृत तरंगिणी जेविहरैंचहुभाय । तिनको टीकारामकी जैजैजै रघुराय ॥ जेवाचैं सीखैं सुनैं अमृततरंगिणि गाय । तिनको टीकारामकी जैजैजैरघुनाथ ॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीराठौरवंशावतंसश्रीवजयंतसिंहभूपालाज्ञया गुर्जरस्थविप्रनागररत्नरामात्मजकविटीकारामेणविरचितभाषामृततरंगिण्यांभाषायाहुल्यताबर्णनन्नामषोडशस्तरंगः १६ ॥

बापजीश्रीस्वरूपदासजी महाराजकृतसाखो ॥ दोहा ॥ हरिआयसु अनुसार शुभ आनीउक्तअनूप । पक्षपातयामें नहीं साखी दासस्वरूप १ ॥ बापजीश्रीसाधूरामजीमहाराजकृतसाखो ॥ दोहा ॥ पक्षपात यामें नहीं सर्वगुणनकोग्राम ॥ भायाअमृत

तरंगिणी साखी साधूराम २ ॥ बापजीश्रीयमुनादासजीकृत साखी कबित्त॥ बेहर बिवादके बितंडावाद वारिद की ज्ञाननिर्वानकी त्रिदेव अरधंगिनी ॥ गीरवान बानी की भूषण बिनोद धाम वृन्दावन बिपिन प्रमोद पिय संगिनी ॥ ब्रजछैलशारद शिवासी सिंधुजासी फल दासी रामकृष्ण अंघ्रि अंबुज सुरंगिनी ॥ मानसकी मंजुल मरालिनसी मन्यमान भाषाधन्य मंदाकिनि अमृत तरंगिनी १ ॥ श्रीमहन्तमाजीसाहब श्रीबड़ारानावतजीके मंदिरका महन्त गोपालदासजी कृतसाखी ॥दोहा॥ अमृततरंगिणि अमृतसम श्रवण पान करिहाल ॥ महदमोद मनते करी साखीदास गुपाल १ ॥साहू बावड़ीके महन्तजीकाचेला ऊंकारदासजीमहाराजकृतसाखी ॥ दोहा ॥ आदिअंत अवलोकि उर अमृत तरंगिणिसार ॥ अति उतकंठा युत करी साखीदास ऊंकार १ ॥ भोडरबालामहन्तजीरत्न दासजी साखी॥ दोहा॥ भाषाअमृत तरंगिणी सर्वशास्त्रअनुकूल। रत्नदास सुनिमोहयहरषि कीनीयाहिकबूल १ श्रीरघुबीरसमर्थ अथप्रयाणपच्चीसी ॥ दोहा ॥ आंखनते आंसूश्रवे लेले निपट निसास । मरसीया महिपालको टीकम कियो प्रकास ॥ कबित्त॥ खुल्लिगे कपाट चयचारिहू मुकतहूके डुल्लिगे फनीश फनहूको नूर नसिगो। टीका राम कूर मकहत कूक कोलहूते आज आसमान को अवश्य अंड खसिगो॥श्री मन्नरेन्द्र बलवंतकी बिदा केसमै निकर नरेशको अंदेश उर गसिगो। हाय हाय हाय शाहि शाहि करैं तीनोंलोक मेदिनी मर्यादको

सुमेरु धरा धसिगो १ छाये आसमानमें बिमानन के वृन्दवाद्य बाजिउठे भूरन भूरके नगारे हैं। फेर फेर फूल फहरात पारिजातनके वार वार वारगाले आम बित्त वारे हैं। जै धुनि जहान आसमान में अनंत होत नमोनमो निकार निलंपके उचारे हैं॥ भारती भुआरती उतारें भाग भाजनको भूप बलवंत ध्रुवधामको सिधारे हैं २ सारथी सशांक भये अर्कें भासमानहू ते सञ्चीगवा शारदादि जात कित तीनोंहि। हाहाकार होत टीका रामभूरि भूतलपै मेदिनीमलीन सुखमंड छवि छीनो है॥ कोविदकोविंदनके वृन्द निलखाने फिरें छायो आसमान में विमान चयचीनो है। भाख्यो तब भानु आय असगा अदेशा तजो भूप बलवंत ध्रुवधामकूचकीनो है ३ सन गुणसागर उजागर अमीर आदि नागर नरेंद्र नयनीति को बिथेगयो। चाहि चाहिचोतरा चुनायचारु चामीकर बेरबेर वित्त ब्रह्मचारीके पथेगयो॥ दानको सन्नातना है जाहिर जहान जाकीसूम सरदार पै विकार भुति थेगयो। राठवरबंशकोवतंस बलवंत हुतो सालबकोमंड मारतंडसों अथैगयो४उदित उथप्पे तिन्हैं थप्पै थिरथान हूपै रारिकैरईसनके और को अछेगयो। भूपरतलासनेक नंदनलों नामजाको भनैटीकारामवास बैरिनबिलैगयो॥ बाँटिबाँटि बित्तनित कीरति कबित्तनपै याचकके यु-स्थको अयाचकता थैगयो। सुयशसमूहको विहाय बसुधापै हाय हाय बलवंतसों विभाकर अथैगयो ५ दिव्य दोरदंड को प्रताप खंडखंड बीच टीकाराम द-

गहू दिगंत जाको यशगो । श्रीमन्नरेंद्र बलवन्तकी बिदाके समै आये आसमान में विमान वृन्द ठसिगो ॥ याचकके यूहको रुसंतन समूहहूको नामी नरनाहको निशेय नूर नसिगो । हायहाय हाय त्राहि त्राहि कहैं तीनोंलोक मेदिनि मर्य्यादको सुमेरु धराधसिगो ॥ ६ लक्षलक्ष प्रतिके प्रतक्षपद पंकजदे रसकै प्रजान चारु चक्षु ते चितैगये । धार्मिक द्विज देवनको सेवनसदैव को नेह निंदगी बिहाय जोर जिंदगी जितैगये ॥ थूंकगये समनको संपतिपै टीकाराम बित्त बरतायकै बहादुर बितैगये । गायगाय गाहि बलवंत सिय कंतहूकी हा हरे हमेश लाहो लूटत कितैगये ॥ ७ परीहै पुकार पुर पूरन प्रतापी तेरो भनक भयानकको शोरसिति पैठ यो । सकल सशोक लोक धायेधाम धामनते टीकारा म आंखिनते आंघ अश्रु को भयो ॥ छेदपरे छाती घबरातीहै धनेरनकी हर्म्यन हरेक प्रतिहाहाकार ह्वै रह्यो । रोयरोयराते भये नैन सबसैननके हायछत्रधा-री हाथातारीदे कितै गयो ॥ ८ सादर बिरादर बुलाये कवि कोविदको बिपुल बहादुर सुधाम धनदै गयो । संतन महंतन की पंतिनके पांय पूजि सांचेमन बैनते सनेहशीश नैगयो ॥ बरगा बिवेकनते प्रपाल कै प्रजा को पुंज भारगा रईसन के संकट बितै गयो । जाहिर जहान नेक नाम के निशान ठानि भूप बलवंत भव्य भानुसो अथै गयो ॥ ९ रोय रोय अंध भये कोविद कबींदतेरे हनैहरय सत्यको अनत्थ भये बावरे । कौन

के कहावैं कितजावैं घबरावैंघने भूरि बिललावैं अति आवैं तनुतावरे॥ शालैंहहहूकैं हाय उठत भभूकैं भूरि घनसे घमूकैं लेत वारक बचावरे। आवरे अवश्य इतै रावरे सु टीकमको महा मंजु मूरति की मूरति बताव रे १० भूपबलवंत ध्रुव धामगये टीकाराम तादिनतेदा त हिय अति उतपातसे। भोजन न भावैं घबरावैं घरआ ठौंयाम लागैंजनयूह जैसे यमकी जमातसे॥ कहांजावैं कैसी करैं कासोंकहैं कौन सुनैभये डामाडोल दिलपी पल कंपातसे। कोविद कविन्दनके वृन्द बिललातउ तै व्याकुलबिहाल बिन बींदकी बरातसे ११ चाहनार हो हायगायन गुनीजनकी नाहक भ्रमंत तन अन्नपै अ लातसे। चित्तदे सुनैनघाते घरमें घुटे कबित्त घाट को सुनावै तऊ सुनै अलसातसे॥ टीकम भनंत विकवीकम पै यांचेजांय हीकम रईसदुशे बीकम बिलातसे। येरे बलवंत तेरे कोबिद कविंदवृन्द हाहा बिललात बिन बींदकी बरातसे १२ मूनीपरी सेजकी सजावट समग्रते री हेरिहेरि हर्म्यन पै हहरें हहाहियो। आनक को नादसो भयानकसो भासैभूरि नूरनहों टीकाराम रंच मुख पैरयो॥ गाहक बिनाके भये नाहक कबित्त मेरे रेरे बलवंत बिना भूरजगमें जियो। छेदपरे छाती आं खरोयरोय राती हाय यशको जगाती करामाती सो कितैगयो१३रोयरोय रानी घबरानी अन्नपानी त्यागि पीटपीटछाती पंच प्रान घबरायेहैं। कैलछत्रधारी उतै हाय व्यभिचारीभये किन्नरीके संगी अरधंगी बिसरा

येहैं ॥ रोवत है ख्यासद सभासद समग्रराज पाये
ध्रुवधाम रतलाम को बिहाये हैं । हेर हारयो टीका
राम बाट बलवंत तेरी अबलौं न आये ऐसी सफर
सिधायेहैं १४ फोड़ फोड़ मारत फराश शीश पाथरपै
छोड़ छोड़दीन्हो आश सबै धरधामकी । ठौर ठौर
ठाकुरहू परत पछाड़ैं खाय तोड़ तोड़डारैं केश तरणी
तमामकी ॥ दौड़ दौड़ केते दरीखानेमें बिलापकरैं
गज़ब गिरोहै गाज हाहाबिधि वामकी । बारक बिलो
किये बलौंत छत्रधारी धीर बावरी भईहै प्रजा प्यारी
रतलामकी १५ रावरे रईसते सईसलौं सशोकसिंधु बूड़
रहे व्याकुल बिथामें बिललायकै । रानिनके राजकी
कहानी कहिजात नाहिं दीन्ही लटैं लौंचि नैननीरमें
बहायकै ॥ सूनी रतलाम धौल धाम तेरे टीकाराम
करुणा कटक आय उतरयो बजायकै । हाय हाय
हायरटैं जन समुदाय सबै हेर हेर हित रहे हीय हह
रायकै १६ ॥ सवैया ॥ द्वादश द्योस निशा भरिकै ढकि
अंबरमें निज आनन गोये । आंखिन अश्रु अखंडझरे
छिन छानेरहे न धराधर धोये ॥ टीकम बुंदबड़ी बरषा
मिसते सुमनोच्चय चीर निचोये । सादर श्रीबलवंत
बिदालखि कादरह्वै वहु बादर रोये १७ धाये घने
दशहूदिशिमाते सरसाये सबै क्षिति अंबर छाये । सकते
सक अधीरभये बरबीर बिशेष हियेहहराये ॥ व्यापी
बड़ी बलवंत बिथा तिहिते अति आतुरह्वै अकुलाये ।
टीकमजू बरषामिसते बदरा अँधुवानके आघबहाये १८

कवित्वानि ॥ हाथी हहरात घने घोरे घबरात तेरेनैननते नीरढ़ैं हेर हेरह्वौसैंहैं । जालको नवीन तेरी छटा छवि छोजभई सबै सुखपालते बिहालभये दौसैंहैं ॥ पाय गारे गाको आदमाको भई टीकाराम पारि पारि सोरथके सगरे सहौसैंहैं । कीजै कान्त शीतल महीतल पधारि फेर हेरिये कृपा कटाक्ष रावरे रहौसैंहैं १९ शोचत स-शंकसबै कंत सातौद्वीपनके हाहारे हमेश तुवि जैयगो हमारीको । कोविद कविंद वाणभये हतभागभूरि सु-खिसो शुहासमूर सबै सरदारीको ॥ याचकके जूहको खवासनके व्यूहहूको सोकसरह्यानेक नरनरनारीको ॥ छैलकैवधारी बलवंत बलिहारी जाउं शोरभुवि भारी तेरो अंतको तयारीको २० चरको घमंड घटाटोप घासीरामहूको राजकाज रामावर-च्यासको नतैगयो । वंशाज बिचारिकै अनेकभांति टीकाराम भूपतिको भार भेरू सिंह शिरदैगयो ॥ सर्वको सँभार कोसहूर-दार जालि जीय चावर चढ़ाय बखतावर चितै गयो । पीवर प्रसिद्धबुद्ध सीवरको, शारिध्यान धीवर वरेश ध्रुव धामको अथैगयो २१ नाढ्यशीर निक्रम त्रिविकम के तुल्यताने आरज अनेदानके कारन कथैगयो । सं-वत सुजान सिंधु शशिअंक औमयंक भाद्रपद भौमशुद्ध षष्ठिके तिथैगयो ॥ स्वामी बलवंत नेकनामी कैनगारे धौंस धासोभुवलोक पुण्यगामीके पथैगयो । दानदार-दंडको प्रताप औनिमें अखंड मालवकोसंड मारतंडसो अथैगयो २२ कैतको कविंद कवि केवरा गुलावगुनी

गान जाते बात बलवंतकी २७ सूरताई सीमाश्रौ उदा-
रतामें आडोअंक दास द्विजदेवा कीनिसेवा मदमंत
की । भावीमें न भूतमें भयोहैभूप भूतलपै खलक सुनीहै
ख्यात औनिप अनंतकी ॥ टीकाराम ग्राम गुणगणना
गिनी न जात धन्य धन्य धुनीधामधाम धराकंतकी ॥ दान
बरषाते भई औनि अवदाते ताते जैहैंना युगान जाते
बातैं बलवंतकी २८ साहित संगीत न्याय नीतिको नि-
शेष पेख प्रेरणा प्रशस्त शास्त्र अस्त्रन अनंतको । आगम
निगम अंग अंग अवलोके आप सकल सुनीहै ख्यात
शेषर प्रयंतको ॥ टीकमकी बानी कहै अकह कहानी
कैसे साहिबी सहूर सावधानी धराकंततको । दानबर-
षाते भई औनि अवदाते ताते जैहैंना युगान जातेबातैं
बलवंतको २९ चारषट शिषट औ चौसठ कला प्रवीन
चौज चतुराई राईराईहू रहंतको । गरवो गिरानपढ़ो
अरवी अशेयतऊ फारसी करारसी औ प्रसम अनंत
को ॥ बरणी न जाय होय हरणी अनेकबान अबत्र-
नोखी नईनोखे नरकंततकी । दान बरषाते भई औनि
अवदाते ताते जैहैंना युगान जाते बातैं बलवंतको ३०
कोविद कविंद जे जहानमें महान मणि पारखी प्रवीन
पुंजबीन बीनकैलियो । रक्खी रीति लक्खी बनजारा
भूप बलवंत खलक खरीदी खेपभूरि भरना कियो ॥
बहोबहो फिरत बहीरसोई टीकाराम धामधाम धोबर
को हहस्यो हहाहियो । गलीगली रलीतेरी गुणान
को डोलैं गौन टांडाकांडि नायक न जानिये कितैग-

यो ३१ चारु चतुरंगिणी चढ़ाय चारु चोपनते ख्यासद रईश रावलेको लागलैटगो। कामदार कोविदकविंद गुणीगायनजे देशी औ बिदेशी प्रजापुंज योगजुटिगो॥ टीकाराम रम्यरत्नलाभ रत्नागरमें अंतकाति मिंगिलते लखता उलटिगो। महिप मलाह बिना सूझैना मलाह हाय राजके समाजको जहाज आजफटिगो ३२ पत्र निज पानिको पढायो पृथीनाथ तबै आयो कवि टीकम लगाय उरतेंलियो। जायगा जहाजपै चढ़ायकै समाज सर्ब पार पहुंचायबे प्रसिद्धपनको ठयो॥ महिप मलाहजू अथाह रत्नाकरमें बूडतबिहाल बिप्र ताप तोमतेनयो। हीयहहराय जड़जीयहू न जायहाय बीचही विहाय कर्णधार तू कितैगयो ३३॥ दोहा॥ मुधासुधा मानत हुतो बिमल सुनत जबबोल। सो पुनि कबै सुनायहो करी न नरपति कौल ३४ संतत जागत सुपन में हियमेंलेत हिलोल। बिसराया बिसरे नहीं बलवँत वाला बोल ३५ बलवँत बिरह बलायकी अजब अनोखीलाय। दृग जलते दूनी बढ़े बेरणनाहिं बुझाय ३६ श्रीबलवंत भुवाल बिन अलप कलपसी जाय। हियहूके सूखै बदन उठत भभूकै हाय ३७ बांहगही बलवंतते प्रकट लगावन पार। छल करगयो छुडायकै मज्जतही मँझधार ३८ निज निज कारज लागिकै बिसरिगये बलवंत। टीकम किमि टुकबीसरे निशिदिन निकट रहंत ३९ संतत पलक्षणसवंदा टुक उरते न टरंत। मोमनभयो मुरादसलहशत बरहि बल-

वंत ४० ॥ सोरठा ॥ सरसो गावत काहि झरसों लागत येदई। सरसों सुयश सभाय दरशो दिपत जहानमें ४१ दोहा ॥ कदरघटी कवितानकी तनक रह्यो नहिंतंत। रुल्यो फिरतहै राग अव विनगाहक बलवंत ४२ झूठ नहीं सांचीकहूं इष्टदेवकीआन। अधिपतिमनलवतंत अ ध्यो मनो भूमिते भान ४३ श्रुतिशशिअनिवि विधभाद्र सुध सोम पचमी प्राप। पृथिपक्रियो प्रस्थानकाउत्तम-काल लखि आप४४वह संवत ऋतुमास वह दक्षिणनम दिन ठाट। द्वादश घटिपर भृगुदिना भैरववैठोपाट४५॥

इतिश्रीकविटीकाराममविरचिताश्रीमद्बलवद्भूपतिपरलोकप्रयाणपर्व विंशोसमाप्त॥भाषामृततरंगिण्यांश्रीमत्बलवंतसिंघनृपतेर्वंशकृट प्राप्तवर्णनंनामषोडशस्तरंगःसमाप्तः १६॥

दोहा॥ मासाहेवसीसौदणी ज्ञानवंतगुणवंत। सियाराम पधरायके माय सेवाजन संत१व्रजभूमी वृन्दावन कुंजवनाईमात। जहँ परमारथहोतहै चतुरदास विख्यात २ युग युगजीवो जगतमें जौलौं जगशशिभान। चतुरदास आशीयदे सुमिरो श्रीभगवान ३ परम पवित्र प्रधानश्री बालमुकुंद गुणवान। गंगामाकोढरण नीती न्यायनिधान ४॥

दोहा॥ वंदनकरिनँदनंदपदधरिशारदंसियध्यान। चरणात बर वंशावली द्विजविहारिमुदमान १ भाषाअमृत तरंगिणी छापेदई छपाय। कारण करत प्रकाश सब कविता कलित बनाय २ भैरव भूपति भारिया अजब कुंवर अभिधान। जिहिं कुलमें उतपतभई सोमव करत

बयाल ३ नृप गोविंद भगिनी निरख भई भारयातिध ज्ञान। सिसोद कुलमें स्वामिनी प्रकटी पुण्यनिधान ४ छंदचौपाई॥ उदयपुरी औनिप महराना। तिहिं लघुबंधु बनैड़ास्थाना॥ तस्यौं वंश बनैडा वीरा। राजसिंह राजा रणधीरा ५ तासु तनय हियहेर हमीरा। अति उदार गहरे गंभीरा॥ अंगजात उहि अमल अनूपा। भीम समान भीम सो भूपा ६ उहि अंगज अनहद तप धारी। उदैसिंह औनिप अवतारी॥ सुवन सुपात्र जासु संग्रामा। अगणित जिनके गुण गण ग्रामा ७ तिहि तनया रतनापुर ब्याही। बलवंतसुत भैरव नृपताही॥ अजब कुंवर अभिधान विख्याता। सुरभी द्विज संतन सुखदाता ८ हरिहर जन चरचा जु सुहावै। कथा कीरतन में मनलावै॥ तीरथ ब्रत्त विविधविधि कीन्हा। याचक जन द्रव्य बहु दीन्हा ९ वृन्दावनमें कुंजबनाई। महिमा जबर जगत छवि छाई॥ भैरव अजब बिहारीजूकी। प्रतिमा प्रथराई प्रभुहूकी १० औरण गीत सज्जन मंह-तारी। यह परलोक सुधारण हारी॥ परमेश्वर पद पंकज प्यारी। हरिभक्तकी अति हितकारी ११ पर-मारथमें राखत प्रीती। अजब कुंवरकी यहसब रीती॥ उहि इकदिन इमि अज्ञा दीन्ही। तब पितु तरल तरंगिणि कीन्ही १२ धगुरमोर बलवंत बनवायो। कवि टीकम तव ग्रंथ बनायो॥ आनन आननते अधिकाई। अमृततरंगिणिकी छविपाई १३ प्रणवदास साधू गुरु ज्ञानी। तिनहू बारंबार बखानी॥ सोसमग्र संवाद सना-...

वहुं । भिन्न भिन्न करि भेद बतावहुं १४ कवन प्रकार किये गुरुग्रंथा । परम पुनीत सिखावहु पंथा ॥ तब विहारि हिय होय हुलासा । भाषी अमृततरंगिणि भासा १५ महिमा एक मामलश वरणी । भगवतभक्त कथा अघहरणी ॥ आदि अंत मुनि आनँद आयो महदमोद मनमें नहिंआयो १६ अजबकुंवर चाही अभिलाषा । छापे ग्रंथ छपावहुं भाषा ॥ चातुर तिय उन चुनीबाई । उनहूं येही राह बताई १७ इमि विचार करि कियो अरंभा । ग्रंथलिखावनको प्रारंभा ॥ अजब कुंवर अभिधान अखंडा । रहिहै जवलगयहब्रह्मंडा १८ जिनकोयश पुस्तकमें मंडा । तेधनधन्य भये ब्रह्मंडा ॥ रोपे जिहियशकीरतिझंडा । तेधनधन्यभयेब्रह्मंडा १९ प्रथम लेखनीते लिखवायो । पुनि नयनाउ का पैछवायो ॥ लछिराम रतनापुरवासी । साधू सरसलखो सुखरासी २० स्वामिनि श्यामखोर चितचीना । बाल मुकुंद प्रधान प्रवीना ॥ तिहिकरते पुरपुरकेमाई । इक इक प्रतिप्रतिदेश पठाई २१ कारणग्रंथछपावनयोही । बरणयो विप्र बिहारी सोही ॥ शंभुनयन ग्रुति अंक मयंका । आश्विन असित अष्टमीअंका २२ ॥

श्रीमहाराजाधिराजराठौरवंशावतंसरणजीतसिंहजीबहादुरतस्यजननीसीसोदकुलउत्पन्नराजराजेश्वरीबीरदकवारतस्याआज्ञाकारककविविहारीलालकृतभाषामृततरंगिण्यांसप्तदशस्तरंगःसमाप्तः १७ ॥

इतिश्री भाषाऽमृततरङ्गिणी समाप्ता ॥

सभाविलास ॥

जिसमें सभाकी चातुरता के लिये चुनीहुई बातें जैसेनीति, पहेली की बहुतसी बातें रागोंके स्वरूप वर्णन कियेगयेहैं यह पुस्तक असं- छपीहै और पाठशालाओंके प्रचारके योग्यहै ॥

तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

गोपालदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रोंके मतसे सर्व के गूढ़ाशयोंका कथन और जातक ताजक सामुद्रिककी मुख्यबातें ,योग,शास्त्र और विवाह और यात्रादिके मुहूर्त और इसी प्रकार मुख्य विषयहैं जो पुस्तकके पढ़नेसे जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न ॥

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादीरत्नकुँवरि रचितकेवल श्री- और रामचन्द्रजी की भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाईमें है ॥

चित्रचन्द्रिका ॥

काशीराजकवि रचित जिसमें पहले अनेक छन्दोंमें नायकाभेद वर्णन फिर उनको चित्रबद्धकरके रूप दिखायाहै ॥

पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी त्रिशूली कृत-अति मनोहर और पुण्यदायक श्रीगंगाजीकी स्तुति है ॥

गङ्गालहरी ॥

...ाकर कविकृत जिसमें संस्कृत गंगालहरी से गंगास्तुतिके विषय ...त मनुष्य भवसागर पार उतरे अपूर्व कविताहै ॥

यमुनालहरी ॥

...लकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है ॥

जगद्विनोद ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्व प्रकारके रसवर्णन किये ...उत्तम सर्व लक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहींहै ॥

भा...

...त गिरिधरदासरचित ... नाने और नायकाभेद जानने

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पु
सांख्यादि सारभूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्वविद्यानिधान
विनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभ
को परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ भवसागर
निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकराया है यही उक्त भ
वतत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेशास्त्रवे
बुद्धिसे पारनहींपासके तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभा
पाठन करनेकी सामर्थ्य है यह कब इसके अन्तराभिप्रायको
और यहप्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी व
न्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द
मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तापादाकि
चितानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकला
विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी
ने वहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित
जीसे इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशं
निर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरचा न
आख्य से प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि
भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो वहुतसे विद्वज्जन महात्माओं
से यहविचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें
उत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भ
और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनी मिलें शामि
जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे
शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरि कृ
आर श्रीधरस्वामि कृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस
उपस्थित है॥